भी उनके हाथ में आ गया और उनकी धाक जम गई तब जो चीजें हिन्दू सभ्यता से सम्बन्ध रखती थी उन पर शनैः-शनैः आघात होने लगा और आयुर्वेद के लोकोपकारक विषय होने पर भी इसके नष्ट करने के लिए वे प्रयत्न करते रहे।

पर कुछ समय बीतने पर जैनुलाबदीन के समय में पण्डित 'श्रीभट्ट' (जो कि मेरी राय में श्रीनाथ कौल हैं और जिनकी सन्तति काश्मीर के सभी कौल कहे जाते हैं) ने आयुर्वेद को कुछ समय के लिये जीवित किया। और काश्मीर के हिन्दुओं के लिए जो कि मुसलमान के आक्रमण से परास्त थे फिर बाहर निकलने का स्थान पैदा किया। बात यह हुई कि जैनुलाबदीन बीमार पड़े थे और एक विशेष प्रकार के रोग से ग्रस्त हुए थे, उनको उस समय कोई भी (यवन) चिकित्सक नीरोग न कर सका। फिर उसने यह मुनादी कराई कि यदि कोई मनुष्य उसको इस रोग से बचा सके तो उसको यथेष्ठ उपहार दिया जावेगा। 'श्रीभट्ट' जो कि इस समय किसी मुसलमान रूपी हिन्दू घर में रहते थे, राजा को यह सूचना भिजवा दी कि वह उसको स्वस्थ कर सकता है। राजा निराश हुआ था अतएव इसके वचन पर विश्वास करके इसका इलाज कराने लगे और उसको स्वास्थ्य प्राप्त हुआ। अन्त में जब उनसे (श्रीभट्ट) से पूछा गया कि आपको क्या दिया जाय तो उन्होंने कहा कि धर्म के विषय में उदारता (Toleration) होनी चाहिये और हिन्दुओं पर जो सख्तियाँ हैं दूर होनी चाहिये।

इसके अनन्तर फिर हिन्दू मुसलमान आघात-प्रत्याघातों से सिख राज के उत्थान तक आयुर्वेद डगमगाता रहा। जिस समय सिखों से जम्मू काश्मीर का राज्य डोगरों के हाथ में आ गया उस समय भी आयुर्वेद के तरफ कोई विशेष ध्यान न दिया गया। क्योंकि महाराजा गुलाबसिंह जी को अभी राज्य ही स्थापित करना था। अतएव उसको अन्य कार्यों के करने के लिये समय न मिला।

परन्तु जिस समय महाराजा रणवीरसिंह राज्य सिंहासन पर बैठ गये तो उनका ध्यान इस ओर भी गया और उन्होंने संवत् १९२५ विक्रमी में आयुर्वेद के विषय पर एक विशेष पुस्तक भाषा में संग्रह करवाया। जिसका नाम रणवीर-प्रकाश है और एक औषधालय भी स्थापित किया जो कि उनके स्वर्गवास होने के समय ही मृत प्राय हो गया।

श्री प्रतापसिंह के समय अर्धराजकीय धर्मार्थ डिपार्टमेंट की ओर से जम्मू में एक संस्कृत रघुनाथ पाठशाला में एक आयुर्वेदीय श्रेणी स्थापित की गई। जिसमें छात्रों को केवल चिकित्सा शास्त्र पढ़ाया जाता है।

श्री महाराजा हरिसिंह के आते ही नया दौरदौरा आरम्भ हुआ। प्रजा सभासदों की प्रार्थना पर प्रजा-सभा में आयुर्वेद की आर्थिक सहायता की प्रतिज्ञानुसार ३००) रुपया जम्मू के लिए और ३००) रुपया काश्मीर प्रान्त में एक-एक वैद्य को वार्षिक सहायता रूप में दिया गया और इसके पश्चात् राज्य से दो छात्रों को भारत में आयुर्वेद शिक्षा प्राप्त करने के लिये ३०-३० रुपया मासिक छात्रवृत्ति रूप दिया गया।

नन्दलाल कौल
१५।७।३६



श्रीमान् वैद्यवर पी. एस्. वारियर कोट्टाकल मलबार।

अष्टांग शारीर नामक संस्कृत शारीरग्रंथ निर्माता।

अवैतानिक मंत्री, आर्यवैद्यक समाज।

प्रीन्सीपाल, आर्यवैद्यककालेज।

संपादक, धन्वन्तरि (मलयालल वैद्यक मासिक पत्रिका)।



श्रीमान् वैद्य कन्हैयालालजी भेड़ा, आयुर्वेदाचार्य, बम्बई ।

सभापति निखिलभारतीय पंचविंशतितम नूतन व्याधिविचार-
सम्भाषा परिषद, अहमदाबाद ।

वैद्य कन्हैयालाल जी शर्मा का

संक्षिप्त जीवन-चरित

जयपुर राज्यान्तर्गत चिरावा (शेखावाटी) में आपका जन्म हुआ है। आप वैद्यशास्त्री श्री जगन्नाथ जी के पुत्र हैं। आपने प्रारम्भ में डालमियाँ संस्कृत पाठशाला में पं० श्री व्रजलाल जी शास्त्रीजी से गवर्नमेंन्ट क्वीन्स कालेज की व्याकरण शास्त्री तक अध्ययन कर आयुर्वेद मार्तण्ड वैद्यराज पं० श्री यादव जी त्रिकमजी आचार्य से आयुर्वेदाचार्य तक अध्ययन किया है। आप १५ वर्ष से आयुर्वेद का कार्य कर रहे हैं। सर्वप्रथम शेखावाटी बिसाऊ में आपने श्री पोद्दारों के औषधालय पर ४ वर्ष तक काम किया। अभी आप बम्बई में श्री रामनारायण जी रुइया आयुर्वेदिक औषधालय के प्रधान चिकित्सक हैं। तथा श्री मुम्बई आयुर्वेदीय पाठशाला के अध्यापक एवं मंत्री भी हैं। आपके औषधालय से गरीब एवं अमीर सभी अच्छा लाभ उठाते हैं।

A short biography

of

Vaidyaratnam P. S. Varier.

Was born on Tuesday 16th March 1869 at Panniampalli Variem, a family of hereditary physicians. Studied Sanskrit under K. Krishna Warrier and D. Krishna Warrier locally until his seventeenth year. As he was the seniormost male member there was nobody in the family to teach him, and so he had his education of Ayurvedic medicine for five years under Brahmasree Kuttancheri Vasudevan Moosad, who was then the most prominent among the famous Ashta Vaidyans of Malabar. Then took a private tuition of English for two years. Had training in allopathy for three years under Dewan Bahadur Dr. V. Verghese and secured a working knowledge of the system. After

carrying out some experiments in combining the best of both the systems for some years Aryavaidyasala was started in October 1902 at Kottakal. This contains a pharmacy to prepare ayurvedic medicines in refined manner and also a dispensary. Soon after, a society by name Aryavaidya Samajam was started and registered to propogate the principles of Ayurveda. P. S. Varier is still the secretary and trustee of the society. Then began editing Dhanwantari, a medical journal in Malayalam. This was unfortunately stopped during Mopla rebellion and was not republished owing to increased pressure of work and some inconveniences. Aryavaidya Patasala was started in 1917 at Calicut to train students in Ayurveda. Though a subscription was collected for this in the beginning, at present the entire expense of the institution is met by Mr. Varier alone, as he has now become able to afford. In 1924, he started Aryavaidyasala Hospital at Kottakal where free treatment is given to the poor. In 1927 an allopathic doctor also was appointed in this hospital where both the systems of treatment are carried out side by side. Aryavaidya Patasala was shifted to Kottakal from Calicut in 1924 and attached to the hospital for giving clinical training to students. Finished writing Ashtanga Sareeram by the end of 1925 and this is a text book in Aryavaidya Patasala ever since its publication. Has been one of the examiners in Akhila Bharatha Varsheeya Vaidyasamiti (All-India Ayurvedic Conference) and Venkataramana Dispensary in Madras for some years. Is one of the prominent members of the Keraleeya Ayurveda Samajam. In January 1932 he was nominated a member of the Central Board of Indian Medicine by the Government of Madras and is still holding the post. On 2nd January 1933, the title of "Vaidyaratna" was conferred upon him by the Government of India. Now he is the proprietor and chief physician of Aryavaidyasala, Principal of Aryavaidya Patasala, Secretary of Aryavaidya Samajam and member, Central Board of Indian Medicine. Besides these he is the Director of the Nedungadi Bank Ltd. and Warrier Bank Ltd., and now leads a philanthropic life.

पं० रामगोपाल शास्त्री वैद्य का

संक्षिप्त जीवनचरित।

जन्म स्थान—तथा संवत् १९४८ विक्रम लाहौर (पंजाब)। कुल तथा माता-पिता। नाम रामदास जी बधवा, माता मखनी देवी जी, जाति अरोड़ वंश (क्षत्रिय)। आरम्भ में डी० ए० वी० कालेज लाहौर में संस्कृत और हिन्दी की शिक्षा प्राप्त करके कालेज की प्रथमा, मध्यमा तथा उत्तमा परीक्षायें पास कीं—मध्यमा में द्वितीय और उत्तमा परीक्षा में सर्वतः प्रथम रहे—सन् १९११ में पंजाब यूनीवर्सिटी से शास्त्री परीक्षा पास की सन् १९१३ में पंजाब यूनीवर्सिटी की मैट्रिक परीक्षा पास की, सन् १९१५ में पंजाब यूनीवर्सिटी की एफ० ए० परीक्षा और डी० ए० वी० कालेज की अन्तिम संस्कृत परीक्षा उपाध्याय पास की। इस संस्कृताध्ययन काल में स्वर्गीय वेद-तीर्थ पं० भक्तराम जी शास्त्री, पं० राधाप्रसाद जी शास्त्री (वर्तमान-प्रोफेसर हिन्दुयूनिवर्सिटी बनारस, स्वर्गीय पं० आर्य्यमुनि जी महामहोपाध्याय, पं० राजाराम जी प्रोफेसर डी० ए० वी० कालेज लाहौर से विद्याध्ययन किया।

सन् १९१५ से १९१९ तक डी० ए० वी० स्कूल लाहौर में अध्यापक रहे। सन् १९१९ से १९२८ तक डी० ए० वी० कालेज के रिसर्च विभाग में गवेषणात्मक कार्य किये। साथही कालेज में प्रोफेसर रहे, बीच में ३ वर्ष दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय लाहौर के उपाचार्य (वाइस प्रिंसिपल) रहे—

कालेज के इस वर्ष रिसर्च विभाग में अथर्ववेद सम्बन्धी दो पुस्तकों का सम्पादन किये, जो कालेज रिसर्च विभाग से प्रकाशित की हुई हैं। (१) अथर्ववेदीया बृहत्सर्वानुक्रमणिका (२) अथर्ववेदीयाऽनयोष्टविधिः।

सन् १९२८ में रावलपिंडी में वैद्य पञ्चानन पं० मस्तराम जी शास्त्री तथा आयुर्वेदाचार्य योगी रामनाथ जी शास्त्री से आयुर्वेदाध्ययन तथा औषध निर्माण-चिकित्सा विधि का ज्ञान प्राप्त किया, सन् १९३२ में हरिद्वार (कनखल) के श्रीयुत पं० योगेश्वर जी वैद्य से संग्रहणी आदि उदर सम्बन्धी रोगों की चिकित्सा आदि का ज्ञान प्राप्त किया।

९ वर्षों से लाहौर चैम्बर लेन रोड पर चिकित्सा कर रहे हैं। सन् १९३० में महात्मा गांधी द्वारा प्रचलित स्वतंत्रता आन्दोलन के संबंध में एक वर्ष के लिये कारागार हुआ। उसी जेल में आयुर्वेद मूल-भूत वेद से वैदिक आयुर्वेद-संग्रह का आरम्भ हुआ। निरंतर पाँच वर्ष के परिश्रम से ४०० पृष्ठों के लगभग वैदिक आयुर्वेद संग्रह की पाण्डु लिपि तैयार हुई है अभी और लेख तैयार हो रहा है।

ये लेख क्रमशः ९ मासों से दयानन्दायुर्वैदिक कालेज लाहौर के मासिक-पत्र आयुर्वेद संदेश में निकल रहा है। एक छोटा-सा ट्रैक्ट ज्वर संबंध में वेद की क्या सम्मति है प्रकाशित हुआ है।

इसके अतिरिक्त पंजाब वैद्य सभा के परीक्षा-विभाग के और लाहौर वैद्य सभा के मंत्री रहे हैं। पंजाब यूनीवर्सिटी की मैट्रिक और विशारद के परीक्षक पाँच वर्ष तक रहे हैं। अखिल भारतीयायुर्वेद महामण्डल पूना की भिषक् परीक्षा तथा दयानन्दायुर्वैदिक कालेज लाहौर की परीक्षाओं के भी परीक्षक रहे हैं।

वैदिकायुर्वेद ग्रन्थ, आशा है, शीघ्र ही छप कर आयुर्वेद-जगत् का महान् उपकार करेगा अभी संक्षेप से उस ग्रन्थ में आये वेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थों द्वारा उपलब्ध रोगों के नाम और औषधियों की सूची वैद्यों को भेंट की जायगी। इनकी विशेष व्याख्या वैदिकायुर्वेद संग्रह में मिलेगी।

शिक्षा-केन्द्र से अतिरिक्त सेवायें—

कांग्रेस हिन्दू-सभा का पर्याप्त काम किये हैं पंजाब की प्रधान तथा प्रमुख संस्था जो हिन्दू जाति और हिन्दूस्थान की अत्यन्त सेवा कर रही है उस संस्था आर्य स्वराज्य सभा पंजाब की १९२२ से स्थापना की जो वृक्ष रूप से फलित है। लाजपतराय-स्टेचू लाहौर में मित्रों के सहयोग से बीस हजार रुपया लगा कर खड़ा किया। १२ हजार से लाहौर में मित्रों के सहयोग से रामकृष्ण आश्रम रावी रोड पर जनता के सेवार्थ बनाया। श्रद्धानन्द हिन्दू मिशन, दलितोद्धार-अबला-सेवा का काम अब कर रहे हैं। इस समय आर्य स्वराज्य सभा पंजाब के प्रधान हैं।



श्रीमान् वैद्य जेठालाल देवशंकरजी दवे

अध्यक्ष—दवे केमिकलवर्क्स और दवे आयुर्वेदिक-फार्मेसी, अहमदाबाद।

वैद्य जेठालाल देवशंकर दवे का

संक्षिप्त जीवनचरित

सम्पादक—भाग्योदय और हुनर विज्ञान। अधिपति दवे आयुर्वेदिक फार्मसी, गांधीरोड अहमदाबाद। शाखा कालबादेवी, बम्बई। वैद्यराज जेठालाल जी का जन्म संवत् १९४० के मार्गशीर्ष कृष्ण १४ को खेडा जिल्हे में नापाड नामक गाँव में हुआ था। आपके पिता देवशंकर वजेराम उपाध्याय वैद्यकी वृत्ति से अपना निर्वाह करते थे। गुजराती, संस्कृत और अंग्रेजी का आपका ज्ञान विपुल है। मेट्रिक तक अध्ययन होने के बाद आपने रेवन्यू विभाग में १९०१ में नौकरी स्वीकार कर ली। इसी विभाग की ओर से १९०४ में आप मानसहित न्याय-शास्त्र की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। इससे आपका दरजा बढ़ कर आपने रेवन्यू विभाग की न्याय शास्त्र की परीक्षा का ग्रंथ लिख कर प्रकाशित किया। अनेकों सरकारी नौकरों को इस ग्रंथ का अध्ययन करके परीक्षा देनी पड़ती थी। इस ग्रंथ की चार आवृत्तियाँ समाप्त हो गई। 'कायदा नो शिक्षक' नामक फौजदारी, दीवानी रेवन्यू कायदों का ग्रन्थ सन् १९०४ में आपने लिखा। उसकी कीमत १५) रु० होने पर भी चार आवृत्तियाँ समाप्त हो गई और अब पाँचवीं आवृत्ति छपेगी। आपके पिता के संवत् १९६६ में स्वर्गवासी होने के बाद सब कार्यभार आपके सिर आ पड़ा। नौकरी के साथ साथ अपने पूर्वजों की परंपरा गत वैद्यकी वृत्ति से अपना गुजारा करते थे। १९१३ ई० में नौकरी को त्याग कर आप अहमदाबाद आये और वैद्य वृत्ति का आश्रय ग्रहण किया। इसी वर्ष आपने 'भाग्योदय' मासिक शुरू किया जिसमें तत्त्वज्ञान, वैद्यक आदि विषयों के लेख रहते हैं। इस मासिक ने इन २३ वर्षों में अच्छी प्रगति की है। १९१५ में 'घर नो वैद्य' नामक ग्रन्थ आपने लिखा १० वर्ष के पूर्व आपने हुनर-विज्ञान नामक मासिक शुरू किया। ८ वर्ष तक इसको चलाकर उसको बाद में 'भाग्योदय' मासिक के साथ संयुक्त कर दिया।

दवे आयुर्वेदिक फार्मसी और दवे केमिकल वर्क्स नाम से आयुर्वेदीय औषधें बनाने के लिए १९१० ई० में कारखाना शुरू किया जो अहमदाबाद में अच्छी तौर पर चल रहा है। यह आपके स्वालम्बन और दीर्घोद्योग के परिणाम से अखिल भारतवर्ष में विख्यात हो चुका है।

इसी के साथ साथ अपनी पुस्तकें, मासिक आदि के प्रकाशन के लिये "भाग्योदय इलक्ट्रीक प्रिन्टिग प्रेस, नामक मुद्रणयंत्रालय शुरू किया जो हाल में अहमदाबाद में अच्छी तौर पर चल रहा है। इसमें आपके लिखे हुए ग्रन्थों का प्रकाशन कार्य होता है और दूसरे भी बड़े बड़े ग्रन्थों का मुद्रण यहाँ होता है। इस मुद्रणयंत्रालय की व्यवस्था का कार्य आपके पुत्र वैद्य रसिकचन्द्र जी करते हैं।

श्री चरक संहिता का गुजराती में अनुवाद करके उसका प्रथम खण्ड १९१९ ई० में मूलसहित प्रकाशित किया। उसकी प्रतियाँ समाप्त होने के कारण अब दूसरी आवृत्ति छपवाने का कार्य शुरू किया है। इस ग्रन्थ का दूसरा खण्ड १९२१ ई० में अनुवाद करके छपवाया। इसके सिवाय भैषज्यरत्नावली और चक्रदत्त, वैद्यरत्न, वैद्यविनोद, वैद्यामृत, बाल-बाधोदय, योगरत्नाकर आदि ग्रन्थों का अनुवाद करके गुजराती भाषा में प्रसिद्ध किये हैं। देशी वैदु, वैदोना अनुभूत प्रयोगों वैद्य याने वैद्यक भाग १—२ आदि वैद्यक ग्रन्थ गुजराती में लिख कर प्रसिद्ध किये हैं। इनमें से बहुतों की द्वितीयावृत्ति भी हो गई है।

आपका ज्योतिष का ज्ञान भी स्पृहणीय है आपने 'भविष्यवेत्ता' पुस्तक लिखकर प्रसिद्ध किया। इसका मूल्य ५) रु० होने पर भी इसकी चार आवृत्तियाँ पूर्ण हो चुकी हैं।

आपने अन्य विषयों के करीब ५० ग्रंथ लिखे हैं जिनमें से बहुतों की चार-चार आवृत्तियाँ हो गई हैं। कायदानो शिक्षक मूल्य १५ रुपया (चतुर्थावृत्ति), धनवान मूल्य ८ रुपया (पाँचवीं आवृत्ति), हिन्दुस्तान की तीर्थयात्रा मूल्य ७ रुपया (तृतीयावृत्ति), त्रिकालदर्शक योग का ग्रंथ ५ रुपया (चतुर्थावृत्ति), स्त्री हित-शिक्षक ४ रुपया (दूसरी आवृत्ति), गृहिणी रत्नमाला २ रुपया (दूसरी आवृत्ति), स्वधर्मनिष्ठ दैवी जीवन ४ रुपया, धन प्राप्तिना-मार्गो ५ रुपया (प्रथमावृत्ति), मास्टर ऑफ नॉलेज ५ रुपया (दूसरी आवृत्ति), भविष्य-वेत्ता ५ रुपया (चतुर्थावृत्ति), चमत्कृति ज्ञान-दर्शक योग का ग्रन्थ ५ रुपया (दूसरी आवृत्ति), एकाग्रता अने दिव्य-शक्ति, तत्वज्ञान का ग्रन्थ, आत्म-ज्योति किंवा ब्रह्मदर्शन योग का ग्रन्थ आदि करीब ५० ग्रन्थ आपने लिखे हैं जो बहुत लोकप्रिय हुए हैं।

अहमदाबाद में वैद्य-सभा की स्थापना हुई तब से आप व्यवस्थापक समिति के सदस्य हैं। १९२६ ई० में वैद्य-सभा के आप अध्यक्ष चुने गये। १९२६—२७ में गुजरात प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के प्रधान मंत्री नियुक्त हुये।

१९२९ ई० में दवे फार्मेसी की शाखा बम्बई में खोली गई तब से आपको बम्बई बहुत समय रहना पड़ता है और अहमदाबाद में आपके ज्येष्ठ पुत्र वैद्यराज रमणीक राय दवे फार्मेसी के व्यवस्थापक का कार्य करते हैं।

१९३५ ई० में अहमदाबाद में नि० भा० वैद्य संमेलन हुआ तब सन्मान समिति के आप अध्यक्ष चुने गये, और १९३६ ई० के लिये गुजरात प्रान्तीय वैद्य संमेलन की स्थायी समिति के आप उपाध्यक्ष चुने गये हैं।

वैद्यराज ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए और ब्राह्मण के दया, क्षमा आदि गुणों से युक्त हैं। वैद्यों के प्रति आप अत्यंत आदरभाव रखते हैं। आपके दवे केमिकल वर्क्स की ओर से बनी हुई 'सुंदरी साथी' सर्व प्रदेशों में प्रसिद्ध है और अच्छे-अच्छे डाक्टर भी विदेशीय औषधों की जगह सुंदरी साथी' लेने को सिफारिश करते हैं। वैद्यराज जेठालाल देवशंकर दवे स्वाव-लंबन से उन्नत हुये हैं। आयुर्वेद की सेवा आपका प्रमुख ध्येय है और अपने मासिक 'भाग्योदय' द्वारा आयुर्वेद की सेवा २३ वर्षों से कर रहे हैं।

भाईलाल नंदलाल देसाई

एडवोकेट

भाग्योदय और हुनर-विज्ञान

भाग्योदय मासिक अहमदाबाद से वैद्यराज जेठालाल देवशंकर दवे २३ वर्षों से प्रकाशित करते हैं। इसमें वेदान्त, तत्त्वज्ञान, आयुर्वेद आदि विषयों के लेख आते रहते हैं। 'भाग्योदय' मासिक के संपादक वैद्यराज जेठालाल देवशंकर दवे स्वयं हैं और इसके व्यवस्थापक वैद्यराज रमणीकराय जेठालाल दवे हैं। इस मासिक का वार्षिक शुल्क ३ रुपया है। पर वैद्यों के लिये २ रुपया रखा है। प्रतिवर्ष भेंट की पुस्तक दी जाती है। इसका प्रचार हिंद भर में गुजराती भाषा जानने वालों में है। पहिले इसकी ३००० प्रतियाँ छपती थीं। अब २५०० प्रतियाँ जाती हैं। गुजराती भाषा में इस मासिक-द्वारा आयुर्वेद की अच्छी सेवा हो रही है।

वैद्यराज रमणीकराय जेठालाल दवे
'भाग्योदय' ऑफिस
गांधी रोड, अहमदाबाद

श्री दवे आयुर्वेदिक फार्मेसी और दवे केमिकल वर्क्स

अहमदाबाद और बंबई

अहमदाबाद में आयुर्वेदीय औषध शास्त्रीय पद्धति से बनवाने के लिये यह फार्मेसी १९१० ई० में निकाली गई। इसके अधिपति वैद्यराज जेठालाल देवशंकर दवे हैं। ये वैद्यराज १९२६ में अहमदाबाद वैद्य-सभा के अध्यक्ष और १९२६—२७ में गुजरात प्रान्तीय वैद्य संमेलन के प्रधान मंत्री थे। इस वर्ष में आप गुजरात प्रान्तीय वैद्य संमेलन की स्थायी समिति के उपाध्यक्ष नियुक्त किये गये हैं। दवे फार्मेसी की ओर से आयुर्वेदीय औषधें, रस, भस्म, आसव, अवलेह, गोलियाँ आदि विपुल प्रमाण में बनती हैं और दवे केमिकल वर्क्स की ओर से आयुर्वेदीय पद्धति से देशी पेटेन्ट औषधें बनती हैं। इनमें 'सुंदरी साथी' नामक दवा स्त्रियों के लिये समस्त हिंद भर में और चीन, अफ्रिका, बर्मा, सीलोन आदि प्रदेशों में भी बहुत प्रचार में है। इस फार्मेसी की व्यवस्था का कार्य वैद्यराज रमणीकराय जेठालाल दवे करते हैं। इस फार्मेसी के अंग-भूत श्री भाग्योदय प्रिन्टिंग प्रेस में सब तरह का मुद्रण-कार्य हो रहा है।

दवे फार्मेसी की शाखा १९२९ ई० में बम्बई में कालबा देवी रोड के स्थान पर खोलने में आयी। इसका उद्घाटन कार्य अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध मिल एजेन्ट स्वर्गीय सेठ मंगलदास गिरधरदास जी के शुभ हस्तों से हुआ था।

दवे फार्मेसी की 'सुंदरी साथी' नामक दवा बहुत सुविख्यात और लोकप्रिय है। और अनेकों वर्षों से विदेशी औषधों की जगह अच्छे-अच्छे डाक्टर लोग इस दवा को उपयोग में लाते हैं। दवे फार्मेसी प्रतिवर्ष १००० रुपया तक का इन्कमटैक्स भरती है। इसके अधिपति वैद्यराज जेठालाल दवे अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध वैद्य हैं। बम्बई में भी आपकी प्रसिद्धि बहुत है।

इन्दौर के राजवैद्य श्री वैद्यराज पं० ख्यालीरामजी द्विवेदी का

संक्षिप्त परिचय।

मालवा के सुप्रसिद्ध वैद्य श्री वैद्यराज पं० ख्यालीराम जी द्विवेदी ने होलकर राज्य की राजधानी इन्दौर में निवास करते हुए अपने ५० वर्ष के जीवन काल में आयुर्वेद की जैसी सेवा और उत्थान किया है वह कुछ यहाँ पाठकों के परिचयार्थ लिखा जा रहा है।

आपके पितामह कान्यकुब्ज वंशज जयराजमऊ के द्विवेदी पं० देवीप्रसाद जी द्विवेदी युक्तप्रान्त के जिला रायबरेली, ग्राम डलमऊ से लगभग १०० वर्ष पूर्व सर्व प्रथम इन्दौर आये थे। प० देवीप्रसाद जी के पुत्र पं० गणेशराम जी द्विवेदी हुए जिनके कि अन्तिम पुत्र राजवैद्य पं० ख्यालीराम जी द्विवेदी हैं। अपने पिता के १५ सन्तानों में से केवल आपही एक पुत्र तथा तीन कन्या संतानें शेष रहीं। कन्याओं का विवाह यू० पी० के उच्च कान्यकुब्ज कुलों में पिता के समय में ही हो गया था। वैद्यक व्यवसाय आपका कुल परंपरागत है। देश में इस वैद्यक सेवाओं के उपलक्ष में इनके पूर्वजों को खजूर ग्राम आदि राजाओं से जिला रायबरेली में बहुत-सी जमीनें वृत्ति के रूप में मिली हुई अब तक चली आ रही हैं। आपके पिता पं० गणेशराम जी आयुर्वेद के अतिरिक्त संस्कृत के अन्यान्य शास्त्रों के अच्छे विद्वान थे। आयुर्वेद का अध्ययन बड़ोदा राज्य के कारवण ग्राम निवासी राजवैद्य पंडित भवानीशंकर जी से किया था। अध्ययन करने के बाद बड़ोदा राज्य में उन्होंने कई वर्षों तक इन्हीं लोगों के अनुरोध से निवास किया था और वहाँ चिकित्सा कार्य भी किया था। वहाँ इनकी चिकित्सा-चातुरी से प्रसन्न होकर गायकवाड़ सरकार से डभोई ग्राम के पास ३०० बीघे जमीन भी जागीर की तौर पर मिली थी, पर इन्दोर के लोगों के आग्रह से ७, ८ वर्ष बाद उस जमीन को एक शिष्य के सुपुर्द करके इन्दौर चले आये। यहाँ आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा अच्छी ख्याति और सफलता प्राप्त की। तत्कालीन महाराजा शिवाजी राव की तथा अन्य राज्य घराने के लोगों की आपही के द्वारा प्रायः आयुर्वेदिक चिकित्सा होती थी। इसके उपलक्ष में दस-दस हजार रुपये उन्हें राजघराने से कई बार भेंट तथा लगभग चार सौ बीघे जमीन भी मिली थी, जो कि वैद्य पं० गणेशराम जी के आयुर्वेदिक चिकित्सा का प्रत्यक्ष निदर्शन था।

आपके यहाँ सं० १९४५ में श्री वैद्यराज पं० ख्यालीराम जी का जन्म हुआ। कुल परंपरा गत व्यवसाय के अनुसार कुछ व्याकरण और साहित्य पढ़ा कर पिता ने आपको आयुर्वेद पढ़ाया, प्रत्यक्ष अपने साथ में रख कर अनुभव और क्रियाभ्यास कराया। फलस्वरूप बीस वर्ष की अवस्था से ही अच्छी कुशलता के साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा का कार्य आप करने लगे। पिता के देहान्त के बाद सन् १९०६ में प्रभाकर औषधालय नाम के औषधालय को जो कि पिता के समय से चला आ रहा था, दितवारीया बाजार इन्दौर के निजी भवन में सुव्यवस्थित रूप दिया, तथा सन् १९१५ में वैद्य ख्यालीराम आयुर्वेदिक फार्मेसी नाम की संस्था की

स्थापना बियाबानी मोहल्ले में की। ये दोनों संस्थाएँ इन्दौर में उस समय पर उस स्वरूप में स्थापित हुईं जब कि इन्दौर में क्या, सुदूर अन्य स्थानों में भी ऐसी व्यवस्थित संस्थाएँ नहीं थीं। आगे चल कर इन्दौर के आयुर्वेद प्रेमी श्रीमानों के लिये ये संस्थाएँ पथप्रदर्शक हुईं। आज इन संस्थाओं का आदर्श लेकर इन्दौर राज्य में कई आयुर्वेदिक संस्थाएँ खुल चुकी हैं। दिनों-दिन उन्नति होकर आज इस फार्मेसी में सर्व प्रकार की औषधियाँ हजारों रुपयों की प्रत्येक समय तैयार होती रहती हैं, औषधालय से नित्य-प्रति सैकड़ों रोगी निःशुल्क तथा सशुल्क औषध काम में लेते रहते हैं।

वर्तमान में वैद्यराज जी के आयुर्वेद मन्दिर के कुल निम्न लिखित प्रकार से दस विभाग हो गये हैं।

१ प्रभाकर औषधालय, २ वैद्य ख्यालीराम फार्मेसी, ३ सिद्धौषध भण्डार, ४ बृहद् वनौषधवाटिका, ५ आतुरालय, ६ डेरी फार्म, ७ शाखाएँ, ८ एजेन्ट्स, ९ परमार्थ, १० विक्रय।

वर्तमान में वैद्यराज जी के चार पुत्र और चार कन्याएं हैं। आप अपने लड़कों को भी परंपरागत व्यवसाय के अनुसार संस्कृत और आयुर्वेद का अध्ययन करा रहे हैं। आपके जेष्ठ पुत्र वैद्य पंडित कन्हैयालाल जी द्विवेदी ऊपर लिखे हुए विभागों का संचालन बहुत ही दक्षता एवं संलग्नता के साथ कर रहे हैं। आप संस्कृत के अन्य विषयों के साथ आयुर्वेद के अच्छे विद्वान् हैं और वैद्यराज जी की तरह आप भी यशस्वी तथा सार्वजनिक कार्यों में उदार भावना के व्यक्ति हैं। आपके भी दो पुत्र तथा दो कन्याएं हैं। उपरिलिखित विभागों-द्वारा सैकड़ों रोगियों को नित्यप्रति आरोग्य लाभ होता रहता है। मध्यप्रान्त, मध्यभारत तथा राजपूताना आदि भारत के अनेक प्रान्तों के रोगी दूर-दूर से आकर आपके आतुरालय में रहकर आपकी चिकित्सा से लाभ लेते हैं। अतुरालय सदा वैद्यराज जी के चिकित्सार्थी रोगियों से भरा रहता है। पचीस बीघे विस्तार की जमीन में आतुरालय, डेरीफार्म, वनौषधि वाटिका आदि विभागों का कार्य चालू है। आतुरालय में रहने वाले रोगियों को डेरी फार्म से ही ताजा दूध-दही, तक्र आदि के देने की व्यवस्था रहती है। वनौषध वाटिका में प्रायः आयुर्वेदोपयोगी दुर्लभ औषधियों की ताजे रूप में प्राप्ति के लिए व्यवस्था की जा रही है। आज भी सैकड़ों औषधियाँ उसमें सदा ताज़ी प्रस्तुत मिलती हैं। मध्यभारत, मध्यप्रान्त तथा अन्यान्य प्रान्तों के कई मुख्य प्रधान नगरों एवं उपनगरों में शाखाएँ खुली हुई हैं, एजेन्ट्स भी समुचित कमीशन पर भारत के विभिन्न प्रान्तों में सदा भ्रमण कर प्रचार करते रहते हैं। सिद्धौषध भंडार में १५०००, २०००० की दवाइयें हरवख्त तयार सुरक्षित रहती हैं। विक्रय विभाग से सब प्रकार की औषधियाँ भारत के प्रायः प्रत्येक प्रान्तों के लोग हजारों रुपयों की तायदात में वी० पी० से मंगाते और स्थानीय लोग लेते रहते हैं। परमार्थ विभाग से पचास हजार के ऊपर-ऊपर अबतक खर्चा किया जा चुका है। इस प्रकार इन दस विभागों-द्वारा वैद्यराज जी का आयुर्वेद मन्दिर तीस वर्ष से लोकसेवा कर रहा है।

इन विभागों द्वारा लोक सेवा के अतिरिक्त स्वयं वैद्यराज जी की समस्त रोगों में अव्यर्थ चिकित्सा इतनी लोक प्रिय है कि राजा, महाराजा, धनी, दीन, सभी अपनाते हैं। यही कारण है कि मार्ग व्यय आदि के अतिरिक्त आपकी बाहर की फीस दो सौ रुपये रोजाना नियत होने पर भी बाहरी लोग आपको प्रसन्नता से बुलाते और लाभ उठाते हैं। ऐसे ही स्थानीय लोग भी। राजपूताना और मध्यभारत की कई रियासतों के राजघराने में प्रायः

आपकी ही आयुर्वेदिक चिकित्सा अपनाई जाती है। होलकर राज्यघराने में तो सदा आपकी चिकित्सा चलती रहती है। भूतपूर्व महाराजा तुकोजीराव होलकर बहादुर स्वयं आपकी ही आयुर्वेदिक चिकित्सा को अपनाते थे। महाराज ने छः सौ रुपये मासिक वेतन पर आपको आयुर्वेदिक कार्य-निरीक्षणार्थ तथा अपने चिकित्सार्थ नियुक्त करने की आज्ञा दी थी, जिस बंधन को बहुत विनय के साथ वैद्यराज जी ने टाल दिया था, किन्तु पूर्ववत् स्वतंत्र रूप से चिकित्सा द्वारा सेवा राजघराने की आवश्यकतानुसार आजतक जारी रखी है।

वर्तमान में डाक्टर, वैद्य और हकीमों के रजिस्टिर्ड कराने और चिकित्सा के लिए अधिकार देने एवं जाँच के लिए संस्थापित होलकर गवर्नमेन्ट की इन्दौर मेडिकल कौंसिल के आप गवर्नमेन्ट द्वारा मनोनीत कौंसिलर हैं। आपने डाक्टरों की तुलना में वैद्य के अधिकार समान रखाने में अथक प्रयत्न किया है, जिसका कि यह फल हुआ है कि इन्दौर राज्य में बड़े से बड़े डाक्टरों के समान ही रजिस्टर्ड वैद्यों की सार्टीफिकेट देने और विषोपविषादि सभी औषधियों को बिना नियंत्रण के व्यवहार करने का पूर्ण अधिकार है।

आपकी आयुर्वेदिक सेवाएँ

इन्दौर में निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महामण्डल का ११ वाँ सम्मेलन आपके स्वागत-सभा के प्रधान मंत्रित्व में और आपके ही अथक परिश्रम से सन् १९२१ में सम्पन्न हुआ था, जिसमें कि महामहोपाध्याय डाक्टर गणनाथसेन जी सरस्वती सभापति थे। आपने द्रव्य और परिश्रम की परवाह न करके इस संमेलन को पूर्णरूप से सफल बनाया था।

निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महामण्डल तथा विद्यापीठ की प्रबंध कारिणी के समय-समय पर सदस्य रह कर आवश्यक कार्यों में योग दिया। विद्यापीठ के आदेशानुसार भिषक, विशारद और आचार्य परीक्षाओं का सन् १९१७ से परीक्षण कार्य करते रहे। विद्यापीठ की इन्दौर केन्द्र की परीक्षाओं के व्यवस्थापक भी रह कर कई वर्षों तक कार्य किया है।

आयुर्वेदिक सिद्धान्तों के लोगों में प्रचारार्थ आरोग्य-विज्ञान नाम का एक मासिक-पत्र भी आपने अपने मालिकपन और संपादकत्व में सन् १९३२ में निकाला था, जिसकी कि पत्रकारों ने बहुत प्रशंसा की थी। वर्तमान में वह पत्र बन्द है।

इन्दौर राज्य के समस्त वैद्यों को सुसंघठित करने के लक्ष से आपने वैद्य सभा, इन्दौर नाम की एक सभा स्थापित कराई, जो कि आज तक अच्छे रूप में महामण्डल से सम्बद्ध होकर चली आ रही है। इस सभा द्वारा अनेक आयुर्वेदोपयोगी कार्य समय-समय पर होते रहते हैं। आप इस सभा के सभाध्यक्ष हैं।

आयुर्वेद की शिक्षा देने के लिये आपने स्थानीय श्रीमानों को प्रेरित कर सन् १९२० में आयुर्वेदिक ब्रह्मचर्याश्रम लालबाग पुलिया, इन्दौर नाम की एक संस्था स्थापित की है, जिसमें आपकी तरफ से बहुत-सा द्रव्य लगाया गया है। इस संस्था के आपही प्रधान मंत्री होकर चला रहे हैं, इस संस्था के १५ ट्रस्टी हैं। दो सौ रुपया मासिक खर्च है। भिषक्, विशारद, और आचार्य तक की पढ़ाई होती है। विद्यार्थियों के रहने और भोजन वस्त्रादि का पूर्ण प्रबंध है।

मालवा, मध्यप्रान्त एवं मध्यभारत जैसे प्रान्तों में आपके पढ़ाये हुए सैकड़ों छात्र आज विविध स्थानों में वैद्यक व्यवसाय करते हुए आयुर्वेद की सेवा कर रहे हैं। प्रति वर्ष

आपके छात्र विद्यापीठ की तथा अन्यान्य परीक्षालयों की विविध परीक्षाओं में बैठते और पास होकर निकलते हैं। इस प्रकार अनेक कार्य भार रहते हुए भी स्वयं आयुर्वेदिक शिक्षा देने के लिए आप अपना निजी समय सदा विद्यार्थियों को देते हैं।

आपकी प्रेरणा प्रोत्साहन और अनुमति से इन्दौर में तथा इन्दौर के बाहर भी आयुर्वेद की निम्नलिखित संस्थाएँ स्थापित होकर चल रही हैं।

१ श्री वैष्णव धर्मार्थ औषधालय, शीतला माता बाजार, इन्दौर। इस संस्था के आप जन्मदाता और प्रेसिडेन्ट हैं।

२ श्रीकृष्ण औषधालय, संयोगिता गंज, इन्दौर। इसके भी आप जन्मदाता और सभापति हैं।

३ सरदार बोलीया सरकार स्मारक आयुर्वेदिक औषधालय, इमली बाजार, इन्दौर। आपके ही प्रयत्न से यह स्थापित हुआ और आपके ही देख-रेख में चलता है।

४ प्रिन्स यशवन्त राव आयुर्वेदीय जैन औषधालय, इन्दौर। आप इस संस्था के एडवाइजर हैं।

५ इसके अतिरिक्त सनावद, बड़वाहा आदि इन्दौर के बाहर स्थानों में भी कई औषधालय आपकी सम्मति से खुले और आपके दिग्दर्शन के अनुसार चल रहे हैं।

आपकी इन आयुर्वेदिक सेवाओं के उपलक्ष में कई संस्थाओं ने आपको उपाधि, पदक, मानपत्र और प्रशंसापत्र से सम्मानित किया है। जैसे—

१ निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महामण्डल ने आरंभिक समय में आयुर्वेदाचार्य की उपाधि से आपको सम्मानित किया था, और दशवें अधिवेशन के समय दिल्ली के प्रदर्शन में फार्मेसी की तरफ से वनस्पति और रस, भस्म आदि के रखने पर तथा आयुर्वेद संबंधी निबंध पर सर्वोच्च स्वर्णपदक प्रदान किया है।

२ आल इन्डिया वैद्यक एन्ड यूनानी तिब्बी कान्फरेन्स देहली ने सन् १९१९ में प्रशंसापत्र और पदक प्रदान किया है। खंडवा नगर वैद्य सभा आदि कई आयुर्वेदिक सभाओं ने मानपत्र दिये हैं।

३ आल इन्डिया सेनिटरी सायंटिफिक एन्ड इन्डीजीनीस ड्रग्स इकजिबीशन इन्दौर ने सन् १९२२ में स्वर्णपदक तथा प्रशंसापत्र प्रदान किया है, इसी प्रकार १९२३ में अखिल भारतवर्षीय स्वदेशी प्रदर्शनी इन्दौर ने प्रशंसा-पत्र और पदक दिया है।

४ श्री वैद्य सभा इन्दौर ने सन् १९३५ में आयुर्वेदमार्तण्ड की सम्मानित उपाधि आपको दी है।

५ मध्यभारतीय वैद्य संमेलन ने नागौद में तृतीयाधिवेशन के समय सन् १९३६ में चिकित्सक चूडामणि की उपाधि आपको प्रदान की है।

आयुर्वेदिक सेवाओं के अतिरिक्त आपने अन्य सार्वजनिक कार्यों में भी समय-समय पर प्रमुख भाग लिया है और ले रहे हैं। निम्नलिखित सभाओं के सभापति या अन्य प्रमुख कार्यकर्त्ता रह कर उनको सफल बनाया है जैसे—

नगर हिन्दू सभा इन्दौर—इस सभा का आपके ही हाथों से इन्दौर में बीजारोपण होकर विकास हुआ है। इस सभा के, आपने चार वर्ष तक सभापति रह कर काम किया है। इन्दौर का प्रसिद्ध हिन्दू मुसलिम दंगा इसी चार वर्ष के भीतर हुआ था, उस समय आपके सभा-

पतित्व में हिन्दू सभा ने हिन्दू पक्ष को जिस खूबी के साथ उज्ज्वल रखा है, वह स्मरणीय रहेगा। कान्यकुब्ज विद्या प्रचारणी सभा इन्दौर, जो कि इन्दौर राज्य के कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक प्रतिष्ठित संस्था है, उसके आदि जन्मदाता और वर्तमान में सभाध्यक्ष भी आपही हैं। बिखरी हुई कान्यकुब्ज जाति को संगठित करने में और विद्या प्रचार में वैद्यराज जी के नेतृत्व में इस सभा ने अपूर्व काम किये हैं। 'सनातन धर्म रक्षणीय सभा इन्दौर' के भी आपही जन्मदाता हैं, वह सभा इन्दौर में धर्म के संबंध में आजतक कार्य कर रही है। मध्यभारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आप शुरू से ही मूल घटक हैं। मध्यभारतीय खादी प्रदर्शनी इन्दौर के आप सभापति थे। निखिल भारतवर्षीय स्वदेशी प्रदर्शनी इन्दौर १९३३, जिसका कि आयोजन इन्दौर में हुआ था, आप उपसभापति थे। एवं निखिल भारतवर्षीय ग्रामोद्योग प्रदर्शनी के, जिसका कि उद्घाटन महात्मा गांधी के हाथों से सन् १९३५ ईसवी में इन्दौर में हुआ था, उसके भी अध्यक्ष आपही थे। वर्तमान में होलकर सरकार के प्रजा कष्टदायक बिलों को रद्द कराने के लिये प्रजा कष्ट-निवारक मण्डल नाम की संस्था का संगठन करके उसके प्रधान मंत्री होकर प्रजाकष्टों को दूर करने का जबरदस्त कार्य कर रहे हैं। इसमें अंशतः सफलता भी आपको मिल चुकी है। कांग्रेस के राष्ट्रीय कार्यों से भी आपको अच्छी अभिरुचि रहती है। शायद ही ऐसा कोई वर्ष गया हो जिसमें आप उसके वार्षिक अधिवेशनों में न सम्मिलित हुये हों।

इस प्रकार वैद्यराज पंडित ख्यालीराम जी द्विवेदी एक सफल वैद्य होते हुए लोकोपयोगी कार्यों में काफी लगन के साथ अग्रसर रहते हैं। यह वैद्य जगत के लिए गौरव की बात है।

इन्दौर। अश्विनीकुमार शर्मा, वैद्यविशारद



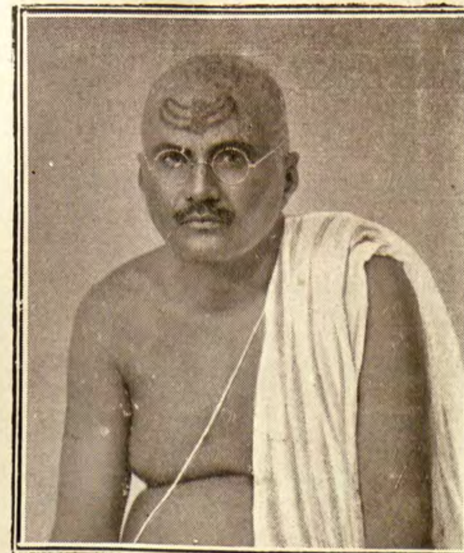
श्रीमान् महाराजा श्री भगवतसिंहजी

जी. सी आई. ई; एम् डी; एल्. एल्. डी; डी सी. एल्.

महाराजा ठाकोर साहेब, गोंडल (काठियावाड)।

'ए शोर्ट हिस्टरी ओफ आर्यन मेडीकल सायन्स,'

'भगवद्गोमंडल' इत्यादि ग्रंथनिर्माता।



श्रीमान राजवैद्य पं. जीवराम कालीदास शास्त्री

गोंडल (काठियावाड)।

संपादक, आयुर्वेदरहस्यार्क (गुजराती मासिकपत्र)।

रसशाला औषधाश्रम के संस्थापक

राजवैद्य जीवराम कालिदास शास्त्री महोदय का

संक्षिप्त जीवनेतिवृत्त।

जिस रसशाला औषधाश्रम का नाम आज जगत् विख्यात हो गया है, उसके संस्थापक और संचालक अनेक ग्रन्थों के कर्ता, अनुवादक, आयुर्वेद रहस्यार्क, पारद आदि मासिक पत्रों के संपादक राजवैद्य जीवराम कालिदास शास्त्रीजी पचीस वर्ष से भी अधिक समय से भारतवर्ष के वैद्य-चिकित्सक-समाज में प्रख्यात हैं। वैद्यराज जी का जन्म औदीच्य सहस्र ब्राह्मण कुटुम्ब में वि० संवत् १९३९ के माघ शुक्ल १० रविवार के दिन जामनगरान्तर्गत मेवासा नामक ग्राम में हुआ था। ८ वर्ष ही की अवस्था में माता-पिता का देहावसान हो जाने के कारण आपने वि० सं० १९५७ तक गोंडल में अपने काका के यहाँ रहकर भिक्षावृत्त से आजीविका चलाई, तथा पूज्य केवलराम लीलाधर जी शास्त्री के पास संस्कृत का संपूर्ण अभ्यास कर शास्त्री की पदवी प्राप्त की। कंटालकर चैत्र संवत् १९६० में आप गिरनार चले गये। वहाँ श्री अम्बा जी के मंदिर में हिमालय के श्री अच्युतानन्द ब्रह्मचारी जी से भेंट हो गई। ब्रह्मचारी जी संस्कृत, आयुर्वेद, मंत्रशास्त्र, योग और अन्य अनेक शास्त्रों में पारंगत थे। लगभग दस मास तक आप इनके साथ रहे। उन्होंने हस्त लिखित आयुर्वेद तथा रसायन-शास्त्र के ग्रन्थ आपको पढ़ाये और बहुत से गूढ़ गुरुभेद बताये, संवत् १९६१ वि० के आश्विन मास में ब्रह्मचारीजी ने अपने पास के हस्तलिखित मंत्रशास्त्र, वैद्यक और रसायन-शास्त्र आदि के ग्रंथ देकर विदा किया। वहाँ से लौट कर आप बम्बई आये और ब्रह्मचारीजी की आज्ञानुसार रस-वैद्य बालाशंकर भाई के पास आयुर्वेद का शेष अभ्यास किया तथा तद्विषयक अनुभव प्राप्त किया। माघ संवत् १९६४ में गुलालवाड़ी में अपना स्वतंत्र औषधालय खोला और इसी समय में रसरत्न-समुच्चय नामक रसायनशास्त्र के गूढ़ तथा क्लिष्ट ग्रंथ का अनुवाद करके छपाया। वैद्यराज के मित्र रावसाहेब पुरुषोत्तम ओधवजी ने आपका राव बहादुर सेठ वसनजी खीमजी का परिचय कराया ये सेठ कुछ उग्र स्वभाव के होने पर भी सत्यवादी, परोपकारी तथा शास्त्र प्रेमी थे। वैद्यराज का आपसे परिचय बढ़ता ही गया। सदैव घंटों तक धर्मशास्त्र, श्रुति, स्मृति, वेदान्त, उपनिषद, महाभारत, वाल्मीकि रामायण आदि की चर्चा चलती रही। साथ ही आयुर्वेद की भी चर्चा हुआ करती थी, जिससे सेठजी को वैद्यक के प्रति भी प्रीति उत्पन्न होने लगी। अतः एक देशी औषधियों का कारखाना खोलने के लिए वैद्यराज ने सेठजी को तैयार कर लिया। सेठजी ने वैद्यराज को दो लाख रुपये देना स्वीकार किया और योजना माँगी। वैद्यराज ने सारी योजना लिख कर बता दी। उसी समय वैद्यराज का अर्श रोग एकाएक बढ़ गया, और शरीर एकदम क्षीण हो गया। अतः आरोग्य होने पर देश ही में रहने का निश्चय किया और "रसशाला औषधाश्रम" नामक संस्था की, संवत् १९६६ की माघ शुक्ला ५ को स्थापना की। उस वक्त

वैद्यराजजी के पास केवल ४०) रुपये रहे थे, परन्तु आपको अटल आत्मविश्वास था। उसी समय आयुर्वेद तथा अन्य विषयों पर वर्तमान पत्रों में वैद्यराज ने जो धारावाही लेख लिखना शुरू किया था, उससे आपने सारे भारतवर्ष का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया था। यह जान कर कि वैद्यराज को रसशाला के हेतु द्रव्य की आवश्यकता है, अनेक स्नेहियों ने मिलकर छः महीने में हजारों रुपये भेज दिये। रुपये प्राप्त होने पर भी इस छोटे से गाँव में कारखाना आगे चलाने में बहुत-सी कठिनाइयाँ सन्मुख उपस्थित थीं। उसी समय दैववशात् अनायास ही गुरु श्री अच्युतानन्दजी मेवासा आ पहुँचे। गुरुजी ने आश्वासन तथा द्रव्य की एक बड़ी रकम देकर शीघ्र ही इस संस्था को गोंडल ले जाकर विधिपूर्वक रसशाला स्थापित करने की आज्ञा दी।

गोंडल में रसशाला औषधाश्रम

वैद्यराज ने गुरु की आज्ञानुसार तुरन्त गोंडल जाने की तैयारी की। गोंडल में आरम्भ में साधारण मकान तथा बाद में सरकारी बंगला भाड़े का ले लिया। किन्तु उसमें स्थान की संकीर्णता होने के कारण छः हजार वर्ग यार्ड जमीन तथा बंगला मोल ले लिया। इसके अनन्तर श्रीमन्त महाराजा श्री भगवतसिंहजी बहादुर, गोंडल नरेश की ओर से बड़ी सहायता मिली। अब रसशाला का प्रथम काम था शास्त्रीय औषधियों को व्यापारी पद्धति से जनसमाज के समक्ष रखना। अतः वैद्यराज ने रसशाला औषधाश्रम के लिये भी प्रारंभ में वैसा ही किया। पश्चात् सूची पत्रों की शैली में बहुत-सा परिवर्तन करना पड़ा।

इस प्रकार से क्रमशः अपूर्णताएँ पूर्ण होती गईं। वैद्यक साहित्य का प्रचार कार्य भी बहुत आगे बढ़ता गया। भारतवर्ष तथा दुनियाँ के बहुत से भागों में रसशाला की ख्याति बढ़ती गई। इस भांति रसशाला की प्रसिद्धि तथा वैद्यराज की आयुर्वेद में निपुणता देख संवत् १९७२ में श्रीमन्त गोंडल नरेश महाराजा श्री भगवतसिंह जी बहादुर ने आपको स्टेट का "राजवैद्य" नियुक्त किया।

रसशाला की ओर से प्रकाशित सूची पत्रों के अतिरिक्त वैद्यक साहित्य के रूप में विविध औषधियाँ बनाने का, विविध रोगों के नष्ट करने का ज्ञान भी दिया जाता है, जिससे रसशाला औषध आदि के द्वारा जनता की जितनी सहायता सेवा कर सकती है, उतनी ही सेवा रसशाला के वैद्यक साहित्य के प्रचार से देहाती जनता की करती है। रसशाला में बनने वाली औषधियों में पड़नेवाली काष्ठौषधियाँ ताजी काम में लाई जाती हैं। निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन के प्रदर्शनों तथा देश में होने वाले विविध प्रदर्शनों में इस कारखाने को सुवर्ण पदक और प्रथम श्रेणी के प्रमाणपत्र प्राप्त होते रहे हैं। रसशाला ने आज तक सब भाषाओं में मिल कर लगभग सात लाख सूचीपत्र प्रकाशित किये हैं। आयुर्वेद रहस्यार्क और पारद मासिक की हजारों प्रतियाँ प्रकट की हैं। रसोद्धार तंत्र (आयुर्वेद उपचार पद्धति) नामक ग्रंथ प्रथमवार संवत् १९६८ में १०० पृष्ठ में छपा था उसी की आज ४०० पृष्ठ की पक्की जिल्द सहित १८ वीं आवृत्ति में ४७ हजार प्रतियाँ छप चुकी हैं। रोग के कारण, चिन्ह, लक्षण, उपचार, घरेलू औषधियाँ बनाने की कृति, आरोग्य रक्षण, प्रसूता स्त्री की सुश्रूषा, शिशुपालन, आयुष्यवृद्धि के प्रयोग, पथ्यापथ्य आदि विवध विषयों का इस ग्रंथ में समावेश किया गया है जिससे केवल इसी एक ग्रंथ के आधार से चाहे जिस स्थान में रहने वाला

मनुष्य विद्वान वैद्य की भाँति बिना भ्रांति पाये ही रोगों को नष्ट कर सकता है और गृहस्थ लोग अपने कुटुम्ब की आरोग्य रक्षा कर सकते हैं। इसके सिवाय राजवैद्य ने वैद्यक, इतिहास, मंत्र शास्त्र आदि विषयों के बहुत से ग्रंथ प्रसिद्ध किये हैं।

औषधों का धर्मार्थ व्यय

आयुर्वेद की आज्ञानुसार राजवैद्यजी ने रसशाला के साथ ही धर्मादा विभाग चालू किया है। उसके द्वारा किसी भी जाति के गरीब आदमियों को मुफ्त औषधि दी जाती है। भारतवर्ष में धर्मादे में दवा देने वाले पारमार्थिक औषधालयों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। आप बड़ेही सुयोग्य और यशस्वी वैद्य हैं।

स्वर्गीय श्री० श्रीकृष्णराम भट्टमहाभागानां

जीवनेतिवृत्तम् ।

आसीन्मेदपाटीयभट्टा–(भट्टमेवाड़ा)–ह्वजातीयो महीसुप्रवरः पण्डितप्रकाण्ड आयुर्वेदागमप्रवीणः 'कुन्दनजी'त्युपनामकः श्रीजीवरामभट्टः । यः खलु जयपुरराजकीय—संस्कृतपाठशालायाःप्रारम्भे जयपुरपुरन्दरेण श्रीरामसिंहमहाभागेन सादरं समर्पितमायुर्वेदविद्यायाः प्रथमाध्यापकपदमतितरामलञ्चकार । तस्य तनयद्वये ज्येष्ठः सर्वविधगुणगणैर्जयपुरजनतायाः परमप्रेष्ठश्च पण्डितश्रेष्ठः श्रीश्रीकृष्णरामशर्मा भिषग्रत्नमभूत् । जीवनरामशर्मणः क्रमशः परिणीते पत्नीद्वये प्रथमायामेव कुशाग्रधिषणः पञ्चोत्तरैकोनविंशतिशततमे विक्रमवत्सरे कृष्णजन्माष्टम्यां जन्म लेभे । अस्यैव च वैमात्रेयः कविमल्लश्रीहरिवल्लभशर्माऽसीत्, येन 'जयपुरपञ्चरङ्ग' प्रभृतयोऽनेके काव्यप्रबन्धा निरमीयन्त ।

बाल्य एवासौ मेधावी स्वपितुरेव समधिगतव्याकरणायुर्वेदाद्यागमः सुप्रसिद्धगुरूपनाम्नः श्रीजीवनाथशास्त्रिणः साहित्यशास्त्रम्, आयुर्वेदमार्तण्ड श्रीलक्ष्मीरामस्वामिनां दीक्षागुरोः श्रीचन्दनदाससाधुतश्च छन्दःशास्त्रमधिगतवान् । तदेतत् तेन स्वयमेव प्रत्यपाद्यत सर्वेष्वपि स्वप्रणीतप्रबन्धेषु । तथा हि—

"येनाऽशिक्षि स जीवनाथगुरुतः काव्यप्रकाशाशय-
श्छन्दश्चन्दनदासतः सगणितं, वैद्यागमस्तातत: ।
सूते गन्धकजारणावधि कृता येन क्रिया नैकशः
सोऽहं नूतनकाव्यपञ्चककृतिः श्रीकृष्णरामः कविः ॥"

ततश्च लब्धसर्वविधविद्यो द्वात्रिंशदुत्तरैकोनविंशतिशततमे विक्रमवर्षे स्वपितृपरम्परया प्राप्तं संस्कृतपाठशालायामध्यापकपदमुररीकृतवान्, अध्यापितवांश्च चिकित्सकचूडामणिं श्रीश्यामलालवैद्यराजमहोदयम्, श्रीलक्ष्मीरामस्वामिमहाभागम्, तथाविधानपरांश्च महायशसः स्वशिष्यान् । काव्यायुर्वेदोभयाध्यापनविषये तस्यातीव प्रावीण्यमासीदित्यद्यापि संगिरन्त एव तदीया अन्तेवासिनः । तारस्वरसंपन्न एष महात्मा यदाऽध्यापति स्म, तदा सर्वाऽपि पाठशाला तदीयेन स्वनेन परिपूर्यते स्मेत्यपि श्रूयते ।

सोऽयं भिषग्वरः श्रीजयपुरमहीपतेर्लब्धग्रामस्य स्वपितुर्धनसम्पदमुपभुञ्जानः सर्वविधसौख्यसम्पन्नः, अत एवादीनस्वभावः सुतरां विलासी चासीत् । तदेवंविधगुणगणरमणीयायामत एवात्युर्वराग्रामस्य नैसर्गिकप्रतिभापृथिव्यां सहृदयहृदयाह्लादिनी कविताल्ता तथा कुसुमिता बभूव, यथा सर्वोऽपि भारतभूमिभागः सुधीजनसुरभिणा सौरभेण संप्रत्यपि सुतरामामोदमानमानसो भवति ।

एवंविधस्य कवेर्हृदयं कवितायां प्रतिविम्बितं भवतीति तत्प्रणीतकाव्येभ्यः कानिचिद्



राजवैद्य स्वर्गीय पं० कृष्णरामजी भट्ट, जयपुर।

रुचिररुचिराणि पद्यानीहोद्धरामः, ; यैर्विद्वांसः स्वयमेव तत्स्वभावादीन् परीक्षेरन् कविताऽमृतं चाऽऽस्वादयेयुः । तथाहि —

'कच्छवंश'महाकाव्ये स कविः समित्चमत्कृतिमोजोभिव्यञ्जिकया कीदृश्या रचनया वर्णयति स्मेति निरीक्ष्यताम्—

अलं ज्वलत्खड्गघटाभ्कलत्कृतिः स्रवत्स्रवच्छोणितसिक्तपद्धतिः ।
समुच्छलत्कच्छविमुक्तहुङ्कृतिः प्रचण्डतां प्राप समिच्चमत्कृतिः ॥
सप्तमसर्गः १२९

एवमेव मानसिंहमहीपतेर्युद्धोपक्रमे प्रतिनृपतिं प्रति वाग्आरम्भवर्णनमप्यमुं गुणं कीदृगभिव्यञ्जयतीत्यपि परीक्ष्यताम्—

रोषपोषवशाद् बद्धभ्रुकुटिर्माधवाग्रजः ।
खड्गमुष्टौ दधन्मुष्टिं स्पष्टमित्थमुवाच तम् ॥ सप्तमसर्गः ११२

तस्मिन्नेव काव्ये जयपुरवर्णनेऽनुप्रासोत्प्रेक्षोदात्तस्वभावोक्तीनां प्रसादगुणस्य च चमत्कारोऽपि विलोक्यताम्—

प्रांशुप्राकारधवलकेतुचीनांशुकाञ्चलैः ।
कुर्वाणमिव मेघेषु बलाकावलिवल्गनम् ॥
सदोपकण्ठवलितवनमालामनोरमम् ।
गोविन्दमन्दिरोद्द्योतं विडम्बयदिव स्फुरत् ॥ दशमसर्गः ८१४-३५
मरन्दलुब्धमधुपश्यामीकृततरूत्तराः ।
दधत् प्राकारमभितः पुष्पवाटीपरम्पराः ॥ दशमसर्गः ८३७

'मुक्तकमुक्तावल्यां' कविनाऽनेन प्रावृषो रजकीरूपणं कीदृग् व्यधीयतेत्यपि श्रूयताम्—

चञ्चलविद्युद्वलया विरचितघनकृत्तिपात्रजलसेका ।
प्रावृड्रजकी परितः प्रक्षालनमम्बरस्य विदधाति ॥

(तत्रैव) प्रावृष्यप्यवग्रहमवलोक्य कविना कीदृक् तन्निदानमन्विष्टमित्यप्यवलोक्यताम्—

पापं केऽपि जगुः, निदानमनलं प्राहुः परे मारुतं
नक्षत्रं कतिचिज्जजल्पुरितरे दुर्दैवमूचुर्नृणाम् ।
यत्तु प्रावृषि वैपरीत्यमधुना लोके समुज्जृम्भते
तत्सुप्ते जगदीश्वरे जलमुचामन्याय उन्नीयते ॥

अस्य कवेः सर्वाण्यपि फलान्यतिशय्य रसालफले भूयानासीदनुरागः, तत्तत्पक्षपातमालम्ब्य कथमभिभावितानीतराणि फलानीत्यप्यवेक्ष्यताम्—

श्रुत्वा चूत, तव श्रियं भुवि धृतो जम्ब्वा रुषा कालिमा
कालिङ्गं त्रपयेव लीनमवनौ दीर्णं शुचा दाडिमम् ।
मृद्वीका मृदुतां दधार, पनसं रोमाञ्चितं भीतितः,
संतापादिव नारिकेलजठरे जातं जलानां भरैः ॥

व्रजभाषायां 'कवित्त' इति प्रसिद्धेन च्छन्दसा संस्कृतभाषायां वर्णनमनेनैव कविनोपक्रान्तम् । कीदृग्विधैश्च प्रसादपूर्णैः पदैर्जयनगरनरेन्द्रः श्रीरामसिंहोऽत्र वर्णित इत्यप्यवलोक्यताम्—

सूत, रथमेहि देहि बाणगणमाशु मे हि मित्र धृतिमत्र धेहि संगरमहामहे।
वर्म कुत्र, चर्म कुत्र, भयं वृथा मास्म कृथाः, छिन्धि भिन्धि धाव धाव सहे नास्य नाम हे ॥
इति स्फुटं भवद्द्विषां शैलगुहाश्वापजुषां, विलापयुग् वचो वयं समुपलभामहे।
वैरिकुलवृन्दकाल, चन्द्रसितकीर्तिजाल, कण्ठलोलरत्नमाल, महीपाल, राम हे ॥

एवमेव 'दोहा' च्छन्दसाऽपि मधुरविशदैः पदैः श्रीगङ्गाजलवर्णनमाकर्ण्यताम्—

शिवशेखरशशिचन्द्रिकासंचयचारुमहांसि।
ददतु मुदं मन्दाकिनीतरलतरङ्गपयांसि ॥

अनेनैव च्छंदसा हरेर्हृदयस्थल-वीक्षितयोर्वर्णनमप्यवेक्ष्यताम्—

कमलामलमनुरागि बहु करुणारसपरिणामि।
हृदयस्थलमिव वीक्षितं हरेरहं प्रणमामि ॥

यश्चास्य यमकादिष्वप्यधिकार आसीत्, स हि जयपुर-विलासा' दिषु स्थाने—स्थाने, विशेषतस्तु 'जयपुरविलास' स्य प्रथमोल्लासे, स्पष्टमेवावलोक्यते, विस्तरभिया तु तदुदाहरणानीह नोद्ध्रियन्ते। तद्दर्शनाभिलाषुकैस्त एव ग्रन्था द्रष्टव्याः।

सेयं दिगुपदर्शिता। अतः परमनेन कविना यानि काव्यानि निरमीयन्त, तेषु कतिचन चमत्कृतिचारुण्यकरादिक्रमेण सविषयवर्णनमधस्तादुपन्यस्यन्ते। तथा हि—

१—आर्यालङ्कारशतकम्—अत्र भगवत्याः स्तुतिः प्रतिश्लोकमेकैकेनालङ्कारेण वर्णिताऽस्ति। अप्रकाशितम्।

२—कच्छवंशमहाकाव्यम्—अस्मिन्नासन्नविंशैः सर्गैः सुरुचिरैरनुष्टुप्प्रधानैर्वृत्तैर्जयनगरनरेन्द्रवंशावलीवर्णनमस्ति। परमेतदिदानीं यावन्न केनापि प्राकाश्यत। अत्र चानेन कविना भूयः परिश्रम्य कुतश्चिल्लब्धानि न केवलं जयपुरनरेशानामेव, किन्तु यवनसम्राजामपि जन्मपत्राणि वर्णितानि सन्ति। तदिदं प्रकाशितं सन्न केवलं साहित्यविदाम्, अपि त्वैतिहासिकानामपि केषुचन विषयेषूपकारि स्यादित्यस्ति नो विश्वासः।

३—काव्यमालाप्रशस्तिः—इदमल्पीयः काव्यं 'काव्यमाला' नाम्न्याः पुस्तकमालायाः प्रशंसायामलिख्यत। मुद्रितं चैतत् 'काव्यमालायां' 'मुक्तकमुक्तावल्यां' च।

४—काशीनाथस्तवः—अत्र भगवतः शिवस्य, काशीनाथनाम्नः कस्यचन द्रविपण्डितस्य च श्लेषेण वर्णनमस्ति। अप्रकाशितम्।

५—गप्पसमाधानम्—अत्र काश्चन प्रहेलिकास्तथोपन्यस्ताः सन्ति, याः प्रेक्ष्य मतिर्दोलायेत्, परं समाधानमतीव सरलं स्यात्। अप्रकाशितम्।

६—गोपालगीतम्—गोपालस्तुतिरत्र वर्णिता। अप्रकाशितम्।

७—गोविन्दभट्टभङ्गम्—इदमल्पीयः काव्यं दायभागादौ विगृह्णतः स्वपितृव्यस्य निन्दायां विलिख्य कविनैव प्रकाशितमासीत्। एतेनास्य प्रतिवादिभयङ्करत्वमुच्छृङ्खलत्वं च प्रतीयते, परं नात्युपयोगि।

८—छन्दोगणितम्—अत्र प्रस्तारादिषट्क्रियासहितानां सर्वविधवृत्तानां विशिष्टं वर्णनमस्ति। अप्रकाशितम्।

९—जयपुरमेलककुतुकम्—अत्र काव्ये जयपुरे विजयदशम्यादिषु यानि मेलकानि (मेला) भवन्ति, तेषां सामयिकं वर्णनमस्ति। अस्य कोऽप्यंशः सिद्धभेषजमणिमालायाममुद्र्यत।

१०—जयपुरविलासम्—तदेतत् सुप्रसिद्धं तेनैव कविना प्रकाशितं च काव्यं न परिचयमपेक्षते, परमिदानीं वीतपुस्तकतया पुनर्मुद्रणमपेक्षते।

११—पलाण्डुराजशतकम्—इह पलाण्डोर्दिग्विजयस्य तथा वर्णनमस्ति यथा तत् साहित्यविदां सुखदं भिषजां चोपयुक्तं स्यात्।

१२—माधवपाणिग्रहोत्सवः—इह तदानीन्तनस्य जदनगरनरेन्द्रस्य श्रीमाधवसिंहस्य जयपुर एवाऽऽनीतया सूर्यया साकं विवाहोत्सवस्य वर्णनमस्ति।

१३—मुक्तकमुक्तावली—अत्र कविना स्वीयानि सुन्दरसुन्दराणि मुक्तकपद्यानि संगृहीतानि सन्ति। सैषा जयपुरविलासेन सह संमुद्रिताऽस्ति।

१४—सम्राट्सुताभिनन्दनम्—अत्र 'प्रिन्स आफ वेल्स' संज्ञया भारते समायातस्य सम्राड्जार्जमहोदयस्य वर्णनमस्ति।

१५—सारशतकम्—इह 'रघुवंशा'दीनां पञ्चमहाकाव्यानां शार्दूलविक्रीडितच्छन्दसा प्रतिश्लोकमेकैकसर्गकथावर्णनमस्ति। एतदपि जयपुरविलासेन सह मुद्रितम्।

१६—सिद्धभेषजमणिमाला—अत्र वैद्यवरेणानेन स्वानुभूतानि प्राक्तनग्रन्थेष्वनुपलभ्यमानानि भूयांस्यौषधानि संगृहीतानि सन्ति, यानि भिषजामतीवोपयोगीनि। विप्रकीर्णोऽयं संग्रहस्तन्निधनानन्तरं तत्प्रियशिष्येण श्रीलक्ष्मीरामस्वामिना संपाद्य टिप्पण्या च संयोज्य प्रकाशितस्तज्जिज्ञासूनामुपकरोतीति न तिरोहितम्। सैषा द्वितीयावृत्तौ मुद्रिता जयपुरराजकीयाचार्यपरीक्षायां पाठ्यत्वेन नियताऽस्ति।

१७—होलोत्सवः—अत्र होलासमयसमुचितानि कानिचिदश्लीलवर्णनपराणि पद्यानि सन्ति।

अयं महाभागो भङ्गाभक्तो विचारशीलः परमरसिकश्चासीत्। निधनात् किञ्चित् पूर्वमेवैतेन महाभागेन संस्कृतचिकित्सालयः समुदघाट्यत, नानाविधैरमोघैरौषधैरचिकित्स्यन्त जनाः। आयुर्वेदप्रसिद्धायां रसप्रक्रियायामस्य महाकवेर्महन्नैपुण्यमासीत्। सर्वेऽपि च रसा अनेन निजहस्तेन निरमीयन्तेत्यपि तदन्तेवासिवृन्दमुखाच्छ्रूयते। प्राचीनपुस्तकसंग्रहेऽप्यासीदस्य महाननुरागः। अत एव यान्यायुर्वेदादिपुस्तकान्यन्यत्र नोपलभ्यन्ते, तान्यप्यस्य गृहे साधु संगृहीतानि विहितानुक्रमणानि चासन्। संप्रति तु तेषां का दशेति कः कथयतु।

इदानीमस्य वंशे तत्तुल्यगुणगणस्य दैवादकालमृत्युं प्राप्तवतस्तत्तनयस्य पण्डितप्रकाण्डश्रीगङ्गाधरभट्टस्य सूनुश्रीनरहरिशर्मा सुतादिसौख्यमनुभवन्नस्ति। अनेनैव महात्मना आयुर्वेदाचार्यश्रीनन्दकिशोरशर्मसु विश्वस्य 'कच्छवंश' महाकाव्यमदर्श्यत।

हा हन्त स एव कविकुलरत्नमायुर्वेदागमपारावारीणश्चतुःपञ्चाशदुत्तरैकोनविंशतिशततमे विक्रमवत्सरे वैशाखकृष्णप्रतिपदि ऊनपञ्चाशवर्ष एव करालेन कालेन कीर्तिशेषतां नीत इति भूयस्यो विचारपरम्परास्तेनैव सहालीयन्तेति खिद्यमानमानसा वयं विरमामो विस्तरात्।

राजवैद्य पं० नन्दकिशोरशर्मणामायुर्वेदाचार्याणां

संक्षिप्तं जीवनवृत्तम् ।

एते श्रीमन्तः खाण्डलविप्रवंशावतंसानां जयपुरे सुप्रतिष्ठितानां दिवं गतानां राजवैद्य-श्यामलालभिषक्चूडामणीनां ज्येष्ठपुत्राः जयपुरनगरमलङ्कुर्वन्ति । एते बाल्यकालिकशिक्षां प्राप्यानन्तरं स्वपितृणामाज्ञया सुविदुषामन्तेवासित्वमाधिगत्य व्याकरणसाहित्यादियोग्यतां सम्यगधिगतवन्तः । अनन्तरं कुलपरम्परागतायाः स्वभवने बोभूयमानाया आयुर्वेदीयचिकित्साया भारं दित्सुभिः स्वपितृभिर्नियोजिता एते जयपुरीयसंस्कृत-विद्यालये आयुर्वेदाध्ययनं प्रारब्धवन्तः । वर्षद्वयेन च भट्टवर-श्रीकृष्णरामात्मजानां गङ्गाधरशर्मणामन्तेवासित्वावसरे आयुर्वेदोपाध्याय-परीक्षामुत्तीर्णवन्तः । अनन्तरमुच्चशिक्षां ग्रहीतुमनसः श्रीमतां पूज्यपादानां स्वामिनां सेवां विदधाना यथानियमं क्रमश आयुर्वेदशास्त्राचार्यपरीक्षे सबहुमानमुदतरन् । किञ्च भेषजनिर्माण-रोगिदर्शनादिप्रायोगिककार्यमपि श्रीस्वामिनां गृहचिकित्सालये स्वभ्यस्तवन्तः । एवमेते तेष्वेव दिवसेषु शास्त्रिपरीक्षोत्तीर्णा अपि प्रायोगिकशिक्षाकुशलाः सुप्रतिष्ठितविद्वत्समाजे सुबहुसमादृता अभवन् । एतेषां योग्यतामुग्धा महामनसः श्रीमन्तः पं० मदनमोहनमालवीया हिन्दूविश्वविद्यालये वाराणस्यामायुर्वेदाध्यापकत्वेन नियुक्तवन्त एनान् । तत्र चैभिः कियान् कालः शिक्षादाने व्यतिगमितः । अनन्तरं गृहे चिकित्साभारं दित्सुभिः स्वपितृभिरेते तत्स्थानतः पुनराहूताः । ततश्च सुविशाले स्वचिकित्सालय एव रोगिनैरोग्यसम्पादने प्रावीण्यं प्राप्तवन्तः । अथ च १९८१ वैक्रमाब्दे जयपुरीयसंस्कृतपाठशालायामायुर्वेदविभागे द्वितीयाध्यापका अभवन् । तत्र च नव-वर्षपर्यन्तमध्यापयन्तो बहून् छात्रान् उपाध्याय-परीक्षामुत्तारितवन्तो बहूंश्च शास्त्रिकक्षापाठ्य-मध्यापितवन्तः । गतवत्सरे च श्रीस्वामिनामध्यापनकृत्यतो विरामग्रहणानन्तरमेते विशिष्टयोग्यतया तेषां स्थाने आयुर्वेदप्रधानाध्यापका अभवन् । इदानीं तस्मिन्नेव पदे विराजमानाश्चिकित्सा-कर्मणि वृद्धिमादधते ।

एते महानुभावा आधुनिकानां जयपुरीयवैद्यानां मध्ये प्रतिष्ठिता उत्तमकुलीनाः ग्राम-त्रयस्य स्वामिनः उच्चनागरिकाणामग्रगण्याश्च सन्ति । चिकित्साप्रसारोऽप्याधिक्येनैषां राज्ञां सामन्तराजानां च गृहेष्वेव वर्तते । तथापि स्वभावतः सरला दयालवोऽनुत्सेकिनो नम्राश्च सन्तीत्येते धन्या मान्या आयुर्वेदस्य शिर उन्नमयितारश्च सन्ति । विशेषत एते पूज्यपादानां श्रीस्वामिनां कृपापात्रतल्लजाः । अहर्निशं श्रीस्वामिनामाज्ञा पवित्रयति हृदयमेषाम् । रोगिदर्शनादिकर्मणि बहुत्र श्रीस्वामिभिः सह भ्रमणावसरो लभ्यत एभिः । सामयिकीं गुणवैशेष्यापादनीं शिक्षामपि प्रतिदिनं यथावसरं श्रीस्वामिन एभ्यो वितरन्ति । एवमेषामुपरि श्रीस्वामिनां पूर्णः स्नेह आस्ते । एतेऽपि भक्त्यतिशयेन सेवन्ते श्रीस्वामिनः । तेषामन्तरङ्गेषु कार्येष्वपि प्रबन्धका भवन्तीत्यन्तरङ्गाः शिष्याः श्रीस्वामिनामिमे ।

जयपुर संस्कृत कालेजके आयुर्वेदविभागके अध्यापकवर्ग.



बांई ओरसे क्रमशः–१ भिषगाचार्य श्रीनिरञ्जनलालजी, २ डॉ. रायबहादुरजी M. B. B. S, ३ मुकुन्ददेवजी भिषग्रत्न, ४ श्री. पं. नन्दकिशोरजी राजवैद्य, ५ श्री स्वामी जयरामदासजी, ६ श्री आनन्दीलालजी आयुर्वेदाचार्य, ७ श्री डॉ. ज्वालाप्रसादजी, ८ श्री कल्याणप्रसादजी भिषगाचार्य.



चिकित्सकचूड़ामणि श्रीमान् पं० श्यामलालजी भट्ट, जयपुर।

चिकित्सकचूडामणि श्रीश्यामलालमहोदयस्य

जीवनेतिवृत्तम् ।

स एष महाभागो जयपुरादनतिदूरवर्तिनि जयपुरराजकीयप्रधानसामन्तराजधान्यां चौमूनगरे पञ्चविंशत्युत्तरैकोनविंशतिशततमे विक्रमवत्सरे सहस्ये मास्यसितषष्ठ्यां शनिवासरे निखिलजनमनोरञ्जनीं जनिमुपलेभे । ततोऽष्टवर्ष एव च जयपुरीयराजवैद्यानां चिकित्साकर्मणि सुप्रसिद्धयशसां तात्कालिकजयपुरनरपतिना समस्तसामन्तसमूहेन च संमानितानामानन्दीलालजीमहोदयानां 'ज्येष्ठे सर्वगुणैः कनीयसि वयोमात्रेणे'-त्युक्तिं चरितार्थयतोऽनुजन्मनः सुगृहीतनामधेयस्य श्रीसुखलालजीमहाभागस्य दत्तकसूनुतामुपगतः । किन्तु दुर्दैववशादल्प एव वयसि दिवंगते तस्मिन्नानन्दीलालजीमहाभागैरेवायं पालितः पोषितः शिक्षितः कार्यक्षेत्रे प्रवेशितश्च ।

अर्थलिप्सायामदैन्यम्, अध्ययने धियः कुशाग्रता, सद्य एव पृष्टस्य प्रतिवचनं चेत्यादिभिरव्यभिचारिभिर्लिङ्गैर्बाल्य एवास्य मेधावित्वं भाग्यशालित्वं चान्वमीयतानुभविभिः । अन्तेवासिभावेऽयमासीद् गुरुजनस्य निरतिशयं कृपाभाजनम् । कैशोर एव च भट्टश्रीकृष्णराममहाभागानामन्तेवासिषु प्रथमतामुपगत्यायुर्वेदशास्त्रं यथाविधि समधिगतवान् ।

आनुवंशिकत्वाच्चास्य चिकित्साकर्मणि नितरां नैपुण्यमासीत्, न चास्य केवलमायुर्वेदीयचिकित्सापद्धतावेव तदासीत्, किन्तु यावन्यामस्यामप्यासीदप्रतिमं पाटवम् । नानाविधानामनुभूतयोगानामयं निधिरिवासीत् । सर्वजनोपकारकान् स्वल्पमूल्यलभ्यान् योगानेष तथा प्रयोजयतिस्म यथा वैद्यानां यवनवैद्यानां च चकितमिव भवति चेतः । अरिष्टज्ञाने चास्य परमं प्रावीण्यमासीत् । भूतपूर्वस्य जयपुरनरपतेः श्रीमाधवसिंहमहाराजस्यायमनितरसाधारणैःस्वगुणैः परमप्रेमास्पदतामयासीत् । वर्तमानस्य कृष्णगढनरपतेः श्रीयज्ञनारायणसिंहमहाराजस्य मातुरारोग्यमनेन संपादितम्, आसीच्च तस्य संमाननीयो गृहचिकित्सकोऽप्ययम् । समये समये स एष महाभागः समाकारयत्, सदकरोच्चैनम्, प्राकाशयच्चास्य देहावसाने स्वीयं हार्दिकशोकमस्य पुत्रेषु प्रहिते स्वकीये पत्रे । अलवरराज्यान्तर्गतजावलीसंस्थानाधिपतिरलवरराजस्य भूतपूर्वः प्रधानमन्त्री च क्षत्रियकुलभूषणं श्रीदुर्जनसिंहजीमहोदयोऽस्य गुणेष्वतीवानुरक्त आसीत् । आसीच्चानयोरन्योन्यमसाधारणं सौहार्दम् । अस्य वैकुण्ठवासावसरे राजवरेण तेन न केवलं शोकप्रकाशकं पत्रमेव पुत्रेषु प्रहितम्, किन्तु स्वयमपि सदने समागत्य सान्त्वयामास सर्वान् संबन्धिनः ।

दूर-दूरदेशेष्वप्यासीदस्य महती प्रसिद्धिः । धनिकैरामयाविभिराहूतस्तत्र तत्र प्रायादपि । सर्वस्मिन्नपि भारते विश्रुतयशसः सौजन्यजन्मभूमेरसाधारणकमलाविलासवसतेर्जबलपुरवास्तव्यस्य राजोपपदभाजः श्रेष्ठिवर्यश्रीगोकुलदासमहाभागस्याऽयं कुटुम्बिजनेभ्योऽप्यधिकसंमानित आसीत् । सत्स्वपि परश्शतेष्वाङ्गलभिषक्षु कृपाकटाक्षलेशमपेक्षमाणेष्वयमेवासीत् तस्य निरतिशयश्रद्धाभाजनम् । आसीच्च भगवत्कृपया प्रायः सर्वदैव महाभयङ्करेष्वपि व्याधिष्वेतेन चिकित्स्यमानेषु साफल्यम् ।

सामन्तसंघे, उच्चपदस्थितेषु कर्मचारिषु चास्य सुमहानादर आसीत्, ते हि यथाऽस्मिन् विश्वसन्तिस्म न तथान्यस्मिन् कस्मिंश्चिदपि। जयपुरीयदीनजनतायास्त्वयमाश्रय एवासीत्, सर्वानपि भिषजो विहाय सैषैनं श्रयतेस्म, उत्प्रेक्षतेस्म च तस्य वैकुण्ठवाससमये स्वात्मानमाश्रयशून्यमिव। चिकित्साकर्मणि सर्वदा तत्परोऽप्ययमस्यां विंशति शताब्द्यामप्यार्षपद्धतिमनुरुन्धानो नासीद्विशेषतो लोभलालसावशगः। सर्वलोकहितमवेक्षमाणेनानेन धन्वन्तर्यौषधालयस्थापनायां सर्वतोऽधिकं परिश्रान्तम्, सर्वविधं साफल्यं चाधिगतमनितरसाधारणेन स्वानुभावेन। स्थापत्यमर्मज्ञस्यास्य भवननिर्माणकलायां सुमहाननुराग आसीत्। सर्वविधदोषविहीनता, उदारता, कार्यतत्परता, सौम्यं सरलता चेत्यादिभिर्गुणैरयमासीत् सर्वजनमनोहरः। एकवारमपि संगतो जनोऽस्य सहृदयताभव्या व्यवहृत्या सुमधुरया व्याहृत्या चाकृष्टो मन्त्रमुग्ध इव यावज्जीवमस्मिन्नन्वरज्यत।

अस्य चिकित्साकर्म संमानतया निखिलभारतवर्षीयायुर्वेदसंमेलनेनास्मै 'चिकित्सक चूडामणिः' इत्युपाधिरुपाह्रियत।

श्रीमद्भागवतस्यायं मार्मिको रसज्ञः, भगवद्भक्तानामग्रणीः, वैष्णववरेण्यः, स्वधर्मे सुदृढबद्धश्रद्धश्चासीत्। चिकित्साकर्मणा परिहृतावकाशोऽप्ययं यत्र-तत्र भगवत्कथा यत्र-तत्र च सनातनधर्मस्य चर्चा, तत्र-तत्र सर्वतः प्रथमं समुपस्थितोऽदृश्यत। एतस्य कतिचन गुणाः संक्षिप्य 'उपवनप्रशस्तौ' एवमुपश्लोकिताः—

* एतस्य सत्यसुहृदा सहृदा सदा सत्कार्येषु दर्शितसमग्रसमुद्यमेन।
भैषज्यभर्जितरुजा जयपत्तनीयभूपालवंशभिषजा भगवत्परेण॥
सर्वत्र विश्रुतचिकित्सकवर्यचूडामण्याह्वयेन मदमानविवर्जितेन।
श्रीश्यामलालसुधिया चिरचिन्तनीयं साहाय्यमत्र विहितं विमलान्तरेण॥'

सोऽयं महाभागो जयपुरीयां दीनजनतां सहस्रधारैरश्रुभिरात्मनो वियोगासहिष्णुतां व्यञ्जयन्तीं विसृज्याष्टाशीत्युत्तरैकोनविंशतिशततमे विक्रमवत्सरे सहस्यशुक्लचतुर्दश्यां वैकुण्ठवाससुखानुभवाय भुवमुदत्याक्षीत्।

महाभागोऽयं स्वस्य देहावसानसमये पुत्रत्रयं पौत्रपञ्चकं च व्यसृजत्। पुत्रेष्वस्य वयसा गुणगणैश्च सर्वप्रथमो भिषगाचार्यः श्रीनन्दकिशोरशर्मा विद्यते, यः श्रीस्वामिमहाभागानां स्थाने जयपुरराजकीय पाठशालायामायुर्वेदप्रधानाध्यापकपदमधितिष्ठति, सारल्येन, सर्वजनोपकारितया चानन्यसाधारणतामावहन् जयपुरीयजनतायां सामन्तेषु च निजगौरवोचितं संमानमुपलभते। कनिष्ठश्च श्रीयुगलकिशोरशर्मा एम्० ए० महाशयो जयपुरराज्यान्तर्वर्तिसंस्कृतपाठशालानां निरीक्षकतां (Supervisor) भजते।

---

* श्रीलक्ष्मीरामस्वामिनः।



श्रीमान् कविराज श्रीरामचंद्र मल्लिक ।

प्रिन्सिपल–श्रीगोविन्दसुन्दरी आयुर्वेदकालेज **कलकत्ता** ।

काव्यतीर्थ पं० श्री श्रीकान्त शर्मा वैद्यरत्न,

वि० प्रा० वै० सं० के मन्त्री का

संक्षिप्त जीवनचरित।

आपका जन्म वि० सं० १९४१ में विहार प्रान्तीय गया जिलान्तर्गत दौलतपुर ग्राम में प्रतिष्ठित विद्वान् सरयूपारीण ब्राह्मण कुल में हुआ है। बाल्यावस्था में आपने थोड़ी हिन्दी और फारसी पढ़ने के बाद संस्कृत का अध्ययन आरम्भ किया। व्याकरण तथा साहित्य की आचार्य परीक्षा तक ग्रन्थों का अध्ययन कर व्याकरण की मध्यमा और साहित्य की उपाधि परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। गवर्नमेण्ट से "काव्य-तीर्थ" की उपाधि प्राप्त की। अनन्तर गया जिलान्तर्गत जहानाबाद संस्कृत विद्यालय में ६ वर्ष तक व्याकरण-साहित्य आदि विषयों का अध्ययन किया। बाद अपने गुरुदेव की आज्ञा से आयुर्वेद पढ़ने के लिए काशी गये। वहाँ चार वर्ष तक रहकर स्वर्गीय कविराज पं० उमाचरण जी भट्टाचार्य, कविरत्न जी से साङ्गोपाङ्ग आयुर्वेदशास्त्र का अध्ययन तथा कर्माभ्यास सम्पन्न कर वैद्यशास्त्री की उपाधि प्राप्त की। पश्चात् आपने मगधदेश की राजधानी अमावां में राजवैद्य के पद के ऊपर रहकर ६ वर्ष तक कार्य सम्पादन किया। बाद १९२१ में जब असहयोग आन्दोलन जोरों पर था। देश सेवा के ख्याल से इस्तीफा देकर आप पटना आ गये। और स्वतन्त्र आयुर्वेदिक कार्यालय खोलकर आयुर्वेद का प्रचार तथा जनता की यथोचित सेवा करने लगे। तब से आप पटने में विराजमान हैं, नगर के प्रधान वैद्यों में आपकी गणना है। आपके कितने शिष्य विहार के बाहर भी सफलता के साथ चिकित्सा कार्य कर रहे हैं। आप संस्कृत एसोसियेशन विहार एण्ड उड़ीसा के बराबर प्राश्निक और परीक्षक होते आये हैं। प्रान्तीय वैद्यसम्मेलन के बहुत वर्षों से मन्त्री हैं, आयुर्वेद महामण्डल और विद्यापीठ की कार्य-कारिणी समिति के बराबर आप सदस्य रहे हैं। वि० प्रा० वै० संम्मेलन त्रैमासिक पत्रिका के आप अन्यतम सम्पादक हैं। विहार में जो आयुर्वेद का प्रचार हो रहा है उसमें सदैव आपका मुख्य भाग रहता है। सार्वजनिक संस्थायें जैसे कांग्रेस हिन्दू सभा प्रभृति में भी आपका सहयोग हमेशा रहता है। आप व्याकरण साहित्य और आयुर्वेद के सुयोग्य अध्यापक हैं। बहुत दूर दूर के छात्रगण आपसे अध्ययन के निमित्त आते हैं, आप स्पष्ट और मधुर भाषी हैं। आप सदैव न्याय के पक्षपाती रहते हैं। यही कारण है कि सिद्धान्तों में मतभेद होने के कारण जो आपके विरोधी होते हैं, वे भी आप पर विश्वास रखते हैं और परिस्थिति बदलने पर तत्काल आप के अनुयायी हो जाते हैं। आपकी प्रशंसनीय आयुर्वेद सेवा के उपलक्ष्य में प्रान्तीय वैद्यसम्मेलन ने आपको "वैद्यरत्न" की उपाधि दी है। आपको पटना रहते हुए १५ वर्ष हो गये, आपकी अवस्था सम्प्रति ५२ वर्ष की है। आशा है, समाज के सौभाग्य से आप दीर्घायुष्य का उपभोग कर सकेंगे।

इति संक्षेपतो वृत्तं जीवनस्य महात्मनः।
गुरोः कल्याणकृन्मत्वा लिखितं रामधारिणा॥

ग्रंथकार

आयुर्वेद महामण्डल के रजत-जयन्ती ग्रंथ के विषय में जिस समय से उसकी सामग्री-संग्रह करने का उपक्रम मैंने किया, तभी से आयुर्वेदिक ग्रंथकारों का परिचय संग्रह करने की मैंने अत्यधिक चेष्टा की; अनेक पत्र लोगों की सेवा में भेजे; किन्तु प्रथम भाग के प्रकाशन तक कुछ भी सामग्री उपलब्ध न हो सकी। सोचा द्वितीय भाग में यह सामग्री दे दी जावेगी; लेकिन इसबार भी चेष्टा करने पर असफल प्रयास ही रहा। अन्ततः द्वितीय भाग के प्रकाशन का समय आ गया और सम्पूर्ण मैटर छप चुका, अब हताश होकर जो कुछ उपलब्ध है, उसे ही देकर संतोष कर रहा हूँ।

प्राणाचार्य, कविराज प्रतापसिंह रसायनाचार्य, भिषङ्मणि

का संक्षिप्त परिचय।

आयुर्वेद-जगत के एक परिचित का भी आज आवश्यकतावश परिचय दिया जा रहा है। कविराजजी आयुर्वेद के पुराने सेवकों में से हैं। अथवा यह कहना चाहिये कि आयुर्वेद के लिए आपने जितना किया, उतना क्या उससे भी कहीं अधिक आपके लिए आयुर्वेद कल्पवृक्ष की भाँति फलीभूत हुआ। कविराज जी का शुभ-जन्म राजपूतानान्तर्गत उदयपुर राज्य में सन् १८९२ ई० में श्रीमान पं० गुमानीरामजी के यहाँ हुआ। आपके पिता श्रीमान पं० गुमानीरामजी प्राचीनकाल के अच्छे विद्वान थे। कविराज जी बाल्यकाल से ही उर्वर मस्तिष्क के व्यक्ति हैं। आपने महाराजा स्कूल उदयपुर में संस्कृत लेकर हाईस्कूल की शिक्षा ग्रहण की। आप सदा स्कूल-परीक्षा में प्रथम होते थे, अतः आपको स्कूल से छात्रवृत्ति भी मिलती थी। आपके पिता उदयपुर राज्य के एक पुराने जागीरदार थे।

आपको थोड़ी अवस्था से ही शिकार आदि का भी शौक था। आप रट्टू विद्यार्थियों में नहीं थे। हाईस्कूल परीक्षा समाप्त कर अपने पिता की अनुमति बिना ही आप मद्रास आयुर्वेदिक कालेज में आयुर्वेदाध्ययन करने के लिए चले गये। उस समय स्वर्गीय वैद्यरत्न डी० गोपालाचार्लु महोदय मद्रास के एक यशस्वी चिकित्सक और उक्त कालेज के सुयोग्य एवं विद्वान् प्रिंसिपल थे। कविराजजी के हृदय में पहले से ही आयुर्वेद-प्रेम अंकुरित हो चुका था। आपने उक्त कालेज से ससम्मान मद्रास आयुर्वेदिक कालेज की परीक्षा पास की और उसी साल अ० भा० आ० विद्यापीठ की विशारद परीक्षा सर्व प्रथम सफलता पूर्वक पास की और स्वर्ण-पदक प्राप्त किया। मद्रास से लौटकर कलकत्ता आये और महामहोपाध्याय, कविराज गणनाथ सेन सरस्वती, एम० ए०, एल० एम० एस० के परामर्श से कालेज अफ़ फिजीशियन एँड सर्जन्स बंगाल में दो वर्ष तक परिश्रम पूर्वक अध्ययन किया और साथ-साथ भिषङ्मणि परीक्षा भी— श्रीमान कविराज गणनाथसेनजी सरस्वती के तत्वावधान में चलनेवाले श्री विश्वनाथ आयुर्वेद



श्रीमान् वैद्य पं. हरिप्रपन्नजी बंबई।
लेखक–रसयोगसागर।

विद्यालय, कलकत्ता से—प्रथम श्रेणी में पास की। और साथ ही अध्ययन काल में आप कविराज गणनाथ सेन जी के साथ-साथ चिकित्सा-कर्म भी करते रहे। और सन् १९१४ से आपने स्वतंत्र चिकित्सा-कर्म आरम्भ कर दिया। उसके बाद बाबा कालीकमलीवाले ने पचास सहस्र रुपए लगाकर आपकी सम्मति से और आपही की निर्मित योजना से आपही के प्रिंसिपलशिप में आयुर्वेदिक विद्यालय, आतुरालय और औषधालय का कार्यारम्भ किया। आपने वहाँ पर बड़ी योग्यता से साढ़े छः वर्ष तक कार्य किया। अनन्तर पीलीभीत के राजा ललिताप्रसाद जी ने श्री ललितहरि संस्कृत आयुर्वेदिक कालेज और तत् सम्बद्ध आयुर्वेदिक फार्मेसी के संचालन के लिए सन् १९२० में बुला लिया। वहाँ पर आपने साढ़े पाँच वर्ष तक फार्मेसी का संचालन किया और उक्त कालेज के प्रिंसिपल पद पर बड़ी योग्यता के साथ कार्य किया। तथा सन् १९२५ में महामना पूज्य मालवीय जी महाराज ने आयुर्वेदिक फार्मेसी का कार्य करने के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में बुला लिया। तब से आप सुपरिन्टेन्डेन्ट आयुर्वेदिक फार्मेसी के पद पर योग्यता पूर्वक बराबर उसी कार्य को कर रहे हैं। बहुत दिनों से आप सर सुन्दरलाल हास्पिटल आयुर्वेदिक विभाग के असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट तथा आयुर्वेदिक कालेज के भेषज-कल्पना और रसशास्त्र के प्रोफेसर हैं। फेकेल्टी अफ़ मेडिसन ऐंड सर्जरी, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के मेम्बर भी हैं। मंगलाप्रसाद क्षयरोग स्वास्थ्यशाला के आप सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं। आप प्रारम्भ से ही गवर्नमेन्ट अफ़ इण्डियन मेडिसिन यू० पी० के मेम्बर चुने जाते हैं। और आजकल भी हैं। गवर्नमेंट आयुर्वेदिक स्कूल पटना की एडवाइजरी कमिटी के आप आजीवन सदस्य हैं। निखिल भारतीय चतुर्विंशतितम वैद्य सम्मेलन, शिकारपुर अधिवेशन के आप सभापति थे। सेन्ट्रल आयुर्वेदिक रिसर्च इंस्ट्रिट्यूट नड़ियाद (गुजरात) के आप सभापति हैं। आज एक वर्ष से आप निखिल भारतीय आयुर्वेद महामण्डल के प्रधान मंत्री हैं।

आपका संक्षिप्त परिचय देने के बाद हमें ग्रन्थकार के रूप में अब आपको देखना है। 'आपने प्रसूत चर्या', 'जच्चा', संक्षिप्त विष-विज्ञान, आरोग्य-सूत्रावली, आयुर्वेदीय खनिज-विज्ञान' और आयुर्वेद महामण्डल के सचित्र रजत जयन्ती 'ग्रंथ' दो भाग—के लेखक और सम्पादक हैं। आपकी उपर्युक्त पुस्तकें हिन्दी साहित्य में अद्वितीय हैं और काफी ख्याति प्राप्त कर चुकी हैं। 'खनिज-विज्ञान' तो आयुर्वेदिक जगत् के लिए नयी वस्तु है और आयुर्वेद-प्रेमी जनता ने उसका अच्छा स्वागत किया है। उसके द्वितीय भाग की अधिक मांग है, किन्तु समयाभाव के कारण कविराजजी अभी उसे प्रकाशित नहीं करा सके हैं। 'खनिज-विज्ञान की भूमिका श्रीमान महामहोपाध्याय कविराज गणनाथसेन जी, एम० ए०, एल० एम० एस० ने लिखी है। केवल भूमिका के पठन से ही ज्ञात हो सकता है कि इस ग्रंथ का क्या महत्त्व है।

रजतजयन्ती ग्रंथ के विषय में तो यही कहना पर्याप्त होगा कि संसार के समक्ष आपने आयुर्वेद का एक सच्चा और ऐसा सुन्दर ऐतिहासिक रूप रख दिया है कि केवल इसी ग्रन्थ के द्वारा आयुर्वेद ने क्या कार्य किया है, और उसका महत्त्व तथा वास्तविक रूप क्या है, इससे समझ में आ जाता है। और यह इतना बड़ा महत्त्व पूर्ण रेकार्ड आपने स्थापित कर दिया है कि आयुर्वेद के इतिहास में आपका नाम सदैव स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा।

महाशक्ति-भवन, बनारस सिटी। **हनूमानप्रसाद शर्म्मा (वैद्यशास्त्री)**

श्रीमतां वैद्य राजेश्वरदत्तशास्त्रिणां परिचयः

गोण्डामण्डलसंस्थिता सुविदिता प्रान्तेऽवधे मञ्जुले
आटाख्यानगरी विचक्षणजनैर्लब्धास्पदा राजते।
आसीत्तत्र नृपार्चनीयचरणः श्रौताध्वपारङ्गतः
नानाशास्त्र विचारपाठनरतः श्रीरामनाथो बुधः ॥१॥
तज्ज्येष्ठपुत्रोऽनुजचन्द्रिकाख्य दैवज्ञवर्य्यो मगवंशजातः।
त्रिंशत्त्रिवर्षो वयसास्ति विप्रः नाम्ना च राजेश्वरदत्तमिश्रः ॥२॥
संरक्षिताखिल सुगौरव भारतीयैः पूज्यैर्बुधैर्मदनमोहनमालवीयैः।
संस्थापितेऽत्र भवने निखिलागमानां विद्यालये प्रथमविश्वपदाभिधेये ॥३॥
आयुर्वेदपयोनिधेर्मतिमतो विद्यालयाध्यक्षतो
नव्योद्यत्कविराजराजपदवी सम्भूषितात्सद्गुरोः।
विद्यावृद्धिपरोपकार निरताच्छ्री धर्मदासाद्बुधाद्
ग्रन्थानां पठनं समाप्य निखिलं तीर्णः परीक्षोदधिः ॥४॥
आयुर्वेदे वरिष्ठां सकनकपदकां प्राप्य लोकप्रशस्याम्
आचार्यश्रेणिमुख्यां सकलजनमनोमोदहेतुं नितान्तम्।
सद्यस्तत्रैव भागे गुरुजनहृदयानुग्रहाल्लब्धकार्यो
ग्रन्थं भद्रंन्यबध्नात् सरल विधितया बोधदं सज्जनानाम् ॥५॥
पाठ्ये निर्धारितः सोऽस्ति स्वस्थवृत्तसमुच्चयः।
लोकानामुपकाराय यथानामतथागुणः ॥६॥
इदानीं पाठयत्यत्र विश्वविद्यालये वसन्।
चिकित्साक्रियते काश्यां सर्वेषां रोगिणामपि ॥७॥
सदस्यो राजकीयायाः सभाया भेषजस्य च।
युक्तप्रान्तप्रतिष्ठाया वर्ततेऽयं महोदयः ॥८॥

वैद्य वामनकृष्ण पटवर्धन



श्रीयुत पं. राजेश्वरदत्त शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य (ब. हिं. यु.)

लेखक-**स्वस्थवृत्तसमुच्चय** ।

अध्यापक, आयुर्वेदकालेज काशी हिन्दुविश्वविद्यालय ।



श्री० पण्डित हनूमानप्रसाद शर्मा, वैद्यशास्त्री

संयुक्त-मंत्री—नि० भा० आ० महामंडल।

अध्यक्ष—महाशक्ति-औषधालय, काशी।

काशी के विख्यात वैद्य

पण्डित हनूमानप्रसाद शर्मा, वैद्यशास्त्री का

संक्षिप्त परिचय ।

आपका जन्म विक्रम संवत् १९६२ में काशी के एक सुप्रसिद्ध कान्यकुब्ज ब्राह्मण कुल में कंगू के दीक्षितों के घराने में हुआ । आपके पिता पण्डित अम्बिकाप्रसादजी दीक्षित ३ वर्ष की अवस्था में ही आपको छोड़कर इस लोक से सर्वदा के लिये चल बसे । इसी लिये आपका लालन-पालन और शिक्षा आपके स्वर्गीय मातामह व्याकरण-न्याय-रत्न, भिषक्शिरोमणि, पण्डित छन्नूलाल जी राजवैद्य के तत्त्वावधान में हुआ; जो काशी के तत्कालीन प्रमुख वैद्यों में अग्रगण्य थे । स्वर्गीय पण्डित छन्नूलाल जी का जीवन चरित पृष्ठ ४९४—४९८ पर पृथक छपा है । वे बड़े ही मनस्वी एवं कर्तव्यनिष्ठ प्रतिपत्तिमान् चिकित्सक थे । पर उन्हें एक मात्र तनया के सिवा कोई सन्तति-सुख उपलब्ध न था । अतः वे श्री हनूमानप्रसाद जी के जन्म के बाद अपने लालसापूर्ण हृदय का समस्त प्रेम और वात्सल्य आपही पर निछावर कर चुके थे । आपको प्रारम्भ में मातृ-भाषा हिन्दी का अभ्यास कराया गया और बाद में प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अनुसार व्याकरण और साहित्य पढ़ाया गया । आपका बाल्यजीवन ही आपकी प्रतिभा और तीव्रबुद्धि का द्योतक रहा है । साधारण छात्र जिस अवस्था में हिन्दी लिखने पढ़ने और शुद्ध बोलने तक की भी उचित शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते उस अवस्था में आपने यथेष्ट संस्कृत भाषा का ज्ञान उपलब्ध कर लिया था । ६ वर्ष की अवस्था से १६ वर्ष की अवस्था तक संस्कृत में व्याकरण-साहित्य आदि की आवश्यक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आपने आयुर्वेद का अध्ययन आरंभ किया । घर में आपके पूज्य मातामह आयुर्वेद के प्रौढ़ विद्वान् एवं सिद्धहस्त चिकित्सक थे ही, अतएव आपको उनकी सेवा में रह कर २१ वर्ष की अवस्था तक आयुर्वेद की साङ्गोपाङ्ग शिक्षा के साथ क्रियात्मक ज्ञान भी प्राप्त करने का सुयोग उपलब्ध हो सका, जिसका परिणाम यह हुआ कि आप अल्पकाल ही में एक विद्वान् वैद्य एवं सुयोग्य चिकित्सक बन गये । अल्पावस्था में अन्य शास्त्रों के उपयुक्त ज्ञान के साथ साथ एक शास्त्र में पूर्ण प्रवीण होना कोई साधारण बात नहीं है । यह सौभाग्य पूर्व जन्म के संस्कारानुसार इने गिने प्रतिभा शाली युवकों को ही प्राप्त होता देखा गया है । आपके मातामह भिषग्वर, पण्डित छन्नूलाल जी राजवैद्य की विद्वत्ता, प्रतिष्ठा और कीर्ति तथा आपकी विशद प्रतिभा की व्यापक चर्चा कान्य-कुब्ज ब्राह्मण समाज में पर्याप्त हो चुकी थी, इसी से आकृष्ट होकर लखनऊ जिलान्तर्गत सिसैंडी राज्याधिपति स्वर्गीय राजासाहब पण्डित शम्भुप्रसाद जी ने अपनी सौभाग्यवती कन्या का पाणिग्रहण-संस्कार आपके साथ किया । सन् १९२७ में आपके मातामह पण्डित छन्नूलाल जी इस असार संसार से सदा के लिए अलग हो गये । उनकी बहुत बड़ी संपत्ति और अमूल्य औषधभण्डार का समस्त भार आपके शिर आ पड़ा । आपने पूज्य मातामह की और्ध्वदैहिक क्रिया को यथा विधि समाप्त करने के बाद ही बड़े साहस और धैर्य के साथ समस्त गृह-कार्य और चिकित्सा-व्यवसाय को अपने सहपाठी एवं सहयोगी मित्र पण्डित नागेश्वरप्रसाद जी मिश्र, 'भारती' की सहायता से संभाला और उनमें सफलता प्राप्त कर स्वर्गीय मातामह जी की अमरकीर्ति को उज्वल रखने में विशेष तत्परता प्रदर्शित की है । हजारों रोगी प्रतिमास आपके घर से निःशुल्क चिकित्सा और अमूल्य औषध लाभ कर रोगमुक्त होते देखे जाते हैं । जो आपके अनुभवी एवं सिद्धहस्त उदार चिकित्सक होने के बहुत बड़े उदाहरण हैं ।

आपने अपने मुख्य उपास्य देव आयुर्वेद की सेवा के साथ साथ हिन्दी साहित्य की भी उचित सेवा की है। जब आपने देखा कि हिन्दी भाषा में आयुर्वेद या स्वाथ्य संबन्धी साहित्य का नितान्त अभाव है और हिन्दी भाषी जगत् वैद्यक शास्त्र के संस्कृत ग्रन्थों से अपनी ज्ञान-पिपासा मिटाने में सर्वथा असमर्थ है, तब आपने सर्वप्रथम स्वाथ्य-संबन्धी लेख लिखने आरंभ किये। और उन्हें सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कराया। सर्व साधारण को ये लेख बहुत रुचिकर प्रतीत हुए, अतएव आप विशेष उत्साहित हुए। तभी से हिन्दी भाषा में बराबर स्वास्थ्यसंबन्धी लेख लिखते रहते हैं। क्रमशः आपकी हिन्दी साहित्य में आयुवद का व्यापक प्रचार करने की प्रवृत्ति बढ़ती गई। कुछ मित्रों के अनुरोध और प्रोत्साहन पर आपने 'महाशक्ति साहित्य मन्दिर' नामकी एक संस्था स्थापित कर उसमें स्वाथ्य विषयक कुछ उत्त-मोत्तम पुस्तकों का प्रकाशन प्रारंभ किया। पर इतने से आपका मन सन्तुष्ट न हो सका, इसीलिये कुछ दिनों के बाद प्रकाशन को सुचारु रूप देने के लिए ही आपने महाशक्ति-प्रेस की भी वृहद् योजना की, जिससे आज आयुर्वेद की बड़ी सेवा हो रही है। प्रकाशन का कार्य आपने व्यापारिक दृष्टिकोण से नहीं किया है। क्योंकि अब तक उससे आपको हानि के सिवा कुछ लाभ नहीं हुआ है। आपकी पुस्तकमाला से अब तक १४ पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें ४ आपकी अपनी लिखी हुई हैं। १—जीवन-रक्षा, २—सुखीगृहिणी, ३—आहार विज्ञान, ४—वनस्पति-विज्ञान। इन पुस्तकों की बड़ी ही सुन्दर समालोचना हुई और साहित्य-संसार ने बहुत पसंद किया। सर्वसाधारण जनता ने भी हृदय से स्वागत किया। अन्य स्थानों से भी आपकी तीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। आपकी प्रतिभा सर्वतोमुखी है। आप कथानक या कहानी लेखक भी हैं। आपकी कहानियों का संग्रह १—"मीना बाजार" नाम से काशी से प्रकाशित हुआ है। उनमें कुछ कहानियाँ तो बहुत ही सुन्दर और कलापूर्ण हैं। आपके पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाले अधिकांश लेखों का संग्रह २—"आरोग्य-विज्ञान" नाम से प्रयाग से प्रकाशित हुआ है। ३—'पुष्प-विज्ञान' नाम से भी आपकी एक बहुत ही उपादेय पुस्तक का प्रकाशन काशी से हुआ है। इनके अतिरिक्त कुछ पुस्तकें आपने कुछ सुयोग्य विद्वानों से भी लिखाई हैं। आपकी पुस्तक माला से हिन्दी साहित्य में एक अभा-वांश की यथेष्ट पूर्ति हुई है। आप एक गंभीर एवं मननशील विद्वान हैं। हिन्दी में लिखने की आपकी एक अपनी शैली है। आप बड़ी से बड़ी एवं गंभीर बातों को बहुत स्पष्ट, सरल एवं व्यावहारिक भाषा में लिखते हैं। यही कारण है कि आपने हिन्दी साहित्य में भी एक अच्छी कीर्ति स्थापित कर ली है। अहमदाबाद सम्मेलन के निश्चयानुसार १९३६ के जनवरी मास में आप निखिलभारतीय आयुर्वेद महामंडल के संयुक्त मंत्री निर्वाचित हुए हैं। तब से आप उस पद पर योग्यतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। आप एक निरभिमान एवं सरल, सरस स्वभाव के सहृदय पुरुष हैं। काशी आपके ऐसे सुयोग्य विद्वानों से गौरवान्वित है। पण्डित नागेश्वरप्रसाद जी मिश्र, 'भारती' आपके दक्षिण हस्त हैं। परमेश्वर करें आप दोनों मित्रों की युगल जोड़ी अश्विनीकुमारों के समान चिरंजीवी हो और चिकित्सा-क्षेत्र में और भी सफल होकर आयुर्वेद की चिरकीर्ति को सुदृढ़ एवं सुस्थिर बनाने में विशेष सफल हो।

एस० एल० मारवाड़ी अस्पताल, बनारस।

दुर्गादत्त शास्त्री (आयुर्वेदाचार्य)
विद्यापीठ-मंत्री।



श्रीमान् स्वामीश्री हरिशरणानंदजी ।
संपादक, आयुर्वेद विज्ञान (हिंदी मासिक पत्र) अमृतसर ।

पत्र और पत्रकार

आयुर्वेद-संदेश का संक्षिप्त इतिहास

पंजाब के इस मुख्य हिन्दी वैद्यक पत्र ने मार्च १९२८ में दयानन्दायुर्वैदिक कालेज, लाहौर की छात्रसभा के उत्साह से पंजाब प्रान्तीय प्रथम वैद्य सम्मेलन के अवसर पर जन्म लिया। भारतवर्ष की एक प्रसिद्ध संस्था से सम्बन्ध रखने के कारण वैद्यों ने इस शिशु का स्वागत किया। १९२८ से १९३० तक यह पत्र त्रैमासिक रहा। १९३१ से छः मासिक कर दिया गया। पुनः अप्रैल १९३४ में मासिक पत्र बना। अब इसका वार्षिक मूल्य २।) है और आकार २० × ३० आठपेजी है। १९३४ से पूर्व इसका साईज १८ × २२ = ८ था। एवं यह पत्र शनैः २ बढ़ता हुआ भारत वर्ष के वैद्यक पत्रों में एक मुख्य स्थान को प्राप्त हो गया है।

इसमें प्रतिमास क्रमशः वनस्पतियों के चित्र, रोगादि वैद्यक विषयों पर उत्तम उत्तम लेख, आयुर्वेद सम्बन्धी सूचनायें और समालोचनायें, पर्वत यात्रा, कालेज-समाचारादि के प्रकाशन से यह पत्र दयानन्दायुर्वेदिक कालेज, तथा दूसरी संस्थाओं के छात्रों और सर्व साधारण वैद्यों के लिए उपयोगी और रोचक है। शास्त्र की रक्षार्थ यह पत्र सदैव तत्पर रहता है।

इसका सम्पादन कर्म आरंभ से आजतक संस्था के आचार्य के हाथ में रहा है। पं० हरदयाल जी तथा दूसरे अध्यापक सदैव इस कार्य में सहायता करते हैं। छात्र पूर्ण सहयोग दे रहे हैं। मन्त्री छात्र-सभा तथा अन्य कई योग्य छात्र सहायक सम्पादक हुआ करते हैं। पत्र का आयव्यय का निरीक्षण आचार्य के आधीन है। वर्षान्त पर डी० ए० वी० कालेज प्रबन्धकर्तृ सभा द्वारा सब हिसाब की जाँच-पड़ताल की जाती है।

एवं यह पत्र आयुर्वेद के प्रचारार्थ उपयोगी सिद्ध हो रहा है और ख्याति को प्राप्त हो रहा है। ईश्वर करे चिरकाल तक जीवित रहे।

आयुर्वेदाचार्य सुरेन्द्रमोहन, बी० ए० मुख्य सम्पादक आयुर्वेद-संदेश, लाहौर।

आयुर्वेद-विज्ञान

सबसे पूर्व स्वामी हरिशरणानन्दजी वैद्य द्वारा सन् १९२१ में पंजाब आयुर्वेदिक फार्मेसी नामक एक बृहद् औषध-निर्माणशाला का अमृतसर (पंजाब) में आरम्भ हुआ। इस औषधालय की कार्य-व्यवस्था जब काफी बढ़ चुकी थी, उस समय आयुर्वेद सम्बन्धी एक पत्र को निकालने की आवश्यकता दिखाई दी।

इसमें कोई संशय नहीं कि पत्र को निकालने का उद्देश्य व्यवसायिक नीति रही है। तथापि दूसरी ओर पत्र-प्रकाशन की इच्छा में मुख्य कारण स्वामीजी के क्रान्तिकारी विचार रहे हैं।

आयुर्वेद-संसार इस समय जिन नव्य युग के मध्य से गुजर रहा है उसका इस विज्ञानालोक पथ में आँख बन्द करके गुजरना स्वामीजी के लिये सह्य नहीं था। उनकी काफी

समय से यह इच्छा रही कि आयुर्वेद-संसार भी आधुनिक विज्ञान से समन्वित किया जाय। और प्रत्येक आयुर्वेद विषय को आधुनिक प्रयोग-वाद से सिद्ध किया जाय; सिद्ध ही न किया जाय, प्रत्युत क्रियात्मक रूप देकर उससे लाभ उठाया जाय। यदि आयुर्वेद आधुनिक विज्ञान-वाद को पूर्णतया तल्लीन कर ले या स्वयम् तल्लीन हो जाय तो अहोभाग्य। स्वामीजी ने इन्हीं विचारों की पूर्ति के अर्थ सन् १९२७ से आयुर्वेद-विज्ञान नामक सचित्र मासिक पत्र को जन्म दिया। इसका सम्पादन स्वयम् स्वामीजी ने किया। उस समय आयुर्वेद-विज्ञान तीन मास तक बड़ी शान-बान से निकला; परन्तु शोक! कि ऐसे विज्ञान परिमार्जित लेखों से युक्त पत्र का वैद्यों ने समुचित आदर न किया। वैद्यों की ओर से प्रायः यह माँग आती रही कि हमको तो अनुभूत नुस्खे (योग) चाहियें। हम ऐसे उच्च लेखों को पढ़ कर क्या करें। हमें तो हाथ पर सरसों जमाने वाली विधि बताओ। इत्यादि उस समय वैद्य संसार की इस निकृष्ट विचार धारा को देख कर १५००) हानि उठा पत्र का प्रकाशन स्थगित करना पड़ा।

आयुर्वेद-विज्ञान का यह उद्देश्य कदापि नहीं था कि नागराक्षर पढ़ने वालों को केवल योग बताकर निरक्षर वैद्य समुदाय उत्पन्न किया जाय। पत्र का प्रकाशन बन्द कर देने पर भी स्वामीजी की यह प्रबल इच्छा रही कि आयुर्वेद-संसार संसार-प्रवाह से कहीं पीछे न रह जाय इस लिये वह ऐसे वैद्यों की संख्या बढ़ाने में लगे रहे जो विज्ञान-वाद के लाभ को समझने की योग्यता रखते हों।

१९३१ जनवरी को पुनः आयुर्वेद-विज्ञान का प्रकाशन आरम्भ हुआ। अभी छः मास भी व्यतीय नहीं हुए थे कि कार्य बढ़ गया, एक व्यक्ति के लिये पत्र का सम्पादन कठिन हो गया, इसी लिये जुलाई १९३१ में गुरुकुल स्नातक पं० योगेन्द्रपालजी आयुर्वेदालंकार को सम्पादकीय विभाग में ले लिया गया। इस वर्ष तो पत्र निर्विघ्न निकलता रहा।

१९३२ में पुनः कांग्रेस आन्दोलन आरम्भ हुआ। स्वामीजी आगे ही से कांग्रेस कार्यकर्ता थे। स्थानिक राज्य-व्यवस्था द्वारा उन्हें नोटिस दिया गया कि वह किसी सभा सोसायटी के कार्य में भाग न लें; परन्तु स्वामीजी ने सविनय अवज्ञा भंग कर कांग्रेस डिक्टेटर पद पर जा डटे। गवर्नमेंट ने इसी अपराध में आपको २ वर्ष का कठिन कारावास तथा २००) रुपया दण्ड की सजा दी। स्वामीजी की अनुपस्थिति में पं० योगेन्द्रपालजी ने पत्र-सम्पादन का समस्त भार अपने ऊपर आया देख उसे न सँभाल सके। इसी लिये आपने इसे त्रैमासिक कर दिया। स्वामीजी जब तक कारावास में रहे पत्र इसी रूप में निकलता रहा।

१९३४ जनवरी को जब स्वामीजी कारावास मुक्त हुए, पुनः इसे मासिक रूप देने का निश्चय किया। परन्तु फार्मेसी सम्बन्धी अन्य आवश्यक कार्यों की अधिकता के कारण छः मास तक पत्र का प्रकाशन न हो सका। इस मध्य में स्वामीजी उक्त परिस्थिति का गम्भीरता से अध्ययन करते रहे। अन्त में स्वामीजी ने यह देखा कि बिना विज्ञान-वाद की सहायता के देश जाति का कल्याण नहीं, न आयुर्वेद ही, बिना विज्ञान के समुन्नत हो सकता है, इसी लिये किसी वैज्ञानिक संस्था की सहायता आवश्यक दिखाई दी। अन्त में पत्र-व्यवहार द्वारा निश्चय हुआ कि आयुर्वेद-विज्ञान विज्ञान नामक विज्ञान-परिषद के मुख्य कार्य में मिला दिया जाय। तथा फार्मेसी भी विज्ञान-परिषद के आधीन कर दी जाय। इस निश्चय के अनुसार १९३४ के जुलाई मास से आयुर्वेद-विज्ञान विज्ञान पत्र का मुख्य अंग बन कर उसके साथ प्रकाशित हो रहा है। जिसकी स्थिति इस समय प्रमुख पत्रों में है।



LATE VISAGBHUSAN KAVIRAJ A. C. Bisharad M. R. A. S. (Lond.)
Editor & Founder "Journal of Ayurveda".
Maker & Managing Editor, "Indian Medical Record".

Dhanwantarí.

(Illustrated Monthly magazine)

This journal is running for the last 12 years. It was Registered under No. A. 1215. in the Chaitra-mas of Samvat 1980, when only a couple or two Ayurvedic journals were flourishing. Since then, Almighty have sant many companions to it, a dozen of which are still serving the Ayurveda.

The number of its subscribers now reaches to 1500, (The largest of all the Ayurvedic magazines).

The annual subscription is Rs. 3/— only.

Its proprietor is The Dhanwantari Karyalaya. Mastered equally by Vaidya Bhaskar Bankeylal Gupta. and Vaidya Debishanran, Jwalasaran Gargs.

The Editors are:—jointly:—

Vaidya Bhaskar Bankey Lal Gupta, Ayurvedacharya. Author of:—Soorya Rashmi Chikitsa, Parikshit Prayag. Ayurvediya Upchar Paddhati 2 parts & Madhava Nidan Bhaskar (not complete).

Dr. Ganpati Chandra Kela, Visharad, Sahitya Ratnakar. Author of:—Sansar Sar Sangraha, Gandhi Gita. Principles & Practice of Medicine (compiled in 8 volumes). & Visuchika-vigyan. (Not published)

A brief account of the paper may-be so stated that:—

It commenced in Demy/Octavo size in the beginning of 1923. It was the first Ayurvedic journal to publish a Special number, in the same year. In the 1926 it presented Swapna-pramehank, a special number on one disease, first of its quality. In the 1927 Malawarodhanka (Specially on Constipation) was presented which has not been excelled as yet by any publication of its sort. From this year Dhanwantari attained larger size of Crown-quarto, which is current as yet.

In the year 5th. of its birth in 1928, it presented Praveshank (Dealing specially on Hysteria) and also the First large compilation of Prescriptions. "The Prayogank." in the 7th. and 8th. years it presented bhoot-yogank and Parikshit Prayogank, respectively containing more than a 1000 prescriptions. each, with above 60 illustrations. Priced 2/only.

As sufficient prescriptions had been selected so-far, it presented the first treatise on treatment of prominent diseases as a special number named "Anubhoot-chikitsank" in its 9th. year, edited by Vaidya Bhooshan Pt. Govardhanji Sharma Chhangani also, (Editor-in-chief of the Vaidya Sammelan Patrika).

In the years 6th. 7th. 8th. and 9th. another special numbers were also presented namely, Grihasthank, Nari-rogank, Madhumehank, and Siddha-yogank respectively. priced-/12/- only.

In the present year it has presented 2nd compilation of complete treatment of all important diseases, edited specially by Kaviraj Pratap Singh ji Rasayanacharye-President All India. Ayurveda Mahamandal; named "Chikitsa-anubhavank".

Dhanwantari has specially contributed its efforts to the establishment of Ayurvedic glory and superiority, publication of important or un-published herbs, and shrubs, drugs, and their marvellous use. Thesis from the experts about Special diseases like Athsma, Phthisis, Small-pox, Plague, Insanity, Diabetes Cholera &tc. have been published in it ; Dash-mool, Ashtawarga, Kankushtha; Kharpar, &c. all important drugs have been dealt-with and special attention has been paid towards Anatomy, Physiology and Surgical knowledge of the Ancient and Recent-days.

Antidotes for snake-bite, and publication of the results of prescriptions published in Dhanwantari has been its speciality again, and this object has been always attempted that The Public, Profession and Authorities, Hakims and Doctors as well may get good regards for our noble harm-less Ayurveda.

This is the only medical journal Approved for the school-libraries by Text-books committee of the Education Dept. of the Central Provinces and Berar.

❀ ❀ ❀ ❀

अनुभूत योगमाला

इस पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन सन् १९२३ से हुआ है। १२ साल पूरे हो गये हैं। १३ वां जनवरी से प्रारम्भ होगा।

इसकी ग्राहक संख्या इस वर्ष १००० है। वार्षिक मूल्य ४) रु० है।

इसके प्रोप्राईटर और सम्पादक चिकित्सक चूणामणि पं० विश्वेश्वर दयालु वैद्यराज हैं। फोटो ब्लाक भी समय समय पर छपते हैं।

प्रथम यह सन् १९२४ तक मासिक रहा। बाद को सन् १९२५ से पाक्षिक होगया सन् १९२३ में इसका मूल्य १) रुपया रहा। बाद को २) सन् १९२४ में रहा। २५ से ३) रु० हो गया। और २६ में ४) रु० होगया।

विशेषतायें। इसके साथ पुस्तक प्रकाशन विभाग भी है। जिसमें अब तक ३ दर्जन के करीब पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—सबसे बड़ी पुस्तक आयुर्वेदीय कोष है, जो २२ × २९ साईज के १०,००० पृष्ठों की १० भागों में प्रकाशित होगी। इसका प्रथम भाग छप चुका है। जो "अ" रदीफ के ९५० पेजों में समाप्त हुआ है। वैद्य समाज में यह ग्रन्थ अपनी शान का अकेला हैं। इतना बड़ा और विशेषताओं से परिपूरित कोई भी निघण्टु इसकी शानी का नहीं आजतक निकला, इसमें आयुर्वेदीय, यूनानी, एलोपैथी की अबतक की कोई भी शोध शेष नहीं रक्खी गई। विशेष सूचीपत्र से पूरा कीजिये।



वैद्यराज पं. विश्वेश्वर दयालु।
संपादक, अनुभूतयोगमाला (हिन्दी मासिकपत्र) बरालोकपुर, इटावा।



श्रीमान् पं. रूपेन्द्रनाथशास्त्री. बरालोकपुर (इटावा)।
संपादक–राकेश (हिन्दी वैद्यकपत्रिका)।

"आयुर्वेद प्रचारक"

'सचित्र वैद्यक मासिक पत्र' काशी। संपादक कविराज श्री शाण्डिल्य त्रिवेदी जी। इस पत्र का प्रकाशन "अखिलभारत वर्षीय आयुर्वेद प्रचारणी सभा के" मुख पत्र के स्वरूप में सन् १९२१ ई० में हुआ। पुनः उक्त सभा का अस्तित्व उक्त सभा के मंत्री श्री केशरीप्रसाद जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य महोदय के स्वर्गस्थ होने से समाप्त ही सा हो जाने से उक्त पत्र का क्रमशः कई सज्जनों ने समय समय पर संपादन और संचालन किया। इधर लग भग आठ वर्षों से इसका प्रकाशन और संचालन कविराज शाण्डिल्य जी त्रिवेदी द्वारा उनकी शाण्डिल्य कुटी तथा आयुर्वेदिक अनुसन्धान भवन (आयुर्वेदिक रिसर्च इंस्टीट्यूट) के रूप में होता रहा है। और वर्तमान में भी यह पत्र पूर्ववत् आयुर्वेद की सेवा प्रचार कार्य करता हुआ प्रतिमास काशी से प्रकाशित हो रहा है। उक्तपत्र से भारत के शिक्षित समाज में आयुर्वेद का अद्भुत प्रचार हुआ है। जोर हो रहा है। इस पत्र की नीति कविराज जी के संचालन काल में प्रायः ऐसी ही रही है, जैसी की उनके स्वयम् की प्रायः रहा करती है। अर्थात् वैद्य समुदाय से तटस्थ प्रचार करना कराना; परंतु आवश्यकता पड़ने पर श्री बरार मध्यप्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के न्यायोचित पक्ष का समर्थन कर इस पत्र ने C. P. के आयुर्वेद संसार में नवीन जीवन की लहर उत्पन्न कर दी। इधर भी उक्तपत्र अपनी दिनोदिन वृद्धि कर रहा है। और आयुर्वेद प्रचारार्थ अपनी पृष्ठ संख्या भी बढ़ा रहा है। एवं विशेषांक का भी आयोजन जारी है। यही इस वैद्यक मासिक पत्र का संक्षिप्त परिचय है।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

आयुर्वेदिक पाक्षिक पत्र 'राकेश' और उसका संक्षिप्त परिचय

पाठको! प्रथम इसके कि मैं आपको 'राकेश' का परिचय कराऊँ, इसके उत्साही, संसार हितैषी, आयुर्वेद के सच्चे सेवक, एक्स मेम्बर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, सञ्चालक महोदय श्री पं० राजकुमारजी द्विवेदी प्रतिष्ठित रईस व जमीदार, तथा आपके ही लघुभ्राता आयुर्वेद के प्रगाढ़ विद्वान् लब्धप्रतिष्ठ यशस्वी, आयुर्वेदमार्तण्ड द्विवेदी पं० रूपेन्द्रनाथ जी शास्त्री प्रधान सम्पादक 'राकेश' का कुछ परिचय कराना आवश्यक है।

आप श्रेष्ठ कान्यकुब्ज ब्राह्मण जाति के उज्ज्वल रत्न हैं। आप आठ भाई थे, जिसमें होनहार दो लघुभ्राता चन्द्रशेखर और राकेशदेव, किशोरावस्था में ही स्वर्गवासी हो चुके हैं। शेष भ्राता पं० बाबूराम जी शर्मा वैद्यभूषण, पं० विजयबहादुर जी शर्मा "भगवत स्नेही", पं० कृष्णकुमार जी वैद्य तथा पं० कृष्णमुरारीलाल जी शर्मा हैं।

वैसे तो आयुर्वेद की सेवा एवं चिकित्सा कार्य आपकी कई पीढ़ियों से चला आरहा है। ऐसे-ऐसे आयुर्वेद के विद्वान् आपके खानदान में हो चुके हैं, जिनके चिकित्सा-कौशल को देखकर दांत तले उंगली दबानी पड़ती है। इसी पैत्रिक सेवा को विस्तृत रूप देने के लिए सञ्चालक महोदय ने आज से २९ वर्ष पूर्व अपने पुराने कार्य को संसार प्रसिद्ध "श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी" का रूप देकर, बहुत ही ऊंचे परिमाण में हर प्रकार की दुष्प्राप्य बनौषधी, खनिज आदि द्रव्यो को गहन परिश्रम तथा प्रचुर व्यय-द्वारा संग्रह कर, और बड़े से बड़े

परिमाण में कई योग्य अनुभवी रसायनाचार्य वैद्यों की अध्यक्षता में रस, भस्मादिक आयुर्वेद शास्त्र की समस्त औषधें तैयार कराकर वैद्यराजों, हकीमों को अतिसूक्ष्म मुनाफ़े पर देने का वृहत आयोजन किया है। इस सेवा के फल स्वरूप भारतवर्ष के सुदूरवर्ती अनेक आयुर्वेदज्ञ विद्वानों तथा निखिल भारतवर्षीय वैद्यसम्मेलन से औषधियों की उत्तमता, चिकित्सा विषयक सुलभ साधन जुटाने, तथा औषधों के सभी उपादानों को असली रूप में फार्मेसी से प्राप्त होने पर, प्रधान श्रेणी के प्रमाण पत्र बहु संख्या में मिले हैं। जो संचालक की सफलता के द्योतक हैं।

उदार वैद्य विद्वानों की इच्छा और मांग के अनुसार फार्मेसी की शाखायें (ब्रान्च) इटावा और कानपुर में खोली गई हैं। और मालवा व मध्यप्रान्त के सज्जनों के लाभार्थ ग्वालियर राज्य में बड़ी शाखा खोलने का आयोजन हो रहा है।

आयुर्वेदिक पाक्षिक पत्र वैद्योपयोगी उद्देश्यों से भरपूर आज से सातवर्ष पूर्व पं० रूपेन्द्रनाथजी शास्त्रीजी के सम्पादकत्व में श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी के एक विभाग ने निजी 'राकेश' प्रिंटिङ्ग प्रेस स्थापित कर, जन्म दिया। इस पत्र के मौलिक वैज्ञानिक सुलेखों एवं आयुर्वेद के नष्ट प्राय अङ्गों की अभूतपूर्व विवेचना पर मुग्ध हो विज्ञ वैद्यों ने अपनी उदारता का परिचय दे, अच्छे रूप में सहृदयता से अपनाया। उसी सफलता के अनुरूप 'राकेश' के जन्म से लेकर प्रत्येक वर्ष बड़े-बड़े दर्शनीय तथा पठनीय, प्रख्यात विद्वानों के खोजपूर्ण तद्विषयक लेखों से परिपूर्ण दो-दो चार-चार विशेषाङ्क प्रकाशित कर आयुर्वेद के यश को दिगन्त में धवलित किया है। उन विशेषाङ्कों में से कुछेक के नाम यह हैं। निखिलभारत-वर्षीय वैद्य सम्मेलन, नासिक के अवसर पर प्रकाशित होने वाला 'सम्मेलनाङ्क' 'क्लीवताङ्क' 'प्लीहाङ्क' 'वाजीकरणाङ्क' 'नेत्ररोगाङ्क' 'रसेश्वर दर्शनाङ्क' (इसमें पारद के विषय में वैज्ञानिक विवेचन किया गया है।) 'गर्भाङ्क' 'धातु विज्ञानाङ्क' 'बालरोग विज्ञानाङ्क' 'सिद्धयोगाङ्क' 'सिद्धोपचाराङ्क' 'क्षयाङ्क' 'रक्तरोगाङ्क' आदि आदि हैं। सन् ३६ के प्रारम्भ से 'राकेश' में कई दुष्प्राप्य बूटियों के बहुरङ्गे चित्र एवं पाठ्य विषय में भी वृद्धि कर दी गई है, 'राकेश' का वार्षिक चन्दा भारतवर्ष के ग्राहकों से ३) रुपया रखा गया है।

पत्र की एक ग्रन्थमाला "राकेश किरणमाला" नामक रक्खी गई है। जिसमें अप्रकाशित प्राचीन-प्राचीन ग्रन्थ एवं प्राच्य, पाश्चात्य तुलनात्मक उपयोगी ग्रन्थ प्रकाशित होने की व्यवस्था है। अब तक उक्त 'माला' की प्रथम किरण पूयमेह विज्ञान अथवा गिनोरिया विज्ञान, द्वितीय किरण, प्राच्य शल्यतन्त्र; पाश्चात्य शल्यतन्त्र प्रकाशित हो चुके हैं। जिनका आयुर्वेद जगत में अच्छा स्वागत हुआ है। निकट भविष्य में बड़े-बड़े प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ जो आयुर्वेद संसार में एकदम नवीन और महान उपयोगी हैं, प्रकाशित होंगे।

मान्यवर सञ्चालक महोदय को इतने सेवा-कार्य पर भी सन्तोष न हुआ, अब से सात वर्ष पूर्व अपने लघुभ्राता उक्त पं० रूपेन्द्रनाथजी शास्त्री के सम्पादकत्व में 'राकेश' आयुर्वेदिक पाक्षिक पत्र का, वैद्योपयोगी उद्देश्यों से भरपूर, श्री भगवत आयुर्वेदिक फार्मेसी के एक विभाग से निजी राकेश प्रिंटिंग प्रेस स्थापित कर, जन्म दिया। इस पत्र के मौलिक वैज्ञानिक सुलेखों एवं आयुर्वेद के नष्ट प्राय अङ्गों की अभूतपूर्व विवेचना पर मुग्ध हो, विज्ञ वैद्यों ने अपनी उदारता का परिचय दे, अच्छे रूप में सहृदयता से अपनाया। उसी सफलता के अनुरूप 'राकेश' के जन्म से लेकर प्रत्येक वर्ष बड़े-बड़े दर्शनीय तथा पठनीय, प्रख्यात विद्वानों के



श्रीमान् आयुर्वेदाचार्य कविराज पं. गोपाल प्रसाद शर्मा कौशिक।
संपादक, 'स्वास्थ्य' (मथुरा)।

खोजपूर्ण तद्विषयक लेखों से परिपूर्ण दो-दो चार-चार विशेषाङ्क प्रकाशित कर, आयुर्वेद के यश को दिगन्त में धवलित किया है।

❀ ❀ ❀ ❀

स्वास्थ्य

सचित्र मासिक पत्र का संक्षिप्त इतिहास

सुन्दर श्रृंगार कार्यालय के अध्यक्ष अनेक पेटेन्ट औषधियों के आविष्कारक और कई आयुर्वेदीय पुस्तकों के लेखक लाला जगन्नाथदासजी वैश्य, मथुरा के प्रसिद्ध व्यवसायी और आयुर्वेद प्रेमी थे। आयुर्वेद की उन्नति तथा स्वास्थ्य विज्ञान के सरल नियमों के प्रचार की ओर इनका विशेष ध्यान था। आपने इसके लिये एक विस्तृत कार्ययोजना भी बड़े तर्क-वितर्क एवं अन्वेषण के बाद बनाई। इस योजना को सफल बनाने के लिये एक विद्वान सम्पादक की खोज में थे दुर्भाग्यवश इसी बीच में उनका वैकुण्ठवास हो गया।

स्वास्थ्य के वर्तमान सम्पादक कविराज श्री गोपालप्रसाद जी शर्मा "कौशिक" आयुर्वेदाचार्य के हृदय में आयुर्वेद उन्नति और देश सेवा की महान भावना अविच्छिन्न रूप से है। आपको भी वर्तमान साहित्य में स्वास्थ्य विज्ञान विषयक उपयुक्त उचित मासिक का प्रकाशन अभाव बराबर खटक रहा था, जो कुछ पत्र हैं भी उनका सम्पादन प्रकाशन अधिक ऊँचे स्टैण्डर्ड पर चाहते थे। इसी विचार से एक स्वतंत्र मासिक प्रकाशन का विचार आप कर रहे थे जिसमें निम्न विशेषतायें हों—

१—देश-विदेश के सुप्रसिद्ध प्रौढ़ विद्वान लेखकों के लेखों का प्रकाशन।

२—यशस्वी और सफल चिकित्सकों की अनुभूत चिकित्सा प्रणाली का प्रकाशन।

३—स्वल्प मूल्य की सुलभ औषधियों (सरलता से प्राप्त होने वाली वनस्पतियों) द्वारा गृहस्थ भी लाभ उठा सकें इस लिये सरल और अनुभूत प्रयोगों का प्रकाशन।

४—स्वास्थ्य विषयक नियमों का सरल रूप से वर्णन।

५—आयुर्वेद-शास्त्र और चिकित्सा-विज्ञान के गूढ़ ज्ञान का सम्यक विश्लेषण।

६—पाश्चात्य विज्ञान के उपयोगी और आवश्यक विषयों का सरलता से निरूपण।

७—जिन विषयों का आयुर्वेद में अभाव है उनकी अनुभवबल तथा अन्य विज्ञानों से पूर्ति।

८—पबलिक हेल्थ, गवर्नमेन्ट मेडिकल डिपार्टमेन्ट, यू० पी०, इन्डियन मेडिसन बोर्ड, आयुर्वेद महामंडल वैद्य सम्मेलन, आयुर्वेदिक कालेज आदि संस्थाओं की रिपोर्ट विवरण आदि का प्रकाशन।

९—विषय के सरल और सम्यक बोध करने के लिये आवश्यक चित्रों का प्रकाशन।

१०—रोगचिकित्सा के साथ ही रोग उत्पन्न न होने देने की ओर अधिक लक्ष्य।

११—आयुर्वेद विद्यार्थियों के लिये परीक्षोपयोगी प्रश्न पत्रों के लिखने की विधि।

कागज, छपाई, प्रूफ संशोधन सभी उत्तम, कवर तिरंगा चित्र युक्त भव्य, इस पर भी मूल्य केवल २) रुपया हो।

इसी सिलसिले में कौशिकजी मुझ से मिले तो पता चला कि लालाजी की और आपकी विचार धारा मिलती हैं तथा योजना में भी विशेष समानता है, अतः आपके सम्पादकत्व में "स्वास्थ्य" निकालना निश्चित हुआ है। स्वास्थ्य के साथ-ही-साथ ग्रन्थमाला भी रहेंगी। इसमें प्रत्येक रोग एवम अन्य स्वास्थ्योपयोगी विषयों पर सर्व भाषा में स्पष्ट और विशद विवेचनापूर्ण निबन्ध (ट्रैक) प्रकाशित किया है। दूसरी में आयुर्वेद के गूढ़ ज्ञान युक्त प्राचीन प्रकाशित और अप्रकाशित ग्रन्थों पर सरल और सर्वाङ्गीणपूर्ण टीका करके सुलभ मूल्य में प्रकाशित किये जायेंगे—उपरोक्त योजनाएँ बहुत शीघ्र ही प्रकाश में आने वाली हैं। स्वास्थ्य द्वारा और भी जो कुछ योजनाएँ हैं या जो कुछ आयुर्वेद की सेवा हमारा मण्डल (स्वास्थ्य मंडल) करना चाहता है निवेदन करेंगे।

❀ ❀ ❀ ❀

आयुर्विज्ञान सम्मेलनी

वंग देश में एक ही आयुर्वेद पत्रिका है जो कलकत्ते से निकलती है।

भाषा "वंगभाषा" जन्मतिथि—१३३८ वंगाब्द कार्यालय—१९१ बहुबाजार स्ट्रीट, कलकत्ता। आरोग्य निकेतन सम्पादक—"कविराज इन्दुभूषण सेन आयुर्वेद शास्त्री वार्षिक मूल्य दो रुपया दश आना २॥=)। प्रति संख्या चौदह पैसा ≋)॥। आपके अस्पताल में अंग्रेज डाक्टर ने जो कटाक्ष किया, उसका इस पत्रिका में तीव्र खण्डन किया है। उस लेख की कापी भेजी जाती है। सम्पादक श्रीमान इन्दुभूषण सेन आयुर्वेद शास्त्री महाशय की तसवीर भी भेजी जाती है। आप यदि रजत जयन्ती या वैद्य सम्मेलन का संवाद भेजना चाहें तो इस पत्रिका में भेज देवें।

❀ ❀ ❀ ❀

आरोग्य सिन्धु

सम्पादक—वैद्य गोपाल जी कुंवर जी ठक्कुर

यह वैद्यक मासिक पत्र आज तेरह साल से सिंध के पाटनगर कराची से प्रगट होता है। भाषा और लिपि गुजराती है और इनका प्रचार हरेक प्रांत में अच्छा हो चुका है इस पत्र के द्वारा वैद्यों में ठीक जाग्रति हुई है और गुजराती भाषा के तीन वैद्यक मासिक पत्र हैं उनमें इन पत्र का भी योग्य स्थान रहा है, वैद्य संमेलन की कार्यवाही का पूर्ण हवाला इस पत्र में हमेशा प्रगट होता रहता है। सिवाय आरोग्य आयुर्वेद और जनोपयोगी वैद्यक बातों पर अच्छा प्रकाश डाला जाता है। वार्षिक मूल्य सिर्फ २ रुपया है और निम्न पते पर से मिलता है। आरोग्य सिन्धु कार्यालय, नानकवाडा, कराची।

"आरोग्य सिन्धु ग्रन्थमाला" सम्पादक वैद्य गोपाल जी ठकुर, नानकवाडा, कराची, इस ग्रन्थमाला द्वारा आज दश वर्ष में करीब २० पुस्तक प्रगट हो चुकी हैं, एक पुस्तक न्यायवैद्यक और विष तंत्र हिन्दी भाषा में है और पुस्तकें गुजराती भाषा में हैं इन पुस्तकों का प्रचार अच्छा हो रहा है और पुस्तकों द्वारा वैद्यक प्रचार में ठीक सहायता होती है।



श्रीमान् वैद्यराज गोपालजी कुंवरजी ठक्कुर।

संपादकः 'आरोग्यसिन्धु' (गुजराती मासिक पत्र)।

संचालक और स्वामि, धी सिन्ध आयुर्वेदिक फार्मसी (कराची)।



श्रीमान वैद्यराज रविशंकर जटाशंकर त्रिवेदी अमदाबाद।
संपादक, वैद्यकल्पतरु (गुजराती मासिकपत्र)।

वैद्यकल्पतरु

आद्य संपादक स्वर्गस्थ वैद्यराज जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी आयुर्वेद पञ्चानन। वर्तमान संपादक वैद्य रविशंकर जटाशंकर त्रिवेदी मालिक गुजरात आयुर्वेदिक फार्मेसी अहमदाबाद।

हमारे स्वर्गीय पिता श्री वैद्यराज जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी जी ने महात्मा झंडु भट्ट जी और अन्यान्य विद्वान वैद्य मित्रों के अनुग्रह से प्रथम ई० सन् १८९४ में आयुर्वेदिक मासिक पत्र वैद्यकल्पतरु नामक शुरू किया। हमारे प्रांत में वैद्यकीय साहित्य का वाचन वैद्य समाज और जनसमाज के आगे उपस्थित किया। आप सुभाषित लेखक तर्क शास्त्र में प्रवीण और शास्त्रज्ञ थे। साहित्य में भी आप अच्छे निष्पात थे। शुरुआत में तो कुछ वर्षों तक वैद्यकल्पतरु मासिक में बहुत कुछ व्यय कराया। लेखकों का अभाव था किंतु गुरुवर्य श्री महात्मा झंडु भट्टजी और आपके सुज्ञ मित्रों की वैद्यक साहित्य विषयों में अच्छी सहायता मिल जाने से हताश न हुए और उत्साह रखते हुए मासिक का कार्य के खर्च में घाटा पड़ते भी आगे बढ़ाते रहे। आपकी प्रखर प्रतिज्ञा थी कि आयुर्वेद मासिक द्वारा आयुर्वेद की, वैद्यसमाज की और जन समाज की सेवा करने की ही है। चाहे जो हो जाय मासिक को वैद्यसमाज और जनसमाज में प्रिय बनाने के लिये आपने बहुत ही कष्ट उठाया और अंत में जैसी आपकी शुभ भावना थी वैसा ही शुभ फल प्राप्त किया और कल्पतरु मासिक पत्र के साथ ही साथ अन्यान्य वैद्यकीय साहित्य के पुस्तकों को भी प्रगट करने लगे और हर साल वैद्य समाज और जनसमाज को उपयोगी होवे ऐसी एक एक पुस्तक वैद्य कल्पतरु के ग्राहकों को बिना मूल्य उपहार देना शुरू किया। इस प्रयत्न से जनसमाज की और वैद्य समाज की अभिरुचि बढ़ गई। आपके प्रयत्न से और कार्य करने की शैली से प्रसन्न होकर कितने ही डाक्टर भाइयों ने भी वैद्यकल्पतरु मासिक में अपना लेख भेजने को प्रवृत्त हुवे और अभी भी बहुत से डाक्टर भाइयों ने इस शुभ प्रसिद्ध अग्रगण्य गुर्जर मासिक पत्रं वैद्यकल्पतरु में अपने विद्वत्तापूर्ण लेखों को भेज के हमको उपकृत कर रहे हैं। मासिक पत्र के ग्राहकों की संख्या हमारे पिता श्री की हयाती में बढ़ करके २५०० से ३००० तक पहुँच गई थी। उनके देहान्त के बाद स्वाभाविक रीति से जो कुछ थोड़ा बहुत घाटा लग गया है वह भविष्य में पूर्ण होने की संभावना रहती है। हमारे पिताश्री ने घरवैदू (Family Medicine) नामक एक उपयोगी वैद्यक संग्रह का ग्रंथ गुर्जर भाषा में बनाकर सरल वैद्यक का प्रचार हमारे प्रांत में बढ़ाया है। इस ग्रंथ के द्वारा देहातों में वैद्यों और सामान्य समाज भी अपना कार्य सरलता से साध्य कर लेते हैं। भाषा ज्ञान वाले वैद्यों को यह ग्रंथ मार्ग दर्शक हैं याने आयुर्वेदीय मार्गोपदेशिका का कार्य करता है। आज दिन तक इसकी आठ आवृत्तियाँ हो चुकी हैं। हमारे पिता श्री ने वैद्यकल्पतरु मासिक को हिन्दी भाषा में प्रगट करना शुरू किया था परंतु खर्च पुरा हो जाय इतने भी ग्राहक न होने से इनको बंद करना पड़ा। हमारा मासिक कितने ही देशी राज्यों में अपने एज्युकेशन विभाग में वाचनालयों (लायब्रेरी) के लिये पसंद किया गया है। उसमें अच्छे अच्छे विद्वान वैद्यों, आयुर्वेद प्रेमी सज्जनों ने अपने अपने महत्वपूर्ण जन समाजोपयोगी, वैद्योपयोगी और आयुर्वेद की प्रगति के लिये उत्तम लेख भेज कर इस मासिक को बहुत ही उपकृत करते हैं। हम उनके बहुत ऋणी हैं। हमारे प्रांत में वैद्यकल्पतरु मासिक पत्रों में अग्रगण्य और बहुमान्य है। नि० भा० आ० महामंडल और विद्यापीठ की प्रगती महासम्मेलनों और प्रान्तीय सम्मेलनों के हवाले और अन्यान्य वैद्यकीय समाचार

हमारे मासिक में हर समय प्रगट करते रहते हैं। वैद्यकीय नवीन आविष्कारों को भी उसमें अग्रस्थान देते हैं। मासिक का मूल्य रु० ३) तीन रुपया वार्षिक है। उपहार की पुस्तक मुफ्त भेजते हैं।

इस मासिक में आज तक वैद्यों डाक्टरों, हकीमों और सामान्य विद्वान सज्जनों ने मिला के ४५० लेखकों ने वैद्यकीय लेखों भेज कर हमको मदद दी है उनका हम ऋणी हैं।

वैद्य रविशंकर जटाशंकर

❀ ❀ ❀ ❀

बिहारप्रान्तीय वैद्य सम्मेलन त्रैमासिक पत्रिका

बिहार प्रान्त में आयुर्वेदीय पत्र पत्रिकाओं का नितान्त अभाव था, अतएव वैद्यों में परस्पर सङ्गठन, आयुर्वेद प्रचार तथा विचार-विनिमय में अत्यन्त कठिनाई का अनुभव कर प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन ने पहले पहल वि० प्रा० वै० सं० त्रैमासिक पत्रिका निकालने का निश्चय किया। तदनुसार सन् १९३३ से पत्रिका प्रकाशित हो अपने उद्देश्यों की सिद्धि के लिए प्रयत्न करती हुई निकल रही है। पत्रिका में प्रान्तीय तथा भारतीय बड़े बड़े आयुर्वेदवेत्ता० विद्वानों के आयुर्वेद विषयक गवेषणा पूर्ण मौलिक निबन्ध, अनुभूत योग तथा प्रश्नोतर आदि उपयोगी विषय प्रकाशित किये जाते हैं।

पत्रिका के संरक्षक हैं वैद्यरत्न भिषगाचार्य पं० व्रजविहारी चतुर्वेदी जी आयुर्वेद रत्नाकर पटना।

सम्पादक मण्डल निम्न लिखित निर्दिष्ट हैं।

प्रधान सम्पादक—आयुर्वेदाचार्य पं० श्री विधुभूषण सेन काव्यतीर्थ कविरत्न।

सम्पादक—आयुर्वेदाचार्य गोस्वामी पं० भैरवगिरि जी का० सा० तीर्थ कविरत्न।

" " पं० सुखराम प्रसाद बी० एस० सी०।

" श्री पाठक प्रमोद शरण शर्मा चिकित्सक।

" काव्यतीर्थ पं० श्री श्री कान्त शर्मा वैद्यरत्न।

प्रकाशक—वि० प्रा० वै० सं० कार्यालय पटना।

पत्रिका प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन के सदस्यों को मुफ़ मिलती हैं और सर्व-साधारण को प्रचार के लिये १) रुपया वार्षिक मूल्य में दी जाती है।

❀ ❀ ❀ ❀

रत्नाकर

आयुर्वेद सम्बन्धी उच्चकोटि का सचित्र मासिक पत्र। सम्पादक आयुर्वेदाचार्य पं० छोटेलाल जी जैन वैद्य। यह पत्र छः वर्षों से इटावा से प्रकाशित हो रहा है। इसका वार्षिक मूल्य २) है।

आरोग्य

सम्पादक वैद्य पं० चन्द्रचूड़ जी शास्त्री, चतुर्वेदी तथा वैद्य पं० सूर्य नारायण जी जोशी। वार्षिक मूल्य १)। पता—C/O बाम्बे एजेन्सी, इन्दौर।



श्रीमान् वैद्य गोपीनाथ गुप्त अहमदाबाद ।

संपादक, आरोग्यदर्पण (हिन्दीमासिक पत्र) ।

आयुर्वेद

यह महाराष्ट्र भाषा का पत्र है और वैद्य आप्पा शास्त्री साठे के सम्पादकत्व में बम्बई से बाइस वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। इसका वार्षिक मूल्य १॥=) है।

आर्यवैद्य

यह भी महाराष्ट्र भाषा का पत्र है। पूना से वैद्यभूषण गणेश शास्त्री जोशी के सम्पादकत्व में प्रकाशित हो रहा है। इसका वार्षिक मूल्य १) रुपया है।

आरोग्य-सिन्धु

यह हिन्दी भाषा का पत्र इटावा से पं० लक्ष्मीनारायण जी वैद्यराज के सम्पादकत्व में ३ वर्षों से प्रकाशित हो रहा है। इसका वार्षिक मूल्य २) रुपया है।

जीवनसुधा

सम्पादक भगवद्देवशर्मा, आयुर्वेदाचार्य, दिल्ली।

आयुर्वेद संसार

यह पत्र प्रताप आयुर्वेदिक फार्मास्युटिकल वर्क्स की ओर से अजमेर से प्रकाशित होता है।

Health & Vitality

The journal for National Revitalisation.

Annual subscription Rs. 3/-

Vaidya Sarathy.

An Anglo Vernacular monthly Medical journal mainly devoted to Ayurveda. Annual Subscription Rs. 3.

College of Indigenous Medicine.

Published by the Indigenous Medical Student's Union

Re. 1 per copy.

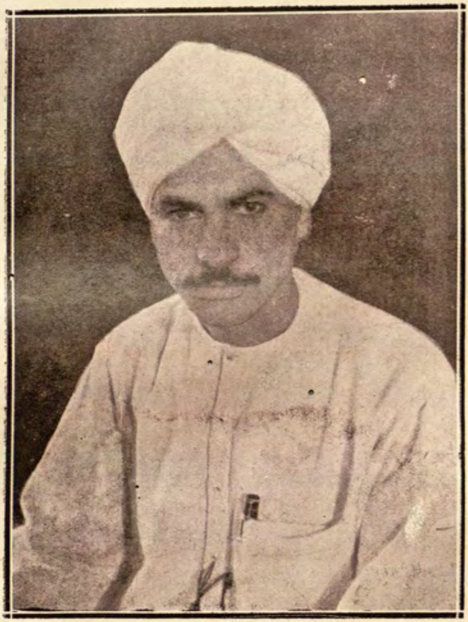
संयुक्तप्रान्तीय द्वितीय वैद्यसम्मेलन हरदोई के सभापति

आयुर्वेदपंचानन पं० जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल का

संक्षिप्त अभिभाषण।

[संयुक्तप्रान्तीय द्वितीय वैद्यसम्मेलन सं० १९७६ में २१ दिसम्बर पौष कृष्ण १४ को हुआ था। उसके सभापति के पद से आयुर्वेदपंचानन पं० जगन्नाथप्रसाद शुक्ल का जो भाषण हुआ था वह बहुत विस्तृत था। स्थल संकोच के कारण उसे समग्र देना सुविधाजनक नहीं होगा। किन्तु उस भाषण का उपसंहार एक महत्वपूर्ण अंश था, उसे हम यहाँ मुद्रित करते हैं।]

सबका सारांश यह है कि हमें रात-दिन अपनी अन्तर्बाह्य उन्नति के लिये प्रयत्नशील रहना चाहिये। विद्यासम्पादन करना, विद्या का विस्तार करना, अपने दोषों को छोड़ना, पराये गुणों का आदर करना, दुःखियों का दुःख दूर करना; सुखियों के सुख में साझीदार होना और उनसे आयुर्वेद के उपकार के लिए अपना हक निकलवाना, परस्पर मिलकर रहना, ज्ञान का आदान प्रदान करना, रोगी के सामने कई वैद्य इकट्ठा होने पर अपनी ही धाक जमाने का प्रयत्न न कर रोगी का उपकार किस प्रकार होगा वैसीही सलाह और युक्ति बताना, अपने व्यवसाय और व्यवहार में सचाई, गम्भीरता, उदारता और भूतदया को प्रधान रखना, आप सार्वजनिक प्राणों के संरक्षक हैं इस उत्तरदायित्व का सदा ध्यान रखना, मत्सर के वशवर्ती हो अपने किसी भाई की निन्दा को अपनी ही निन्दा समझ त्यागना, वृद्धों को 'बालदपि सुभाषितम्" ग्रहण करना और जवानों को वृद्धों का गुरुवत मान रखना सदा उचित है। क्रोध के वशवर्ती हो अपनी और अपने आयुर्वेद की प्रतिष्ठा में कभी बाधा आने देने का अवसर उपस्थित नहीं करना। रोगी श्रीमान हो या गरीब हो, जिस प्रकार उसमें आयुर्वेद की श्रद्धा दृढ़ हो वैसाही करना, क्योंकि द्रव्य प्राप्ति के लिये उद्योग के साथ ही प्रत्येक का भाग्य भी लगा ही रहता है, वह कहीं न कहीं से आवेगा ही। विकार वासनाओं को कभी हृदय में स्थान न दे अपने पास चिकित्सा में आये हुए पुरुष, स्त्री, बालक, बालिका सबको अपने माता-पिता, पुत्र-पुत्री के समान समझ ध्यान पूर्वक उनकी बातें सुन उचित उपाय बताना आयुर्वेद का आदेश और वैद्य का धर्म है। नवयुवक उत्साही वैद्यों को ज्ञान से कभी तृप्ति नहीं होनी चाहिये वे सदा अपना भण्डार हिलोड़ते रहें और समय तथा सुविधा के अनुसार यूनानी, यूरोपीय आदि पद्धतियों के तत्व जानने के लिये भी उत्सुक और उद्योगशील रहें, कोई नवीन अनुभव और ज्ञान प्राप्त होने पर अपने भाइयों में प्रकट कर देना चाहिये, जिससे उस ज्ञान की विस्तृति और संस्कृति में सुलभता हो। वैद्यों की विशेषता में नाड़ी-ज्ञान एक मुख्य अंग है, समाज में नाड़ी-ज्ञान के कारण वैद्यों का विशेष समादर है, उस ज्ञान की प्राप्ति पुस्तकों से नहीं अभ्यास से विशेष होती है। इसलिये "नाड़ीज्ञान विनावैद्यो न लोके पूज्यतां व्रजेत्" पर ध्यान रख व्यक्तिगत रूप से इसकी प्राप्ति पर ध्यान रखना चाहिये। इष्ट के बिना इष्ट-सिद्धि नहीं होती, इसलिये वैद्यों में अपने अभीष्ट-देव का इष्ट होने के सिवाय आदिवैद्य भगवान-धन्वन्तरि का इष्ट होना आवश्यक है, इससे उनकी औषधियों में विलक्षण शक्ति आवेगी, उनका पीयूषपाणित्व बढ़ेगा। प्रतिवर्ष प्रत्येक नगर में श्री धन्वन्तरि महोत्सव होना चाहिये और सर्वसाधारण में धन्वन्तरि पूजा का महत्व प्रतिबिम्बित करना चाहिये। इस अवसर में जो सहायता मिले उसे आयुर्वेद महाविद्यालय की सहायता में भेजना चाहिये। जो अपनी



श्रीमान् वैद्यराज पं. हरिदत्तजी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य लाहोर।
संपादक, 'अश्विनीकुमार' (हिंदी मासिक पत्र)।

इज्जत करना जानता है, उसकी संसार में इज्जत होती है। अपने वैद्यसम्मेलन को अपनी शक्ति, अपनी समष्टि, और अपनी प्रतिष्ठा का केन्द्र समझना और बनाना चाहिये। सम्मेलन को शक्तिमान कर संसार में आयुर्वेद का प्रताप बढ़ने के लिये उसे समर्थ करना चाहिये, जिस से ईसाइयों के मिशन के समान, आर्यसमाज की प्रतिनिधि सभाओं के समान हर प्रकार के उपायों से वह कार्य-सिद्धि के प्रयत्न करता रहे। अपने प्रत्येक कार्य में सत्य और ईश्वर का दृढ़ बल चाहिये। सच्ची कर्तृत्व शक्ति ईश्वर का बल है, ईश्वर का अंश और प्रसाद है। मानवी कर्तव्यों, उच्च सिद्धान्तों और पवित्र आकांक्षाओं के पीछे एक दिव्य शक्ति रहती है, जो मनुष्यों को पतन से बचाती है, इस बल से अवश्य सफलता मिलती है। अपना हृदय सदा उच्च, दृढ़, गम्भीर और विशाल रख कर कर्तव्य क्षेत्र में अवतीर्ण होना चाहिये। हमें नकल नहीं अपनी विशिष्टता का सदा ध्यान रखना चाहिये। केवल अपने कर्तव्य में लगे रहने से ही प्रतिष्ठा होती है, प्रतिष्ठा की आकांक्षा या प्रतिष्ठा के प्रयत्न से मनुष्य प्रतिष्ठित नहीं होता, बल्कि लल्लू बनता है, उसकी ओर लोग अंगुली उठाते और हँसते हैं; "बड़े न हूजै गुनन बिन विरुद बड़ाई पाय। कनक धतूरे को कहै गहनो गढ़ो न जाय॥" किन्तु नीरव कर्तव्य साधन का फल बड़ा मधुर, सुखकर और स्थायी होता है। अपनी-अपनी अलग खिचड़ी पकाना बन्द होना चाहिये, अपना सम्मेलन और अपने विद्यापीठ के अंग रूप होकर ही आयुर्वेद के कार्यों का विस्तार होना चाहिये, जिससे किसी को यह कहने का साहस न हो कि वैद्यों का संगठन नहीं है। विद्यापीठ की परीक्षाओं को प्रभावशाली और प्रतिष्ठित होने दो, भिन्न-भिन्न संस्थाओं और व्यक्तियों की परीक्षाएँ और पदवी दान के कार्य बन्द होने चाहिये, उनसे इस समय लाभ के बदले अपनी केन्द्रीभूत शक्ति को हानि है। इस प्रकार भीतरी और बाहरी कर्तव्यों और प्रयत्नों से हमारा उज्ज्वल स्वरूप प्रकाशित होगा, हमारी कीर्ति बढ़ेगी, हमारे आयुर्वेद के महत्व का विस्तार होगा, हमारा अभ्युदय होगा, हमारे देश का कल्याण और गौरव स्पृहणीय होगा। हमारी धवल ध्वजा फहरावेगी, हमारी मान-प्रतिष्ठा, हमारी सामाजिक स्थिति, उच्च होगी। हम होंगें, हमारा देश होगा और हमारे आयुर्वेद का विश्वव्यापी प्रभाव होगा। कोई अदृश्य किन्तु पवित्र शक्ति कानों में कह रही है "तथास्तु।"

भिषजां साधुवृत्तानां भद्रमागम शालिनां।
अभ्यस्तकर्मणां भद्रं भद्रं भद्राभिलाषिणाम्॥
उज्जृम्भतां प्रेमपरस्परेण, वैद्येषु निर्व्याज भवं च सख्यम्।
धत्तां प्रमोदं किल वैद्यविद्या विद्योततां कीर्तिलता दिगन्ते॥
आयुर्वेद सुधांशु: भासितमिदं भूयान्महीमण्डलम्
वैद्यानां च विकाशमाशु तनुताच्छुभ्रं यशः सन्ततम्।
तूर्णं भारत भूतलं च भवतात् श्रीमत्तथा नीरुजं
लोकोऽयं निखिलोऽपि सौख्य निचयैर्युक्तः सदा तिष्ठतात्॥

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

Ayurveda,

By Capt. A N. N. Panikkar, M. R. C S. (Eng.) L. R. C. P. (Lond.),
Ayurveda Bhushana, (Madras), M. B. Ch. B. (Edin.) L. O. P. & S. [Calcutta]
L. M & S. [Homeo], A. M. A. C. [Madras].

It is a self-evident fact that the advancement of study of Ayurvedic Medicine amongst students at the College of Indigenous Medicine could be materially aided by the presence on the Board of Indigenous Medicine of a number of persons trained in "Scientific Medicine" There is a conservative element amongst native medical practitioners who desire to keep away from the Ayurvedic System, all those advantages which could accrue to it from the development of modern scientific medicine. These practitioners fail to realise that they are doing irreparable damage to the cause of Ayurveda by refusing to incorporate in it the methods of usefulness which have made modern 'scientific medicine' materially popular. In this way they are ignorantly retarding the proper development of Ayurveda. Both Charaka and Susrutha, the great exponants of Ayurveda, have freely advocated learning even from an enemy and Ayurvedic authors have included foreign medicines in their pharmacopæa from time to time, as is seen in the later Ayurvedic works which contain many drugs which do not find a place in the older standard works. Even the use of opium and mercury are only found in later Ayurvedic works, whilst standard works like Charaka and Susrutha did not make use of those medicines freely. On this principle even this conservative element should find easy to reconcile their conscience to the need of utilising the multiplicity of modern methods which have been evolved under the pressure of necessity to meet the discovery and treatment of new diseases. It would be a fatal error for Ayurveda to remain static when modern medicine is developing in so many directions. People would have the right to say in such a case that under the Ayurvedic System of treatment they would be deprived of the methods which alleviate suffering and reduce pain (the two primary objects of medicine) in a manner unknown to the older system. Since medicine is meant to serve humanity, it should be recognised that it knows no narrow boundaries of race and system and should be regarded as a common heritage for mankind to be freely drawn upon for all uses. A beautiful legend states that Charaka and Susrutha were born as gifts of the devas who saw the universal sufferings of man and not of the Indians alone, and those



Capt. A. N. N. PANNIKKER, *M. R. C. S. (England),*
M. B. Ch. B. (Edin). Ayurveda Bhushana (Madras).

who are swayed by ancient lore should read from this a lesson that Ayurveda should not be restricted in its usefulness to the poorer classes alone by a refusal to accept and absorb the results of modern scientific medicine. Another useful lssson could be learnt from the history of Western medicine. Western Medicine, it might be paradoxically stated, had its origin in the East and is therefore still under a debt of gratitude to the ancient system. In borrowing from modern Western Medicine, Ayurveda is in some measure only a part what it has already helped to create. Ayurveda therefore should not be arrested in its legitimate development by the unappreciative attitude of a certain section of Ayurvedic practitioners in this country. The Indian practitioners in the country are doing all in their power to derive the maximum usefulness from Ayurveda by an alliance with modern scientific methods. It is a vain and unfounded fear on the part of others that the individualitv of Ayurveda would be lost by the process of its ineluding modern methods. In passing it might be mentioned that the resuscitation and development of Ayurveda in India for the last half a century were due to the work of Western qualified Indian doctors whose mastery of Ayurveda was largely the result of their knowledge of both systems, supplementing the deficiencies of one or the other through their knowledge of both. There is no reason why the same beneficial results should not be expected from such an enlightened method if used in this country by the students at the Ayurvedic College who have to undergo a five years' training in the study of medicine. It is not however suggested that students should go through two courses of study and qualifications but they should get the benefit of essential modern requirements with an exhaustive study of the principles and practice of Ayurveda in one and the same course at the Ayurvedic College. It is for the purpose of leading to such a result that it is necessary to have on the Board of Indigenous Medicine, for advice and guidance in controlling and regulating the course of study at the Ayurvedic College and the treat ment of patients in Ayurvedic Hospital, a number of persons who have had a training in scientific medicine. It is only by such an experienced body that a course of studies could be evolved progressively which would avoid the danger of changing the character of Ayurveda and substituting in its place a hybrid scheme of studies wholly alien to the intentions of those who are interested in the correct development of Ayurveda in this country. This body could also hold itself responsible to public opinion with authority on the basis of its knowledge and experience, to remove the Ayurveda system from the danger of its being regarded as an entirely self-

sufficient and self-contained system which has reached maturity and completeness in some ancient period and which therefore requires no invigoration from the discoveries of modern scientists.

New diseases have brought into being remedies. It would be disadvantageous to deprive those who have faith in the Ayurvedic system of the relief from suffering such benefits as ordinary educated laymen know to be within the competence of any Western qualified doctor to confer. Knowledge has spread through all ranks, and people are in the habit of comparing their experience. If it happens that a patient who suffers from a particular disease is not correctly diagnosed ard given an appropriate remedy by a practitioner and this patient is compelled to resort to the western qualified doctor who immediately diagnoses his case and prescribes an effective and quick remedy, such a patient would quite naturally feel the burden of the voluntary disabilities which the system of ayurveda suffers for want of a common-sence adjustment of this system to the latest available knowledge. Many examples of the reasonableness and indispensability of modern scientific method could be provided which would prove the advisability of lining up with requirements of the day.

The example might be taken first of a man suffering from a headache. The Ayurvedic physician should be able to have a reasonable apprehension that this might be due to an error of refraction in the eye in which case the only feasible remedy is to recommend the use of spectacles to correct such defect. It is to be noted here that the most assiduous treatment for such a defect by the Ayurvedic method could not prevent the necessity for ultimately wearing specticles. Then there is the inhalation of oxygen in defective aeration of the lungs in cases of pneumonia and the failing heart. This simple but powerful remedy should be made available to the dying man even to make him hold on to life long enough to enable the efficacy of Ayurvedic remedies to be proved. It is time therefore that Ayurvedic physicians cast away their prejudices and adopted the use of oxygen. A simple enema or soap and water is a time-saving necessity. A catheter for relieving a distended bladder is another necessity the use of which is essential to even the Ayurvedic physician. Then there is the use of the thermometer which cannot be dispensed with under any pretence of a more accurate method of recording the temperature Though the physician is throughbly satisfied, it is only fair that the patient should also have some guarantees that a correct reading of his temperature has been made. No one has impugned the reliability of the thermometric method but not all are equally satisfied of the reliability of any other method.



श्रीयुत् डा० गिरीन्द्रनाथ मुकर्जी,
बी० ए०, एम० डी०, एफ० ए० एस० बी०, भिषगाचार्य,
सम्पादक—जर्नल अफ़ आयुर्वेद, कलकत्ता ।

There are a number of prevalent diseases which cannot be diagnosed with tolerable certainty within a reasonable time limit except by resort to microscopic and bacteriological examination. It must be also realised that the early discovery of the true nature of specific infectious diseases like enteric fever, pulmonary tuberculosis, epidemic dysentery and eruptive fevers would effect the reduction of their-spread in crowded household. Besides, these cases should be brought to the notice of the public health authorities but this could be done only after the nature of the diseases is definitely ascertained.

Patients who have been under the advice of Western practitioners desiring a change of treatment under protracted illness, would like Ayurvedic physicians to understand the effect of the medicines already used. The Ayurvedic physician should be able to detect a quinine rash, a bromide rash, bronchial catarrh resulting from the use of potassium iodide, and various forms of skin diseases resulting from the use of arsenical preparations. In this wav alone could be inspired confidence and diseases effectively dealt with.

A few more examples might be adduced in explanation. Under the conditions of modern civilization syphilis is a public health problem of the first magnitude engaging almost universal attention. Those who understand the comparitive merits of the Ayurvedic and Western systems of diagnosis and treatment are aware that the advantages as regards quick results are on the side of scientific medicine which requires the use of *Salvarsan* and other similar remedies Other cases are the examination of the sputum for detection of consumption and asthma, examination of faeces, the detection of hookworm and diabetic conditions by the examination of urine both of which claim a very large percentage of victims in this country, the knogledge and use of local anesthetics and expeditious extraction of foreign bodies, washing out the stomach in cases of poisoning, detection of blood pressure, ante-natal advice, infant feeding, house, hospital and village sanitation, rendering first aid in cases of accidents, assisting and attending in confinements and prevention of sepsis, disposal of excreta of infectious patients, their isolation, the segregation of contacts, preservation of food from infective agencies such as flies etc., and other aspects of the development of modern medicine which are an absolute necessity of acceptable medical practice in modern times. The whole position might be summed up by stating that with the spread of knowledge it has become necessary to take into consideration the fact that the average educated man possesses a sufficient acquaintance with health problems of the kinds referred to above and unless the Ayurvedic physician of today is prepared to keep pace with this ever-

increasing knowledge which is diffused throughout every community by the medium of books, pamphlets, lectures, the press and health demonstrations, the utility of Ayurveda is bound to be diminished and the system brought to undeserved disrepute.

But it must not be forgotten that Ayurveda has certain distinct advantages over the system of Western medicine in many respects. From the statement made above which purposes to be only an enumeration of some of the disabilities of Ayurveda, it should not be construed that there is even the remotest intention of minimising its all-important merits over its rivals in oriental countries. Modern scientific methods have left some of its essential features untouched both on the preventive and curative side. The presence of several vitamins in the fresh decoctions and juices of indigenous plants in the Ayurvedic system, the administration of legiums and grithums which are homologous to those in the allopathic system, possessing, both curative medicinal and nuritive dietetic value, the common use of butter-milk in preventing intestinal infection like enteric fever and the time-honoured oil bath which is an effective preventive against malnutrition and consumption, the use of various oils on the head to prevent the thermic and radiant heat effects of the tropical sun and other climatic severities, the use of rasayana for preventing senile decay and the use of vajeekarana methods of treatment in respect of eugens, are all worthy of recognition.

In no circumstance, therefore, would there be any danger, immediate or remote, of Ayurveda losing its individuality by the absorption of some of the indispensable methods of modern scientific medicine. The weight of its own intrinsic and indisputable merits, its history of agelong service to the largest part of the human family, the value of the impetus it has given to the formation of the Western system of medicine and its utility in some respects in which Western medical science even is unable to offer relief, all join together in making the fears of the conservative element amongst its practitioners vain and unfounded. All things considered, therefore, it is most advisable and necessary that the management of the affairs of the Ayurvedic College should have the benefit of the wise direction and intelligent advice of scientifically trained persons to serve on the Board of Indigenous Medicine. If students have to study scientific medicine the presence of a few scientific men are necessary on the Board.

There are various diseases which cannot be diagnosed without the help of modern scientific knowledge. Diseases brought about by quinine ; for the treatment of such diseases on the ommission of quinine one must know about quinine. Bromide produces rashes on the

skin resembling serious forms of skin diseases and the ayurvedic physician will be at sea to find out what this is and he might give a wrong treatment.

Potassium iodide produces bronchial cattarrh and swelling of the glands round the neck which he might mistake. Another case is that of santonine which produces yellow vision and discoloration of urine etc. The diagnosis of various forms of venereal disease and their treatment immediately by injections. Differential diagnoses of various diseases like malaria from enteric fever, a case of consumption from asthma by sputum diagnosis, differentiating an ordinary case of dysentery by examination of the faeces and the detection of hookworm which is a very common disease in this country, discovery of plague, percentage of suger in diabetes, examination of blood to differentiate different kinds of anaemia, detection of diseases due to contamination of food and water, use of local anæthetics, extraction of foreign bodies examination of blood pressure, pulse, temperature etc. with precision instruments, examination and analysis of urine and examination of the heart, examination of the efficient working of the liver and other organs, and attending to accidents, rendering first aid, proper management of a case of labour without inducing sepsis, (Statistics will prove that there is a high mortality rate of mothers in villages) advice to mothers, infant feeding dieting and nursing, sanitation in hospitals, houses, villages etc., disposal of excreta to prevent the spread of diseases, isolation and segregation of patients, preservation of food etc. are another aspects of the development of modern medicine which is absolutely necessary for an ayurvedic physician.

As popular knowledge of health is very much on the increase and the man in the street knows a lot about health, it is necessary for the Ayurvedic man to know modern sanitation before he meets present-day patients. Therefore the presence of a few scientific men will add to the usefulness of the institution.

Ayurveda.

Extract from an Address.

By Mr. K. BALASINGHAM

At the All-Ceylon Ayurvedic Congress held at the College of Indigenous Medicine in December 1933.

If the college of Indigenous Medicine is to serve any useful purpose you Vaidyas must all help the students with your learning and experience. Your ungrudging service is wanted to make this institution a centre of great usefulness not only to Ceylon but to mankind at large.

Referring to the Governor, Mr. Balasingham continued :—

"Let me also extend a cordial welcome back to Ceylon to H. E. Sir Edward Stubbs to whom you owe so much. He was the first to espouse your cause. He was anxious to do what was in his power to raise the level and status of the vedaralas or vaidyas and in this respect has anticipated Hitler of Germany by 17 years.

"Let me tell you how this happened. In 1916 I urged on Government to encourage the indigenous system of medicine. I will quote from my memorandum.

"Government can confer a great boon on the people by extending its patronage to the system of medicine on which they still rely for the most part, especially as these systems are worthy of encouragement on the testimony of those most competent to judge.

"Owing to want of encouragement the study of our Medical Science is now being neglected and an increasing number of persons take to the practise of medicine with a superficial knowledge of the subject. Encouragement may be given to the indigenous system in several ways:—

1. By the establishment of an Ayurvedic College and Hospital in Colomdo.

2. By appointing a lecturer in Oriental Medicine to the Ceylon Medical College.

3. By the granting of subsidies to hospitals and dispensaries opened by competent medical men in suitable places.

4. By the granting of scholarships to highly qualified western doctors for research in oriental medicine.

5. By the creation of a Board of Indigenous Medicine if the Government cannot undertake this work."



Mr. K. BALASINGHAM.

Chairman of the Board of Indigenous Medicine since its first appointment by Sir Herbert Stanley, Governor.

These proposals were most sympathetically received by Sir Edward Stubbs. He wrote on 19th July 1916 as follows :—

"The history of the Vedarala is something like that of herbalists in Europe. Before modern systems were invented herbalists were in many cases men of learning who knew what they were doing and why later they degenerated into quacks. Why should not wealthy men provide an institution for studying and teaching the indigenous system so as to raise the level of the vedaralas ? Think it over and if you get something started I will see if we can help you.

"In Hongkong there is a hospital where on one side patients are treated according to western method and on the other according to the Chinese system, patients choosing which they prefer. Why not try something of the kind. Dr. Kelly could tell you how it is run."

As a result of further negotiations the Government wrote to the secretary of the Oriental Medical Science Fund, Mr. Donald Obeyesekere, offering about five acres worth about Rs. 150,000. As the Oriental Medical Science Committee was not able, owing to the prevailing trade despression in 1921, to collect sufficient money for building and working expenses the offer of the Government lapsed and the site has become the present Manning Town. Later efforts resulted in this institution. Without the sympathetic support of Sir Edward Stubbs at the start it would have been difficult to have achieved so much.

Almost everything proposed in 1916 has been achieved except the appointment of a lecturer in Oriental Medicine in the Ceylon Medical College. We have in our College two western doctors undergoing training in Ayurveda, and they will soon be qualified to serve as lecturers in Oriental Medicine in the Government Medical College.

In Germany by virtue of a new law issued by Hitler doctors practising with herbs and other old-fashioned remedies are granted the same status as fully qualified doctors. Rudolf Kess, Hitler's Deputy said a few days ago:—

"I have much experience of the value of natural healing on my own body, and it would be a crime against the German people if I did not do all in my power to give this system of healing the position it deserves."

Professorships of Nature-healing will be instituted in universities of Berlin, Cologne, and Munich.

It should not be difficult to persuade the Medical Council in Ceylon to do what the German universities are doing.

Let me now quote a few extracts from a letter dated 14th September 1933 of Dr. Newell. M. D., D. Sc., the Secretary of the National Health League of England.

He writes:—

"I am directed by Augustus Fitz George, our President, who is a cousin to Their Majesties the King and Queen, to acknowledge your letter.

"We are prepared to propagate your system of medicine under the authority of your College throughout Great Britain and in the Southern and Western States of America. Later, we are disposed to introduce it on the Continent. The writer would be prepared to visit your College on behalf of the National Health League at an early date.

'I am sure it would interest you to know that for many years I have devoted myself to the study of Ancient Indian Medicines'.

'You will find my paper on the Germ Theory of Disease herewith and in connection with the same it will, I am sure, gratify you and your College to note that the Pasteur Institute of France has agreed with our findings of the Germ Theory. Our methods of treatment are eminently similar to your own and to give an example of their efficacy I can state that we hold a report from distinguished Surgeon of Brompton Hospital for Consumption, London, in which he states that our method of dealing with acute cases of tuberculosis was successful in from 85 to 90 percent of cases treated. I therefore believe that reciprocity between ourselves and your College will confer enormous benefit on suffering humanity'.

'Be assured the writer and his colleagues will leave no stone unturned to bring the work of your College the wide recognition which it deserves. I would be open on behalf of your college to arrange funds for propagation purposes.'

Are we to understand from this letter that Pasteur's Germ Theory is likely to undergo some slight revision in the light of further research ? It is possible that Indian theories about diseases are not as absurd as some Western doctors seem to think. As a Tamil philosopher truly observed long ago:—What is now known will be forgotten. What we have now forgotten will become known again:—Unaranthana Marakkum, Maranthana, Unarum.

When it is realised that man has lived on this planet for several millions of years it would be presumptuous to reject this cyclic theory of knowledge and believe that only within the last 75 years medicine became a science."

The German Schiler, gave expression to only a partial statement of this law of knowledge when he said:—"The truths of past ages are at present recognized as errors: those of the present are on their way to be so recognized."

Now let me say a word about medical research. There can be no progress in research without your co-operation with those who have undergone a thoroughly scientific training. We are taking the necessary preliminary steps for this important work.

In 1928, one year before we started this College, an M. D. of Vienna who was in Ceylon, was prepared to study our Indigenous Medicine with a view to research work. He was also willing to study Sanskrit for the purpose, but he was not able to wait till the College was opened without a difinite promise of employment, and I was unable to give it. Sometime later a German lady doctor was interested in the study of Ayurveda, but we were not able to find a place for her on our staff.

As I told you before two Western doctors are now undergoing training in Ayurveda, and we trust that before long they will be in a position to do research work and clear the way for the evolution of a unified system of medicine combining all that is good in the indigenous systems and in Western medicine.

The time has now come for you to make an organised effort to get your position in the country clearly defined. There is a badge of inferiority placed upon you. Your certificates as to cause of death are not accepted by the Registrar of Deaths though you are allowed to treat any case. Even the heads of public departments refuse to accept the certificates of even the best of you. You are not allowed to use the most necessary foreign drugs, though the Western system is daily adding to its pharmacopoea from your system and from that of every country. You must agitate for permission to use some Western drugs. The Ayurvedic physicians of India are allowed to use some. Till you get the permission, even if you have studied Western medicine also here, don't use the drugs.

"I should like to make an announcement about a matter which though not coming within the scope of Ayurveda, is a subject in which you will be interested. Steps are being taken to start a Veterinary College of Indigenous Medicine. As this institution has neither the money nor the land for the purpose, it may have to be unconnected with it. In an agricultural country like Ceylon it is necessary that every village should have a qualified veterinary physician. There is no reason why the rudiments of Veterinary Science should not be known to every graduate of this College.

मध्यप्रान्तीय प्रथम वैद्यसम्मेलन जबलपुर के सभापति

आयुर्वेदपंचानन श्री० पं० जगन्नाथप्रसाद जी शुक्ल का

अभिभाषण ।

चतुर्भुजं पीतवस्त्रं सर्वालङ्कार शोभितम् ।
ध्यायेद्धन्वन्तरिं देवं सुरासुर नमस्कृतम् ॥
करवदरसदृशमखिलं, भुवनतलंयत्प्रसादतः कवयः ।
पश्यन्ति सूक्ष्ममतयः, सा जयति सरस्वती देवी ॥
सानन्दमानन्दकरं प्रसन्नं, ज्ञानस्वरूपं, निजवोधयुक्तम् ।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं, श्रीमद्गुरुं "शङ्कर" मानतोस्मि ॥

श्रीमान् स्वागतकारिणी समिति के सभापति महोदय, स्वागतकारिणी के सभासद तथा उपस्थित वैद्यबन्धु और मान्य सज्जन वृन्द !

जिस समय इस अधिवेशन का सभापति पद स्वीकार करने के लिये मुझे सूचित किया गया, उस समय मैं बड़े सङ्कोच और असमञ्जस में पड़ा कि मुझे ऐसा साहस करना चाहिये अथवा नहीं । मध्यप्रदेश में एकसे एक सुयोग्य वैद्यों के रहते हुए भी मेरा आह्वान क्यों किया गया, इसका कारण मैं सोचने लगा । इस समय संयुक्तप्रान्त में रहते हुए भी अखिल-भारतीय वैद्य बन्धुओं और आयुर्वेदिक संसार का मुझ पर जो स्नेह-भाव है, मुझे अपना आज्ञाकारी तुच्छ सेवक समझने की जो प्रेम भावना है, उस जागृति की तरंगों ने मुझे लाचार किया । सेवक को कहीं भी सेवा करने की आज्ञा मिलने पर उसे अस्वीकार करने का अधिकार ही कहाँ है ? मध्यप्रदेश में मेरे ज्येष्ठ बन्धु वैद्य, स्नेह रखने वाले मित्र और आयुर्वेदिक कार्यों में सदैव सहायता करने के लिये उत्सुक सहयोगियों का एक वृन्द रहता है, उन अपने लोगों के बीच किसी भी रूप में उपस्थित होने में मुझे संकोच क्यों होना चाहिये । इसके सिवाय संयुक्तप्रान्त मेरी जन्मभूमि होते हुए भी मध्यप्रदेश मेरी शिक्षणभूमि और प्रारम्भिक कर्मभूमि है, इसके बिलासपुर, रायपुर और नागपुर जिलों में मेरा निवास हो चुका है । इस दृष्टि से मध्यप्रदेश के साथ मेरा जो घनिष्ठ सम्बन्ध है, उसे स्मरण कर आप लोगों के दर्शन का पुण्यकर सुअवसर त्यागने की मुझ में हिम्मत न हुई और प्रेमरज्जु से बँधा हुआ यह सेवक आपकी सेवा में उपस्थित हुआ । आशा है उसी प्रेम और सहयोग के साथ इस गुरुतर कर्तव्य के पालन में आप मेरे सहायक होंगे और अपनी विद्वत्ता तथा अनुभव और कार्यकुशलता के द्वारा शान्ति और निर्विघ्न पूर्वक इस अनुष्ठान की सिद्धि में मेरे सहायक होंगे । मैं शास्त्रीय गुत्थियों को सुलझाने का जटिल प्रश्न छेड़ कर आपके मस्तिष्क को परिश्रम देना नहीं चाहता । मैं केवल सामयिक प्रचलित कर्तव्यों की ओर ही आपका ध्यान आकर्षित कर आपसे कर्तव्य पूर्ति की प्रार्थना करूँगा ।

स्वर्गीय बन्धुओं के प्रति श्रद्धाञ्जलि

अपना वक्तव्य आरम्भ करने के पहले कुछ उन आत्माओं का स्मरण हुए बिना नहीं रहता, जिनकी उपस्थिति हमारे लिये मार्ग दर्शक और कार्य में सहायक होती थी। अखिल भारतीय वैद्यसम्मेलन के सभापति पद को दो बार अलंकृत करने, चरक की उत्तम और सरल टीका रचने और अपनी विद्वत्ता, सरलता, विनोद प्रियता तथा शिष्य परम्परा द्वारा भारत में आयुर्वेद के प्रचार में सफलता प्राप्त करने वाले "वैद्यरत्न" कविराज योगीन्द्रनाथ सेन का वियोग सार्वदेशिक आपत्ति स्वरूप है। नागपुर के वयोवृद्ध और विद्वान वैद्य, पण्डित दामोदर गोविन्द वह्राड पाण्डेय महोदय का स्वर्गवास भी हमें बहुत खटक रहा है। आयुर्वेद की जटिली क्रिया पर आपने प्रकाश डाला था और पारद सम्बन्धी कई प्रयोगों में खासा अनुभव प्राप्त किया था। आपकी उपस्थिति हमें कई अनुभवी सन्देशे देने में समर्थ होती। जबलपुर के सुप्रसिद्ध विद्वान और वृद्ध साहित्य-सेवी पण्डित गङ्गाप्रसाद अग्निहोत्री महोदय का स्वर्गवास हृदय को आघात पहुँचाने वाला हुआ है। यद्यपि आप वैद्य नहीं थे तथापि वैद्यक विद्या के एक पुरस्कर्ता थे और गोरक्षण साहित्य के अप्रतिम अनुभवी और प्रयासी थे। इनके सिवाय हमारे और भी जिन भाइयों का इस वर्ष चिरवियोग हुआ है, उन सबों के प्रति हम अपनी श्रद्धाञ्जलि समर्पित करते हैं और स्वर्गीय सुख भोगते हुए उनके शुभाशीर्वाद हमारे लिये कल्याणकारी होते रहें, यह जगदीश्वर से याचना करते हैं।

वैद्य सम्मेलन

स्वर्गीय आयुर्वेद महोपाध्याय पण्डित शंकरदाजी शास्त्री पदे महोदय ने चालीस-पचास वर्ष पहले से जो आयुर्वेदिक आन्दोलन आरम्भ किया था और पचीस वर्ष पहले पुण्यक्षेत्र नासिक में जो "निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन" रूपी वटवृक्ष का कल्पवृक्ष रोपा था, उसकी जड़ें भारतव्यापी होकर भिन्न-भिन्न प्रान्तों में अंकुरित हुई हैं और किसी-किसी प्रान्त में तो उन्होंने स्वतन्त्र वृक्ष का रूप धारण कर वैद्यों की कामना की पूर्ति करना आरम्भ कर दिया है। स्वर्गीय शंकरदाजी शास्त्री पदे महोदय का मध्यप्रदेश से विशेष प्रेम था और बम्बई प्रान्त के साथ ही उन्होंने मध्यप्रदेश के नागपुर नगर में भी संवत् १९६४ में वैद्य सम्मेलन की शाखा खोल दी थी। मेरे ज्येष्ठ बन्धु वैद्य पञ्चानन पण्डित लक्ष्मणशास्त्री फणशीकर उसके सञ्चालनार्थ नागपुर आये थे और तब से अब तक वे नागपुर में ही हैं। निखिलभारतीय वैद्य सम्मेलन के अधिवेशन भारत के प्रायः सभी प्रान्तों में हो चुके हैं, उसके द्वारा समस्त भारत यहाँ तक कि सीलोन में भी आयुर्वेद का और वैद्यों का गौरव प्रतिष्ठित हो चुका है। एक मध्यप्रदेश ही ऐसा बचा है, जहाँ अब तक सम्मेलन के अधिवेशन नहीं हुए हैं। यही नहीं सीलोन सहित भारत के सभी प्रान्तों में प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन प्रतिष्ठित हो चुके हैं और उनके अधिवेशन बराबर हुआ करते हैं। मध्यप्रदेश अभी तक इससे भी वंचित था। इससे कोई यह न समझे कि मध्यप्रदेश आयुर्वेदिक कार्यों के लिये उर्वर नहीं है अथवा मध्यप्रदेश में उत्साही और कर्मनिष्ठ वैद्यों का अभाव है। स्वर्गीय पदे शास्त्रीजी के पश्चात जब मैंने प्रयाग में आयुर्वेदिक आन्दोलन का भार अपने ऊपर लिया था, तब आरम्भ से ही सम्माननीय मित्र पण्डित गोविन्दप्रसाद शास्त्री और भाई रामभजन शर्माजी से बराबर सहायता और प्रोत्साहन की मुझे प्राप्ति होती रही है। यहाँ के विद्वान और कर्तव्य-दक्ष चिकित्सक पण्डित भिकाजी

विनायक डेगवेकर अपनी लेखनी, अपने मस्तिष्क और अपने परिश्रम का लाभ आयुर्वेदिक कार्यों के लिये बराबर देते चले आ रहे हैं। सागर, दमोह, जबलपुर, कटनी, नागपुर और बरार के मेरे कितने ही सहायक मित्र उज्वल नक्षत्रों के समान बराबर सम्मेलन के कार्यों में प्रकाश डालते रहे हैं। अतएव इस प्रान्त के वैद्यों की कर्तव्यशीलता पर सन्देह न करते हुए यही कहा जा सकता है कि कोई भी काम अपने समय पर होता है। विलम्ब से ही क्यों न हो आप लोगों ने जो इस सम्मेलन का अनुष्ठान किया है, वह बहुत उपयुक्त समय पर हुआ है। सम्मेलन के कर्तव्यों का असली कार्यकाल अब आया है और समय पर दृष्टि देकर समस्त भारत में उसके लिये कार्य करना और दृढ़ आन्दोलन उठाना आवश्यक है। आपका प्रान्त भी इस समय अपना हिस्सा पूरा करे यही अभीष्ट है। आप इस समय जहाँ प्रान्तीय सम्मेलन देख रहे हैं, निखिल भारतीय वैद्य सम्मेलन भी शीघ्र हो सकता है। आवश्यकता यह है कि अपने इस सम्मेलन रूपी पौधे को लहलहा और पल्लवित, सुपुष्पित और सुफलों से लदा हुआ बनाने की आप सतर्कता रखें. मुझे आप लोगों से यही कहना है कि—

सम्मेलन को विरवा दियेउ लगाय।
सींचन की सुधि लीजो (कहुँ) मुरझि न जाय॥

प्रान्तीय सम्मेलनों का महत्व

मित्रो, इसमें सन्देह नहीं कि निखिल भारतीय वैद्य सम्मेलन ने अब तक देश में आयुर्वेद के लिये बहुत कुछ काम किया है। अब से पचीस-तीस वर्ष पहले आयुर्वेदाकाश में जो घनघोर घटा छायी हुई थी, उसके हितैषियों और प्रेमियों को जो निराशा, आक्षेप और विघ्नों से टक्कर लेनी पड़ रही थी, उस स्थिति का परिवर्तन हो गया है। जो विपरीत शक्ति आयुर्वेद को संसार से उठा देना चाहती थी, दुस्साशन के समान उसका बल थक चुका है। इस बात का पता लग चुका है कि आयुर्वेद को ईश्वरी शक्ति का सहारा प्राप्त है। अब आयुर्वेद का भविष्य बहुत उज्वल दिखलायी पड़ता है। परन्तु यह मानना पड़ेगा कि निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन का कार्य भारतव्यापी है। प्रत्येक स्थान की स्थानिक आवश्यकताओं को देखना और उनकी पूर्ति का प्रयत्न करना उसकी विस्तृत शक्ति के लिये भी सम्भव नहीं है। सूर्य का काम संसार को प्रकाश दे देना अपने कर्तव्यों को स्मरण करा देना है। स्वयं जाग कर अपनी सुविधा, शक्ति, बुद्धि और कर्तव्यशीलता का परिचय देते हुए अपना कर्तव्य पूर्ण करना व्यक्तियों का कर्तव्य है। प्रान्तिक सम्मेलनों के सम्बन्ध में भी आप ऐसी ही कल्पना कर लें। निखिल भारतीय वैद्य सम्मेलन से सहारा और शक्ति पाकर प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन अपने प्रान्त की आवश्यकताओं का निरीक्षण करें, उनकी पूर्ति के लिये आन्दोलन करें, भिन्न-भिन्न स्थानों में स्थानिक सभाएँ स्थापित करावें, वैद्यों को अपने कर्तव्य में लगाने का उद्योग करते रहें, उन्हें समय-समय पर कर्तव्य सुझाते रहें. राजनैतिक और व्यावहारिक परिस्थितियों का अवलोकन करते हुए अपना रास्ता साफ करते रहें। भारतीय वृहद् सम्मेलन तो किसी प्रान्त के एक स्थान में हो सकेगा, वह वहाँ जागृति और जोश उत्पन्न कर देगा। भट्ठी में पड़ा हुआ लोहा लाल हो जावेगा; परन्तु उसे निहाई पर रख पीटना और उपयुक्त हथियार या पात्र तैयार करना कुशल कारीगर लोहार का काम है। ऐसी कारीगरी प्रान्तीय सम्मेलनों को ही करनी होगी। प्रान्तीय सम्मेलनों की तीक्ष्ण दृष्टि सदा अपने प्रान्त के सभी जिलों में

रहेगी। आयुर्वेदिक दृष्टि से अपने प्रान्त को सुसंगठित करना, वैद्यों का संघ दृढ़ करना, आयुर्वेद की उन्नति के लिये आवश्यक कार्यों और प्रयत्नों की योजना करते रहना, प्रान्तीय सम्मेलनों का ही कार्य है। इस दृष्टि से आपका यह सम्मेलन यदि स्थायी कार्य करने वाला हो तो इस प्रान्त का बहुत उपकार हो सकता है, प्रान्त के वैद्यों का खासा अभ्युदय हो सकता है, राजदरबार में आयुर्वेद की धाक जम सकती है, सर्वसाधारण में और भी अधिक आयुर्वेद और वैद्यों के प्रति प्रेम जागृत हो सकता है।

सरकार और आयुर्वेद

एक समय था जब सरकार की उदासीनता हमें यह समझने के लिये लाचार करती थी कि सरकार का दृष्टिकोण भारत में देशी वैद्यक को नष्ट होते हुए देखना और उसकी जगह हर एलोपैथी सिस्टम को बढ़ाते और दृढ़ करते जाना है। परन्तु वैद्य सम्मेलन द्वारा उत्पन्न हुई जागृति ने देशवासियों को चौंका दिया। सार्वजनिक प्रयत्नों द्वारा, प्रान्तिक कौंसिलों और भारतीय असेम्बली द्वारा ऐसे प्रस्ताव और प्रश्न हुए कि सरकारका आसन हिल उठा। सरकारी डाक्टरी विभाग ने जब जब आयुर्वेद के विरुद्ध ज़हर उगला तभी उसका मुँहतोड़ उत्तर दिया गया। देशी वैद्यक के पक्ष समर्थन और प्रचार वृद्धि के लिये सरकार पर बराबर दबाव पर दबाव पड़ता गया। इससे जो सरकार चाहती थी कि उदासीन रहने से यह पद्धति आपही नष्ट हो जायगी वह चाहना सफल न हुई। सरकार को लाचार होकर देशी वैद्यक के लिये कुछ करना पड़ा। मद्रास, बंगाल और संयुक्त प्रान्त की सरकारों ने जांच कमीशन अथवा इन- क्वायरी कमिटी नियुक्त की। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड और म्युनिसिपल बोर्डों को देशी चिकित्सा पद्धति को सहायता देने के लिये जहाँ रोका जाता था, वहाँ वह रुकावटें बन्द हुईं। मद्रास में आयुर्वेद और यूनानी की शिक्षा के लिये सरकारी धन से एक पाठशाला स्थापित हुई। बंगाल की सर- कार भी आयुर्वेदिक विद्यालयों को सहायता दे रही है। बिहार की सरकार ने मुजफ्फरपुर में आयुर्वेद की कक्षा, पुरी में आयुर्वेद की पाठशाला और पटना में सुसञ्चालित एक विद्यालय स्थापित किया है। संयुक्तप्रान्त की सरकार ने भी आगे कदम बढ़ाया। स्वर्गीय जस्टिस गोकर्ण नाथ मिश्र (भगवान उनके आत्मा को स्वर्ग में सुखी रखे) के उद्योग और परिश्रम से संयुक्त प्रान्त में एलोपैथी के मेडिकल बोर्ड के ढंग पर "बोर्ड आफ मेडिसिन" कायम हुआ है। उसकी ओर से काशी हिन्दूविश्वविद्यालय में आयुर्वेद का उच्च विद्यालय तथा अलीगढ़ यूनिवर्सिटी में यूनानी का उच्च विद्यालय स्थापित हुआ है। इसी तरह हरिद्वार में आयुर्वेद का विद्यालय और लखनऊ में यूनानी का विद्यालय भी स्थापित हुआ है। यही नहीं बोर्ड जिन्हें उचित समझता है उन यूनानी और आयुर्वेदिक विद्यालयों और औषधालयों को वार्षिक सहायता भी देता है और डाक्टरों के ढंग पर वैद्यों की रजिस्ट्री कराने का आयोजन भी किया है। पञ्जाब की सरकार डी० ए० बी० कालेज के आयुर्वेद विभाग को कुछ वार्षिक सहायता देती है। इससे सरकारी दृष्टिकोण बदलने का आभासमात्र मिल रहा है और इसके लिये हम सरकार को धन्यवाद भी दे सकते हैं। परन्तु यह कार्य समुद्र से एक लोटा जल खींच लेने के बराबर है। हमारा दावा है कि भारत में भारतीय चिकित्सापद्धति का ही बोलबाला होना चाहिये। उसी के प्रचार और अभिवृद्धि में टैक्स के रूप में सर्वसाधारण का दिया हुआ पैसा खर्च होना चाहिये। यदि इन पद्धतियों में कुछ पूर्ति और सुधार की आवश्यकता है तो उसे प्रसन्नता से किया जाय और

डाक्टरी सहायता उसी अंश में ली जाय जितनी आयुर्वेद और यूनानी के लिये सहायक हो। विदेशी सरकार से इस दावे का पालन कराना सहज साध्य नहीं है। तथापि सामयिक सुविधाओं का मार्ग जितना प्रशस्त होता रहे, उसकी ओर से हमें निश्चेष्ट भी नहीं रहना है।

म्युनिसिपलबोर्ड और डिस्ट्रिक्टबोर्ड

म्युनिसिपल बोर्ड और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड लगभग अपनी वस्तु हैं। हमारे चुने हुए मेम्बर वहाँ की नीति निश्चित करते हैं। अतएव म्युनिसिपलटियाँ और डिस्ट्रक्टबोर्डों के द्वारा देशी चिकित्सापद्धति को अधिक से अधिक उत्तेजन मिलना चाहिये। कुछ वर्षों पहले एक जमाना था कि इच्छा होते हुए भी सरकारी रुकावट के कारण म्युनिसिपल बोर्ड और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड आयुर्वेद और उसके औषधालयों को सहायता नहीं दे सकते थे। अब वह स्थिति नहीं है। अतएव वैद्यों का कर्तव्य है कि ऐसा सार्वजनिक मत पुष्ट करें कि मेम्बरों को इस काम के लिये काफी द्रव्य लगाने पर ज़ोर देना पड़े। यह प्रसन्नता की बात है कि आपका म्युनिसिपल बोर्ड देशी औषधालय के लिये कुछ रकम खर्च करता है और भी कई जिलों में इस कार्य में सहायता दी जाती है। किन्तु अभी यह कार्य बहुत अल्पप्रमाण में हो रहा है। इसे बढ़ाना आवश्यक है। औषधालय ही नहीं आयुर्वेद के अस्पताल भी खुलवाने हैं। देश के और कई स्थानों में ऐसी सहायता धीरे धीरे बन्द हो रही है। इलाहाबाद जिले में २७ देशी औषधालय थे वे नष्ट हो चुके हैं और अभी बरेली म्युनिसिपल बोर्ड को बड़े लड़ाई झगड़े के बाद औषधालय बचाने पड़े हैं। आशा है आप लोग अपने अपने जिलों में इसके लिये प्रबल उद्योग करेंगे।

स्वराज्य और आयुर्वेद

इस समय स्वराज्य प्राप्त करने के लिये देशव्यापी प्रबल आन्दोलन मच रहा है। वैद्य भी देश के नागरिक हैं; उन पर भी देश की भलाई बुराई का उत्तरदायित्व है। अतएव वे इस आन्दोलन से अपने को कभी अलग नहीं कर सकते। प्रसन्नता की बात है कि पिछले आन्दोलन में प्रायः सभी प्रान्तों के वैद्यों ने अपने कर्तव्य का कुछ हिस्सा चुकाया है। राष्ट्र मानवीय घटकों का समुदाय होता है और हमारी भावना, स्वहित कल्पना और प्रचलित जीवनक्रम की भावना से बद्ध रहता है। अतएव उसके विचार, आत्मत्याग और कष्ट सहन पूर्वक प्रयत्न करने पर ही उसका उद्धार होता है। यदि हम ऐसा न करें और सामयिक सुविधा से सन्तुष्ट रह भविष्य कल्याण की ओर से आँख मीच लें तो हम अपने ऊपर कलङ्क-कालिमा पोत लेंगे। स्वार्थत्याग और आत्मसंयम के साथ राष्ट्र की पुकार सुनना ही और आत्मकल्याण का साधन करना ही सामयिक बुद्धिमानी है। स्वार्थ के लिये राष्ट्रहित का विनाश कभी नहीं किया जा सकता। यह सच है कि वैद्य लोग यों भी जनता के कल्याण में ही लगे रहते हैं, परन्तु विशिष्ट आवश्यकता के समय साधारण दृष्टि को विशेष की ओर आकर्षित करना ही पड़ता है। अपने अथवा पड़ोसी के मकान में आग लगने पर किसी वैद्य को वहाँ की अनुपस्थिति से इसलिये क्षमा नहीं किया जा सकता कि वह जनता के कल्याण के एक काम में लगा हुआ था। इस समय हमारे राष्ट्र का निर्माण हो रहा है, उसमें अपनी शक्ति और साहस के अनुसार योग्यदान करना ही कर्त्तव्य है।

कर्तव्य के अतिरिक्त इसमें अपना स्वार्थ भी है। विदेशी सरकार की कल्पना में यह बात नहीं आ सकती कि अपनी चिकित्सापद्धति और चिकित्सकों पर देश का कितना प्रेम और

कितना विश्वास है और होना चाहिये। वह अपने ही दृष्टिकोण से हमें देखने की आदी है। स्वराज्य की स्थापना होने पर समयानुसार देशवासियों का ध्यान अपनी चिकित्सा-पद्धति की ओर अपने चिकित्सकों की ओर जाना स्वाभाविक है। उस समय वैद्यों की खिल्ली नहीं उड़ायी जा सकेगी, उनकी चिकित्सापद्धति के दोष दिखाने पर ही सारा दारमदार नहीं रहेगा। वैद्यों और हकीमों का दर्जा अवश्य बढ़ जावेगा और अपनी चिकित्सापद्धति के लिये राज्य का आवश्यक रुपया खर्च किया जावेगा। जिससे हमारे आयुर्वेद में सैकड़ों वर्ष की उदासीनता से जो मैल का पर्दा चढ़ गया है, वह दूर होगा, उसका सुन्दर और मनभावना स्वरूप सामने आ जावेगा। आत्माभिमान के साथ वैद्य सिर ऊँचा कर सकेंगे और जगह जगह आयुर्वेद के औषधालय, अस्पताल, सेनीटोरियम (स्वास्थ्यनिवास) और विद्यालय दिखलायी पड़ेंगे। अतएव अपने भविष्य कल्याण की भावना सामने रख वैद्यों को भी स्वराज्य प्राप्ति के प्रयत्न में अग्रसर रहना चाहिये।

देशी रियासतें

देशी रियासतें हमारे अभिमान और आत्मगौरव के प्रकाशक हैं। परन्तु दुःख है कि वहाँ भी एलोपैथी का जितना दौरदौरा है उतना हमारी देशी चिकित्सापद्धति का नहीं है। त्रावणकोर, मैसूर, बड़ोदा, ग्वालियर, पटियाला, जयपुर आदि कुछ रियासतों में आयुर्वेद की ओर कुछ ध्यान दिया गया है; परन्तु अन्य बहुत सी रियासतें इस ओर से अब तक बे खबर हैं। ऐसी प्रायः सभी रियासतें हैं जहाँ राजवैद्य हैं अवश्य; परन्तु उनमें से अधिकांश का कुछ प्रभाव नहीं है और डाक्टरों का ही वहाँ भी बोलबाला है। इसमें कुछ दोष तो हम वैद्यों का भी है। राजवैद्य लोग अपनी माफी या जागीर में मस्त रहते हैं, अपना प्रभाव विस्तार करने योग्य बनकर अपनी योग्यता की धाक राजदरबार और सर्वसाधारण पर स्थापित करने, अपने कर्तव्य में सदा अग्रसर रहने की ओर बहुत कम ध्यान देते हैं। संसार किसी की परवाह तो करता नहीं, वह सरपट दौड़ता जाता है, जो पीछे पड़ जायगा वह रह जायगा। इसलिये वैद्यों को आत्मोन्नति का प्रयत्न सबसे पहले करना चाहिये। मध्यप्रदेश में मध्यम कोटि की छोटी बड़ी अनेक रियासतें हैं। यह सच है वे अलग अलग प्रयत्न में अधिक अग्रसर नहीं हो सकतीं। परन्तु अपने बालकों की शिक्षा के लिये जैसे उन्होंने रायपुर में राजकुमार कालेज स्थापित किया है, उसी तरह अपनी रियासत के कल्याण के लिये अपने राजवैद्यों की उन्नति के लिये सम्मिलित शक्ति से एक आयुर्वेद विद्यालय स्थापित कर सकती हैं। उसमें उत्तीर्ण वैद्यों को अपनी रियासत में प्रतिष्ठित कर जनता के कल्याण के लिये आवश्यकतानुसार औषधालय और अस्पताल खुलवा सकती हैं। जब तक विद्यालय स्थापन का कार्य नहीं हो सकता, तब तक अपनी रियासत के होनहार नवयुवकों को छात्रवृत्ति देकर हिन्दूविश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग में अथवा अन्य ऐसे ही आधुनिक ढंग से सञ्चालित विद्यालयों में पढ़ने के लिये भेज सकती हैं। इन कार्यों के लिये आप लोग अपने प्रान्त के नरेशों का ध्यान आकर्षित करने में दत्तचित रहें तो निस्सन्देह सफलता हो सकती है।

आबकारी कानून

विदेशी शासन पद्धति का जो कटुफल हमें नित्य चखना पड़ता है, उसमें से पायजन एक्ट और आबकारी कानून एक है। हमारे औषध प्रयोगों के लिये हमें अफीम, धतूरा, भाँग,

संखिया, सींगिया आदि विषोपविष की नित्य आवश्यकता रहती है। जब तक काफी तादाद में हम इनका संग्रह अपने पास न रखें तब तक आवश्यकता पड़ने पर हम औषधि में उनका उपयोग नहीं कर सकते। कायदे के अनुसार हमें केवल २॥ तोले विषोपविष खरीदने और रख सकने का अधिकार है। परन्तु तैलों में और रसोपरस बनाने में हमें सेरों विषोपविष की आवश्यकता पड़ती है। वैद्यों को औषधि बनानी ही पड़ती है और विषोपविष जैसे मिले लेना ही पड़ता है। जब तक सरकारी कर्मचारी जहाँ-तहाँ इस सम्बन्ध में मुकदमे चला देते हैं। कायदे का यह बन्धन सुविधाजनक रीति से ढीला होना ही चाहिये। कौंसिलों में प्रजापक्षीय मेम्बरों को इस सम्बन्ध में अवश्य प्रयत्न कर वैद्यों की अड़चन दूर करनी चाहिये।

दूसरी अड़चन आबकारी कानून की है। सैकड़ों हजारों वर्षों से वैद्य द्राक्षासव, कुमारी-आसव आदि बनाते आते हैं। सैकड़ों वर्षों से संजीवनीसुरा भी बनती है। बम्बई, बंगाल, बिहार, पंजाब आदि में इस सम्बन्ध के झगड़े उठ चुके हैं। बहुत आन्दोलन के बाद लगभग यह तय हो चुका है कि आसव-अरिष्ट पर मुकदमे न चलाये जाया करें। बम्बई प्रान्त और बंगाल प्रान्त में जब इस विषय के मामले उठे थे तब यह देखा गया था कि २२ डिग्री तक प्रूफ स्पिरिट द्राक्षासव में पाया जाता है। अन्य आसव-अरिष्ट में इससे कम ही मिलता है। उस समय आबकारी विभाग को हिदायत की गयी थी कि इस तरह के आसव-अरिष्ट पर मुकदमे न चलाये जाया करें। आसव-अरिष्ट को शराब की कोटि में ले जाना ही हिमाकत है। उनमें औषधि केवल आसुत की जाती है। डेग भपके से उन्हें खींचा नहीं जाता। बिहार में संजीवनी सुरा पर झगड़ा था। अवश्य ही संजीवनी सुरा में अधिक अलकोहल रहता है, और वह नली से खींची भी जाती है। जो हो; उस समय सरकारी रुख यह दिखलायी पड़ा था कि यदि इसका उपयोग वैद्य लोग अपने बीमारों पर ही करें और सर्वसाधारण के हाथ बिक्री न किया करें तो उनपर मुकदमे न चलाये जाया करें। यद्यपि यह बात भी विवाद ग्रस्त ही है। रोगी और ग्राहक का निर्णय भी झगड़े की बात है। जो हो; इतना होने पर भी आबकारी विभाग जब तक कहीं न कहीं मुकदमे चला ही दिया करता है। अपने किसी अप्रिय वैद्य पर ऐसे मामले उठा देने में उसे मजा आता है। अभी हाल में ही इसी प्रान्त के गोंदिया स्थान के वैद्य पं० शिवबालक द्विवेदी जी पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें दो सौ रुपया जुर्माना अथवा एक महीने की कड़ी कैद की सजा भी हो गयी है। इस मामले में द्राक्षासव, अंजीर अर्क, बब्बूलारिष्ट, जम्बीरद्रव, अमृतारिष्ट और बिल्वादि आसव को भी लिया गया है। मजा यह है कि आसुत होता हुआ द्राक्षासव भी अदालत में पेश हुआ था। अस्तु अभी शायद इस मामले की अपील हुई है और मामला विचाराधीन होने से मैं उस पर कोई टीका नहीं करना चाहता। किन्तु इस तरह के अन्य मामलों के बारे में हमें बतला देना चाहिये कि इस विषय में सरकार को सोचना चाहिये कि वैद्यक शास्त्रानुसार जो चीजें तैयार करने का वैद्यों को हक है, उस पर हमला करना उचित है या नहीं। अदालतें खाली अपने कायदे को देखती हैं और सजा कर देती हैं। इस सम्बन्ध का कायदा इतना लचीला है, कि उससे पिण्ड छुड़ाना सहज नहीं है। इस मामले में कुछ वैद्यों ने अदालत को यह भी बतलाया था कि आसव और अरिष्ट बनाने के तरीके क्या हैं। किन्तु मालूम पड़ता है अदालतें केवल इतना ही देखती हैं कि चाहे वह जिस विधि से बने उनमें अलकोहल होने से ही सजा देनी चाहिये। तब हमें यह भी घोषित करना होगा कि अदालतों की समझ या कायदे की कमजोरी के हम

जिम्मेदार नहीं। हम दवा बनाते हैं और बनावेंगे, आबकारी कानून चोरी से शराब बना कर बेचने वालों के लिये है, वैद्यों का गला घोंटने—वैद्यों का औषधि बनाने का हक छीनने—हमारे आयुर्वेद को सत्यानाश करने के लिये नहीं है। कायदे को साफ करना सरकार का काम है, कौंसिलों के मेम्बरों का काम है। वैद्य लोग अपना हक नहीं छोड़ सकते और अधूरे कायदे की ओट से किसी को ऐसे अधिकार छीनने का हक नहीं है। कायदा सुधारा जाना चाहिये और स्पष्ट उल्लेख होना चाहिये कि शास्त्रानुसार आसव-अरिष्ट बनाने वाले वैद्यों पर इसका प्रयोग नहीं होगा। आसव-अरिष्ट बनाने की विधि अलग है और शराब बनाने की अलग। दोनों को एक झमेले में डालना सरासर अन्याय है और वैद्यों को जानबूझ कर नाहक तंग करना है। सरकार की यह मनोवृत्ति बदलनी ही चाहिये। दवा दवा रहेगी और शराब एक अनीति का विषय है। दोनों का मेल कर देना लोगों की आँखों में धूल झोंकना है।

एक बात का ध्यान वैद्यों को भी रखना पड़ेगा, उन्हें आबकारी विभाग से कोई प्रतिद्वन्दिता नहीं करनी है। उन्हें औषधि बनानी है, शराब नहीं। यह ठीक है कि आसव-अरिष्ट में कुछ प्रूफस्पिरिट-अलकोहल आ जाता है; परन्तु वह इतने अधिक प्रमाण में नहीं आना चाहिये कि वैद्यों को शास्त्र और अपने अधिकार के लिये लड़ने में गुंजाइश न रहे। बम्बई प्रान्त में जिन द्राक्षासवों की जाँच हुई थी, उनमें १८ से २० डिग्री तक अलकोहल मिली थी। और इतने के लिये सरकार की ओर से गुंजाइश रखी गयी थी। हम यह नहीं चाहते कि वैद्यों के पीछे लायसेंस का पुछल्ला लगाया जाय और हरदम की जाँचपड़ताल उनके गले पड़े। हमें औषधि बनानी है और उसे औषधि के दर्जे तक ही रखना ठीक होगा। इसे अधिक विवाद-ग्रस्त बना देना अपने अधिकारों को झंझट में डालना होगा। जिन्हें पूरी तरह पर शराब ही बनानी हो वे चाहे वैद्य हों चाहे कोई हों, उनके लिये लायसेंस का दरवाजा खुला हुआ है। परन्तु वे स्मरण रखें कि बुढ़िया के मरने का डर नहीं, यमराज के घर देख लेने का डर है। एक आध ने लैसंस लिया नहीं कि सब वैद्यों के पीछे उसका पतिंगा लगेगा। इसलिये वैद्यों को बहुत सावधानी से अपने हक की रक्षा करनी होगी।

वैद्यों की रजिस्ट्री

बाईस वर्ष पहले बम्बई प्रान्त में प्रथम डाक्टरों की रजिस्ट्री का कानून बना था, उस समय वैद्य और हकीमों ने उसका विरोध किया था। क्योंकि उस कायदे से सरकारी नज़र में डाक्टरों का दर्ज़ा बढ़ जाता था और वैद्य हकीम अनक्वालीफाइड (अयोग्य) की श्रेणी में आ पड़ते थे। धीरे धीरे प्लेग के समान यह कायदा बढ़ा और सभी प्रान्तों में उसका अमल दखल हो गया। डाक्टर लोग वैद्यों से मिलने-जुलने, सलाह-मशविरा करने और उनकी संस्थाओं में आने जाने, पढ़ाने तथा बोलने से भी रोके जाने लगे। अब यद्यपि ऐसी उग्रता नहीं दिखायी जाती, और जहाँ तहाँ वैद्यों के सार्टिफिकेट भी मान लिये जाते हैं तथापि कायदे द्वारा आयी हुई आयोग्यता की छाप अभी तक देशी चिकित्सकों के माथे से नहीं टली है। इसी-बीच संयुक्त प्रान्त में स्थापित "बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन". ने वैद्यों और हकीमों की भी रजिस्ट्री का कायदा बना डाला है। जब डाक्टरी रजिस्ट्री का प्लेग देश भर में फैल चुका है, तब उससे बचने के लिये यह रजिस्ट्री रूपी यदि प्लेग का टीका लेने की आवश्यकता पड़े तो आश्चर्य ही क्या है। अतएव संयुक्तप्रान्तीय वैद्य अपना नाम रजिस्टर कराने का विचार कर रहे हैं।

ऐसा कायदा भी एक प्रान्त से दूसरे प्रान्तों में धावा मार सकता है ; अतएव आप लोग भी इस पर विचार करें तो असामयिक न होगा। ऐसा कायदा किसी को रजिस्ट्री कराने के लिये बाध्य नहीं करता, तथापि रजिस्टर्ड वैद्यों के लिये कुछ अधिकारों का लालच दिखा दिया गया है। ऐसे रजिस्टर्ड वैद्य "बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन" में अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार पावेंगे, विष सम्बन्धी नियमानुसार दिये हुए लायसेंस के अनुसार जिलाधीश के सम्मुख रजिस्ट्रेशन प्रमाणपत्र प्रेषित करने पर विष रखने का अधिकार पावेंगे, और 'ब' श्रेणी के वैद्य ५०) तक के नौकरों को तथा 'अ' श्रेणी के वैद्य १००) तक के नौकरों को बीमारी, आयु, योग्यता तथा छुट्टी के सार्टिफिकेट दे सकेंगे। मालूम पड़ता है ये सार्टिफिकेट अभी म्युनिसिपल बोर्ड और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के कर्मचारियों को ही दिये जा सकेंगे। यदि ऐसा ही हो तो यह लालच बहुत निम्न श्रेणी की है। योग्य वैद्यों के सार्टिफिकेट तो ऐसे बोर्डों में अब भी ऊँचे कर्मचारियों के सम्बन्ध में भो मान्य होते हैं। इसके सिवाय १००) से ऊपर के कर्मचारियों को सार्टिफिकेट न दे सकेना कभी सन्तोषजनक नहीं माना जा सकता। यही नहीं सरकारी परीक्षा पास वैद्य हकीमों की रजिस्ट्री तो तुरन्त हो जावेगी ; परन्तु आयुर्वेद विद्यापीठ तथा अन्य संस्थाओं की परीक्षा वालों को पाँच वर्षों तक ठहरना पड़ेगा, आयुर्वेद विद्यापीठ जैसी प्रामाणिक संस्था के वैद्यों को सरकारी परीक्षा के समान ही अधिकार न मिलने में कोई कारण नहीं हो सकता। आशा है आपके प्रान्त में ऐसे प्रश्न उठने पर आप अधिक सतर्कता से इसका निरीक्षण करेंगे। संयुक्त प्रान्तीय वैद्य आरम्भ में ही इन नियमों को कस कर जितना अनुकूल बनवा सकेंगे, उतना ही अच्छा होगा। इस समय संयुक्त प्रान्तीय वैद्यों की सावधानी अन्य प्रान्त वालों के लिये भी सुविधाजनक होगी।

वैद्य सभाएँ

जैसे मनुष्य शरीर के अङ्ग-उपाङ्ग यदि कार्यक्षम होते हैं तो वह मनुष्य अपना कर्तव्य पूर्ण करने में समर्थ होता है, उसी तरह किसी संस्था की शाखा-प्रशाखाएँ अपने कर्तव्य में निपुण रहने पर वह संस्था सफलतापूर्वक अपना काम कर सकती है। भारतीय वैद्यसम्मेलन और प्रान्तीय सम्मेलनों के अङ्गरूप स्थानिक सभाएँ हैं। जब तक स्थानिक सभाएँ स्थापित होकर अपना कार्य-विस्तार नहीं करतीं, तब तक सम्मेलन के उद्देश्यों का पूर्ण प्रचार नहीं हो सकता। प्रत्येक जिले और बड़ी जगह के वैद्यों का कर्तव्य है कि वे स्थानिक सभाएँ खोलें और उनके द्वारा सतत कार्य सञ्चालित करते रहें। ऐसी सभाओं के कर्तव्य दो प्रकार के हो सकते हैं। एक वैद्यों के उन्नति विधायक कार्य और दूसरे सर्वसाधारण के उपयोगी कार्य। समय-समय पर वैद्यक कार्य की कठिनाइयों पर सम्मिलित विचार करना, प्रचलित रोगों के सम्बन्ध में सोचना, नये-नये आविष्कारों के सम्बन्ध में अपने विचार स्थिर करना आवश्यक है। बहुत सी ऐसी औषधियाँ हैं जो अभी सन्दिग्ध अवस्था में पड़ी हुई हैं। किसी प्रान्त में उसके बदले कोई ली जा सकती है, किसी में कोई। वैद्यसम्मेलन ने ऐसी औषधियों की एक लिस्ट तैयार की है और प्रतिवर्ष दो एक औषधि के निर्णय का प्रयत्न भी करता है। सन्दिग्ध औषधियों की लिस्ट देखकर स्थानिक सभाएँ उनके नमूने इकट्ठे करें और साधक-बाधक प्रमाणों द्वारा अपने यहाँ उनकी चर्चा करें। परिमार्जित विचारों को लेकर वैद्यसम्मेलन में जावें तो वहाँ सन्दिग्ध औषधि निर्णय में बड़ी सहायता मिला करे। आपके प्रान्त के उत्साही वैद्य श्रीयुक्त कृष्णदत्त जी

इस विषय में अच्छा परिश्रम कर रहे हैं. जङ्गलों-पहाड़ों की दौड़ लगा रहे हैं। ऐसे लोगों के परिश्रम से लाभ उठाना आवश्यक है। आजकल वैद्यसम्मेलन में चरक कथित पद्धति से सम्भाषा परिषद् होती हैं, वहाँ नये ढङ्ग के रोगों पर (जिनके सम्बन्ध में हमारे निदान और चिकित्सा ग्रन्थों में विस्तारपूर्वक उल्लेख नहीं है।) विचार होता है। सुजाक, उपदंश, मोतीझरा, न्यूमोनिया, ब्लडप्रेशर, इनफ्लुएञ्जा, प्लूरिसी आदि पर अभी हमें बहुत कुछ चर्चा करनी है। अपने यहाँ हम इनके सम्बन्ध में विचार करते रहेंगे तो सम्मेलन में कुछ विचार लेकर जायँगे और सम्मेलन में इनके सम्बन्ध में चर्चा करने की सुविधा होगी। इञ्जेकशन, मूत्र-परीक्षा, स्टेथस्कोप आदि के व्यवहार-सम्बन्ध में तथा नये आविष्कारों के सम्बन्ध में हमें कुछ निश्चित धारणा बना लेनी चाहिये। स्थानिक सभाएँ इसके लिये उपयुक्त स्थल हैं। समय-समय पर प्रचलित रोगों और संक्रामक रोगों के सम्बन्ध में जनता को हिदायत देते रहें। उनकी रोक और उनसे बचने के सम्बन्ध में उपयुक्त उपाय बताते रहें। बीच-बीच में उत्सव करते रहें। धन्वन्तरि उत्सव (कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी) और भरद्वाज उत्सव (कार्तिक शुक्ल नौमी) इसके उपयुक्त साधन हैं। इन उत्सवों को लगातार कई दिनों तक धूमधाम से मनाया जाय। आवश्यक विषयों पर निबन्ध पढ़े जायँ। प्रदर्शिनी की जाय। इससे वैद्यों को भी कुछ नयी बातें मालूम होंगी और जनता को भी बहुत कुछ उपदेश मिलेगा।

आकर्षण

ऐसी सभाएँ जनता का ध्यान आयुर्वेद की ओर बराबर आकर्षित करती रहें, धनियों के धन का सदुपयोग कैसे हो सकता है, यह बतलाती रहें। आयुर्वेद के औषधालय और अस्पताल खुलवाने बहुत आवश्यक हैं। इनके द्वारा आयुर्वेद की यथार्थ उपकारिता प्रकट होती है। अभी हाल में ही पूने के एक धनी सेठ हनुमानरामजी ने अपने भाई के स्मारक में सेठ ताराचन्द रामनाथ धर्मार्थ अस्पताल खोला है। स्थानिक सभाएँ ऐसे उत्साहियों के सामने लावें और उनसे जनता के हित के कार्य कराती रहें। बम्बई के आयुर्वेद प्रेमी डाक्टर म्हसकर ने अपनी पुत्री श्रीमती कमलाबाई के नाम से एक आयुर्वेदिक सूतिका गृह चालिस हजार के दान से खोलवाना निश्चय किया है। उद्योग करने से ऐसे उदार सज्जन अन्य प्रान्तों में और आपके प्रान्त में भी मिल सकते हैं। ऐसे स्थल वैद्यों के अभ्यास के लिये खासी प्रयोगशाला का काम दे सकते हैं। सुनते हैं यूरोप में डाक्टरी के विद्यालय और अस्पताल प्रायः सार्वजनिक और व्यक्तिगत फण्ड से ही स्थापित हैं। सरकारी पूँजी का सदुपयोग होना चाहिये। इस वर्ष बम्बई के वैद्यसंघ ने धन्वन्तरि उत्सव के समय बड़े साहस का प्रयोग करना निश्चय किया था। सर्पदंश पर प्रत्यक्ष प्रयोगात्मक व्याख्यान होनेवाला था। दरअसल यह बहुत साहस और धोखे का काम था; किन्तु धोखे में डाले बिना बड़े-बड़े प्रयोग नहीं हो सकते। पश्चिमी वैज्ञानिक अपने को धोखे में डाल कर बड़े-बड़े प्रयोग किया करते हैं। यह सच है कि अभी भारत की स्थानिक सभाएँ उतने सफल प्रयत्न करने में समर्थ नहीं सिद्ध हुई हैं और इसमें हमीं लोगों का आलस्य बाधक होता है; तथापि जहाँ सभाएँ रहती हैं वहाँ कुछ न कुछ काम होता ही है। जबलपुर की सभा ने आरम्भ में उत्साह से काम किया और अब भी समय-समय पर कर ही रही है। नागपुर की सभा ने धन्वन्तरि पाठशाला तथा चर्चा मण्डल की योजना की है। आशा है उत्साही वैद्यगण अपने शहरों में वैद्य सभाएँ स्थापित कर उनके द्वारा विधायक कार्य करने की योजना करेंगे।

वैद्यक शिक्षा की सुगमता

मानवीय मनोवृत्ति का दुर्लक्ष्य करना सदा हानिकर होता है। इस समय यह विचार लोगों में बढ़ रहा है कि सुलभता पूर्वक वैद्यक शिक्षा का प्रचार किया जाय। वैद्य सम्मेलन के आयुर्वेद विद्यापीठ ने वैद्यक विद्या का एक पाठ्यक्रम तैयार किया है और वह उत्तम तथा सर्वप्रिय भी हुआ है। वैद्य सम्मेलन सत्रह-अठारह वर्षों से उसी के अनुसार तीन प्रकार की परीक्षा ले रहा है और उनसे वैद्य समाज का यथेष्ट उपकार भी हुआ है। अब तक जितनी शिक्षा और परीक्षा की संस्थाएँ खुली हैं, उन सबों के पाठ्यक्रम का यही आधार रहा है। किन्तु इसमें उच्च परीक्षा केवल संस्कृत द्वारा दी जा सकती है। देशी भाषा द्वारा केवल भिषक् परीक्षा दी जाती है; परन्तु यही अब काफी नहीं मालूम होता। संयुक्त प्रान्तीय सरकार ने जो परीक्षाएँ स्थापित की हैं वे भी ऊँचे दर्जे की हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय के आयुर्वेद विभाग का पाठ्यक्रम भी उच्च श्रेणी का है। एफ० ए० तक की अंग्रेजी और मध्यमा तक संस्कृत जानने वाले ही उसका लाभ उठा सकते हैं। आवश्यकता है कि उच्च श्रेणी के वैद्य तैयार करने के साथ ही ऐसे वैद्य भी तैयार किये जाँय, जिनके द्वारा देहातों में प्रचारकार्य और चिकित्साकार्य सुलभता पूर्वक हो सके। इसके अभाव में जहाँ तहाँ नकली संस्थाएँ कायम हो रही हैं और वे रुपये ले-लेकर वैद्यक की पदवियाँ बाँट रही हैं। यह नकली पदवियाँ बाँटने की दूकानें तेज़ी से चमक रही हैं। सरकार का इधर दुर्लक्ष्य है और वैद्य सम्मेलन इसे रोकने में असमर्थ है। इस व्यवसाय को रोकने का यही उपाय है कि कुछ वैद्यक परीक्षाएँ और भी सरल बना दी जाँय। बिना पढ़े लिखे भी लोग वैद्य हो जाते हैं और मान्य संस्थाओं से मिलती जुलती पदवी अपने नाम के साथ जोड़कर जनता को ठगा करते हैं। इससे तो यही अच्छा हो कि वे वैद्यक शिक्षा भी प्राप्त कर लें और उनकी पदवी की लालसा भी तृप्त हो सके। हम नहीं चाहते कि ज्ञान में कमी रहे। अभी आयुर्वेद विद्यापीठ जैसे भिषक् परीक्षा लेता है, उसी तरह यह क्षेत्र और विस्तृत कर दिया जाय। आयुर्वेद विशारद और आयुर्वेदाचार्य की शिक्षा का जैसा पाठ्यक्रम है उसी के अनुसार पाठ्यक्रम रहते हुए हिन्दी द्वारा भी वे परीक्षाएँ हो सकें। जो परीक्षार्थी विशारद परीक्षा के प्रश्नपत्रों का उत्तर हिन्दी द्वारा दें, उन्हें भिषक्भूषण की उपाधि मिले और आयुर्वेदाचार्य के प्रश्नपत्रों का उत्तर हिन्दी द्वारा देनेवालों को भिषग्रत्न की उपाधि दी जाय। इससे वैद्यक ज्ञान लगभग ज्यों का त्यों रहेगा। केवल संस्कृत ज्ञान की कमी रहेगी। किसी विज्ञान की शिक्षा के लिये भाषा विशेष की शर्त रखना आवश्यक नहीं है। एक समय था जब ऐसी शिक्षा के लिये वैद्यक पुस्तकों की कमी थी; किन्तु अब हिन्दी में पुस्तकें बराबर निकल रही हैं, उनके द्वारा शिक्षा का काम सरलता से हो सकेगा। इस मनोविज्ञान की अवहेलना होने से मानवीय विचार धारा तो रुकेगी नहीं, हाँ वैद्य सम्मेलन के बदले कोई अन्य संस्था इसकी पूर्ति का प्रयत्न करे तो आश्चर्य नहीं। इस सम्बन्ध में वैद्यों को अपने विचार स्थिर कर आवश्यक कार्यवाही करने का प्रयत्न करना चाहिये।

विद्वत्परिषद

साहित्य की पूर्ति के बिना किसी विज्ञान की उन्नति नहीं हो सकती और साहित्य की पूर्ति उस विषय के विद्वानों के द्वारा ही हो सकती है। प्रत्येक समुन्नत और जीवित समाज में विद्वानों की संख्या बढ़ाते रहने और उनका समादर करते रहने की आवश्यकता है। ऐसे

विद्वानों का एक संगठन होना आवश्यक है। संगठन के द्वारा उनकी सम्मतियों का आदान-प्रदान होता रहेगा और उनकी विचारधारा तीव्रता से निश्चित दिशा की ओर बहेगी। प्रत्येक प्रान्तिक वैद्य सम्मेलन का कर्तव्य है कि वह अपने प्रान्त के विद्वानों की एक विद्वत्समिति बनावे और उनके विचारों का परिचालन करता रहे। समय-समय पर ऐसे विषय उठा करते हैं जिन पर विचार करना विद्वानों का ही काम होता है। यदि वह विचार सुसंगठित हो तो उसके निर्णय में सरलता और सुविधा होती है। कुछ वर्षों से "त्रिदोषवाद" और पेशी, स्नायु, कला, सिरा, धमनी आदि विषयों को लेकर विद्वानों में चर्चा चल रही है। इस विषय में महामहोपाध्याय कविराज गणनाथ सेन महोदय तथा महाराष्ट्र के कई विद्वान भाग ले रहे हैं। आपके नगर के विद्वान और उत्साही वैद्य श्रीयुक्त डेग्वेकरजी भी इस विचार में प्रमुख भाग ले रहे हैं। ऐसे विषयों को दलबन्दी का विषय न बना कर यदि विद्वत्परिषद् के सज्जन शास्त्रीय निर्णय के विचार से विचार करें तो शास्त्रीय समाधान शीघ्र हो सकता है। यही नहीं आयुर्वेद की समुन्नति के लिये अभी बहुत से ग्रन्थ-रत्न तैयार करने की आवश्यकता है। एक सुसम्पादित आयुर्वेदिक कोष का अभाव बराबर खटक रहा है। किन्तु यह काम एक व्यक्ति का नहीं है। इसमें अनेक विद्वानों के सहयोग की आवश्यकता है। मैटीरियामेडिका के ढंग पर आयुर्वेदिक निघण्टु का निर्माण भी आवश्यक है। इस समय के निघण्टु बहुत संक्षिप्त हैं और उनसे रस-वीर्य-विपाक प्रभाव का विस्तृत और स्पष्ट स्वरूप उतना साफ नहीं होता। वर्ग संशोधन की भी आवश्यकता प्रतीत हो रही है। स्वर्गीय डाक्टर देसाई का ग्रन्थ इस सम्बन्ध में एक कल्पना सामने रखता है। किन्तु अभी इस सम्बन्ध में बहुत काम करना होगा। डाक्टरी में जैसा फर्माकोपिया ग्रन्थ होता है, उसी तरह आयुर्वेदिक योगों के लिये यह आवश्यक है कि लाभदायक योगों का निर्णय कर एक ग्रन्थ प्रकाशित हो। बम्बई के श्रीमान् पण्डित हरिप्रपन्नाचार्यजी ने दो भागों में "रसयोगसागर" और ऊँझा आयुर्वेदिक फार्मेसी के मालिक महोदय ने तीन भागों में "भारतभैषज्य रत्नाकर" ग्रन्थ छपा कर वैद्यों का बड़ा उपकार किया है। इनमें एक नाम के जितने औषध प्रयोग हैं, वे सब एक जगह संगृहीत हो गये हैं। किन्तु एक-एक रस या औषधि के अनेक पाठ देख कर यह विचार उठने लगता है कि किस प्रकार की अवस्था में कौन योग कारगर होगा। विद्वानों की परिषद् परीक्षण द्वारा इसका निर्णय कर एक ग्रन्थ रूप में उनका संग्रह कर सकती है। यही नहीं आयुर्वेद-विद्यापीठ ने शिक्षा और परीक्षा का एक पाठ्यक्रम बना दिया है और उसके लिये चरक सुश्रुत वाग्भट के अध्यायों का निर्देश कर दिया है। किन्तु पढ़ने-पढ़ाने वालों को इसमें असुविधा होती है। यदि उन अध्यायों का मन्थन कर एक पुस्तक में विचार समन्वय के साथ संग्रह हो जाय तो सुविधा हो और प्रत्येक विषय की अच्छी पाठ्य-पुस्तक तैयार हो जाय। सुसंगठित विद्वत्परिषद् ऐसे कामों का सरलता से सम्पादन कर सकती है।

प्रकाशक समिति

विद्वान लोग विविध विषयों के ग्रन्थ तैयार करेंगे सही; किन्तु उनके प्रकाशन का प्रबन्ध हुए बिना पूरी सफलता नहीं हो सकती। व्यक्तिगत प्रयत्न से पुस्तक प्रकाशन करना सबके लिये सहज नहीं है। महामहोपाध्याय श्रीमान् कविराज गणनाथ सेन तथा आयुर्वेद-मार्तण्ड पं० यादव जी त्रीकम जी आचार्य ने कई ग्रन्थरत्न प्रकाशित कर वैद्य समाज का बड़ा

उपकार किया है। नागपुर के श्रीयुक्त पण्डित गोवर्धन शर्मा छांगाणी जी ने मद्रास प्रान्त में प्रचलित "बसवराजीयम्" ग्रन्थ प्रकाशित कर वैद्यों के हाथ में अमूल्य उपहार रखा है। अन्य जो सज्जन अपने द्रव्य और समय का सदुपयोग कर ग्रन्थ-रत्न प्रकाशित कर रहे हैं वे सभी वैद्य समाज की ओर से धन्यवाद के पात्र हैं। किन्तु यह मानना ही पड़ेगा कि व्यक्तिगत प्रयत्न इस कार्य के लिये पर्याप्त नहीं। एक मनुष्य की शक्ति परिमित ही होती है। ऐसे कार्यों के लिये सम्मिलित और सुसंगठित प्रयत्न अधिक व्यापक हो सकते हैं। इसलिये हमारी समझ में ग्रन्थ प्रकाशन समिति की बहुत आवश्यकता है। बहुत से ग्रन्थरत्न अभी तक अमुद्रित अवस्था में पड़े हैं। खोज करने से अभी सैकड़ों ग्रन्थ जहाँ तहाँ मिल सकते हैं। प्रकाशित न होने से उनके नष्ट हो जाने का भय है। उनके लेखकों का नाम और परिश्रम लुप्त हो जाने का भय है। ग्रन्थ प्रकाशन समिति के द्वारा ऐसी पुस्तकों की खोज और प्रकाशन का काम हो सकता है। ऊपर बतलाये हुए नवीन ग्रन्थों का निर्माण होने पर उनके प्रकाशन की भी व्यवस्था होनी चाहिये। ऐसी समिति के लिये यह काम जितना सहज हो सकता है, उतना व्यक्तिगत प्रयत्न से नहीं। ऐसी समिति सार्वजनिक हिस्सों के द्वारा लिमिटेड कम्पनी के ढंग पर स्थापित हो सकती है। उसके मुनाफे में सभासदों का हिस्सा होने से किसी को पूँजी लगाने में भी संकोच नहीं होगा।

साप्ताहिक पत्र

आजकल प्रचार का जमाना है। प्रचारकार्य द्वारा अपने उद्देश्यों और कार्यों का विस्तार हर एक समुदाय के द्वारा इस समय आवश्यक समझा जाता है। यह कार्य सामयिक पत्रों द्वारा हो सकता है। इस समय वैद्यक सम्बन्धी मासिकपत्र तो अच्छी संख्या में निकल रहे हैं और वे अपने उद्देश्य की पूर्ति भी यथासाध्य कर रहे हैं। किन्तु मासिक पत्रों का काम अधिकांश में विषय विवेचन और स्थायी साहित्य प्रकाशन के ढंग का होता है। सामयिक विषयों की चर्चा करना, प्रचलित आन्दोलन द्वारा मतनिर्माण करना, अपनी संस्था के उद्देश्यों का प्रचार करने में सतत उद्योगी रहने के लिये मासिक पत्र उतने उपयोगी नहीं हो सकते। महीने में एक बार प्रकाशित होने के कारण शीघ्र आन्दोलन का काम उनसे नहीं हो सकता। इसके लिये कम से कम एक साप्ताहिक पत्र की आवश्यकता है। प्रान्तिक सम्मेलनों के द्वारा पुरस्कृत होकर ऐसे साप्ताहिक पत्र हर एक प्रान्त से एक एक निकल सकते हैं। आपके मध्य प्रदेश में तो अभी किसी भी तरह का वैद्यक पत्र प्रकाशित नहीं होता। इस प्रान्त के वैद्यों को अधिक सार्वजनिक स्वरूप देने की अभी बहुत आवश्यकता है। प्रतिद्वन्द्विता के मैदान में आप लोग निकल पड़िये और कर्तव्य पूर्ति कर अपनी शक्ति, योग्यता, साहस और संगठन का परिचय दीजिये। अपनी प्रान्तिक शक्तियों को अधिक केन्द्रीभूत कीजिये और सफलता की ओर अग्रसर होते रहिये।

योग्यों का समादर

जिस समाज में योग्यों का समादर और अयोग्यों का तिरस्कार नहीं होता, 'सब धान बाईस पसेरी' होते हैं, उसका पार भी ईश्वर ही लगाता है। यह सत्य है कि वैद्यसम्मेलन के हाथ कोई शासनशक्ति नहीं है। अतएव वह अयोग्यों के लिये कोई शासन व्यवस्था नहीं कर सकती। परन्तु अयोग्यों को योग्य बनाने का प्रयत्न करना और योग्यों को समादर पूर्वक आगे

बढ़ाना उसके हाथ है। वैद्यसमाज में उपाधि प्राप्ति की लालसा विद्यमान है; किन्तु उसकी पूर्ति का कोई साधन नहीं है। कई कारणों से वैद्यसम्मेलन ने उपाधि देना बन्द कर दिया है और उसका परीक्षा विभाग परीक्षा की उपाधियों के सिवाय अन्य यूनिवर्सिटियों की तरह कोई आनरेरी उपाधि नहीं देता। इस मार्ग में बहुत-सी अड़चनें हैं; अतएव इस समय उसका जिक्र न करना ही अच्छा है। किन्तु नये आविष्कार करनेवालों के लिये और उत्तमोत्तम ग्रन्थ रचना करने वालों के लिये आदर-प्रदान का कोई साधन होना ही चाहिये। हिन्दी साहित्य की सेवा करनेवालों के लिये जैसे प्रतिवर्ष १२००) मंगलाप्रसाद पारितोषिक की व्यवस्था है, उसी प्रकार वैद्यक ग्रन्थ निर्माताओं का उत्साह बढ़ाने, उनकी कद्र करने की योजना करना वैद्य संसार के लिये कठिन नहीं होना चाहिये। अधिक नहीं तो ५००) रुपये का पुरस्कार और एक स्वर्णपदक प्रतिवर्ष देने की व्यवस्था किसी उदार सज्जन के ग्यारह हजार रुपये दान के द्वारा तुरन्त हो सकती है। कम-से-कम आपका सम्मेलन एक स्वर्णपदक की व्यवस्था तो कर सकता है, जिससे इस प्रान्त में आयुर्वेद सम्बन्धी कोई नामांकित कार्य करनेवाले किसी सज्जन को उत्साह वर्धन के लिये यह दिया जा सके। प्रसन्नता की बात है कि द्रविड़ देश में प्रसिद्ध अगस्त सम्प्रदाय के ग्रन्थों का सार ले उस विषय का एक प्रामाणिक संग्रह ग्रन्थ संस्कृत में लिखने वाले सज्जन को बम्बई के पं० यादवजी महाराज ५००) पुरस्कार देनेवाले हैं। अपने समाज का समादर असीम उत्साह बढ़ाता है और बड़े-बड़े साहसिक कर्म करने को उत्तेजित करता है। उनके कार्य का महत्व सर्व साधारण पर विदित होता है और अधिकाधिक स्फूर्ति के साथ वे आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हैं। अतएव वैद्यसमाज के सोचने समझने का यह विषय है। यादवजी भाई का पुरस्कार एक मार्गदर्शक है। इसका उच्च अनुकरण आवश्यक है।

स्नातक मण्डल

आयुर्वेद विद्यापीठ की परीक्षाएँ पास कर उपाधि प्राप्त करनेवाले स्नातकों का एक खासा समूह इस समय देश के सभी भागों में विद्यमान है। वैद्यसम्मेलन के उद्देश्यों का देश व्यापी प्रचार करने, आयुर्वेद-समुन्नति के काम में स्वयं जुटकर, वैद्य समूह और सर्वसाधारण को आकर्षित करने में उन्हें अग्रभाग लेना चाहिये। आयुर्वेद की सर्वोच्च सेवा करने और वैद्य सम्मेलन की सफलता के साधन बढ़ाने में उन्हें अधिक प्रयत्नशील होना चाहिये, उन्हें सबसे अधिक परिश्रम करना चाहिये। स्नातकों के सङ्गठन के लिये एक 'स्नातक मण्डल' स्थापित भी हो चुका है, उसे अधिकाधिक पुष्ट, दृढ़ और कार्यकर बनाना आवश्यक है। आपके प्रान्त के स्नातक सुसङ्गठित होकर अपने इस अङ्ग के उन्नति साधन का प्रयत्न करें और अपने प्रान्तिक सम्मेलन को सफल बनाने और स्थानिक सभाएँ स्थापित कर सञ्चालित करने में प्रयत्नशील हों तो इस प्रान्त की आयुर्वेदिक परिस्थिति का परिवर्तन बहुत शीघ्र हो जावे। महाराष्ट्र प्रान्त के आयुर्वेदिक शिक्षकों का एक सङ्गठन है और उसका एक सम्मेलन भी प्रतिवर्ष होता है। उसमें अनेक विचारणीय विषयों पर विचार होता है, आयुर्वेदिक पाठ्यक्रम का विवेचन होता है और जटिल समस्याओं के सुलझाने का प्रयत्न किया जाता है। सुदृढ़ स्नातक मण्डल ये सब काम अपने अन्तर्गत कर सकता है। स्मरण रहे कि स्नातक मण्डल वैद्य सम्मेलन के अधीन उसके सहायक स्वरूप उसका एक अंगी बनकर ही (जैसा कि उसका नियम है भी) रहना चाहिये। ऐसा होने से ही सम्मेलन की पूर्ण सहायता हो सकती है।

उपसंहार

वैद्य बन्धुओं ! सबका सारांश यह है कि जीवन संग्राम में वही विजयी होता है जो साहसी, दृढ़, वीर और सुयोग्य होता है । आप साहस और सचाई के साथ वैद्यक व्यवसाय में जुटिये, अपने प्रेम और त्याग के द्वारा सर्वसाधारण के हृदय में स्थान अधिकृत कीजिये, आयुर्वेद के प्रति श्रद्धा, भक्ति और प्रेम उत्पन्न कीजिये । आयुर्वेदिक कार्यों की समुन्नति के लिये अपनी शक्ति, द्रव्य और बुद्धि का विनियोग करते हुए सर्वसाधारण की पूर्ण सहायता प्राप्त करने का उद्योग करते रहिये । आयुर्वेद की उन्नति और वैद्यों की प्रतिष्ठा की सारी जबाबदारी आप पर है; इसकी सिद्धि और समृद्धि में आपकी नामवरी और प्रतिष्ठा है । इसमें और अवहेलना होने से इतिहास में आप कलंकित समझे जावेंगे । इस समय संसार उन्नति की ओर क्षण क्षण कदम बढ़ा रहा है, शीघ्रता से बढ़ रहा है । इस दौड़ में जो आगे जावेगा, वह विजयी होगा सफलता का सेहरा उसके सिर पर होगा । पीछे रहने वाले सब दिन के लिये जायँगे, संसार उन्हें भुला देगा । इतिहास उनके नाम पर शाप देगा । स्वराज्य के उषःकाल की मनोहारिणी लालिमा की छटा दृष्टिपथ में आ रही है, उसके स्वागत की योग्यता अपने में लाइये । मैंने अपने हरदोई सम्मेलन के भाषण में आयुर्वेद के तीन काल निश्चित किये थे । वैदिक काल की आयुर्वेद स्थापना को "गौरवकाल" पौराणिक समय के परम्परा विकास को "उन्नति-काल" और विदेशी आक्रमणों के समय से अवनित पाते हुए फिर सम्मेलन के जन्म से उसके समुत्थान के आरम्भ को "कर्तव्यकाल" निश्चय किया था । भाइयों, यह कर्तव्यकाल है, कर्तव्यशील बनिये अपने कर्तव्य की भेरी बजा विजय सम्पादन कीजिये । स्वराज्य के ज़माने में अब से कहीं अधिक उत्तरदायित्व और कर्तव्य का भार आप पर आने वाला है । वह आपकी कठिन परीक्षा का समय होगा । आपको सिद्ध करना पड़ेगा कि संसार की गति को आप पहचान रहे हैं; चिकित्सा वृत्ति, चिकित्सा विज्ञान की प्रतिद्वन्द्विता में आप किसी से पीछे नहीं रहना चाहते । आप अपने को इस योग्य बनाने के लिये समुत्सुक और तत्पर हैं कि आप पर देश की आरोग्यता का भार सौंप दिया जा सके । आप इस दावे को लेकर मैदान में आ सकते हैं कि देश हमारा है, अतएव देश में देशी चिकित्सा पद्धति का ही बोलबाला हो सकता है । आपको एक समुन्नत, सुदृढ़ चिकित्सा पद्धति और उसके मानी प्रशंसकों के मुकाबले अपने को योग्य बनाना है । अपनी कमजोरियों को समझकर उन्हें दूर करना है, अपनी त्रुटियों की पूर्ति करना, अपनी भूलों का संशोधन करना है और संसार के सामने छाती ठोंककर 'सिर ऊँचाकर' आत्माभिमान और गौरव-गरिमा के साथ खड़े होना है । यह काम करने से होगा और आपके ही करने से होगा । आलस्य छोड़िये, कर्मभीरुता छोड़िये, पुरुष सिंह के समान उद्यमी बन कर्तव्य में जुट जाइये । आपका कर्तव्य महान है, उद्देश्य महान है, उसका फल और परिणाम भी कल्याणकारी तथा महान है । सफलता निश्चित है । आप आपस के विरोध-भाव छोड़िये, एक पारिवारिक परिस्थिति उत्पन्न कर परस्पर प्रेम, सहानुभूति, साहाय्य, समवेदना और आत्मानुभूति का स्रोत प्रवाहित कीजिये । सफलता विजयमाल लिये खड़ी है, उसे धारण करने को तैयार हो जाइये । आपके कल्याण में देश का कल्याण है, आपकी उन्नति में देश की उन्नति है, आपकी दृढ़ता में देश का सुदृढ़ और स्वास्थ्य सम्पन्न होना निर्भर है । दया, सचाई, सहानुभूति, त्याग और सुचिकित्सा से देशवासियों का हृदय जीतिये, अपनी विद्या, अपनी योग्यता, अपने विज्ञान की

श्रेष्ठता से संसार में छाती ऊँची कर खड़े हो जाइये। निश्चय कीजिये कि अन्तिम ध्येय की प्राप्ति तक हमारे अनवरत प्रयत्न जारी रहेंगे, कर्तव्यों का तांता नहीं टूटेगा। सफलता हमारे गले लगेगी और हमारी होकर ही रहेगी। आपका मूलमन्त्र हो हम हों, हमारा समुन्नत देश हो, हमारा गौरवशाली शास्त्र हो, हमारे विज्ञान की विजयपताका संसार भर में फहरानेवाली हो। एवमस्तु।

भिषजां साधुवृत्तानां भद्रमागमशालिनाम्।
अभ्यस्त कर्मणां भद्रं भद्रं भद्राभिलाषिणाम्॥

बंगालप्रान्तीय वैद्यसम्मेलन के सभापति

कविराज हाराणचन्द्र चक्रवर्ती महोदय का

अभिभाषण।

सिद्धिदं विघ्नहन्तारं ज्ञानाधारं गुणाकरम्।
प्रणमामि महाकायं विघ्नशान्त्यैर्गजाननम्॥
दृष्ट्वा प्रजामथ निजां विविधामयार्तामायुष्यवेदमखिलं कृपया स्मरन् यः।
प्रावर्त्तयज्जगति तं जगतो हिताय तस्मै परं प्रणतिरस्तु पितामहाय॥
सन्ध्याय विस्मयकरं खलु यज्ञशीर्षं छिन्नं सुरैरतितरामनुरुध्यमानौ।
प्राप्तौ तु यौ सुरवरेप्सित-यज्ञभागम् तावश्विनौ शिवकृते प्रणमामि शश्वत्॥
आयुर्वेदरहस्यतत्वमखिलं स्वास्थ्यानुवृत्तिप्रदं-
पूर्वाचार्य्य-परम्परागतमिदं धर्मार्थकामास्पदम्।
भारद्वाजमुपादिशन्मुनिवरं यः शिष्यमुख्यं पुरा-
वन्दे तं मनुजोपकारनिरतं श्रीदेवराजं प्रभुम्॥
हन्ता जरामृतिरुजां निखिलामराणां योंऽशेन विष्णुरुदतिष्ठदुदन्वतः प्राक्।
पश्चात्तु काशीपति-गोत्रमनुप्रजातो धन्वन्तरिं तमिह नौमि भिषग्वरेण्यम्॥
कानन्तायुष्यवेदोऽयं क्वाहमल्पमतिर्जनः।
बाहुभ्यां सागरं तर्त्तुकामवद् यामि दुर्गतिम्॥
यद्वाभो(?)प्रति नास्ति शास्त्रजलधे रत्नावलीसंग्रहे-
यस्य स्वान्ततमो जहार नितरां कारुण्यपूर्णाशयः।
नानाशास्त्र प्रदेष्वधीतिभिरलं दृप्तो विपश्चिद्वरोः
ज्ञानोद्भासितलोचनो विपुलधीर्गंगाधरो दुर्द्धरः॥
आयुर्वेदमहोदधिं दुरतिगं प्रोन्मथ्य यत्नाहृतै-
र्भैषज्यामृतवारिभिर्जनगणानुज्जीवयन्मृत्युतः।
राजन्नत्र परं चिरं कविरिव ज्ञानेन विश्वश्रुतो
जातः सत्कविराज एक इह यः श्रेयान्यथार्थाभिधः॥
पूर्वाचार्य्यागणैरुपासिततमा विद्याः समृद्धाश्चिरं-
निश्चर्चाः क्षयमाप्नुवन्त्य इह ताः प्रायेण नाशं गताः।
यात्येका परिशिष्यते कथमपि क्षीणा चिकित्साभिधा-
सा शीघ्रं विलयाय गच्छतितरां न्यकृत्य युष्मानहो॥

भो भो देशहितैषिणः कुशलिनो विद्यागरिष्ठा जना-
नानादेशनिवासिनोऽत्र मिलिताः सभ्या यशोमण्डिताः ।
युष्मानद्य निवेदयामि सततं बाढं कुरुध्वं सप-
द्यायुर्वेदमहानिधिं समवितुं यत्नं यथावन्मुदा ॥

माननीय स्वागतकारिणी समिति के सभापति महोदय और समवेत सज्जनों !

शिव सलिला जान्हवी की द्वितीय मूर्ति पद्मा-मण्डित सर्वजनवरेण्य भूमि की महानगरी राजशाही में आप लोग आयुर्वेद के हितार्थ एकत्र हुये हैं। यह देखकर मैं अत्यधिक आनन्दित हुआ हूँ। मैं कलकत्ता जाने के पहले ५० वर्ष पूर्व इस स्थान में रहकर आयुर्वेद की यथासाध्य सेवा करता था और अभी तक मैं इस नगर से सम्बन्धित नागरिक कहा जाता हूँ। ऐसी अवस्था में मैं इस महायज्ञ में आप लोगों का स्वागत करने का पूर्ण अधिकारी हूँ। भगवान् की असीम कृपा से स्थगित आयुर्वेद महासम्मेलन का पुनः अधिवेशन हुआ। प्राचीन पारस्परिक विरोध त्याग कर सम्मिलित रूप से इस अधिवेशन की सफलता हो, इसके लिये यत्न करना चाहिये। विगत सम्मेलन की घटना का भाव जब हृदय में उठता है, तब लज्जा से सिर नीचा हो जाता है। सभ्य होकर असभ्य की भाँति कार्य्य करना सनातन प्रथा का विरोध करना है। इसलिये सर्व प्रथम सनातनीय शिक्षा का प्रवर्त्तन आवश्यक है। यद्यपि यह प्रसंग नहीं है, तथापि मुझे कहना ही पड़ता है कि वर्त्तमान स्कूल तथा कालेज की विषमय शिक्षा विशेषतः निरीश्वर शिक्षा तथा स्त्री पुरुषों की सहयोग शिक्षा इत्यादि कारणों से देश को लाभ के बदले हानि हो रही है। इस विषय का आप लोग शीघ्र ही अनुभव करेंगे। आप लोगों ने मुझे इस सम्मेलन का सभापति मनोनीत कर सम्मानित किया है। वृद्ध पुरुषों की प्रतिष्ठा करना आनन्द की बात है, पर आयुर्वेद शास्त्र अति विशाल है तथा इसमें जीवन और मृत्यु का व्यापार है। इसकी समता में मैं अल्पज्ञ हूँ। सच पूछिये तो वर्तमान अवस्था में अल्पज्ञान की रक्षा करना भी दुस्तर है तथापि इस वृद्धावस्था में भी मैं भगवान पर भरोसा करके खड़ा हुआ हूँ। भाषण के पहले कविराज श्यामादास वाचस्पति का नाम स्मरण हो रहा है। स्वर्गीय कविराज श्यामादास जी ने विगत सम्मेलन के लिये बहुत प्रयत्न किया था; किन्तु उनकी मृत्यु से आयुर्वेद-गगन का उज्वल नक्षत्र गिर गया। आप धीर, स्थिर, सुपंडित तथा विनयी थे। आपने आयुर्वेद की उन्नति के लिये बड़े-बड़े कष्ट सहन किये थे तथा आर्थिक सहायता भी की थी आप आयुर्वेद के प्रकृत भक्त थे। आपका स्थान पूर्ण होना बहुत ही कठिन है। आयुर्वेद के सम्बन्ध में कुछ कहने के पहले ही अपने अध्यापक सुग्रहीतनामा, ऋषिकल्प, गंगाधर कविराज जी का नाम कृतज्ञता के साथ लेना पड़ता है। उनके विशाल पाण्डित्य के विषय में कुछ कहना ही उनका खर्व करना है। संक्षेप में कहें तो आप ही आयुर्वेद के पुनरुद्धारकर्ता थे। आप ही ने विलुप्त चरक का पठन-पाठन सर्वप्रथम प्रारम्भ किया था। सुश्रुत संहिता के सन्दीपन भाष्य की जो रचना मैंने की है वह उन्हीं की प्रतिभा का फल है। उसमें यदि कुछ नई बात है तो वह मेरी है। गंगाधर जी के आविर्भाव न होने से भारतवर्ष में आयुर्वेद का अस्तित्व न रहता। उन्हीं के शिष्य भारतवर्ष के हरएक नगरों में जाकर आयुर्वेद का प्रचार तथा यश अर्जन किया है। स्वर्गीय श्यामादास जी कविराज उनके प्रशिष्य थे। गंगाधरजी के कोई शिष्य मूर्ख तथा दरिद्र नहीं हैं। चिकित्सा-व्यापार में वे सर्वदा एलोपैथिक के उपमर्दक थे। आपको

प्रायः असाध्य रोगियों को जीवन दान देना पड़ा था। आपका तेज दृष्टान्त स्वरूप कीर्तित हो रहा है। यदि आपके तुल्य कोई कविराज होता तो आयुर्वेद के इतिहास में परिवर्तन हो जाता। अब प्रकृत विषय का अनुसरण किया जाय। आप लोग अवगत हैं कि आयुर्वेद वेद का उपांग है। यतः—

पुराणं मानवो धर्म्मः साङ्गो वेदश्चिकित्सितम्।
आज्ञा सिध्यानि चत्वारि न हन्तव्यानि हेतुभिः॥

यह रागद्वेष विवर्जित त्रिकालज्ञ ऋषियों का ज्ञान लब्ध है। इसका एक वर्ण भी असत्य नहीं है।

रजस्तमोभ्यां निर्मुक्ता तपो ज्ञानबलेन ये येषां त्रिकालममलं।
ज्ञान मव्याहतं सदा आप्ताः शिष्टा विबुध्यास्ते तेषां वाक्यमसंशयं॥

इसलिये ऋषियों के शब्दों के ऊपर कुछ कहना केवल वाचालता मात्र है। यही वर्त्तमान सज्जनों के सामने आयुर्वेद का दोष है। कारण यह कि पाश्चात्य-चिकित्सा शास्त्र सदा परिवर्त्तन-शील है, पर आयुर्वेद अचल सिद्धान्त है। समय के दोष से गुण की भी गणना दोष ही में होती है। आयुर्वेद के सम्बन्ध में वर्त्तमान चिन्ता की धारा ही उसका एक प्रमाण है। ऋषियों की सूक्ष्म "बुद्धि" से जो उत्पन्न हुआ है, वह दृढ़ है। जो आर्ष दर्शन शास्त्र से संबद्ध है वह अपरिवर्त्तनशील है।

न्याय-दर्शन, वेदान्त-दर्शन तथा सांख्य-दर्शन जैसे अपरिवर्त्तनीय हैं, वैसे ही आयुर्वेद भी है।

आयुर्वेद का विशेष अंश में योग तथा वियोग का अधिकार हम लोगों का है। हजारों औषधियाँ जहाँ प्रचलित हैं वहाँ पर योग तथा वियोग से कई सहस्र औषधियाँ कर सकते हैं। शास्त्र में इस विषय का उपदेश है और वह कार्य में भी परिणत है।

योऽल्पौषध कृतो योगो बहुग्रन्थभयान्मया।
द्रव्याणां तत्समानानामुपयोगो न दूष्यति॥
गणे क्रमपि यद् द्रव्यं भवेद् व्याधावयौगिकम्।
तदुद्धरेद् योगिकं तु प्रक्षिपेत् बुद्धिमान् भिषक्॥

इसका तात्पर्य यह है कि ग्रन्थ बढ़ जाने के डर से मैंने अल्पौषधि लिखा। समान गुण वाली औषधियों का ह्रास और वृद्धि करने में कोई दोष नहीं है। यदि गणोक्त कोई द्रव्य किसी व्याधि का विरोधी हो तो बुद्धिमान् भिषग् उसका परिवर्त्तन कर दूसरी औषधि मिला सकता है। जब द्रव्य का नवीन संयोग करने में कोई विरोध नहीं है तब मैं क्यों दूसरे से दवा का ऋण ग्रहण करूँ? विजातीय औषध ग्रहण कर अपनी उन्नति करने की चेष्टा क्यों करें? युक्ति तर्क से ही क्यों न हो, उन्नति की एक सीमा है। सिर के केश की जो सीमा है उससे और अधिक वह नहीं बढ़ेगा। आयुर्वेद अन्तिम वृद्धि की अवस्था में है। अब अधिक वृद्धि की आवश्यकता नहीं है। जो कुछ है यदि उसकी रक्षा हम कर सकें, तो बहुत उत्तम होगा।

बहुत से सज्जन यह कहेंगे कि पाश्चात्य चिकित्सकगण जो दृष्टफल औषधियों का आविष्कार किये हैं और कर रहे हैं उन औषधियों को ग्रहण कर आयुर्वेद के सम्पदा की वृद्धि करें

तो उसमें क्या क्षति है ? उसमें क्षति नहीं है; किन्तु "इह न किञ्चिद्भेषजमास्ति" और "कृत-स्नो हि लोको बुद्धिमतामाचार्यः" पर यह नीति विचार कर प्रयोग करनी होगी।

प्रयोगः शमयेद् व्याधिं योऽन्यः मन्यमुदीरयेत्।
नासौ विशुद्धः शुद्धन्तु शमयेद् यो न कोपयेत्॥

इन्जेक्शन, एक शरीर से दूसरे शरीर में रक्त का प्रवेश करना इत्यादि कार्यों का हिसाब प्रायः अविशुद्ध है। Thermometer, X-ray आदि यन्त्र भ्रमात्मक हैं। किनाइन और तद्जातीय औषधि दोष विमिश्रित हैं। इस विषय को यदि स्पष्ट करें तो कहना होगा कि एक शरीर से दूसरे शरीर में रक्त प्रवेश कराने में जो जो विषय देखना चाहिये उन विषयों का चिन्तन एलोपेथिक शास्त्र में है। जो करना चाहिये वह क्या होता है? एक शरीर से अन्य शरीर में रक्त का प्रवेश कराने में दोनों शरीर की सम्पूर्ण समता की आवश्यकता है। समता नहीं होने से वह रक्त भिन्न शरीर में प्रवेश कर शल्य-रूप धारण करेगा। समता का अर्थ— लिंग, अवस्था तथा धातु इत्यादि की तुलना ही है। जिनके शरीर में रक्त का प्रवेश कराना होगा उनके रक्त ग्रहण करने की सामर्थ्य और उनके वायु के Pump करने की शक्ति का भी विचार करना होगा। इसके निर्धारण करने के किसी यन्त्र का आविष्कार हुआ है?

प्रायः प्रत्यक्ष होता है कि यह शरीर को हितकर नहीं है।

"सूक्ष्माणि हि दोष-भेषज-देश-काल-
बल-शरीराहार-सात्म्य-सत्व प्रकृति-
वयसामवस्थन्तराणि यतनुचिन्त मानानि सुविमल-
विपुलबुद्धेरपि बुद्धिराकुली कर्युः किं पुनरल्प बुद्धेः॥"

इसलिये मैं वैसी उन्नति का विरोधी हूँ। किनाइनादि वीर्यवान् औषधियों के ग्रहण करने की इच्छा होना स्वाभाविक है। पर यदि कोई ग्रहण करे तो वह डाक्टरों की भाँति अन्ध विश्वास लेकर न ग्रहण करे। वह अपनी विचार-बुद्धि और प्रत्यक्ष ज्ञान पर प्रयोग करे। किना-इन से सिनकोना यदि अधिक पाचन, निर्दोष सिद्ध हो, तो दे सकते हैं। पर विचार "यस्य देशस्य यो जन्तुस्तज्जं तस्यौषधं हितम्"। विशेषतः विदेशीय औषधियों के प्रस्तुत करने की रीति आयुर्वेद के मत से दोषयुक्त है। इसलिये एक्सट्रेक्टादि में विश्वास स्थापन करना अनुचित है।

सर्वत्र यह एक ही युक्ति है। नयी औषधियों की परीक्षा के विषय में मैं कुछ शब्द कहना चाहता हूँ। बहुत-सी वस्तुओं की अभिज्ञता न रहने से केवल हेतु पर अन्तिम अवस्था में निर्भर कर औषधी की कल्पना करना निरापद नहीं है। किसी-किसी स्थान में प्रभाव नामक पदार्थ में एक विशेष शक्ति को स्वीकार करना होता है। प्रभाव ही फलतः उत्पादक हेतु है। इसलिये शास्त्रकार कहते हैं कि "सहस्रेणापि हेतूनां अम्बष्ठादि विरेचयेत्" तात्पर्य है कि अम्बष्ठादि का विरेचन के पक्ष में सहस्र हेतू होते हुये भी कभी विरेचन नहीं कर सकता। इसलिये नयी-नयी औषधियों पर न दौड़ कर परीक्षित देशज औषधियों पर आकृष्ट होना कर्त्तव्य है। इसकी रक्षा करने की चेष्टा करने में हम वाधित होंगे।

आप लोग कहेंगे कि हम लोगों का क्या था, जो उसकी रक्षा करें? नहीं हम लोगों का यथेष्ठ था, इसमें कोई सन्देह नहीं है। इसका कारण आप लोग स्वयं ही अनुभव करें। जिस समय मि० हार्वी ने Circulation of Blood के सम्बन्ध में आविष्कार किया, उस

आविष्कार के पहिले ही सुश्रुत संहिता के सूत्र स्थान शोणित वर्णनीय नामक चतुर्दश अध्याय में लिपिबद्ध है। शुक्रश्मरी की साधारण चिकित्सा और शस्त्र-चिकित्सा का सुश्रुत संहिता में उल्लेख है। इसका अंग्रेजों ने कब आविष्कार किया। अनुसंधान करने से ज्ञात होगा कि उसके बहुत काल बीतने पर आयुर्वेदोक्त गर्भ विमोचन प्रणाली को देखकर Govt. College के भूतपूर्व अध्यापक Dr. Charls ने विस्मय सहकार से कहा है कि "मैंने इस विषय में बहुत ही गवेषणा की है और मेरा ज्ञान भी है पर ऐसी निर्दोष वैज्ञानिक प्रणाली के विषय में मेरा ज्ञान नहीं था" सुश्रुत के शस्त्र विषय में भी उनका ऐसा ही मत था।

Dr. Hirsch Berg ने स्पष्ट ही स्वीकार किया है कि सुश्रुत संहिता का कर्णव्यध बन्ध विधि नामक सूत्र स्थान के १६ वें अध्याय में उल्लिखित नासादि संधान विषय Europe में युगान्तर ले आया है। अस्त्र विषय में मेरे कृत कर्मता के विषय में आप जानते है और मैं गर्व के साथ कहूँगा कि इस विषय से आप लोग अनभिज्ञ हैं। ज्ञात होने से आप लोगों का उपकार होवेगा इसलिये कुछ इस विषय में मैंने वर्णन किया। युद्ध में छिन्न पाद विश्पला के जंघा को छेद कर लोहे के जंघा की रचना ऋग्वेद में मिलती है।

'सद्यो जंघामायसीं विशपलायै
धने हिते सर्त्तवे प्रत्यधत्तम्।'

Caesarian Section अर्थात् मृत प्रसूतिका प्रसव सम्बन्ध में सुश्रुत निदान स्थान के आठवें अध्याय में स्पष्ट उपदेश है कि

'वस्तिद्वारे विपन्नायाः कुक्षिः प्रस्पन्दते यदि
तत्क्षणाज्जन्म काले तं पाटयित्वद्धरेत् भिषक्।

अर्थात् प्रसूति की मृत्यु के बाद यदि उसका कुक्षि स्पन्दित हो तो शीघ्र ही चिकित्सक उसके वस्तिद्वार और गर्भद्वार को छेद कर गर्भस्थ सन्तान का उद्धार करे। आप लोग लक्ष्य करें कि 'तं' शब्द पूर्वश्लोकोक्त 'गर्भ' के लिये है। 'उद्धारयेत्' इस क्रिया का कर्म है। 'पाटयित्वा' क्रिया का कर्म गर्भ नहीं है। पाटयित्वा का कर्मपद 'वस्तिद्वारे' है। 'प्रस्पन्दन' का अधिकरण नहीं है। वस्तिद्वार के स्थान में 'वस्तमार' पाठ भी है पर वह ठीक नहीं है। जो सज्जन यह नहीं समझेंगे वही अनेक प्रकार का अर्थ मन में लावेंगे। इसमें प्रवेश करने से मन्तव्य को प्रकाश नहीं करेंगे।

विमलधियामाधिगम्यो शास्त्रे खिद्यति जड़ो न मोर्खेस्वे।
निन्दति कंचुककारं प्रायः शुष्कस्तनी नारी॥

सज्जनों महर्षि सुश्रुत आजकल किसी-किसी समालोचक के हाथ में पड़कर तंग हो रहे हैं। वे लोग पाश्चात्य Anatomy से ज्ञान प्राप्त कर सुश्रुत को दोषदर्शी ठहराकर कहते हैं कि "शारीरे सुश्रुतो नष्टः" हम लोग कहते है "शान्तं पापम्" अच्छा उन लोगों से पूछा जाय कि सुश्रुत के नियमों को पालन किये हैं? 'निसृष्टान पुरीषं पुरुषम् अवहन्त्यामापगायं निवद्धं पञ्जरस्थं······कोथयेत्। ततो देहं सप्तरात्राद्रीशीरवाल वेनु वल्कल कूर्चा नामान्यतमेन शनैः शनैरवघर्षयन् त्वगादीन सर्वानेव वाह्याभ्यन्तराङ्ग-प्रत्यङ्ग विशेषान् यथोक्तान लक्षयेत् चक्षुषा।

इस उपदेश का कोई अंश कभी पालन किए हैं? यदि नहीं हुआ है तो उसके फल के वैषम्य में विरक्त होने का क्या कारण है? सभ्य महोदय गण आप लोग अज्ञानियों के वाक्य से

विचलित नहीं होइयेगा। आप लोग विश्वास करें कि सुश्रुत नष्ट नहीं है। सुश्रुत अभ्रान्त है और अभ्रान्त उपदेश से Major and Minor हरेक प्रकार का शस्त्र कर्म प्राचीन काल में बहुत ही होता था। तन्त्र में है कि—

"धातूनां यत्र वैषम्यो भेषजं नैव सिध्यति।
आमयं दुस्तरं तस्मिन्न शस्त्रमेव विधीयते॥"

इसी प्रसंग में मैं आँख की चिकित्सा के विषय में कुछ शब्द कहूँगा। आयुर्वेद में आँख के विषय में जो उपदेश किया गया है वह पालन करने से कभी भी ऐंनक का प्रयोजन नहीं होता। आज-कल की चिकित्सा से ५, ६ वर्ष के बालक भी ऐनक का प्रयोग करते हैं। सुश्रुत में विदेह का मत लिपिबद्ध है "मितञ्च सारञ्च वचो हि वाग्मिता।" इस प्राचीन नियम से विदेह का प्रकरण दुरधिगम्य है पर परवर्त्ती ग्रन्थकार उसको ठीक लिपिबद्ध नहीं कर सके हैं। मैं सोचता हूँ कि इसी लिये आँख की चिकित्सा का प्रचार अधिक नहीं है। मैंने नेत्र रोग की चिकित्सा करने के लिये एलोपैथिकों की सेवा कर अनुभव किया है कि एलोपैथिक में नेत्र रोग की चिकित्सा सुन्दर नहीं है।

अनन्त वात, सुर्यावर्त्त तथा अर्धावभेदक प्रभृति रोग की भाँति अभिष्यन्द, तिमिर प्रभृति नेत्र रोगों की भी शिराव्यध ही एक मात्र औषध है। एलोपैथिक चिकित्सक इसमें अभ्यस्त नहीं हैं। नेत्र रोग की औषधि में भी वे लोग दुर्बल हैं। आयुर्वेद ही नेत्र रोग का एक मात्र चिकित्सक है यह राजशाही के प्रत्येक व्यक्ति जानते हैं। धन्वन्तरि कहते हैं,

"शिराव्यधः शल्यतन्त्रे चिकित्सार्धं प्रकीर्तितः।
यथा वस्तिः प्राणहितः सम्यक् काय-चिकित्सिते॥

आप लोग यह जानेंगे कि भारतवर्ष में आयुर्वेद ही पर दर्शन शास्त्र, गणितशास्त्रादि Europe के जानने के बहुत वर्ष पहले ही अवगत थे। हाय! वे सब विद्वान् कहाँ गये। फ्रांसीसी राजनीतिज्ञ माकियामेली के बहुत पहले ही भारतवर्ष में कौटिल्य और अर्थ शास्त्र प्रणनैये किये थे। वस्तुतः 'अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्याय विस्तरः। पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्याह्येतोश्चतुर्दश॥' इन चौदहों विद्याओं का ही नहीं बल्कि—

'आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वमर्थशासनं'

ये चार विद्यायें भी भारत की सम्पत्ति हैं। आजकल काल के महात्म्य से भारत के तुल्य हुआ है पर वह सब भारत से ही दूसरे देश में गया है। मेरा अभिमत है कि यह भारत से ही गया है। कोई किसी स्थान से भारतवर्ष में नहीं आया है इस विषय में उयेवार साहेब कहे हैं—

There is no ground whatever to suspose that Susruta borrowed his system of medicine from the Greeks. On the contrary, there is much to tell against such an idea.

History of Indian Literature.

इसका तात्पर्य्य यह है कि सुश्रुत ने अपना चिकित्सा-तन्त्र ग्रीक गणों से ग्रहण किया है ऐसी कल्पना करने का कोई भी कारण नहीं है। तथा इसके विरोध में कहने के अनेक शब्द हैं।

महाशयगण, आयुर्वेद के वैज्ञानिकत्व के प्रसंग में और त्रिधातु के सम्बन्ध में दो-चार शब्द कहने की आवश्यकता है। त्रिधातु क्या है इस विषय में बहुमत है। पर इस विषय में धन्वन्तरिजी अति सरल शब्द में कहे हैं उससे सुन्दर व्याख्या करना कष्टकर है।

'विसर्गादान विक्षेपैः सोमसूर्य्यानिला यथा।
धारयन्ति जगद् देहं कफपित्तानिलास्तथा ॥'

समस्त जगत् में जिस प्रकार चन्द्र, सूर्य्य तथा वायु जिस तरह कार्य करती हैं उसी प्रकार जीव देह में कफ पित्त तथा वायु कार्य करता है। इससे त्रिधातु के स्वरूप, गुण तथा क्रिया प्रभृति का संकेत कहा गया। कफ का स्वरूप जल, गुण तथा शैत्यादि क्रिया विसर्ग अर्थात् रसदान है वैसे ही पित्त का स्वरूप अग्नि, गुण तथा तपादि क्रिया आदान अर्थात् रश्मिकर्षण तथा वायु का स्वरूप वायु, गुण तथा शैत्यादि क्रिया विक्षेप अर्थात् परिचालन है। स्थान तथा क्रियादि भेद से त्रिधातु पाँच प्रकार का है। कफ और पित्त पंगु हैं इसका चालक वायु है।

योगवाही परं वायुः संयोगोदुभयार्थकृत।
दाहकृत् तेजसा युक्तः शीतकृत् सोमसंश्रयात् ॥

अर्थात्-वायु योगवाही संयोगवशतः उभय प्रकार का कार्य ही संचालन करता है। यह पित्त को चालन करता है। उस समय शरीर में दाह उत्पादन करता है और यह कफ का चालन करता है उस समय शरीर में शीत उत्पादन करता है।

(ज्वर में उत्ताप निर्णायक यन्त्र की अव्यर्थता कितनी है उसका अनुमान आप लोग कर सकेंगे।)

त्रिधातु का साम्यावस्था नाम स्वास्थ्य है। और वैषम्य का नाम रोग शरीर को धारण करता है इसलिये इसको त्रिधातु कहा जाता है और विगुण होने से शरीर में दोष का उत्पादन करता है इसलिये त्रिदोष कहा जाता है। त्रिदोष को अतिक्रम कर कोई रोग उत्पन्न नहीं होता है।

यथाहि कृत्स्नं विकारजातं विश्वरूपेनावस्थितं सत्वरजस्तमांसि न व्यतिरिच्यन्ते, एवमेव कृत्स्नं विकारजातं विश्वरूपेनावस्थितम् अव्यतिरिच्य वातपित्तश्लेष्मानो वत्तन्ते। सुश्रुते सूत्रस्थान २४ अ०।

त्रिधातु के विषय में प्राचीन समय में ग्रीकों की जो धारणा थी वह मेरे विश्वास का विषय नहीं है। उन लोगों के उस अपराध से मेरा शास्त्र दोषयुक्त नहीं होवेगा।

आज कल किसी अंग्रेजी भाषज्ञ से यदि त्रिधातु के विषय में कहा जाय तो वे लोग नासिका कुंचन करेंगे और कहेंगे कि मैं जानता हूँ। यह Theory तो बहुत दिन व्यतीत हुये Explored हो गयी है। आप लोगों में ही दोष है कि पुराना Theory लेकर ही बैठे हुये हैं। परिवर्तन कर नया नहीं कर रहे हैं। किन्तु बोल कर एक ही पक्ष की डिग्री को डिसमिस कर देते हैं। डाक्टरों के भक्त रोगी जब डाक्टरों से जवाब पाते हैं तब वे सज्जन वैद्यों से प्रार्थना करते हैं और कविराजों के शिर पर अपयश डाल देते हैं। ऐसी हालत में भी कविराज रोगी को अच्छा करते हैं। पर किसी किसी स्थान में 'लाभ परे गोवध' होता है। राजशक्ति का समर्थन नहीं होने से मान और प्रतिपत्ति की कोई संभावना नहीं होती है।

मैं अफसोस के साथ कहता हूँ कि पाश्चात्य मतानुरक्त अंध विश्वासी जो चिकित्सा का

विषय गुण गान करते हैं वह चिकित्सा बड़ी ही विज्ञानुगत है पर रोगी के शयन स्थान की व्यवस्था के सम्बन्ध में "प्रवाते निर्वतैक देशे' इस अमूल्य उपदेश के अभाव में वशतः रोगी को दिन में ऐसा कि रात्रि में प्राग्वात् सेवन कराना है। दूध और दही को केवल पुष्टि-कारक गुण के विषय में अवगत होकर ज्वर के तरुण अवस्था में देना दूसरे विषयों का ज्ञान नहीं है। वातिक, श्लेष्मिक ज्वर में शरीर का उत्ताप घटाने के लिये बरफ का प्रयोग कर रोगी को शीघ्र ही यमपुर में प्रेरणा करना ही है। इस देश में निउमोनिया, टाइफाइड, यक्ष्मा आदि रोगों के लिये वे लोग अधिकांश उत्तरदायी हैं। वे लोग देखते हैं कि सजधज के साथ जो इलाज नहीं करता वह अवैज्ञानिक है। ऐसे शब्द इस वैज्ञानिक काल में ही शोभा पाते हैं। "अधर्मेन जितोधर्मः प्रवृत्तमधरोत्तरम्" अर्थात् छोटे मुँह से बड़ी बात कहते हैं।

एलोपैथिकों के जीवाणुवाद में चमत्कृत होते हैं पर चिकित्सा-क्षेत्र में पृथक्-पृथक् परीक्षक एक पदार्थ के ही अनेकानेक जीवाणुओं का अस्तित्व कहे हैं। इससे चिकित्सकों का मोह पैदा करने के सिवा और कुछ नहीं है। और मैं पूछता हूँ कि पृथक्-पृथक् रोगों का पृथक्-पृथक् जीवाणु क्यों उत्पन्न होता है? इसके उत्तर में मैं कहूँगा कि कफ, पित्त और वायु के अनुपानादि में पृथकता है। इसलिये त्रिधातु को त्याग कर चिकित्सा में प्रवृत्त होना मूर्खता ही है। पक्षी जैसे अपना प्रतिविम्ब कभी छोड़ नहीं सकता। 'यथाहि शकुनिः सर्वादिशः परिपतन् स्वां छायां नातिवर्त्तते" इत्यादि—चरक।

कोई-कोई ऐसा कहेंगे कि डाक्टर Surgery में अप्रतिद्वन्द्वी हैं। मैं कहूँगा कि जिसके प्रतिद्वन्द्व हों तो वह अप्रतिद्वन्द्वी हो सकता है पर आयुर्वेद चिकित्सक इस अधिकार से वञ्चित किये गये हैं तब अप्रतिद्वन्द्वी शब्द की सार्थकता कहाँ है? कविराजों के भीतर ऐसा कोई नहीं है जो अस्त्र प्रयोग में साहसी हो। पर डाक्टर शस्त्रचिकित्सा में अनेक कार्य कर रहे हैं। उनमें बहुत से अभीष्ट तथा इष्ट दोनों करते हैं। शस्त्र को वैज्ञानिक किस प्रकार समझेंगे। पथ्यापथ्य के विषय में यदि कोई प्रश्न करे तो उसको बिना लेबोरटरी में परीक्षा किये नहीं कह सकता है। परीक्षा का फल—विटामीन और पुष्टिकारिता ही है और कुछ नहीं। वायु, पित्त, कफ सम्बन्धी नियमावली जब तक नहीं समझेंगे तब तक उन लोगों का विषय बोधगम्य नहीं होगा। इस वैज्ञानिक के विषय में हाल्डन साहब ने अपने Possible World नामक पुस्तक में लिखा है—

Many of our cherished scientific theories contain so much falsehood as to deserve the title of myths.

अर्थात् हम लोगों के वैज्ञानिक मतवाद में अनेक मिथ्या वर्त्तमान है और वह केवल गल्पनाम से अविहित है। सुप्रसिद्ध माननीय Bertrand Russell की भी ऐसी ही राय है। आप लोग विचार करें कि जो मत दो, चार दिन बाद वर्जन करना पड़ेगा वह कैसे सत्य समझ कर शिरोधार्य हो।

ऐलोपैथिक शास्त्र कृतश्रम यशी डाक्टर श्रीमान् नलिनीरंजन सेन गुप्त -एम० डी० महाशय ने भारत के साधनानामक मासिक पत्र में विज्ञान के नाम से धृष्टता शीर्षक प्रबन्ध में प्रकाश किया है कि विज्ञान विशिष्ट-ज्ञान को कहते हैं। ज्ञान का स्वरूप ऐसा है कि सम्यक् ज्ञान एक प्रकार से बराबर रहता है। पाश्चात्य विज्ञान में विज्ञान का नाम गन्ध नहीं है। उसका प्रमाण यह है कि आज जो कहते हैं कल वह बदल जाता है। "पाश्चात्य विज्ञान जैसे

परिवर्त्तनशील है वैसे ही आयुर्वेद परिवर्तन रहित । पाश्चात्य के परिवर्तन के विषय में आपने Truth पत्रिका में लिखा है कि 'उदर' रोग में आयुर्वेद जल, नीमक बंद कर दूध का सेवन विधि कहता है—डाक्टर पहिले उस विषय में नमक ही दवा बोलते थे किन्तु अब नमक बन्द करने के लिये कहते हैं । पहिले वे नमक, पानी बन्द करने में हँसते थे किन्तु अब आप ही बंद कर रहे हैं । वैज्ञानिकता के मोह में और राज्यशक्ति पाने के लिये आयुर्वेद को गवर्नमेण्ट को दे रहे हैं । डाक्टरों की भाँति State faculty सङ्गठन का प्रस्ताव कर रहे हैं इसका मैं घोर विरोध करता हूँ तथा सबको करना चाहिये । इसमें एम, बी डाक्टरों से अधिक पण्डित कविराज Sub-Assistant Su:geon गणों के बराबर होंगे । इससे आयुर्वेद की बहुत क्षति होगी । मेरी यह प्रार्थना आप लोग स्थिर चित्त से विचार करें । इसीसे आपके हाथ से घर की लक्ष्मी चली जा रही है जो इस विषय में उत्सुक हों उनसे आप कहियेगा—

'परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेन्मनोरमामात्मवधुमिव श्रियम्' ?

और अब अधिक कहने की इच्छा नहीं है । आप लोग आयुर्वेद का हित करने के लिये इस सभा में आये हुए हैं हृदय में साहस रखियेगा और आर्ष शास्त्र में विश्वास करें । दैवी तथा आसुरी शक्ति का परस्पर विरोध यह पुराना व्यापार है । उपस्थित आसुरी शक्ति की जय हो रही है किन्तु पिछले दैवी शक्ति की ही जय होगी । जगदम्बा देश तथा समाज दोनों का मंगल करें ।

"आयुर्वेदामृत सरिज्जगत् कल्याण-हेतवे ।
अवाद्यं वर्त्ततां • शश्वज्जगदम्बा-प्रसादतः ॥"



श्रीमान् वैद्य पं० शिवनारायणजी मिश्र, भिषग्रत्न
भूतपूर्व प्रधानमंत्री नि० भा० आ० म० मंडल, कानपुर।

श्रीमान् वैद्य पण्डित शिवनारायण मिश्र भिषग्रत्न का

संक्षिप्त परिचय

पं० शिवनारायण मिश्र के पूर्वज हैदराबाद दक्षिण और लखनऊ में वैद्यक व्यवसाय पीढ़ी दर पीढ़ी से करते चले आ रहे हैं। लखनऊ की नवाबी के पतन के बाद इनके पिता पं० शिवाधार मिश्र लखनऊ से कानपुर आ बसे और यहीं चिकित्सा व्यवसाय करने लगे। इनके पितामह हकीम जुड़ावन लाल अपने जमाने में लखनऊ के प्रसिद्ध और बड़े वैद्यों में थे। इनके दूसरे पितामह पं० शिवसहाय अपनी १४ वर्ष की उम्र में ही हैदराबाद पैदल चले गये थे और कहते थे कि वैद्यक व्यवसाय से बावन हजार रुपये ५२०००) रु० पैदा करने के बाद अपने घर (ग्राम पड़री, जिला उन्नाव) लौटे थे। उन दिनों रेल, तार, डाक आदि का प्रसार न था। इसी उद्योगी कान्यकुब्ज वंश में हमारे चरितनायक का जन्म कानपुर में सन् १८९२ (सं० १९४९ वि०) में हुआ था। आपके पिता पं० शिवाधार और पितृव्य पं० भालचन्द्र मिश्र कानपुर के बहुत बड़े वैद्यों में थे और उन्हीं का पदानुसरण करते हुए पं० शिवनारायण मिश्र भी इस समय कानपुर के अग्रगण्य वैद्यों में हैं। आपकी उम्र अब लगभग ४५ वर्ष की है।

जब ये नाबालिग थे तभी से सार्वजनिक कार्यों में योग देने लगे थे। स्वर्गीय शंकर दाजी शास्त्री पदे के पट्ट शिष्य आयुर्वेद पंचानन पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ने जब प्रयाग में सर्व प्रथम पं० गणनाथ सेन सरस्वती महाशय के सभापतित्व में अ० भा० वैद्य सम्मेलन का आयोजन किया था तब उसकी सफलता का बहुत कुछ श्रेय युवक शिवनारायण मिश्र को भी था। कानपुर की वैद्य मंडली को वैद्य सम्मेलन की ओर रुचि दिलाने का श्रेय हमारे चरितनायक, जो उस समय किशोर ही था, को है। इधर जितने भी वैद्योन्नति सम्बन्धी कार्य हुए हैं उन सब में किसी न किसी रूप में मिश्र जी का हाथ रहा है।

इनके जीवन को मोड़ने का अधिकतर श्रेय युक्तप्रांत के नेता स्वर्गीय गणेश शंकर विद्यार्थी को है। अपनी १४ वर्ष की उम्र में ही ये 'हिन्दी केसरी' के नियमित पाठक थे और १६ वर्ष की उम्र में इनका परिचय श्रीयुत गणेश शंकर विद्यार्थी से हुआ। मिश्र जी तथा उनके भाई पं० शिवनन्दन मिश्र वैद्य ने मिलकर 'ब्रह्मावर्त सनातन धर्म मंडल' नाम की एक सभा खोल रखी थी जिसमें प्रति सप्ताह कुछ नवयुवक और किशोर एक साथ बैठकर धर्म चर्चा किया करते थे। एक दिन एक दुबला-पतला सा १८ वर्षीय युवक खड़ा होकर सभा में बोलने लगा। उसके वक्तृत्व कौशल को देखकर हमारे चरितनायक का आकर्षण उसके प्रति हुआ और सभा से आकर उसका परिचय प्राप्त किया। युवक ने अपना नाम गणेश शंकर विद्यार्थी बताया। उसी दिन से दोनों एक दूसरे के अभिन्न मित्र हो गये और जीवन पर्यंत रहे।

दोनों युवकों ने मिलकर एक गल्प सम्बन्धी 'गल्प' नामक मासिक पत्र निकालने की बात

सोची। एक समाचार पत्र की भी बात सोची गई। गणेश शङ्कर उस समय २०) मासिक के क्लर्क थे और शिवनारायण के पास था केवल उत्साह। इसलिये उस समय की हवाई स्कीम कार्यरूप में परिणत न हो सकी। कुछ समय बाद विद्यार्थी जी 'सरस्वती' के उप-सम्पादक हो गये और बाद को 'अभ्युदय' के प्रधान सम्पादक बनकर प्रयाग चले गये। उस समय इतनी कम उम्र का सम्पादक हिन्दी में दूसरा कोई न था। गणेश जी सम्पादक बन गये और उनकी प्रेरणा से मिश्र जी गल्पों और लेखों के लेखक। दोनों ही अपना स्वतन्त्र पत्र निकालने का स्वप्न बराबर देखते रहे। इसी बीच आर्थिक कठिनाई के कारण 'अभ्युदय' को बन्द कर देने की बात सोची जाने लगी और विद्यार्थी जी ने हमारे चरित नायक को कुछ हजार रुपये इकट्ठा कर 'अभ्युदय' ले लेने के लिए लिखा। मिश्र जी के पास पैसे का तो ठिकाना न था किन्तु लिख भेजा कि 'अभ्युदय' का कर्जा चुकाने के लिये कन्नौज के अपने एक मित्र से रुपये का प्रबन्ध कर रहे हैं, आप 'अभ्युदय' कानपुर उठा लाने की बातचीत करें। अबोध नवयुवक को क्या पता था कि हजारों रु० की रकम एक नाबालिग को कौन सौंप देगा?

'अभ्युदय' को तो मालवीय जी ने प्रयाग से ही चलाना तय कर लिया। हाँ, गणेश जी को उससे अलग होना तै करना पड़ा। कन्नौज के मित्र ने हजारों तो नहीं, हाँ, २५०) की सहायता मिश्र जी को दी और सन् १९१३ को देवोत्थानी एकादशी के दिन से 'प्रताप' कानपुर में प्रकाशित करना तय हुआ। तीन रुपये महीने का दफ्तर लिया गया और 'प्रताप' दूसरे के प्रेस में छपने लगा। विद्यार्थी जी सम्पादक और मिश्र जी मैनेजर बने। चार सप्ताह भी न बीते होंगे कि प्रेस वालों ने छापना बन्द कर दिया। नये पत्र का एक सप्ताह भी प्रकाशित न होना उसकी मौत का सवाल था। कानपुर के सबसे बड़े धनाढ्य उसके सहायक हुए और ७००) (सात सौ) रु० मिश्र जी को उनकी जिम्मेदारी पर उधार दिये। तुरन्त एक छोटा सा हैंडप्रेस खरीदा गया और इधर-उधर से सामान माँग जाँचकर ४ दिन और ४ रात लगातार जागकर पाँचवें सप्ताह की निश्चित तिथि को 'प्रताप' बाजार में बिकने लगा। विरोधी इस प्रयत्न को देखकर दङ्ग रह गये। हमारे चरितनायक ने प्रेस पर स्याही लगाने का काम स्वयं अपने हाथों किया था।

इसके बाद पैसे की तङ्गी के कारण झाड़ू के काम से लेकर 'प्रताप' को कंधों पर लादकर डाकखाने पहुँचाने तक का काम करते हुए मिश्रजी कभी नहीं हिचके। इन्हीं की तपस्या और अध्यवसाय का फल है कि 'प्रताप' इतना फला फूला और हिन्दी संसार में एक विशेष स्थान प्राप्त कर सका। सन् १९१९ में 'प्रताप' के लिये लगभग ३० हजार रु० इकट्ठा किया और उसे एक ट्रस्ट के हाथों सौंप दिया, जिसके ट्रस्टी मिश्र जी अब भी हैं।

साप्ताहिक 'प्रताप' के बाद दैनिक 'प्रताप' निकाला। मासिक 'मनोरञ्जन' मासिक 'प्रभा' आदि कई पत्र पत्रिकाओं का जन्म दिया और उसके पूर्ण स्वामी बने रहे। प्रकाश पुस्तकालय नाम का एक प्रकाशन-व्यवसाय चलाकर आपने उस समय की एक कमी को पूरा किया। इसमें लगभग ८० पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं। 'आयुर्वेदीय ग्रन्थ-माला' नाम की एक ग्रन्थमाला भी शुरू की जिसमें 'खनिज विज्ञान' जैसी कितनी ही छोटी बड़ी उपादेय पुस्तकें प्रकाशित की हैं। मिश्र जी बड़ी लगन के आदमी हैं। असम्भव तो किसी बात को मानते ही नहीं। जिस क्षेत्र में जुट गये सफलता ही प्राप्त की।

राजनैतिक क्षेत्र में भी आपकी प्रवृत्ति शुरू से ही रही। १६ वर्ष की उम्र से ही

स्वदेशी के व्रती हो गये थे और इस व्रत का खण्डन कभी नहीं होने दिया। सन् १९१५ में काशी षड्यन्त्र केस के सम्बन्ध में आपके मकान की तलाशी ली गई था। पुलिस का विश्वास था कि अपने पठनकाल में काशी में इनकी मैत्री अराजकों से थी और उन्हीं के सम्बन्ध में पूछने के लिए मिश्रजी हैरान किये गये मगर तत्व की कोई बात न पाकर पुलिस ने छोड़ दिया। बाद में पुलिस बराबर इनकी प्रत्येक हलचल पर ध्यान देती रही और पग-पग पर पीछा करती रही।

इसी कारण सन् १९१८ में एक मजेदार घटना घट गई। मिश्रजी अपने गाँव पड़री (जि० उन्नाव) भतीजे के यज्ञोपवीत संस्कार में गये हुए थे। कानपुर की पुलिस ने इनका पीछा करने के लिये उन्नाव की पुलिस को तार दिया। दूसरे दिन अचलगंज थाने के थानेदार साहब अपने कान्स्टेबिलों सहित पड़री जा पहुँचे और उन्हें हुक्म दिया कि 'बागी' शिवनारायण के दरवाजे से चारपाइयां उठा लाओ। किन्तु 'बागी' ने बगावत कर दी और थानेदार के इस गुस्ताखाना हुक्म की तामील न होने दी। फिर क्या था, थानेदार ने बदला लेने की धमकी देकर, सदर के लिये, जो वहाँ से ११ मील था, पैदल यात्रा कर दी। दूसरे दिन शाम को गिरफ्तारी का वारंट और सिपाहियों की छोटी सी पल्टन लाकर गाँव के हरेक रास्ते की नाके बन्दी करके घेरा डाल दिया। गाँव के मुखिया ने आकर मिश्रजी को यह खबर दी। मिश्र जी ने पुलिस को तंग करने के लिए कह दिया कि वे रात ही रात कानपुर जा रहे हैं। फिर क्या था। थानेदार ने पकते हुए खाने के चूल्हे को बुझवा दिया और गाँव से बाहर जाने वाले हरेक रास्ते पर दुहरा पहरा लगाकर खुद रात भी सबकी खबर लेते रहे।

मिश्रजी निमंत्रितों की सेवा-शुश्रूषा के बाद सो गये और सुबह जब उठे तो अपने को सिपाहियों और चौकीदारों की पल्टन से घिरे पाया। मालूम हुआ कि थानेदार बहादुर घंटों से उनके जगने की प्रतीक्षा में बैठे हैं। तलाशी ली गई। हाथ में हथकड़ी और कमर में रस्सा बाँध दिया गया। इसी अवस्था में उन्हें शौचादि से निपटना पड़ा। गाँव वाले यह देख उत्तेजित हो उठे। लोगों ने कांत-बल्लम निकाल लिये। बड़ी मुश्किल से उन्हें शांत करना पड़ा। मिश्र जी पहले उन्नाव फिर कानपुर लाये गए। शहर में काफी हलचल थी। रात के बारह बजे पुलिस के बड़े अधिकारियों को अपनी भूल मालूम पड़ी कि पीछा करने का हुक्म था न कि गिरफ्तार करने का और मिश्र जी छोड़ दिये गये।

तीसरे दिन कानपुर के अधिकारियों का क्षमा-पत्र लेकर एक थानेदार साहब २४ मील इक्के पर चढ़कर पड़री पहुँचे। मिश्र जी ने कानपुर के अधिकारियों को तो छोड़ दिया किन्तु उन्नाव के सुपरिटेन्डेट पुलिस मि० मेकडानल और अचलगंज के थानेदार के उपर मामला चलाने का भार प्रयाग के सर तेजबहादुर सप्रू को सौंप दिया। बाद को इन दोनों ने भी सर सप्रू के सामने लिखित क्षमा प्रार्थना की, थानेदार ने तो पड़री में आकर गाँव भर के सामने अपना क्षमा-पत्र मिश्र जी को देकर माफी मांगा।

सन् १९२१ में रायबरेली के प्रसिद्ध मुंशीगंज गोलीकांड के सम्बन्ध में सरदार बीरपाल-सिंह ने एक मुकदमा गणेश शंकर विद्यार्थी और मिश्र जी पर चलाया। मुकदमा लगभग ९ महीने लड़ा गया और करीब सत्ताइस हजार रुपया खर्च हुआ। अदालत से दोनों को ६-६ महीने की सजा और एक-एक हजार रुपया जुर्माना हुआ। सरकार ने इस मुकदमे को बहुत कुछ अपना सा मान लिया था। इस मुकदमे के दौरान में ही गवर्नमेंट ने इन दोनों पर कान-

पुर में एक राजद्रोह का मुकदमा भी चला दिया और दोनों से तीस-तीस हजार रुपये की जमानतें और मुचलके माँग लिये। मित्रों ने तुरन्त दाखिल कर दीं। यह सब इसलिये सहना पड़ा कि उन्होंने माफी के दो शब्द कहने से सदा इनकार किया।

सन् १९२२ में मिश्र जी रायबरेली वाले मामले में अपनी जमानत खारिज करवा कर जेल चले गये। किन्तु थोड़े दिन बाद ही एक दिन सुबह अचानक रायबरेली के जेल सुपरिं-टेंडेंट ने उन्हें जेल से बाहर कर दिया और मिश्र जी के पूछने पर हँसते हुए कहा कि "आपको युवराज का स्वागत करने के लिये छोड़ रहा हूँ।"

मिश्र जी बड़े स्पष्टवादी हैं। कभी-कभी तो यह कटुवादिता का रूप धारण कर लेती है। इनकी व्यवसायिक योग्यता और अध्यवसाय बुद्धि का परिचय पाकर सन् १९२२ में अन्यतम नेता स्वर्गीय पं० मोतीलाल जी नेहरू ने प्रयाग में 'इंडिपेंडेंट' का प्रबन्ध संभालने के लिये इन्हें निमंत्रित किया। आप प्रयाग गये और उसके सब कागज पत्रों की जाँच-पड़ताल करने के बाद पंडित जी से स्पष्ट कह दिया कि यह पत्र वर्तमान बुराइयों के रहते चल नहीं सकता और मैं उन्हें किसी प्रकार भी बिना आपको नाराज़ किये दूर नहीं कर सकता। पंडित जी इस स्पष्टवादिता से बहुत प्रसन्न हुए और अपने हस्ताक्षरों सहित अपना एक चित्र दिया जिसे मिश्र जी श्रद्धापूर्वक अब तक रखे हुए हैं।

आप हँसमुख और बड़े विनोदी हैं। इनके अन्तरंग मित्रों में साहित्य के बड़े-बड़े विद्वान् रहे हैं और हैं। ऐसे ही कुछ मित्रों के योग से 'गोलमाल कारिणी' नाम की एक सभा कायम कर रखी थी। उस सभा की सभासदी प्राप्त करने के लिये भरतपुर के एक सज्जन इनके पास आये। इन्होंने उनसे कहा कि अगर आप कुछ नियम पूरे कर लें तो बाकायदा आप भर्ती किये जा सकते हैं। बतलाये हुए नियमों के अनुसार उक्त सज्जन को आगरा और प्रयाग की यात्रा करनी पड़ी। एक दिन रात के ठीक १० बजे स्वर्गीय पं० रामजीलाल शर्मा के कमरे की मेज पर मिठाई का दाना रखकर ये महाशय धड़ाधड़ डंडे पीटने लगे। मुहल्ले तक के लोग जग पड़े। शर्मा जी के नींद से उठकर आने पर साक्षात्कार होते ही एक विशेष भावभंगी के साथ उस उक्त सज्जन ने अपना परिचय एक साँस में दे डाला। शर्मा जी ने थोड़ी ही देर में माजरा समझ लिया और उन्हें बैरंग कानपुर मिश्र जी के पास लौटा दिया।

एक बार इसी विनोदी सभा के सम्बन्ध में मिश्र जी आगरा गये। तय हुआ कि कोई साहित्यिक कांड होना चाहिये। पं० सत्यनारायण कविरत्न और स्वर्गीय पं० बदरीनाथ भट्ट से मिलकर तय हुआ कि आर्यमित्र सम्पादक पं० लक्ष्मीधर जी वाजपेयी को हम लोग अपना गुरु मान लें और गुरु चेले के रूप में एक चित्र खिंचवाया जाय। वाजपेयी जी कुछ दिन स्वामी रामदास जी के मतानुयायी रह चुके थे। उन्होंने अपना भगवा चोगा निकाला, कमंडल और चिमटा आया। मोर के पंख आये। भट्ट जी ने कागज के चोंगे का टोप बनाया उसमें "ल०" लिखा और वाजपेयी को इस वेश में कुर्सी पर बैठा कर भट्ट जी और मिश्र जी हाथ जोड़े हुए उनके शिष्य रूप में जमीन पर बैठे और चित्र खींचा गया। चित्र का ब्लाक बना और वह एक पुस्तक के समर्पण के रूप में छपा। चित्र के नीचे भट्टजी ने कविता लिख दी—

मोर-पंख से मुकुट सजा भंगा पहना है।
कर में चिमटा लिया वाह वाह क्या कहना है॥

तूँबी रखली, पास शिष्यगण को बिठलाया।
अंधों में काना राजा बनकर इठलाया॥
जिसकी लीलाओं का सुथल मूर्खों का हृद्धाम है।
उस गुरुडम के अवतार को बारंबार प्रणाम है॥

ब्लाक के नीचे कविता छापकर समर्पित पुस्तक में लगाकर वाजपेयीजी के पास पहुँची। लोगों ने उन्हें भड़का दिया कि इन लोगों ने तो आपका मजाक उड़ाया है। बस, फिर क्या था, वाजपेयी जी ने मिश्रजी को रजिस्टर्ड नोटिस दे दिया कि पुस्तक जला दो, अगर एक भी पुस्तक चित्र सहित बाहर निकली तो दण्ड भोगोगे। कुशल इतनी थी कि पुस्तक की ४–६ प्रतियाँ ही मिश्र जी ने मित्रों को दी थीं। वह चित्र अब भी अन्तरङ्ग मित्रों के लिए विनोद की सामग्री है।

सन् १९३० के प्रसिद्ध असहयोग आन्दोलन में मिश्र जी ने नमक बनाने, शराब पर धरना देने से लेकर कानपुर जैसे शहर की डिक्टेटरी तक की और डिक्टेटर की हैसियत से ही जेल जाना पड़ा। आप कानपुर नगर कांग्रेस कमेटी के प्रधान मन्त्री रह चुके हैं।

वैद्यक क्षेत्र में भी आप बराबर काम करते रहे। कानपुर की वैद्य सभा, युक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन और अखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन और विद्यापीठ में बराबर काम करते रहे। १९२९ में आपको कराची के वैद्य सम्मेलन ने आयुर्वेद महामण्डल और विद्यापीठ का प्रधान मन्त्री चुना और इसी काल में आप जेल चले गये। सम्मेलन की सफलता सदा ही चाही। आपकी सेवाओं से सन्तुष्ट होकर १९१७ में युक्त प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन ने आपको 'भिषग्रत्न' की पदवी प्रदान की थी।

सन् १९३१ में आप कानपुर म्युनिसिपल बोर्ड के म्युनिसिपल कमिश्नर निर्वाचित हुए और तीन वर्ष उक्त पद पर रहने के बाद स्वेच्छा से उससे हट गये। आप बड़े मिलनसार हैं। समय-समय पर अपने मित्रों की सहायता को याद कर गद्गद हो उठते हैं।

सन् १९३० में कानपुर के हिन्दू-मुसलिम दंगे में आततायियों ने इनके अभिन्न मित्र श्री गणेश शंकर विद्यार्थी को मार डाला। इसमें मिश्रजी भी एक बार फंस गये थे किन्तु अपनी प्रत्युत्पन्न मतित्व से जान हथेली पर रखकर बच निकले। गणेशजी की मृत्यु से इन पर तो मानों पहाड़ फट पड़ा। सारी उमंगे और सपने नष्ट हो गये। इन दिनों ये एक वैद्यक पत्र निकालने की सोच रहे थे। आयुर्वेदीय पुस्तकों का एक बृहत् पुस्तकालय खोलने की स्कीम भी इनके मन में थी। ये सब ऐसी ही पड़ी रहीं। हाँ, पुस्तकालय खोलने की स्कीम अब भी इनके सामने हैं। हस्तलिखित ग्रन्थों का जितना अच्छा संग्रह इनके पास है वैसा इस प्रान्त में दूसरे किसी व्यक्ति के पास न होगा।

इनके संग्रहालय में एक हजार से अधिक हस्तलिखित पुस्तकें होंगी। चित्रकला से भी उन्हें प्रेम है। लखनऊ के चित्रकला प्रदर्शन में तथा कानपुर की ललितकला प्रदर्शिनी में इन्होंने जिन प्राचीन चित्रों का प्रदर्शन किया था उनकी विशेषज्ञों ने बहुत प्रशंसा की थी।

आयुर्वेद की उन्नति के लिए आपका विश्वास है कि संसार के किसी भी चिकित्साशास्त्र में जो भी उपादेय उपाय या औषधियाँ मिलें उनको खुल्लमखुल्ला अपनाकर उनका प्रयोग करना चाहिए। आप वैद्यक के साथ ही जल-चिकित्सा, इञ्जेक्शन-चिकित्सा, सूर्य-रश्मि-चिकित्सा

आदि के भी पक्षपाती हैं। कुनैन आदि आशुफलप्रद औषधियों को आयुर्वेद के अन्तर्गत कर लेने के भी पक्षपाती हैं। आपने कई पुस्तकें लिखी हैं। जल-चिकित्सा या प्राकृत-चिकित्सा पर भी एक पुस्तक लिखी है।

मिश्रजी में कुछ कमजोरियाँ भी हैं। वे कभी-कभी अपने मित्रों की ज़िद या मान-रक्षा के लिए अपने को बड़ी से बड़ी कठिन परिस्थिति में डाल लेते हैं और लोगों के कोपभाजन बन बैठते हैं। एक बार तो इन्होंने अपने एक मित्र की मान-रक्षा के लिये एक ऐसी बड़ी बदनामी अपने ऊपर ओढ़ ली जिसका किसी को पता भी नहीं है और उसके लिए बड़ी कठिन परिस्थितियों से होकर गुजरना स्वीकार कर लिया। इसी प्रकार की कमजोरी इन्होंने एक बार इंडियन मेडिसिन बोर्ड के चुनाव के सम्बन्ध में भी प्रदर्शित की थी। मगर इस प्रकार की कमजोरियों के शिकार, कभी न कभी आदर्श पुरुष को छोड़ कर, सभी हो जाते हैं।

आजकल आप अपना ध्यान वैद्यक पर ही दे रहे हैं। आपका खयाल है कि बिना धन के संसार में कोई कार्य शान्ति और सफलता से नहीं किया जा सकता। आप यह भी सोचते हैं कि जीवन के एक खास भाग में इतना धन अवश्य पैदा कर लेना चाहिए ताकि वृद्धावस्था में परमुखापेक्षी न रहना पड़े। अब आर्थिक चिन्ताओं से मुक्त होकर फिर सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करना चाहते हैं। उस जीवन के प्रवेश का द्वार आप आयुर्वेद के द्वारा ही खोलना चाहते हैं। ईश्वर करे उक्त इच्छाओं की तरह उनकी यह सदिच्छा भी पूर्ण हो।



कविराज श्रीमान् पण्डित सत्यनारायण जी शास्त्री, काशी ।

व्याकरणशास्त्रि भिषक्शिरोमणि विद्यावारिधि काशी हिन्दू विश्वविद्यालयचरकाध्यापक

कविराज श्री सत्यनारायण शास्त्रि महोदयस्य

जीवनेतिवृत्तम्

अस्ति विविधविद्याविचारावधीरितसुरगुरुभिर्विबुधवरैर्विराजिता, निरन्तरजलनिचयपरिगताऽपि जाड्यापहारिणी राजसरहिताऽपि प्रकृतिसौन्दर्यमयी, बहुमन्दिराऽपि मुनिमण्डलमण्डिता कोशशून्याऽपि पञ्चकोशा, सावयवाऽपि नित्या,—शास्त्रपूर्णापि शास्त्रार्थिनी मङ्गलसङ्गताऽपि बुधबहुला, अहंसापि नित्यं सरस्वत्या अध्युषिता पुरीनिर्माणनिपुणेन वेधसाऽऽदर्शमिव कल्पिता, सकललोकललामभूता काशी नाम नगरी। यामुत्तरेण भगवती भागीरथी वहति।

यत्रच कुम्भसम्भवोऽपि चुलुकीकृतवारिनिधिर्भगवानगस्त्यः चिरमुवास। तदाश्रमोपान्त एव वैद्यविद्याविशारदः पाण्डेयोपनामा श्रीमान् पं० शिवनन्दनशर्म्मपाण्डेयोऽवनिसुरोत्तमो निवसिस्म। योहि शब्दसाहित्ययजुर्वेदायुर्वेदज्यौतिषशास्त्राणामपूर्व एव पण्डित आसीदेकदापापाठ्यमानस्सूरिसमूहसरोरुहैकोष्णरश्मिस्वनामधन्यलोकोत्तरकीर्तिराशिः पं० श्रीशिवकुमारमिश्रमहोदयस्तल्लिखितां परिभाषेन्दुटिप्पणीमवलोक्य भूयानप्रशंसत्, नैतादृशं पाण्डित्यं कस्मिंश्चिदपि विपश्चिति मयालोकीति। तदात्मजातः पुण्यकीर्तिः पितृचरणानुरूपः पं० श्रीबलभद्रपाण्डेयोऽजायत। स च षट्चत्वारिंशदुत्तरैकोनविंशतितमे वैक्रमसंवत्सरे शुभवासरेऽसितदले माघमासीयचतुर्थीतिथौ साक्षान्नारायणप्रसादमिव सत्यनारायणनामानं पुण्यलक्षणसमन्वितं पुत्ररत्नमलभत। निखिलनयनानन्दनोऽयं बलभद्रनन्दनः शैशवेऽपि प्रतिभया सकलजनमानसानि प्रसभं जहार। दर्शकानां चेतसि चमत्कृतिमतनोत्। दधार धार्मिकताम्। अकरोत् शौचाचारान्। निनाय चायं बाललीलाभिः पितरावानन्दयन् हायनानि चत्वारि। पञ्चमवर्षारम्भ एव वसन्तपञ्चमीतिथौ पिताऽध्ययनयोग्यमिमं ज्ञात्वा दशाश्वमेधान्नातिदूरस्थितायां शिशुपाठशालायां पण्डितरामसुमेरशर्मसमीपमनयत्। तदीयसविधे कारिताक्षरारम्भश्च पिता प्रतिदिनमेनं पाठशालां प्रति प्रेषयतिस्म। कतिचिद्दिनानि साधारणबालकमिवेममाकलय्य उपाध्यायः नकिंचिदप्यपाठयत्। अयमपि शान्तस्वान्ततया किंचिदपि गुरुं नाप्राक्षीत्। एकादाऽस्य सरलतया सौम्यतया च स्वभावत एव आकृष्टो गुरुरक्षराण्यशिक्षयत्। अयं तु शीघ्रग्राहिण्या स्वबुद्ध्या समस्तानि तान्येकस्मिन्नेव दिने संजज्ञे। अपरस्मिन्नहनि उपाध्यायात् ककारोपरि मात्रासंयोजनं ज्ञात्वा समग्रवर्णोपरि ताः संयोज्य गुरवेऽदर्शयत्। अशिक्षितोऽपि तासां शुद्धोच्चारणमपि व्यधात्। तेन परमप्रीतो गुरुरेनमितरजनसविधे विकस्वरैः स्वरैः प्रशशंस। सर्वेषां च सतीर्थ्यानामादर्शत्वे न्ययोजयत्। एकस्मिन्नेव वर्षे तस्यां पाठशालायां पञ्चकक्षाः सर्वप्रथमोपस्थितोऽयमुत्ततार। एवमेवोत्तीर्णसप्तकक्षोऽयं पण्डितजयमङ्गल-

ज्योतिर्विदः सन्निधौ संस्कृतविद्यारम्भाय ययौ । तत्र च त्रिभिरेव मासैः अमरकोषस्य काण्डद्वयं सम्यगभ्यस्तवान्। अनयैव रीत्या तत्तद्विद्वत्सकाशात् समाप्य सकलप्राथमिकग्रन्थान् गोपालमन्दिरे पं० रामशास्त्रि समीपे एक वर्षं यावदधीत्य पण्डित नागेश्वर पन्त धर्माधिकारितः समग्रां सिद्धान्तकौमुदीमध्यगीष्ट ।

व्याकरणशास्त्रस्य प्रौढं पाण्डित्यमासादयितुं पण्डितप्रकाण्ड श्रीगङ्गाधर शास्त्रि समीपे सकलं शेखरं भूषणं चाधीत्य स्वनामप्रसिद्ध पण्डितशिवकुमारशास्त्रितो महाभाष्यं व्युत्पत्तिवादप्रधानानन्यांश्च निबन्धानध्यजीगपत् । अयं गुरुषु देवतासु च दृढां भक्तिं भेजे । दशाश्वमेध तीर्थं प्रसाधयन्त्याः श्रीकालीदेव्या अयं परमोपासक आसीत् । देवतार्चनप्रक्षीणकल्मषोऽयमेकदा प्रभातप्रायायां यामिन्यां स्वप्ने साक्षाद्भगवतीं कालीं ददर्श । चकितचेताश्चायं किंचिद्ब्रुवाणां तां शुश्राव ।

वत्स ! अधीष्व सकललोकोपकारकमायुर्वेदम् । विधेहि ममप्रसादात्त्वरितमेव समवाप्तपाण्डित्यः विश्वकल्याणम् । उपार्जय पुण्यमार्तजनचिकित्सया । लभस्व च स्पृहणीयमविनाशि यशः । अयं तन्नूनं देवताप्रसादं भाग्योदयमिव मन्यमानस्तस्मादेव वासरात्परित्यक्तान्यकार्यः धर्मदास कविराज सकाशादाशुतरमेव चरकसुश्रुतादीन् सकलानायुर्वेदग्रन्थान् समधिजगे । लब्धवांश्च शीघ्रमेव नाडीविज्ञाने, निदाने, औषधिनिर्माणे च परमं पाण्डित्यम् ।

प्राक्तनैर्नूतनैश्च वैद्यैरसाध्यप्रतीकारतया परित्यक्तान् क्षेत्रियत्वेनोद्घोषितान् राजरोगानयं चतुर्दशहायनानि अविचिकित्सतमचिकित्सत । सफलतां च प्रापत् । अथ तीर्थराजीयधनिकश्रेष्ठं माधवप्रसादं चिकित्समानमेनं तत्रावेक्ष्यात्र च पं० श्री मं० म० प्रभुदत्त महोदयादि पं० प्रवरैः पं० श्रीरघुनन्दनजी प्रमुखैर्भिषग्भिस्तोष्टूयमानम् गुणगणप्रवणीकृतहृदयेन तत्रत्यायुर्वेदमहाविद्यालयेऽध्यापनाय नियुक्तः कतिभिश्चिद्वर्षैः सर्वजनस्वान्तानि सन्तोषयंस्तत्रैव पाठयति । विदधाति च चिकित्सया सकललोकानामुपकारम् । विशेषतो दुर्विधानाम् । साम्प्रतञ्च निखिलभारतवर्षीय वैद्यसम्मेलनस्योपसभापतित्वमलङ्कुरुते यत्रवितनोति च परमप्रगाढपाण्डित्यो द्योतकम्पदार्थविज्ञानाभिधोग्रन्थोऽस्य कानिचिदंशानि वि० वि० छात्रैरधीयत एवातो न तद्वृत्तमस्ति तिरोहितम् ।

देवतासु बद्धश्रद्धो विद्यते ।

किं बहुना अयं श्रीमान् सत्यनारायणः वपुषि सुकुमारो वाचिगुरुः भूसुराणां गणेशः गौरीभूतकान्तिः लोकानांमृडः दुर्विधानां धनदः चिकित्सया लोकपालः शिष्याणां पाकशासनः गुरुषु वामनः सत्यं सर्वदेवमयस्य भगवतो नारायणस्यानुकरोति । अयं विश्वनाथकृपया लप्स्यते निर्मलमुपचीयमानं च यशः प्रतिदिनं द्विगुणिताञ्चोन्नतिम् , इति विनिश्चिन्वन्ति विपश्चित इति ।

श्रीबालकृष्ण मिश्रः

का० हिं० वि० वेदान्तशास्त्र प्र० ध्या०



स्वर्गीय रसायनाचार्य श्री० श्यामसुन्दराचार्य, वैश्य, काशी ।
लेखक—रसायनसार, अनुपान विधि ।

रसायनाचार्य श्यामसुन्दराचार्य वैश्य का
संक्षिप्त परिचय।

काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान् स्वर्गीय श्यामसुन्दराचार्य जी एक अद्भुत, उद्योगी, उत्साही, कर्तव्यशील विद्वान् थे। इनका जन्म सम्वत् १९२८ अधिक भाद्रपद कृष्ण प्रतिपद् गुरुवार को भरतपुर स्टेट के सुप्रसिद्ध कामवन नामक स्थान में हुआ था। आप रामानुज सम्प्रदाय के वैश्य थे। आप प्रारम्भ से ही संस्कृत-प्रेमी थे। आपने युवावस्था में काशी आकर तत्कालीन सुप्रसिद्ध विद्वान् सर्वतन्त्र स्वतन्त्र महामहोपाध्याय राममिश्र शास्त्री जी महाराज से व्याकरण, साहित्य तथा रामानुज-दर्शनों का अध्ययन किया। सुप्रसिद्ध नैयायिक शिरोमणि गौतमावतार पं० सीताराम शास्त्री जी से नव्य न्याय और हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष महामहोपाध्याय स्वर्गीय अम्बादास शास्त्री जी से जैन दर्शनों का अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त म० म० शिवकुमार शास्त्री; म० म० गङ्गाधर शास्त्री जी आदि महाविद्वानों से भी आप खास-खास महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अध्ययन करके जैन पाठशाला में जैन दर्शनों के अध्यापक नियुक्त हुए। जैन समाज में आपकी अतिशय प्रसिद्धि थी—आपको अनेकानेक उपाधियाँ और प्रशंसा पत्र प्राप्त हुए हैं। इधर इन शास्त्रों के विद्वान् होकर आपने आयुर्वेद का क्रिया के साथ अध्ययन प्रारम्भ किया। तत्कालीन धन्वन्तरिकल्प विद्वान् स्वर्गीय अर्जुन मिश्र जी से आपने आयुर्वेद पढ़ा।

आप इतने विषयों का अध्ययन और अध्यापन करने के साथ-साथ पारद के शोधन और चन्द्रोदय-निर्माण के लिये गम्भीर अन्वेषण करते जा रहे थे। आपने अपने कमाई का अधिक अंश और जीवन के अन्तिम अनेक वर्ष इसी में लगा दिये और सबका अन्तिम फल स्वरूप रसायन-सार नामक ग्रन्थ लिखा। इस युग में यह पुस्तक अद्वितीय है। और अन्त में आप इस सम्बन्ध में इतने प्रसिद्ध और प्रामाणिक समझे गये कि जब १९१८ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का आरम्भ हुआ उस समय आप प्राच्य-रसायनशास्त्र के प्रधान अध्यापक नियुक्त हुए। इसी वर्ष की १६वीं जुलाई को जिस दिन हिन्दू विश्वविद्यालय का उद्घाटन था आप अध्यापन के लिये आते, लेकिन २६ मई १९१८ रविवार को आप काशी-वास कर गये।

आप बड़े ही प्रभावशाली व्यक्ति थे। भाषण और लेखन में तो प्रौढ़ थे ही—शास्त्रार्थ विचार में भी आपको अधिक आनन्द आया करता था। सदा आप किसी न किसी विषय पर आलोचना करते ही देखे जाते थे। स्वर्गीय काशीनरेश, राजा माधोलाल, डा० वेनिस आदि के साथ आपकी गाढ़ी मित्रता थी। आप एक युगान्तरकारी विद्वान् थे।

आपने पारद के शोधन करने और उसके द्वारा बनाए जाने वाले चन्द्रोदय आदि रसों के सम्बन्ध में जो अन्वेषण और आविष्कार किये हैं वे इस युग के लिये एक नवीन वस्तु है। इस समय इतना धैर्य और गाम्भीर्य कम लोगों में देखा जाता है। वे धुन के पक्के प्राचीन आदर्शवादी ठोस विद्वान् थे—यही कारण है कि उन्होंने जो कुछ भी लिखा है वह महत्वपूर्ण है।

आपने अनुपान विधि नामक एक और पुस्तक लिखी है—इसीमें आपने कुछ अनुभूत योग भी लिखे हैं। इतना सब होने पर आप बड़े ही सहृदय और विनोदप्रिय व्यक्ति थे।

आपके परिवार में पुत्र सन्तान न थी, इसलिये आपके उत्तराधिकारी आपके दौहित्र बाबू उमेदीलाल वैश्य बड़े ही उत्साही नवयुवक हैं। आपने रसायनसार ग्रन्थ का तीसरा संस्करण अनेक सुधारों के साथ प्रकाशित किया है। उनकी स्मृति में उन्होंने श्यामसुन्दर रसायनशाला भी स्थापित की है, जिसमें उनकी बनाई हुई औषधियों का संग्रह किया गया है।

श्री केदारनाथ शर्म्मा, सारस्वत।

अहमदाबादे २५ तमे नि० भा० वैद्यसम्मेलने नूतनव्याधिविचारसंभाषा-परिषदस्सभापतेः

श्री वैद्य पण्डित कन्हैयालाल शर्मायुर्वेदाचार्यस्य

अभिभाषणम्

शरदिन्दुसुन्दररुचिश्चेतसि सा मे गिरां देवी।
अपहृत्य तमः सन्ततमखिलानर्थान् प्रकाशयतु ॥ १ ॥

अयि श्रीमन्तो महाशयाः सभास्तारा भिषङ्मणयः निखिलजनभेषजदानजनितमहनीयकीर्तयः पीयूषपाणयो वैद्यमहाभागाः, निखिलशास्त्रपारङ्गतानां सुभिषग्वरेण्यानां मत्तोऽपि विद्यया वयसा च वृद्धानां तत्रभवतां भवतां पुरस्तान्नूतनव्याधिविचारसंभाषापरिषत्सदशे प्राच्यप्रतीच्योभयविज्ञानशालिभिर्विवेचनीयेऽतिगहने विषये जिह्वाचापल्ययुतस्य मे श्लथीभवति समुत्साहः पीठमेतदधिकर्तुम्। यतो नाहं नूतनविज्ञानोन्मेषविकसन्मतिविभवो नच प्राच्यायुर्वेदपारदृश्वा, येन सहृदयानां परमविदुषां तत्रभवतां भवतां मनःसन्तोषकरं किमपि वक्तुं प्रभवेयम्। किन्तु श्रीमतां पण्डितप्रकाण्डानां भिषङ्मूर्धन्यानां श्रीगुरुवर्यमहाभागानांचरणपरिचर्यया यान् कांश्चिदायुर्वेदविज्ञानकणान् समचैषं तानेव श्रीमतां पुर उपाहर्तुं प्रयतस्य मेनिवेदनम्।

विदितमस्तु तत्रभवतां भवतां विपश्चितां यदिदं निखिलभारतीयवैद्यसम्मेलनं पंचविंशतिवर्षं प्रविशत् सतां हृदयाह्लादकं प्रस्तुतमास्ते।

तावति काले बहुतिथे सम्पन्ने नवनवाविष्कारानुत्तरोत्तरं प्रकटीचक्रुः पूर्वाण्यधिवेशनानि।

नासिकवैद्यसम्मेलनादारभ्य यदनेन साकं सम्भाषापरिषदामधिवेशनं चेक्रियते, एतदेकमायुर्वेदस्योन्नतिसम्पादकं लक्ष्म दरीदृश्यते।

भूयसां भूतपूर्वाणां तथा सांप्रतं विदेशं बहुकालं संसेव्य समागतानां तदनुयायिनां चान्येषां भारतीयानां विदुषामिदं मतमस्ति—यद् भारतवर्षं सम्पूर्णविद्याभिः परिपूर्णमासीत्, परन्तु तत्र विज्ञानं (साइन्स) नासीत्।

एतदुत्तरमस्माभिरुद्घोष्यते—यदायुर्वेदशास्त्रं विज्ञान (साइन्स) पूर्णमस्ति नात्र विसंवादः।

आयुर्वेदशास्त्रस्यैकं प्रधानमङ्गं रसायनशास्त्र—(केमिष्ट्री) मपि पुरा पूर्णमासीत्। इदं तदानीन्तनपुस्तकावलोकनेन स्पष्टं प्रतीयते।

संशोधन (अन्वेषण) शक्तेश्च विज्ञानप्रगतेर्महन्निदानत्वे न कोऽपि संशयः।

अन्यच्च—प्राचीनभारतीयायुर्वेदः, तज्जातीयरसायनशास्त्रादि, एतदुभयसंवलितकार्यं महदुच्चपदं प्रतिष्ठां लेभे। तदनुक्रमेणान्वेषणसंशोधनक्रियाद्वारेण निर्मितेषु ग्रन्थेषु ततोऽप्यधिकामुन्नतिमाससाद।

यस्या विद्याया प्रजासु राजसु च भूयानादरः, यया च जगदाभ्युदयिकपथसिद्धिः, सैव विद्या लोकेषु समर्हणीया भवतीति निश्चयः।

भारतेऽस्मिन्नायुर्वेदसमुन्नतिः तावत्पर्यन्तं समभूत्— यावद्राज्यतन्त्रं भारतीयानां राज्ञामेव वश्यमभूत्—अन्यथा वैदेशिकसत्तया नैजमाधिपत्यं न स्थापितम्।

यदा प्रभृति विविध-कला-कलाप-चातुरीचणं भारतं यवनानां हस्ते पतितं गोरण्डादीनां च प्रबलया सत्तया तदीयविद्याया भूयस्त्वेन प्रचारः कृतस्तदाप्रभृत्यायुर्वेदप्रगतिः शैथिल्यं प्राप। भारतीयानि च तक्षशिलानालन्दादिस्थानि विद्यापीठानि कथाशेषतां जग्मुः। लेखनकार्यञ्चास्त-मितम्। आयुर्वेदनिर्मातृभिर्महर्षिभिर्ये सिद्धान्ताः स्थापिताः, बहुषु रोगेषु च विचारः कृतः, तेषां पौर्वापर्यसङ्गतिपुरस्सरं भावसंवेदनमप्याधुनिकैर्दुश्शकं, नैषा न्यूनताऽऽयुर्वेदशास्त्रस्य? परं तन्निर्मातॄणामेवौत्कृष्ट्यम्। ये च विद्वांस आयुर्वेदशास्त्रं न मन्यन्ते गर्हयन्ति च तेषु कैर्निजशास्त्र रहस्यं पाश्चात्य हृदयङ्गमं कृतं? कैश्चायुर्वेदन्यूनतायां नैजसिद्धान्ताटोपः प्रकटीकृतः। इत्याहो-पुरुषिका मात्रमेतत्। कस्यापि वस्तुनो रहस्यमबुद्ध्वा कमपि विषयं निन्दितुं कथं रसना प्रसरति—इति मे महत्कौतुकम्। प्रत्युत पक्षपात एव जागर्ति।

अमुष्यां परिषदि प्रश्नद्वयं व्यवतिष्ठते—प्रथमं नूतना व्याधयः प्रत्नाश्च व्याधयः; तथाऽऽयुर्वेदशास्त्रकृद्भिः कोऽपि विमर्शोऽकारि नवा, तद्विषये ग्रन्था निरमायिषत, नवा? एत-दुत्तरमेतदेव—यत्—अन्यासां विद्यानां बहुधा विलोपश्चक्षुर्गोचरस्तथैवास्यापि, कुत्रचित्स्याच्चेद-नुपलम्भ इति वा।

अन्यच्च प्रचलिता अवशिष्टा ये ग्रन्था दृष्टिपथं पथिकायन्ते-तेषु अनेकव्याधीनां चि-कित्सा प्रदर्शिता; तत्स्वरूपं पूर्णतयाऽवगम्यते नवा, अर्थाद् ये रोगाः प्रत्यग्रा इति मन्यन्ते, तेषु केषांचिद्रोगाणां यदि नष्टग्रन्थेषु विचारः, हस्तगतग्रन्थेष्वपि संदिग्धव्याधीनां मध्ये अल्पीयसां व्याधीनां (यान् वयं नवीनत्वेनोद्घोषयामः) वर्णनं स्यात्, तान् सर्वथा नूतनव्याधित्वेन स्वीकरणं भ्रममूलकम्।

केषुचिद् देशेषु काचिद् विद्या प्रस्त्रियमाणा तद्देशस्य मूलनिदानभूताऽस्ति, बीभत्स-व्याधेर्निराकरणमपि शोधकैः संशोधितं भवेदित्युन्नेतुं शक्यते, अन्यदेशीयैस्तदुपायस्याज्ञात-तत्त्वमपि समर्थयितुं शक्यते।

यथा सर्पदंशस्याकस्मिको व्याधिस्तच्चिकित्सा च आयुर्वेदीयग्रन्थेषु समुपलभ्यते, केचिदाचक्षते-एतच्चिकित्साकरणमपार्थम्। परन्तु सहस्रद्वयवर्षेभ्यः पूर्वं यदा ग्रीकदेशीयैरमुष्मिन् देशे प्रसह्याक्रामि तदा भारतीयाः सर्पदंशचिकित्सां कर्तुमशकन् ग्रीकचिकित्सका निष्फलप्रयत्ना अभूवन्। स्पष्टं चेदमितिहासेषु।

येषु दिवसेषु ग्रीकदेशनिवासिनां संपत्तिर्महदुच्चपदं प्रापत्। एतेन लेखेन यदिदं सिद्धं-प्रायस्तेषुतेषु देशेषु-आयुर्वेदमूलं तत्रत्यपरिस्थितिमनुरुध्य प्रवर्तितमासीत्। तेन वैदेशिकानां तद्व्याधिपरिज्ञानं विना तदीयचिकित्साज्ञानं न न्यूनतासम्पादकम्। परन्तु-अगत्यास्वीकर्त-व्यमेवैतत्-यदाभ्यन्तरराष्ट्रदृष्ट्याएवंविधचिकित्सावेत्तॄणां चिकित्सकानां दृष्ट्या तादृशव्याधीनां नवीनत्वं सिद्धमेव।

प्राचीनकालिकेतिहासादद्यदिवसपर्यन्तं विचार्यमाणे स्पष्टं प्रतीयते यद् भिन्नदेशीयानां सम्बन्धोऽन्योन्यं सम्बन्धः सुसंघटितश्चासीत्।

अन्यच्च भारते आंग्लदेशीयसत्तया विशेषतो घनिष्ठः सम्बन्ध इति निर्विवादम्। एता-

वताऽन्यदेशीयविलक्षणरोगाणामाक्रमणं संपर्कतो भारतेऽवश्यमेवाभूत्। तेनैव सांक्रामिकरोगाणामाविर्भावो भूयान् लक्ष्यते।

जीवनस्य नूतनपरिस्थितौ संसारपरिवर्तनपरिणामादेवंविधनूतनरोगाणामाविर्भावो नासंभवी। यतो युगप्रभावाद् बहुशो रोगाणामाविर्भावे बहव उपप्लवाः समजायन्त।

प्रकृतिरनवच्छेद्या निरवधिश्च। प्रकृतेर्विकृतयो रोगाः। विकृतीनामानन्त्यादभिनवरोगाणामाविर्भावो न विस्मयावहः।

अस्मदीयप्राचीनायुर्वेदवैज्ञानिकैर्दीर्घदृष्ट्या प्रकृतेर्विकृतं स्वरूपं यथाशक्यं परिज्ञातुं बहु प्रयतितम्। तद्व्याधीनामुल्लेखोऽस्त्वेऽपि तेषु तेषु ग्रन्थेषूपलभ्यते। तद्दृष्ट्या नूतनव्याधीनामन्वेषणकरणाद् यदि व्याधयो नूतनाः स्थिरीभवन्ति—चेद् हतं ! हता प्राचीनविद्वत्ताया गौरवम्। प्रचलितनूतनरोगाणां भारतीयायुर्वेदीयपद्धतिः प्रशमनं तत्तौल्यञ्च कर्तुमनीशाना स्यात्तदा नूतनत्वमपि कथयितुं चेतो मन्थरं भवति।

यतो मया बहुदशः प्रदर्शितं—यत्प्राचीनपरम्परागतविज्ञानं बहुधा नष्टंभूतम्। यावच्च नष्टप्रायज्ञानस्य भाष्यन्वेषणं न क्रियेत तावन्नूतनत्वेनाभिमन्यमानां व्याधीनां मदीयवक्तव्यविषयेऽमुमेव सिद्धान्तमाश्रणीयं मन्ये।

नवीनव्याधीनां विचारक्षेत्रे प्राधान्यमायुर्वेदस्यैवेत्यत्र नास्ति संशयः।

रोगोत्पत्तिलक्षणचिकित्सादिषु केवलं पाश्चात्यमतमवलोक्यायुर्वेदस्योपेक्षां विधाय नवीनव्याधीनां नामधेयोट्टङ्कनं सर्वथा न समुत्सहे।

पाश्चात्यविद्वांसः नूतनव्याधीनामुत्पत्तिकारणगवेषणे तथा लीनाः सफलप्रयत्नवन्तश्च, तावन्तएव चिकित्साक्षेत्रेऽपटीयांसो विद्यन्ते। अस्मदीयचिकित्सापद्धतिः - वानस्पत्यखनिजा—श्चौषधिक्षेत्रेऽशेषे कोषे एतावती समृद्धा विद्यते, यदि एतदन्वेषणमनुभवद्वारा क्रियेत तदा पाश्चात्यविदुषां न्यूनतापर्याप्तिरल्पैर्बहुभिश्चांशैः कर्तुं न पारयामः, इति कदाऽपि मानयितुं न शक्नुमः। नूतनव्याधिविचारसम्भाषापरिदः—आयुर्वेदमहासम्मेलने प्रथमस्थापनमायुर्वेदप्रगतेः पुनरारम्भचिह्नं समर्थये। परन्तु यावद् भारतीयपद्धतेः प्राधान्येन समादरस्तावत्तद् वैशिष्ट्यं स्थास्यति। नवीनव्याधीनामन्वेषणक्षेत्रे पाश्चात्यसिद्धान्तानामनुसरणेनायुर्वेदनैष्फल्यमस्वीकुर्वन्तोऽस्मदीयचिकित्साप्रणालिकया विज्ञानशास्त्रे वयमपि कमप्यंशं ग्रहीष्यामोऽमुना प्रयत्नेनाऽस्मिन् जगतीतले वैदुष्यभाजां मनीषिणां पुरत आयुर्वेदविजयध्वजिनी विस्फुरिष्यति।

एतस्यां परिषदि आगामिनीषु समस्यासु अस्मदीयकर्तव्यमेतदेव विद्यते यदन्वेषणपरया स्वतन्त्रदृष्ट्या नूतनव्याधीनामन्वेषणं भारतीयसिद्धान्तानुसृत्य क्रियेत तदा विपुलेऽस्मिन्नौषधीक्षेत्रे उपचाराणां गवेषणमपि क्रियतां सर्वैविपश्चिद्भिरिति मे नम्रनिवेदनम्।

आर्यमिश्राः !

परिवर्तनशीले संसारे समस्तमपि वस्तुजातं विनिमयते–स्वातंत्र्यादस्वातंत्र्यं, निर्धनात्, संपच्छालित्वमोजस्विता च संलक्ष्यते। एतस्माद् दुःखसमूहाद् भारतवर्षमपि पृथग् गणयितुं न शक्यते। यतोऽत्र स्वातंत्र्यस्थाने पारतंत्र्यं व्यवस्थितम्, एतच्च पारतंत्र्यं निर्धनत्वं पश्चात्यसभ्यता च भारवर्षेणाप्यंगीकृता यतः परिणतिरीदृशी जाता–यया नैजमाचारविचारादि दूरे विहाय स्वकीयमर्यादोल्लंघनाद् विविधा रोगाः प्रादुर्भवन्ति।

तथा च यथामति सम्प्रति श्रूयमाणानां नूतानां व्याधीनां विषये कांश्चिन्मुख्यव्याधीनादिश्य धीधनानां तत्रभवतां भवतां पुरःस्थापयितुं यथाप्राप्तायुर्वेदानुसारं प्रयतिष्ये।

प्रकृतेर्व्याधिशब्दार्थः

शरीरमनसोर्दुःखाय ये आभ्यन्तरहेतुजाताः, बाह्यहेतुजाता वा संयोगास्ते सामान्यतो व्याधिशब्देनोच्यन्ते—"तद्दुःखसंयोगा व्याधयः" इति सुश्रुतः—

धातुस्थूणाक्तवैषम्य तद्दुखं व्याधिसंज्ञकम् ।

—काश्यपसंहिता ।

प्रकृतेर्नूतनशब्दार्थश्चः—

येषां संहितादिग्रन्थेषूल्लेखो नास्ति ये चादृष्टदेशकालाहारविहारादिभिः परिणताः सन्तो विलुप्ताः समवलोक्यन्ते अन्येषु वा रूपान्तरमधिगताः, यथा—पुरा यद्भोजनं कदाचिदेवोपयुक्ततां नीतं तन्नियतरूपेण साम्प्रतं क्रियते, तेन चानेके व्याधयोऽवलोक्यन्ते, तेऽपि व्याधयो नूतनपदेन व्यवहर्तव्याः स्युः । ये च व्याधयः स्वस्वरूपं विहायान्यरोगेषु सम्मिलिताः, रोगः स एव दृश्यते—किन्तु स्वरूपविपर्यासेन नूतनत्वेन प्रतीयते यथा—निदानग्रन्थेषु सन्निपातज्वरादिविषये, 'कोठानां श्यावरक्तानां मण्डलानां च दर्शनम्' इति न प्राप्यते ; अपवादरूपेण कचिदुपलम्भः स्यादिति त्वन्यदेतत् । यद्यप्यत्रास्माकीन एव दोषः—चरकोक्तत्रिदोषज्वरानुपलक्ष्य त्रिदोषे विशेषतो गूढनिरीक्षणं न कुर्मः । एवं सति न केऽपि व्याधयो नूतनाः स्युः । येऽन्यत्र नवीनरूपेण समुत्पन्ना व्याधयः प्राचीना एव, तेस्वपि विरुद्धं परिणतं तल्लक्षणम्—कांश्चिद्व्याधीञ्छास्त्रनिर्दिष्टान् , तान् वयं नव्यत्वेन व्यपदेष्टुं शक्नुमः शास्त्रलक्षणलक्षितानपि व्याधीन् पूर्णतया ज्ञातुं नाधीष्महे । सर्वेऽपि पदार्थाः स्वरूपेणाविर्भवन्तस्तिरोभवन्तश्च सत्कार्यवादसिद्धान्तेन समवस्थिता एव, किन्तु तानेव व्याधीन्नव्यान् वक्ष्यामः यान् वयं न दृष्टवन्तः, आयुर्वेदग्रन्थेषु येषां वर्णनं नास्ति, यथा—अतिनिद्रा रोगः अफ्रिकाप्रदेशे बहुशोऽवलोकितः, साम्प्रतं भारतेऽपि आयास्यति चेत्तमपि रोगं नूतनत्वेन कल्पयिष्यामः ।

यश्च प्लेगाख्यो रोगो भारते नासीत् , प्राथमिकागमने नूतनो जातः, अद्य भारतीया आबालवृद्धाः सर्वेपि परिचिताः, इदानीं नूतनं किमपि नास्ति ।

यद्येप्येतस्य वर्णनं युनानीचिकित्सायां 'ताउन' नाम्ना विद्यते, तथापि सम्प्रति सुप्रथित एव ।

नानाविधकारणैरसंख्येयरोगाणामाविर्भावः, तथाच काश्यपसंहिता "ज्ञेया रोगा असंख्येयाश्चिकित्सानां च विस्तरात्" इति । बलप्रवृत्तिभेदेन सुश्रुते सप्तभेदा अपि निर्दिष्टाः ।

अत्र चैवं व्याधीनामानन्त्ये ज्ञेयतमाः नूतनाः केचिद्व्याधयोऽवश्यं ज्ञातव्या यथाक्रमं व्यवस्थापयितव्याश्च । तथाच भगवान् चरकः

"व्यवस्थाकरणं तेषां यथा स्थूलेषु संग्रहः" अथ प्राचांचापि वचः—

विकारनामाकुशलो न जिहीयात्कदाचन ।
नहि सर्वविकाराणां नामतोऽस्ति ध्रुवा स्थितिः ॥"

नियतपरिवृत्तिशीले जगति नियमेन ध्रुवसंस्थानलक्षणास्तथाविधा एव व्याधयः सदा वर्णयितुमशक्याः सन्ति ।

अतएव सुश्रुतोऽपि—

"अनुक्तमपि दोषाणां लिङ्गैर्व्याधिमुपाचरेत् ॥"

अतश्च नेदं लज्जास्पदं—यदस्मदीयसंहितायामपि केषाञ्चिद् रोगाणां लक्षणादीनि न लभेरन् ।

किञ्च अज्ञातापरिचितनूतनव्याधिलक्षणविशेषो वैद्यः, अभिनवव्याधिष्वपरिज्ञातव्याधि-लक्षणसादृश्याऽसादृश्यावलोकनात् संशयमापन्नो न वा प्रभवेद् रुजः प्रतिकर्तुं हन्याद् रोगिणं त्वरया चिकित्सया ।

यथा—आन्त्रिकाख्ये सन्निपातज्वरे द्वितीये तृतीये वा सप्ताहेऽकस्मात् जनिष्यमाणं रक्तस्रावं च ।

तथा च चरकः—

"तस्माद् विकारप्रकृतीरधिष्ठानान्तराणि च ।
समुत्थानविशेषांश्च बुद्ध्वा कर्म समाचरेत् ॥"

सम्प्रति नूतनानां व्याधीनां मध्ये कांश्चिद् व्याधीनुद्दिश्य तत्र विचाराः प्रकटीक्रियन्ते—

रक्ताधिक्यरोगः (हाइ ब्लडप्रेसर)

परिचयः—

रक्तं हि कियता प्रवाहेण शुद्धरक्तवाहिन्याधमन्या गच्छति एतद्बोधनं यत्र भवति सोऽयं 'ब्लडप्रेसर'-नामको रोगः ।

नाडीपरीक्षाविशेषज्ञाः, नाडीपरीक्षयाऽपि ज्ञातुं शक्ताः सन्ति । किन्तु सम्प्रति एतस्य परीक्षायां भुजे "स्फिगनोमीटर" यन्त्रबन्धन द्वारा रुधिरगतिः प्रत्येतुं शक्यते ।

वयोरूपकारणेन रोगाणाञ्च हेतोर्भिन्नभिन्नौषधिद्वारा भेदभावः सञ्चार्यते ।

तद्यथा—

वयः—	हृदयस्य संकोचावस्थायां	विस्तृतौ
२१ से ३०	१२३॥	८२॥
३१ से ४०	१२५॥	८४
४१ से ५०	१३०	८६
५१ से ६०	१३३॥	८९

स्त्रीषु बालेषु च न्यूनतां क्रमेण भजते 'ब्लडप्रेसरः' ।

कारणञ्चात्र—

पुरुषेष्वधिकविस्तृतिः भोजनपानादिना आहारविहारेष्वनियतपरिवर्तनादिना जायते । यथा विशुद्धस्य समीरणस्यालाभः, शरीराभ्यन्तरेऽपक्वमलस्य निर्गमनादृते वह्निमान्द्यं, महति-तूलासनोपवेशनेनापाचनम्, जीर्णव्याधयः, मधुमेह—नागदोष—सगर्भावस्थाप्रभृतयः ।

मानसिकहेतवः—

मनोवृत्तेश्चाञ्चल्यं हृदये महाऽऽघातः, अविश्रान्तं मानसिककार्यम्, अधिकव्यायामकरणम्, अतिभोजनं, रुधिरवृद्धिश्च इत्यादि ।

लक्षणम्—शिरोऽर्तिः (शिरोमध्यभागे पश्चिमास्थिषु च वेदना), भ्रमश्च शिरसि, चेतस औदासीन्यं, विषयेच्छाविरतिः, किमपि स्वल्पमप्याचरतः श्वासवृद्धिः, रोगिणो निजश्वासवृद्धेः स्वानुभवः, अनिद्रा, घोणातो रक्तस्रावः, हृदि वेदना, करचरणादिषु शून्यत्वं, व्यापाराविमुखत्वम् ।

प्रदर्शितलक्षणानां बालेषु न प्रादुर्भावः। ये बयसा चत्वारिंशद्देशीयास्तेषु परीक्षाकरणेनाधोलिखितानि लिङ्गान्युपलभ्यन्ते।

१ बहुरुधिरसम्भृतानाड़ी (हाईप्रेसरपल्स. High pressur, pulse.)

२ हृदयप्रदेशे बृहद्धमनी, (एवोर्टा. Aorta) वृद्धिङ्गता भवति हृदयादधःप्रदेशे. 'वामनिलय' (एपेक्ष Apex.) ध्वनेर्द्वैगुण्यम्।

अन्ते हृदयस्य विस्तारीभवनम्।

अमुष्य रोगस्यारम्भे कष्टं नानुभूयते, परन्तु पश्चाद् हृदयस्य धमनीनाञ्च पेशीतन्तूनां (Myocardium) विस्तृतिभग्नं, वृद्धिङ्गताः पेशीतन्तवो दौर्बल्यं प्राप्नुवन्तः शैथिल्यं भजन्ते।

संभवत्येतेनावस्थाद्वयम्—आकस्मिको रक्तसंवहनक्रियावरोधः, मस्तिष्कधमनीत्रुटनं वा। तेन मूर्च्छा मृत्युर्वा संभवेत्; चक्षुषी त्रुटिता, अङ्गोदौर्बल्यं फुफ्फुसनासादन्तवेष्टेभ्यो रुधिस्रावः स्वाभाविक एव।

आयुर्वेद एतस्य रोगस्य विषये सन्तोषावहं न किमपि वचः समुपलभ्यते, किन्तु चरके—

"वातादयः प्रकुप्यन्ति शिरस्यस्रञ्च दुष्यति।
ततः शिरसि जायन्ते रोगा विविधलक्षणाः॥"

(च० अ० १७-श्लो० १६)

विविधदोषैः प्रकुपितमसृङ्नानाविधशिरोवेदनां जनयितुं क्षमते, एतच्चरकवचनानुसारादजीर्णमूलकवातपित्तयोर्विकृत्या ब्लडप्रेसरः संजायते। रुधिरसञ्चारो न केवलं शिरसि अपितु समस्तमङ्गं व्यश्नुते वायुर्विकुर्वन् रक्तेषु धावन् पित्तेन सह शिरोधमनीषु सिरासु च प्रवर्तमानः ब्लडप्रेसरं जनयति, इत्यपि केषाञ्चिन्मतम्।

"कूर्चैर्विघट्टितानां रक्तोत्क्लेशोऽपनेतव्यः॥"

(चरक चि० अ० ७)

चत्वारिंशत्पैत्तिकविकारेषु च—शोणितोत्क्लेद इति च।

अत्रच—रक्तोत्क्लेश—शोणितोत्क्लेद—शब्दाभ्यांब्लडप्रेसरशब्दार्थ एव निष्पन्नो भवति। आ० मा०गुरुवर्य वैद्य श्रीहरिप्रपन्नजीमते रक्तोद्गम इतिनामास्ति।

म० म० कविराजश्रीगणनाथसेनमहोदया अपि प्रत्यक्षशारीरस्य तृतीयखण्डे षष्ठाध्याये पृष्ठ ७९ मस्तिष्कपार्श्वभाग-ऊर्ध्वाधश्छेदप्रकरणे इदञ्चात्र विशेषेणावधेयम् 'मस्तिष्कमूलिकधमनीचक्रसंभवानां मस्तिष्कपोषणीनां शाखाधमनीनां मध्ये "मध्यमा मस्तिष्कानुगा" नामधमनी (अन्तर्मातृको था) स्वप्रशाखाभिः राजिलपिंड प्रविष्टा। तस्या वार्द्धक्यादिहेतोर्भंगुरत्वाद् यदा आन्तरकूर्चवाहिकान्तस्तदुपकंठे वा तन्नङ्गकृतो रक्तस्रावः तदा सन्यासः पक्षवधश्च वामदक्षिणपार्श्वविपर्ययेन, वामतो रक्तस्रावे तु वाक्शक्तिलोपश्च, तत् क्षेत्रस्य सान्निध्यात्।

अत्रैव टिप्पण्यां धमनीत्रुटनं शरीरे रक्ताधिक्यादिहेतोः—(Through High Blood Pressure).

एतेनैतेषां महाभागानां मते हाईब्लडप्रेसरार्थं रक्ताधिक्यमिति पदम्।

एकोऽपरोऽपि ब्लडप्रेसरो भवति यस्य नाम "लो ब्लड प्रेसर" इति। यत्र मनुष्याणां हृदयं परिपतति, हृदयस्यास्वास्थ्यं निद्राच्छेदः? इत्यादि भवन्ति, अस्य रोगस्य कृते भेदी न रुचिकरभूताः। मलावरोधेन रोगी प्रसीदति।

अयं हि नवीनो व्याधिः, प्राचीनो वा इति वैद्यसमाज एव विचारयतु नाम, चिकित्सा— आंग्लायुर्वेदे एतस्योपक्रमाय "पोटासआयोडाइड (Patassium Iodide) प्रयोगो निर्दिष्टः। आयुर्वेददृष्ट्या गुग्गुल्लुप्रयोगः कर्तव्यः, गुग्गुलौ आयोडाइडस्य विद्यमानत्वात्। माणिक्यभस्म—शिलाजतु—महामञ्जिष्ठादिकाथ—आरोग्यवर्द्धनीनामपि प्रयोगः सुखावहः। आंग्लायुर्वेदेऽपि सुनिश्चितश्चिकित्सापन्था न विद्यते अतो वैद्यैश्चापि विशेषप्रतिपत्तये प्रयतितव्यम्।

फक्कः (रीकेट-बालशोषः)

एतस्य रोगस्य विषये पाश्चात्त्यैर्निर्दिष्टेन लक्षणादिना तु श्रीमन्तः परिचिता एव, अतोऽस्मिन् विषये आयुर्वेदे किमस्ति तन्निवेद्यते—

फक्कनिरूपणम्.

(काश्यपसंहिता वा वृद्धजीवकतन्त्रम्, फक्कचिकित्साध्यायः पृ. १०१)
(अयं हि आ. मा. श्रीयादवाचार्यमहाभागैः मुद्राप्यते सम्प्रति)

बालः संवत्सरापन्नः पादाभ्यां यो न गच्छति।
स फक्क इति विज्ञेयस्तस्य वक्ष्यामि लक्षणम्। ३।
धात्री श्लैष्मिकदुग्धा तु फक्कदुग्धेति संज्ञिता।
तत्क्षीरपो बहुव्याधिः कार्श्यात् फक्कत्वमाप्नुयात्।
क्षीरजं गर्भजं चैव तृतीयं व्याधिसम्भवम्।
फक्कत्वं त्रिविधं प्रोक्तम्.........
गर्भिणीमातृकः क्षिप्रं स्तन्यस्य विनिवर्तनात्।
क्षीयते म्रियते वाऽपि स फक्को गर्भपीडितः।
निजैरागन्तुभिश्चैव.........रो ज्वरादिभिः।
अनाथः क्लिश्यते बालः क्षीणमांसबलद्युतिः॥ १२॥
संशुष्कस्फिचबाहूरुर्महोदरशिरोमुखः।
पीताक्षो हृषिताङ्गश्च कृश्यमानास्थिपञ्जरः॥ १३॥
प्रम्लानाधरकायश्च नित्यमूत्रपुरीषकृत्॥
निश्चेष्टाधरकायो वा पाणिजानुगमोऽपि वा॥ १४॥
दौर्बल्यान्मन्दचेष्टश्च मन्दत्वात् परिभूतकः।
मक्षिकाकृमिकीटानां गम्यश्चासन्नमृत्युरुक्॥ १५॥
विशीर्णहृष्टरोमा च स्तब्धरोमा महानखः।
दुर्गन्धी मलिनः क्रोधी फक्कः श्वसिति ताम्यति॥ १६॥
अतिविण्मूत्रदूषिकाशिंघाणकमलोद्भवः।
इत्येतैः कारणैर्विद्याद् व्याधिजां फक्कतां शिशोः।

एतेन श्रीमन्तः परिचिता एव (रीकेटनाम्ना) यो बालरोगः स एवायमिति।

उत्फुल्लिका (न्यूमोनिया)

एष च रोगः पञ्चसप्तवर्षवयस्कबालं त्रासयति। विशेषतः सूतिकागृहे चिकित्साया अकारणान्निर्मूलतामनुभवन् शीतोष्णे व्याप्य पौनःपुन्येन सम्भवति। श्वासावरोधेनाकृष्यन्ते नाड्यः। उदरे गर्तः सञ्जायते, प्रसवस्थाने शुद्धवायूनां सञ्चाराभावादरिष्टगृहस्य संकोचाद्वा वस्त्राणां मालिन्याद्वा नालकर्तने यथोचितप्रबन्धाभावाच्च आहारादिदोषैर्वा सञ्जायमान एष रोगः, अन्यैश्च विविधैः कारणैः शीतोष्णे व्याप्नुतः।

उष्णप्रकोपे न भयं भवति शीतत्वे च महद्भयम्। कर्हिचिद् बालानां अतिसारो विशेषतः संलक्ष्यते। मूत्रमपि बहुधा न सरति। नासिका शुष्का सती जलपानं रुणद्धि। उदरं भारायमाणं कठिनं वा, अयं हि आयुर्वेदे उत्फुल्लिका नाम्ना विद्यते—

घनाध्मानं निरोधत्वं श्वासकासादिसम्भवः।
उत्फुल्लकुक्षिर्भवति घनक्षीरस्य सेवनात्।
उत्फुल्लिका सा विज्ञेया बालानामसुहारिणी।
अयंश्लोकः "सिद्धभेषजमणिमालाया टिप्पण्यामस्ति।
योगसुधानिधिः।
सिद्धभेषजमणिमालाद्वारा चिकित्साऽधिगन्तव्या।

वातबलासकज्वरः (बेरी बेरी)

अयं च आर्द्रशुष्कभेदेन द्विविधः।
खाद्यौजःपदार्थानामभावेनैवायमुत्पद्यते रोगः।

आर्द्रे—श्वासः, हृदयदक्षिणभागे विस्तृतिः क्षुण्मान्द्यं, नाड्याः प्रगतिः, तत्समये दृष्टिहीनता, आन्ध्यत्वं, दिने रात्रितोऽपि स्तोकप्रकाशदर्शनम्। शुष्के-शोथः दौर्बल्यं मणिबन्धस्य शून्यत्वम्।

आयुर्वेदोक्त—वातबलासकज्वरेण सहैतस्य साम्यमस्ति।

नित्यं मन्दज्वरो रूक्षः शूनकस्तेन सीदति।
स्तब्धाङ्गः श्लेष्मभूयिष्ठो नरो वातबलासकी॥ इति॥

उपसंहारः।

पाश्चात्यमतानुसारं येषां रोगणामायुर्वेदे वर्णनं नास्ति त एव व्याधयः सम्प्रति नूतना व्यपदिश्यन्ते। किन्तु आयुर्वेदे एकस्मिन्नेव रोगप्रकरणे प्रायस्तत्सहयोगिसमस्तव्याधीनां परिचयो दृश्यते।

१ यथा कासरोगः। नायमेक एव रोगः, अपि तु रोगसमूह (ग्रूप) रूपः। लैरिंजाइटिस, फैरिंजाइटिस, टौन्सिलाइटिस, न्यूमोनिया, ब्रोन्काइटिस, प्लूरसी—प्रभृतयो रोगास्तत्रैव निविशन्ते। येषु कसति शिरःकण्ठादूर्ध्वं गच्छति वायुरिति कासः कसनात् कास इति चरकोक्त्या च कसनप्रधानलक्षणास्ते सर्वे अत्रैव प्रविशन्ति।

२ येषु व्याधिषु त्वचि विकृतिः समुदेति तान् रोगान् कुष्ठत्वेन त्वग्रोगत्वेन वा नाम्ना मन्यन्ते।

३ आयुर्वेदवर्णितैककुष्ठरोग एव रकसामादाय—दद्रु, महाकुष्ठश्वित्राद्यनेकव्याधयः कुष्ठशब्देन वर्णिताः सन्ति।

४ मूत्रे—बहुधा क्षाराणां विशेषरूपेण गमनं सुरामेह (फास्फेचूरिया Phosphaturia) सान्द्रमेह (म्युकस इन यूरिन Mucous in urine) वसामेह (ॲल्ब्युमिन्युरिया Albuminuria) शोणितमेह (हिमेच्युरिआ Hematurea) प्रभृतिनानाव्याधयः पाश्चात्यैर्भिन्नं भिन्नं निर्दिष्टाः किन्तु मूत्राभ्यन्तरे विकृतिः इति सामान्यलक्षणेन प्रमेहरोग एव सर्वेषामन्तर्भावः।

५ एवम्—उदरे प्रादुर्भवतां ग्रन्थि-अर्बुद "सिस्टाईटिस" गर्भाशयरोगाद्यनेकरोगाणां विहाय विद्रधिं गुल्मरोग एव समावेशः कृतः।

६ फुप्फुसयोः—फुप्फुसगत यक्ष्माणमन्तरा अन्यस्थानेष्वपि जनिष्यमाणाः ये 'ट्युबरक्लोसिस (Tuberculosis) क्षयरोगाः गण्डमाला अपची अस्थिक्षय-सन्धिक्षयप्रभृतयः अस्थि-सन्धि-व्रणान्तर्गताः परिदृश्यन्ते।

७ इत्थमेव—आयुर्वेदीयज्वरे विशेषतः सन्निपातज्वरे पाश्चात्यनये प्रथितानां टाईफाईड, टाइफस, स्कारलेट फीवरप्रभृति साङ्घातिकज्वराणामन्तर्भावः।

८ पाश्चात्यस्वीकृतानां बहुविधानां व्याधीनां क्षुद्ररोगाधिकारे समुपलब्धिः।

वस्तुतो भारते समुत्पन्नरोगाणामायुर्वेदे स्थानं दरीदृश्यते। परम्—आयुर्वेदवर्गीकरणपद्धतिः पाश्चात्यवर्गीकरणपद्धतिश्च मिथो भिन्ना; अतश्चायुर्वेदे—अनेकरोगग्रणामप्राप्तिरिति भ्रमः समुपजायते। आयुर्वेदीयसंहिताग्रन्था नष्टा एव। टीकाग्रन्थेषु वर्तमानोपलब्धखण्डित-वृद्धजीवकतंत्रे च निर्दिष्टफक्कादिरोगवर्णनेन वा निश्चितं भवति यदार्यायुर्वेदे सर्व एव व्याधयो न्यूनाधिकभावेन वर्णिताः सन्तीति।

अस्माकमायुर्वेदे—अवर्णितानां केषांचिद् बहिर्भागागतव्याधीनामपि ग्रहणं समुचितम्। आयुर्वेदे—वातिक—पैत्तिक—श्लैष्मिकरोगाः सन्ति, तेषु—हृद्रोगस्य विशेषावस्था "पल्पिटेशन आफ दि हार्ट" Palpitation of the Heart वातविकारे हृद्द्रवनाम्ना गृहीताऽस्ति। श्लैष्मिकेषु—धमनीनां प्रफुल्लनम् एन्युरीजम (Aneurism) नाम्ना पाश्चात्येषु प्रथितो व्याधिविशेषः धमनी प्रतिचयनाम्ना वर्ण्यते।

लोके सर्वोऽपि विषयः—

श्रोतव्यादीनि राजेन्द्र नृणां सन्ति सहस्रशः।
अपश्यतामात्मतत्त्वं गृहेषु गृहमेधिनाम्॥

इति श्रीमद्भागवतोक्त्याऽऽत्मतत्त्वपरिज्ञानेन ज्ञातव्यो नावशिष्यते—
कस्यापि वस्तुनस्तत्त्वपरिज्ञानेनैव तद्रहस्यजिज्ञासाशान्तिर्भवति।
शास्त्रीयतत्त्वपरिज्ञानमपि प्राचीनमहर्षिप्रणीताऽऽकरग्रन्थपर्यालोचनमेव।
किं वच्मि—

यक्ष्मादिरोगाणां सविशदं अथर्ववेदसंहितायां वर्णनमुपलभ्यते येन नवनवाः "ब्रेन ट्यूमर" आंत्रिक क्षय, इण्टस्टाइनल ट्युबरक्लोसिस (Intestinal Tuberculosis) सर्वाङ्ग क्षय, जनरल ट्युबर क्लोसिस (General Tuberculosis) अस्थिक्षय, ट्युबर क्लोसिस आफ बोन (Tuberculosis of Bone) शीर्षावरण क्षय (ट्युबरकलमेनेंजाइटिस) त्वग्जन्यक्षय ट्युबर क्लोसिस आफ स्किन् (Tuberculosis of Skin) आदि विशिष्टनामधृता यक्ष्मविशेषास्तत्र तत्र श्रूयन्ते नाम तासु तासु ऋचासु भवतां पुरस्तत एवोद्धृत्य कियान्—अंशः प्रस्थाप्यते—

अक्षीभ्यां ते नासिकाभ्यां कर्णाभ्यां छुबुकादधि ।
यक्ष्मं शीर्षण्यं मस्तिष्काज्जिह्वाया विवृहामि ते ॥ अथर्ववेदसंहिता
द्वितीयकाण्ड अ० ६ सू० ३३ मंत्रः १

तत्रैव पठिताः—

ग्रीवाभ्यस्त उष्णिहाभ्यः कीकसाभ्यो अनूक्यात् ।
यक्ष्मं दोषण्यमंसाभ्यां बाहुभ्यां विवृहामि ते ॥ मंत्रः २
आंत्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठो रुदरादधि ।
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्यां विवृहामि ते ॥ मंत्रः ४

प्लाशेः—बहुच्छिद्रात् मलपात्रात् । (मलावरोधिनां प्रायो भवत्ययं यक्ष्मा)

हृदयाचे परिक्लोम्नो हलीक्ष्णात् पार्श्वाभ्याम् ।
यक्ष्मं मतस्नाभ्यां प्लीह्नो यक्नस्ते विवृहामसि ॥

हलीक्ष्णात्—क्लोमसमीपस्थात् तत्सम्बन्धात् मांसपिण्डाद् । मतस्नाभ्याम् उभयपार्श्वसम्बन्धाभ्यां वृक्काभ्यां तत्समीपस्थपित्ताधारपात्राभ्याम् ।

षष्ठी—

अस्थिभ्यस्ते मज्जभ्यः स्नावभ्यो धमनोभ्यः ।
यक्ष्मं पाणिभ्यामंगुलिभ्यो नखेभ्यो विवृहामि ते ॥

सप्तमी—

अङ्गे अङ्गे लोम्नि लोम्नि यस्ते पर्वणि । यक्ष्मं त्वचस्यन्ते वयं कश्यपस्य वीवर्हेण विष्वञ्चं विवृहामसि ॥

त्वचस्यमत्र त्वचि भवम् यक्ष्मम् यश्च प्रायो बालानां भवति ।

तेनेदं निश्चेतव्यम्भवति—अस्माकमायुर्वेदविज्ञानराशिः—वेदेष्वप्यस्ति न केवलं चरकसुश्रुतवाग्भटादिवृद्धत्रयीष्वेव । तच्च हेयतया विगणय्य नूतनं नूतनमनुधावति प्राचीनायुर्वेदसंहिताग्रन्थाः पुस्तकालयेषु वर्तन्ते तेषां समीचीनतरया दृष्ट्या निपुणतया समीक्षणं प्राथमिकं कार्यम् । यान् व्याधीन् अभिनवत्वेन कल्पयन्ति तान् व्याधीन् अशेषतःपरिसंख्यातुं न क्षमन्ते साम्प्रतिकेऽनेहसि अर्वाचीना विद्वांसः । तत्सर्वं प्राचीनग्रन्थाऽपरिशीलनफलकम् । अतः प्रार्थये सर्वान् विबुधान् प्राचीनग्रन्थान् प्रथममवलोकयन्तु त्रिदोषतत्त्वज्ञानपरिशीलनपुरस्सरम् । पुनः पुनर्निदिध्यासनेन विचारयन्तु । मन्ये प्रायो रोगाः नूतना न सेत्स्यन्तीति मामकीनो विमर्शः ।

त्रिकालदर्शिनो हि महर्षय आसन् । तेषामार्षं चक्षुरव्याहतज्योतिः, अतएव सर्वमपि वस्तुजातं करामलकवत् पश्यन्तिस्म । तत्र श्रद्धाना भवेयुर्नाम ।

आयुर्वेदमहोदधेः पुराकालिकीं समुन्नतिं वर्तमानकालिकीमवनतिं च विचारयन् कोवा चक्षुष्मान् शोकानुतप्तहृदयो नोष्णं निःश्वसिति ।

वैद्यमतल्लिकाः !

अस्माकमायुर्वेदाचार्याः प्रायः सूत्रमयेषु निदानग्रन्थेषु स्वीयाविष्कारं स्वावबोधार्थमतिसंक्षेपशब्दैः समुल्लिख्य रोगाणां निदानादीनि प्रचारयामासुः । सम्प्रति—त्रैविध्येन शिष्यबुद्धिगम्यं कर्तुं निदानग्रन्थानां प्रतिसंस्करणमावश्यकं मन्ये । तथाहि आयुर्वेदपरिभाषया पद्धत्या

वा वर्णितानां प्रतिसंस्कृतनिदानग्रन्थानामध्ययनाध्यापनेन-आंग्लायुर्वेदचिकित्सकानां पुरो रोग-निर्णयकाले वैद्यानामर्थे संकोचो न भवेन्नाम ।

वैद्यमहाशयाः !

परस्परमैकमत्येन प्रेम्णा व्यवहरन्तो महतीमुन्नतिं प्राप्स्यंति ।

अन्यथा परस्परं कलहायमानाः सुन्दोपसुन्दन्यायं चरितार्थयिष्यन्ति । परिपन्थि-राज्यसहस्रैरपि दुराक्रमाणां विद्वन्मानसानां चटुलीकरणमेव विद्वत्तायाः परमं प्रयोजनम् ।

वैदुष्यं च चिन्तासन्तानवितानझंझावातोद्धूतसंशयघनघनाडम्बरावरुद्धहृदयाकाशस्य नैर्मल्यकरणेऽसाधारणोपयोगि नतु विदुषां चेतसि प्रमोदेतरसम्पादकम् ।

अतः समयस्य ह्रसतां विविच्य परस्परं प्रेम विदधतो जगद्धितकरं पन्थानमाश्रयेयुः ।

तदा जायन्ते गुणा यदा ते सहृदयैर्गृह्यन्ते ।
रविकिरणानुगृहीतानि भवन्ति कमलानि कमलानि ॥

इति कवीश्वरैः प्रतिपादनात् सहृदयहृदयसम्मतमेव मतं ग्राह्यं नान्यत् ।

The 25th All India Ayurveda Conference
Silver Jubilee
Presidential Speech

At Ahmedabad

BY

N. S. Lokur Esq. M. A. LL B.

District and Sessions Judge

॥ श्रीः ॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
रागादिरोगान्सततानुषक्तानशेषकायप्रसृतानशेषान् ।
औत्सुक्यमोहारतिदान् जघान योऽपूर्ववैद्याय नमोऽस्तु तस्मै ॥

Ayurveda Pandits, Ladies and Gentlemen,

I sincerely thank you for conferring upon me the honour and proud privilege of presiding over this auspicious function—the celibration of the Silver Jubilee of the All India Ayurvedic Conference. I am extremely diffident about my capacity to deserve the honour, and I wish that it had been conferred upon a worthier person. Had I thought it necessary for the occupant of this chair this afternoon to possess at least an elementary knowledge of Ayurveda I would have unhesitatingly declined the honour with thanks. But the function before us is not for the purpose of discussing any topics concerning the Ayurveda, but to express our gratitude to the Almighty for bringing us this felicitous occasion, and to offer our felicitations to those yeomen workers in the field of Ayurveda who have contributed to the progress of the conference from year to year and are now able to look back upon its achievement with well-deserved pride. This task may be done by any layman, provided he has faith in and respect for the Ayurvedic System of medicine; and I can honestly and conscientiously say that I yield to no one in such faith and respect. If you find my speech this evening insipid or disappointing, it is not due to my lacking in these qualities, but to my inability to produce anything better at such a short notice.

I deem it a lucky sign that this Silver Jubilee happens to come off in the year of so many other Jubilees. The first and the foremost jubilee of the year was their Majesties' Silver Jubilee in celebrating which we all took so much interest and delight. The Congress is celebrating its Golden Jubilee throughout India. The Diamond Jubilee Inter-national Convention of the Theosophical Society is being held at Adyar in Madras. The jubilees of several rulers, colleges and eminent presonages like Lady Vidyagouri Nilkanth of Ahmedabad are being celebrated this year. Such Jubilees are publicly celebrated of only such individuals and institutions as have materially contributed to the welfare of the public. It is therefore natural that the object of such celebrations should be not only to express our gratitude and felicitations, but to take stock of the public good done by the particular individual or institution, and to chalk out a plan for doing further good work so as to deserve a more joyous celebration of the next Jubilee.

As a result of laborious researches by many Western Savants, it is now established beyond doubt that Ayurveda is the most ancient System of medicine. In his History of Medicine, Dr. Max Neuburgher has shown how Charaka and Sushruta were translated into the Arabic, and how Ayarveda then travelled from Arabia to Egypt and Greece, and thence to other European Countries. But although we ought to be proud of being the pioneers in the system of medicine, it will not do to remain harping upon the past glory of Ayurveda. Ancient as they are, the principles of Ayurveda gradually came to be transformed and developed, and gave birth to various systems of medicine, differently named by different people in different countries, and these gradually threw the Parent System into the back ground in the course of several centuries. The reason is not far to seek. It is certainly not any intrinsic demerit in the system itself. Even the staunchest advocates of allopathy do not dispute the intrinsic merits of the Ayurvedic System. After going through the English translation of Charaka, Dr. Clarke of Philadelphia observed, "If the Physicians of the present day would drop from the Pharmacopœa all the modern drugs and chemicals and treat their patients according to the methods of Charaka, there will be less work for the undertakers and fewer invalids in the world." No higher praise can be bestowed upon any system of medicine. Yet, a science, though perfect for the time being, is bound to lag behind, if it stagnates. For centuries the Ayurvedic System remained in stagnation, as unfortunately it had not the same opportunities of development and progress which are afforded to all scientific studies in the West. It is now futile to discuss the

causes which led to such a state of things. What is needed is the finding out of the means and ways to face the situation and revive the past glory of Ayurveda.

Prompted with this idea, and encouraged by that beneficent ruler, who has contributed so much to the revival of the Indian Art, science and culture, I mean His Highness the Maharaja Sayajirao Gaekwar of Baroda, the late Pandit Shankar Daji Shastri Pade, convened the first All India Ayurvedic Conference in Nasik in 1907, which was presided over by Shri Kunwar Sarju Prasad Sinha Bahadur of Allahabad. Since then the conference has held its annual sittings regularly, except in a few exceptional years and has been gaining additional strength at every sittings. Its most marked achievement is the creation of interest in the Ayurveda, and of the thirst for research and advancement. It has come to realise that the Ayurvedic System cannot easily stand on its legs unless it becomes progressive and advantage is taken of modern scientific discoveries, such as the X-ray apparatus, Oxygen inhalation, injections and the therapeutic use of electricity. Of course these should be looked upon only as a suppliment to the indigenous system. There was a time when the knowledge of pulse was a pride of Ayurvêda in the diagnosis of diseases. But the acquisition of that art requires so much patience and perseverence that in these days of bustle and hurry the number of experts in that art is gradually waning, and it has now become difficult even to believe that such an art can be cultivated to perfection. It is essential that the art ought to be revived and relied upon in the diagnosis of diseases, though it may be supplemented by the more modern methods like the use of stethoscopes.

The conference has every year brought together eminent Ayurvedic pandits and enabled them to compare notes and exchange thoughts. It has brought into the lime-light the glory of Ayurveda and the efficacy of indigenous drugs and indigenous methods of treatment. It is in no small measure due to its discussions and resolutions that several Ayurvedic schools and colleges have been started. There was a time when the study of Ayurveda remained hereditarily in the families of vaidyas, but with the starting of such Public Schools and Colleges, any student who has a liking may go in for the study of Ayurveda in the same way as he can join a medical school or college for the study of allopathy. The exhibitions which are being held along with the conferences have proved very useful in stimulating study and investigation of medical plants and drugs.

All this is no mean achievement and any institution may look upon it with just pride on the occasion of its Silver Jubilee. Yet this

is nothing as compared to what still remains to be achieved. Surgery has been mostly neglected by the students of Ayurveda. The study of anatomy and surgery must go hand in hand with the study of medicine. Though we can justly boast that surgery was not unknown to Ayurveda, it can not be denied that it remained where it was, and owing to the want of facilities for the study of human anatomy, surgical knowledge and practice did not go much beyond the rudimentary stage. The practitioners of Ayurveda must pay more attention to these subjects if they want to be efficient and to create confidence in the public. Religious scruples or sentiments must not be allowed to come in the way of dissecting the bodies of the available dead human beings for the purpose of studying the human anatomy. It is true that many diseases which apparently require a surgical opperation can be successfuly cured by the Ayurvedic treatment. But even for that purpose a thorough knowledge of anatomy will tend to greater efficiency and further research. The easiest way in which the study of Surgery and Ayurvedic medicine can be combined is the establishment of Post Graduate courses in Ayurveda in the existing medical colleges and schools as in Madras until it is found possible to establish separate Ayurvedic colleges in every Province and Ayurvedic schools in every town. The past conferences have tried to tackle this problem and the future conferences will surely continue their efforts with unabated energy. The Benares Hindu University has done a distinct service in this behalf.

The next immediate need of the hour is the publication of standard books and text books on Ayurveda so as to be made easily available to all. Some attempts hava already been made in this direction and a good deal yet remains to be done. Here I take the opportunity of congratulating the Ayurveda Maha Mandal in publishing in commemoration of this auspicious occasion the Rajat Jayanti Volume which is so beautifully compiled by that well-known exponent of Ayurveda, Rasayanacharya Kaviraj Pratapsinha Bhishagmani, who is connected practically with all the important Ayurvedic institutions of the country and is the Superintendent of the Ayurvedic Pharmacy of the Benares Hindu University. It is a volume which is worthy of the occasion. Every effort should now be made to spread the Ayurvedic literature so as to make it reach the homes of indigent villagers. The Ayurvedic System of treatment is so simple and the ordinary drugs and herbs are so cheap that even with an elementarv knowledge of their use several petty ailments can be prevented and cured. Until recently the allopaths and the homeopaths had not made inroads into villages, and the villagers had to depend on their own knowledge of the use of

indigenous drugs and on the local hereditary vaidyas for the cure of diseases. But now-a-days the universities are turning out so many Bachelors of allopathic medicine and surgery that several of them have to betake themselves to villages and are gradually supplanting the indigenous methods of treatment. If this state of things continues for a generation more, the next generation of villagers is likely to be found ignorant of even the most elementary use of our simple indigenous drugs and plants like Jinjer and Tulasi, and may have to run to the allopathic degree-holders every now and then. To avoid this, the Maha Mandal should regard it as one of its foremost duties to keep and spread the knowledge of such drugs and plants in every corner of the country, in addition to the more onerous task of establishment of schools, colleges, and post graduate courses.

There is much to be done towards the correct diagnosis of diseases, and the identification of plants and drugs. Several new diseases have been imported from over-seas countries, and though the Ayurvedic system provides for every conceivable kind of disease, such imported diseases do demand a further research. Similarly the identification of many valuable drugs and herbs mentioned in Charak and Sushruta has been unfortunately forgotten and the Maha Mandal has been trying to solve this difficulty, a good deal is still required to be done in this direction with the help of expert botanists and chemists. The collection of the right samples of herbs and drugs, such as is now being exhibited in the Exhibition here is a step in the right direction. It is also worth while to consider whether some, of the allopathic drugs should not be availed of by the Ayurvedic Vaidyas. That is a problem for the experts to decide.

The past twenty-five conferences have certainly achieved a good deal and it is our duty to congratulate with all our heart every one of those, whether unfortunately dead, or fortunately still living amongst us, who contributed to the bringing of the conference to its present position. If the future conferences continue to bring together the Ayurvedic Pandits every year and to hold such exhibitions as Ahmedabad is proud to hold this year and succeeded in achieving the objects which the past conferences have been aiming at, the recovery of the ancient glory of Ayurveda and its universal recognition as the premier system of treatment of diseases will ere long be an accomplished fact and I hope that the Golden Jubilee will be celebrated with even greater pride and joy and in the satisfaction that the end has been achieved. May Dhanwantari, the great incarnation of Vishnu, enable the Maha Mandal to achieve this object for the sake of the suffering humanity and may the world reap the full benefits of Ayurveda.

I am sorry if I have disappointed you by my inability to say more on a subject, which is not in my line, but as I said, I whole-heartedly join you in rejoicing at the occasion and in praying for an even higher and more useful future for the All India Ayurveda Maha Mandal and the conferences to be held by it.

I thank you once again for the honour done to me and for the indulgence shown to me, and beg to resume my seat.

स्वर्गीय कविराज श्री० विश्वनाथ सेन विद्याकल्पद्रुम का
संक्षिप्त परिचय।

कविराज विश्वनाथ सेन विद्याकल्पद्रुम जी का जन्म वर्धमान जिला के श्रीखण्ड ग्राम में हुआ था। आप के पिता का नाम कविराज कुञ्जविहारी सेन था, उन्होंने कलकत्ता मेडिकल कालेज से जी० एम्० सी० बी० की उपाधि प्राप्त कर गवर्नमेण्ट डाक्टर हुए। भोटान के युद्ध-समय गवर्नमेण्ट ने आपको युद्ध का डाक्टर बना कर भेजा था। विश्वस्त भाव से काम करने के कारण पुनः राज सम्मानित हुए।

कविराज विश्वनाथ सेन जी दो भाई थे। दोनों ही दर्शन तथा आयुर्वेद के असाधारण पण्डित थे। बड़े भाई केदारनाथ सेन जी इस असार संसार को तुच्छ मान कर युवावस्था के प्रारम्भ में ही सन्यास ग्रहण किये। कविराज विश्वनाथ सेन जी ने, पिता जी के ज्येष्ठ भ्राता पूज्य कविराज योगेश्वर सेन जी से आयुर्वेद का अध्ययन किया, जो आबाल ब्रह्मचारी थे।

चिकित्सा तथा अध्ययन आरम्भ करने के कुछ रोज बाद काशी पण्डित मण्डली ने आपके प्रगाढ़ पाण्डित्य से मुग्ध हो कर "विद्याकल्पद्रुम" की उपाधि से भूषित किया। और माननीय काशीनरेश आपकी विद्वत्ता तथा चिकित्सा से आश्चर्यान्वित हो कर अपने स्टेट का प्रधान चिकित्सक बनाया। आपने अपनी २५ वर्ष की अवस्था में ईश्वर जगबन्धु जी की प्रथम कन्या श्रीमती सौदामिनी का पाणिग्रहण किया। श्रीमती सौदामिनी देवी को दो कन्या और एक पुत्र हुआ। पुत्र का नाम गणनाथ सेन रक्खा गया, जो आज पण्डित तथा चिकित्सक जगत् के शिरोमणि हैं। गणनाथ सेन जी के पाँचवें वर्ष के प्रारम्भ में ही सौदामिनी देवी का स्वर्गवास हुआ।

युवावस्था में पत्नी वियोग होने पर भी कविराज विश्वनाथ सेन जी ने पुनर्दार परिग्रह नहीं किया। अल्प वयस में मातृवियोग से कातर गणनाथ सेन जी को धैर्य प्रदान करते हुए लालन-पालन किया—तथा पाँच वर्ष के आरम्भ से ही संस्कृत के छोटे-छोटे शब्दों को सिखाया। व्याकरण, साहित्य तथा साधारण दर्शन की शिक्षा प्राप्त करने के बाद चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट आदि आयुर्वेद के ग्रन्थों को पढ़ाया।

सौदामिनी देवी के परलोक-गमन के बाद काशीनरेश के स्टेट का प्रधान चिकित्सक पद त्याग कर आप कलकत्ता चले आये, और मैमनसिंह के महाराज ईश्वरसूर्यकान्त जी आचार्य चौधरी ने यथेष्ट मासिक पारितोषिक प्रदान कर अपना चिकित्सक नियुक्त किया। कलकत्ता में भी इनकी चिकित्सा तथा दान की बड़ी ख्याति हुई। कलकत्ता के सर्व प्रधान चिकित्सकों में नाम होने के कारण बाहर के राजा-महाराजा बुलाते भी थे; किन्तु वे पुत्र गणनाथ सेन जी के पढ़ाने में सदा तत्पर रहते हुए कलकत्ता से बाहर जाना अस्वीकार किया करते थे।

मृत्यु के एक वर्ष पहिले रानी अयोध्या की चिकित्सा से बहुत रुपया लाभ किया, जिससे कलकत्ता शोभा बाजार में एक विशाल मकान खरीद लिया। कुछ रोज के बाद मालूम



स्वर्गीय कविराज श्रीमान् विश्वनाथ सेन जी विद्याकल्पद्रुम, कलकत्ता ।

आप महामहोपाध्याय, कविराज श्री गणनाथ सेन जी सरस्वती,

एम० ए०, एल० एम० एस० महोदय के स्वर्गीय पिता हैं ।

हुआ कि यह मकान देवोत्तर है, जिससे यह नहीं बिक सकता। हाइकोर्ट में केस हुआ, बहुत रुपये बरबाद हुए, आखिर गणनाथ सेन जी ने उस केस को चलाना छोड़ दिया।

कविराज विश्वनाथ सेन जी की मृत्यु बंगला सन् १६०६ में अग्रहण महीने की ८ तारीख को हुई। आप सदा ही दान किया करते थे, जिससे मृत्यु समय पुत्र गणनाथ सेन जी के लिये कुछ भी रुपये नहीं रख गये। द्रव्यदान-विद्यादान आपके जीवन का प्रधान कर्तव्य था। बंगाली तथा विभिन्न प्रान्तीय सहस्रशः आपके विद्यार्थी हुए। "सरल समुच्चय" नामक ग्रन्थ की आपने जैसी टीका लिखा है, उसके समान दूसरी कोई टीका नहीं देखी जाती।

भिषगाचार्य, कविराज श्री सुशीलकुमार सेन कविरत्न,

एम० एस-सी०, वैद्य शिरोमणि का

संक्षिप्त परिचय।

भिषगाचार्य, वैद्यशिरोमणि कविराज श्री सुशीलकुमार सेनजी कविरत्न, एम्० एस्-सी० महोदय का जन्म सन् १९०२ ई० अक्टूबर महीने की १७ तारीख को कलकत्ता में हुआ। आप विश्व-विख्यात धर्मप्राण महामहोपाध्याय कविराज श्रीगणनाथ सेनजी एम्० ए०, एल्० एम्० एस्०, प्राणाचार्य विद्यासागर सरस्वती के सुयोग्य पुत्र हैं। आपकी माता का नाम सुनीति देवी था। सत्य—जहाँ "सुनीति" वहीं सुशील का आविर्भाव सर्वथा सम्भव है। महामहोपाध्याय जी के निकट आयुर्वेदाध्ययन के लिये कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक के समागत विभिन्न प्रान्तीय विद्यार्थियों को श्रीमती जी अपने इकलौते पुत्र के समान देखती थीं।

कविराज श्री सुशीलकुमार सेन जी प्रवेशिका परीक्षा पास करने के बाद १९२० ई० से १९२५ तक अपने पूज्य पिता जी से चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि आयुर्वेदीय ग्रन्थों का अध्ययन किया और १९२५ ई० के दिसम्बर महीने से चिकित्सा कार्य आरम्भ किया। १९२७ ई० में पाश्चात्य शैली के अनुसार शारीर विज्ञान और इन्द्रिय विज्ञान (Physiology with Anatomy) की सम्पूर्ण शिक्षा लेकर कलकत्ता विश्वविद्यालय (Calcutta University) से साइन्स की सर्वोच्च उपाधि (1st class M. Sc.) प्राप्त की। चिकित्सा कार्य में कई वर्षों तक अपने विज्ञ और यशस्वी पिता जी के सहकारी रहने के कारण आपको सफल चिकित्सा की रहस्य बातों को सीखने का उत्तम अवसर मिला।

सेन्ट्रल प्राविन्स राजनाद गाँव के स्वाधीन नरेश श्रीमान महन्त सर्वेश्वरदास जी अपनी माता जी का इलाज कराने के लिये आपको तन्त्री द्वारा बुलाकर करीब ५००) पाँच सौ रुपये दैनिक पारितोषिक देकर सफल चिकित्सा का पत्र प्रदान किया। इस रूप से बहुत से राजा-महाराजा तथा अन्यान्य गवर्नमेंट लब्ध प्रतिष्ठ श्रेष्ठ पुरुष आपकी चिकित्सा से आश्चर्यान्वित हुए हैं।

आप बचपन से ही अध्यापन के असीम प्रेमी हैं। सुना जाता है कि आप अपने बाल्यकाल में दस-पाँच छोटे-छोटे बच्चों को अपने पास बुलाकर यथापठित विषयों को पढ़ाना आरम्भ करते थे और महामहोपाध्याय जी से कहा करते थे कि पिता जी ! मैं घर में स्कूल बनाऊँगा। महामहोपाध्याय जी बच्चे का शुभ भाषण सुनकर हँसते हुए गद्गद भाषा से कहते थे—पुत्र ! अभी पढ़ो कभी भगवान् की इच्छा होगी तो स्कूल करना।

आपकी उदारता तथा अपने पूज्य पिता जी के चरण की प्रोत्साहनता के फल स्वरूप कलकत्ता "विश्वनाथ आयुर्वेद महाविद्यालय" है। जिस समय महामहोपाध्याय जी ने स्वर्गीय पिता विश्वनाथ विद्याकल्पद्रुम जी के स्मरणार्थ १२५०००) सवा लाख रुपये मूल्य का विशाल



श्रीमान् कविराज श्रीसुशीलकुमार सेन, कविरत्न,

भिषगाचार्य, एम० एस-सी०, वैद्यशिरोमणि, कलकत्ता।

आप महामहोपाध्याय कविराज श्री गणनाथ सेन जी सरस्वती, एम० ए०, एल० एम० एस० महोदय के सुयोग्य और विद्वान् सुपुत्र हैं।

चार महल का मकान तथा ५००००) पचास हजार रुपये का हास्पिटल तथा विद्यालय का सब सामान (उपकरण) आयुर्वेद शिक्षा तथा रोगिशाला के निमित्त दान करने की इच्छा की उस समय आपको बुला कर पूछा—इस दान रूप महानुष्ठान में तुम्हारी क्या इच्छा है । आपने अञ्जलिबद्ध होकर उत्तर दिया—पिता जी ! अभी तो आप एक ही मकान तथा भेषजोद्यान दान करते हैं, यदि सारी संपत्ति इस कार्य के लिये दे दें और मेरा नाम सेवक-श्रेणी में लिख दें तो मैं अपने जीवन को सफल मानूँगा । मैं तो बचपन से कहता आया हूँ कि अपने घर में स्कूल बनाऊँगा । आज विश्वमय परमेश्वर की दया से मेरी बचपन की बात सत्य हुई । महा-महोपाध्याय जी पुत्र की हार्दिक उदारता तथा धार्मिक कार्य में प्रोत्साहन सुनकर गद्गद भाषा से आशीर्वाद दिये—पुत्र ! जैसे तूने मेरे मनोरथ को पूर्ण करने के लिये अपना सर्व समर्पण स्वीकार किया है, बंग जननी ऐसी सन्तानों को सदा उत्पन्न करती रहे, जिससे शिक्षा तथा उदारता का प्रधान धाम होकर बंग चिरस्मरणीय हो ।

आज भी पूज्य पिता जी के स्थापित "कल्पतरु आयुर्वेद भवन" के विराट कार्य को वहन करते हुए ही आप उक्त महाविद्यालय में महामहोपाध्याय जी के रचित प्राच्य-पाश्चात्य और शारीर गवेषण मूलक "प्रत्यक्ष शारीर" नामक ग्रन्थ तथा कायचिकित्सा को बड़े उत्साह के साथ पढ़ा रहे हैं और महाविद्यालय तथा हास्पिटल के सहकारी अध्यक्ष भी हैं ।

आप निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद महामण्डल के वङ्गीय मन्त्री तथा परीक्षक हैं । गत वङ्गीय आयुर्वेदिक सम्मेलन के प्रधान सम्पादक थे । बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी आयुर्वेद विभाग के परीक्षक तथा फेकेल्टी के मेम्बर हैं । कलकत्ता के विभिन्न प्रसिद्ध प्रतिष्ठानों के सभापति हैं । आपने वङ्गभाषा में "महौषध मञ्जूषा", "द्रव्य गुण संहिता" और "विकृत शारीर विज्ञान" नामक तीन अनुपम आयुर्वेदिक ग्रन्थ लिखा है । जिन ग्रन्थों का संस्कृत तथा हिन्दी अनुवाद हो रहा है । वङ्गीय साहित्य में भी आपकी बड़ी ख्याति है । "महुआ देवी" सर्ग द्वितीय ग्रन्थ के आप प्रणेता हैं ।

कविराज श्रीसुशीलकुमार सेन जी ने मुर्शिदाबाद जिला के सुप्रसिद्ध जमीन्दार 'बरहम-पुर' ग्रामाधीश गवर्नमेण्ट लब्ध प्रतिष्ठ रायबहादुर रमणीमोहन सेन महोदय की सुपुत्री श्रीमती तरुलता देवी का पणिग्रहण किया । श्रीमती जी का पातिव्रत तथा आश्रमस्थ विद्यार्थियों के ऊपर हार्दिक दयाभाव सर्वथा सराहनीय है । श्रीमती जी के पातिव्रत के फलरूप तीन पुत्र और एक पुत्री हुई । इन सन्तानों की मेधा तथा अध्ययन में प्रेमभाव वाञ्छनीय है । इत्यलम् ।

पं० बृजबिहारी चौबे को वैद्यरत्न की सनद प्रदान करते समय बिहार के गवर्नर महोदय ने निम्नलिखित भाषण प्रदान किया ।

Vaidyaratan Pandit Brijbihari Chaube,

As founder of Ayurvedic schools at Hajipore and Patna you have been largely responsible for the revival of Ayurvedic learning in this province. Your students are scattered in all parts of Behar and your son is the Principal of the Government Ayurvedic college, Patna to the upkeep of which you yourself contribute. I congratulate you on the title of Vaidyaratan which you have received in recognition of your valuable services to the Community.

True copy.

Bihar Secretariate.

D. O. No. 5024 P

Patna,
The 30th November 1936.

Dear Sir,

I am desired to enclose for your information a copy of the speech delivered by his Excellency the Governor of Bihar on the occasion of your investiture at the Darbar held by His Excellency the Governor at Patna, on the 25th November 1936.

Yours Sincerely,
Sd/- D. H. Crofton

To
Vaidyaratan Pandit Brijbihari Chaube,

Vaidyaratna Pandit M. Duraiswami Aiyangar,

Ayurveda Bhushan, Ayurvedacharya of Madras.

His Life Sketch

Born in Decembpr 1888 in the village of Brahmadesam, North Arcot district, Madras Presidency. His father was Vidwan Vijayaraghava chariar, native of Malpakkam Village (Chingleput Dt.) under whom the Pandit studied Sanskrit literature. He studied Vyakaranam under Vyakaranam Rangacharya of Mannargudi in his 14th year. He lost his mother in his 5th year and the father in his 14th year and was left penniless. The helpless young Pandit had to earn his livelihood and came to Madras in his 16th year. Fortunately he was able to secure the sympathy and favour of the late Prof. M. Rangacharya, Diwan Bahadur P. Anandacharlu and others, who appreciated his learning and scholarship and the former (who was the Curator of the Govt. Oriental Mss. Library) gave him an oppointment of Pandit's post in his Library. In his young age he has originally translated the famous work Kadambari of Bhutta Bana, Megha Sandesha of Kalidasa and some other Sanskrit worksinto Tamil and some well known Publishers of Madras had undertaken the Publication of these works. In that young age he was able to teach Buddhism and some other Philosophical Science to Prof. Lakshminarasu and through these activities the Pandit became very popular among the highly learned people in his very young age. The Vaidyaratana Pandit D. Gopalacharlu happened to meet this young Pandit in the house of Prof. Lakshminarasu when he was teaching him Buddhism and asked him with great enthusiasm to join the Madras Ayurvedic College of which he was the Principal. Prof. M. Rangacharyar and others advised the young Pandit to do so and joined the college in the year 1902 as a student. In the year he joined the college, special classes for Anatomy, Physiology, Midwifery, Hygiene and some other allied subjects were opened there and he underwent four years' courses of study in Ayurveda and all the allopathic subjects above mentioned getting scholarship from the college from the date he joined it. In the fifth year he got a scholarship of Rs. 25 a month specially to be as an apprentice under Pandit Gopalacharlu in the S. K. P. D. Hospital attached to the college. Then after having completed all his courses of study in the college he went to Calcutta in the 1907 and got some more practical training for some time under the late Mahamahopadhyaya Kaviraj Dwarkanath Sen, the famous Physician of Bengal. His activities in the medical line began to grow more and more.

Pandit M. Duraiswami Aiyangar then went to Trichinopoly and practised there as an independent Physician for over two years. Pandit D. Gopalacharlu asked him to come and settle at Madras and render his services to the Madras Ayurvedic College and to S. K. P. D. Dispensary and in obedience to his Guru's wishes and instructions he came back to Madras. He was working as a Professor in the College in which he studied and as an Asst. Physician in the Dispensary under Pandit Gopalacharlu for some years. After Pandit Gopalacharlu's retirement from the services of the S. K. P. D. charities, Pandit Duraiswami Aiyanger was appointed as the Senior Physician in charge and he worked in the Dispensary for over 12 years. He was elected as General Secretary of the All India Ayurveda Mahamandal when its Conference met at Rajahmundry and was occupying that office for four years or so. He was really responsible for the very useful Conference held at Colombo (Ceylon) on account of which there are now two Ayurvedic Colleges running in that island and also from another Conference held at Hardwar. He began to translate a a number of Standard Sanskrit Ayurvedic works into Tamil (before which the Tamil world does not know a single Ayurvedic work) such as Ashtanga hridya, Madhaw Nidana, Rasaratna Samuchaya, Sarangadhara Samhita and published them beautifully spending his pocket money without anybody's help. His hundreds of very useful medical essays and articles, which are contribeuted to a number of leading South Indian papers and periodicals are appreciated by all the people in Southern India. He started and edited the only popular Tamil Medical Journel Vaidya Kalanidhi for 9 years. He has written many Sanskrit literary works like Kiratarjuniya Gadya Sangraha etc. and has translated many Sahitya Granths (Such as Sakuntala, Kiratarjuniya, Raghuvansha, Hamsa Sandesaletc.) in Tamil. He was the President of the Dravida Vaidya Provincial Conference held in Trichinopoly and of the Vaidya Vidvat Sammelan held at Tenali. He is the Chairman, Board of Examiners of The Jaffna Ayurvedic Medical College, member of the Selection Board and Board of Examiners, Govt. Indian Medical School, Madras and an Examiner, Ayurveda Siromani Examinations of the Madras University. The Government were pleased to confer upon him the Title of "Vaidyaratna" in the year 1935. His scholarship in Sanskrit, his learning in Tamil, his theoretical and practical knowledge in medicine are well recognised by the public of Madras presidency and many parts of the country including Ceylon and other places. Still he is energetically working for the cause of Ayurveda.



श्री धन्वन्तरि धर्मामृत औषधालय काशीके संस्थापक —

स्व. वा. पं. बाबुनन्दनजी भट्ट राजवैद्य, बनारस।

जन्म वि. सं. १९३१ निधनः वि. सं. १९६६



श्री धन्वन्तरि धर्मामृत औषधालय काशीके संस्थापक —

स्व. वा. पं. बाबुनन्दनजी भट्ट राजवैद्य, बनारस।

जन्म वि. सं. १९३१ निधनः वि. सं. १९६६

काशी के सुविख्यात चिकित्सक

स्वर्गीय वैद्यवर श्रीमान् पण्डित बाबूनन्दन जी भट्ट का

संक्षिप्त परिचय।

काशी के सुप्रसिद्ध वैद्य स्वर्गीय पण्डित कन्हैयालाल जी दीक्षित अपने काल के बहुत ही सुयोग्य, यशस्वी और लब्धकीर्ति चिकित्सक थे। मान-मर्यादा, कुल, धन और ख्याति होते हुए भी एक मात्र तनया के अतिरिक्त और कोई पुत्र सन्तति न थी। किन्तु आप उससे दुःखी न थे; बल्कि बड़े उत्साह के साथ अपने औषधालय में बैठकर दीन-हीन, दुःखी और असहाय रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा किया करते थे। परमात्मा ने आपकी सुनी और एकमात्र तनया से हमारे चरितनायक का सर्व-प्रथम जन्म हुआ। डूबते को सहारा मिल गया। आपने बालकाल से ही हमारे चरितनायक का बड़े ध्यान से पालन-पोषण किया और सम्पूर्ण शिक्षा-दीक्षा भी अपनी ही देख-रेख में होने दी। प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कराकर व्याकरण आदि की शिक्षा दिलाई। उसके बाद स्वयं आयुर्वेद शास्त्र की शिक्षा दी और अपने साथ चिकित्सा-क्रम का भी अभ्यास कराया। चिकित्सा शास्त्र में पूर्ण योग्यता प्राप्त कर लेने पर श्रीमान् दीक्षित जी महाराज ने आपको चिकित्सा करने की स्वतन्त्रता दे दी और श्रीमान् पं० बाबूनन्दनजी ने अपने पूज्य नानाजी के ही कर कमलों-द्वारा श्री धन्वन्तरि धर्मामृत औषधालय का उद्घाटन कराया और बड़ी योग्यता के साथ अनेक वर्षों तक अपने मातामह के नाम को चलाया और असंख्य रोगी समुदाय को जीवन-दान दिया अपने उत्तराधिकारी को सम्पूर्ण कार्य समर्पित कर श्रीमान् दीक्षित जी महाराज भगवान् धन्वन्तरि में लीन हो गए।

स्वर्गीय दीक्षित जी महाराज के देहावसान के बाद कुछ ही वर्षों में हमारे चरितनायक ने भी एक पुत्र और तीन कन्याएँ छोड़कर असमय में ही स्वर्ग सिधारे। भगवान् के अनुग्रह और धन्वन्तरि की कृपा से जिस शिशु को छोड़कर भट्ट जी ने स्वर्गवास किया था, उनमें परमात्मा का एक अंश छिपा था। श्रीमान् भट्ट जी के

स्वर्गवास के उपरान्त उनके लघु भ्राता वैद्यवर स्वर्गीय श्रीमान् पं० रघुनन्दन जी भट्ट ने बड़े हार्दिक प्रेम के साथ अपने भतीजे बालक रामशंकर का लालन-पालन किया और उनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध किया। व्याकरण-साहित्यादि की समुचित शिक्षा देकर आयुर्वेद की शिक्षा के लिये अपने गुरु काशी के सुप्रसिद्ध वैद्यरत्न श्रीमान् पण्डित त्र्यम्बक शास्त्री के श्री चरणों समर्पित कर दिया। पं० रामशंकर जी बालकाल से ही बड़ो तीव्र बुद्धि के थे। अतः थोड़े समय में ही आपको आयुर्वेद का भी अच्छा ज्ञान हो गया। इसी बीच आपका विवाह भारत-प्रसिद्ध नेता पूज्य महामना मालवीय जी महाराज की सौभाग्वती कन्या के साथ हुआ। उस समय पूज्य मालवीयजी के आग्रह से आप काशी हिन्दूविश्वविद्यालय के आयुर्वेदिक कालेज में प्रविष्ट हुए, और वहाँ से आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त की। आज कई वर्षों से आप हिज हाईनेस महाराजाधिराज बनारस के राजवैद्य हैं। और निखिल भारतायुर्वेद महामण्डल कार्यालय काशी आने के समय आप अहमदाबाद में महामण्डल के कोषाध्यक्ष सर्व सम्मति से चुने गए। आप कई वर्षों से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की आयुर्वेदिक फेकेल्टी के मेम्बर तथा परीक्षक भी हैं। आजकल आप ही श्रीधन्वन्तरि धर्मामृत औषधालय में अपने स्वर्गीय पिता और पितृव्य की कीर्ति को अक्षुण्ण रखते हुए औषधालय का संचालन कर रहे हैं। योग्यों के योग्य उत्तराधिकारी कम देखे जाते हैं। किन्तु आप इसके अपवाद हैं। आपके पिताजी के समय से ही श्री धन्वन्तरि जन्मोत्सव मनाया जाता है, जो कि अब तक बराबर होता जा रहा है। उस दिन आपके यहाँ औषधियों और बहूमूल्य खरल आदि का प्रदर्शन भी होता है।

हनूमानप्रसाद शर्म्मा (वैद्यशास्त्री)

प्रान्तीय सरकारों का विवरण।

इस प्रसङ्ग में प्रान्तीय गवर्नमेन्ट, देशी राज्य, म्युनिस्पल बोर्ड और डिस्ट्रिक्ट बोर्डों के पत्रों की प्रतिलिपि इस आशा से दी जा रही है, कि जिन-जिन प्रान्तों में गवर्नमेंट म्युनिस्पल बोर्ड, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड आयुर्वेद संस्थाओं की सहायता करते हैं, वहाँ के स्थानीय वैद्य विशेष उत्साह के साथ भगीरथ प्रयत्न करके विशेष सहायता प्राप्त करके विशेष सहायता प्राप्त करने की चेष्टा करें, एवं जहाँ ऐसी व्यवस्थायें नहीं है वहाँ के वैद्य अन्य प्रान्तों के उदाहरणों को सामने रखकर आन्दोलन करें और सहायता प्राप्त करके अपनी आयुर्वेदीय संस्थाओं की उन्नति करने का भरसक प्रयत्न करें।

आजकल अनेक प्रान्तों में गवर्नमेंट स्कूल कालेज और बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन स्थापित हैं, अतः वैद्य महानुभावों की जानकारी के लिये ऐसे विद्यालयों तथा बोर्डों की नियमावलियाँ तथा पाठ्य-प्रणालियाँ प्रकाशित की जा रही हैं। जिन-जिन प्रान्तों में ऐसी संस्थाएँ नहीं हैं वहाँ के वैद्य व्यवसायियों का कर्तव्य है कि वे वहाँ ऐसी संस्थाएँ स्थापित करने का प्रयत्न करें।

Copy of letter No. 129/ V-578 dated February 9, 1935 from the Deputy Secretary to Government, United Provinces Medical Department, to the President, All India Ayurvedic Mahamandal, Benares Hindu University Benares.

In compliance with the request contained in your letter dated November 18, 1934, I am directed to furnish the following information regarding the development of Ayurvedic system of medicine in the U. P.

1. In 1933-34 there were 148 Ayurvedic dispensaries and seven Ayurvedic teaching institutions in the U. P. (aided by Government). The principal teaching institutions are the following; (a) The Ayurvedic College, Benares Hindu University, Benares and (b) The Rishikul Ayurvedic College, Hardwar.

2. The two teaching institutions above are respectively given an annual grant of Rs. 45,000 and Rs. 9,000 direct by Government. The other dispensaries and teaching institutions, including the dispensaries attached to the above two institutions, get grants from the

Board of Indian Medicine, U. P. at whose disposal Rs. 35,000 are placed annually by Government for distribution to deserving cases. It is hoped to restore the lump allotment at the disposal of the Board to it former figure of Rs 50,000 before very long, but owing to financial stringency Government have been compelled to cut down the allotment during the last three year. The Board makes these grants on the recommendation of its grants-in-aid committee, which consists of the chairman (Sir Wazir Hasan Kt.) and six members and amounts rangs from Rs. 60 to Rs. 3,000 per annum.

3. The Government have established a Board of Indian Medicine, the constitution of which is as follows.

(a) A president appointed by Government
(b) One member elected by the Executive Council of each of the four universities, viz (1) The Benares Hindu (2) The Aligarh Muslim (3) The Allahabad and (4) the Lucknow.
(c) Two representatives of the Ayurvedic teaching institutions in the U. P.
(d) Two representatives of the Unani teaching institutions in the U. P.
(e) Two registered Hakims to represent the registered hakims in the U. P.
(f) Two registered Vaids to represent the registered Vaids in the U. P.
(g) One member elected by the U. P. Vaid Sammelan
(h) One member elected by the Anjuman-i Tibbiya.
(i) Two members elected by the U. P. Legislative Council
(j) Two members nominated by Government.

The term of the members is three years and the headquarters of the Board are at Lucknow. The names of the existing members of the Board are given in the Civil List of the U. P. The functions of the Board are the following:—

(i) To advise Government in all matters connected with the organisation and development of the Ayurvedic and Unani systems;
(ii) To prescribe courses of study for examinations;
(iii) To appoint examiners and conduct all examinations under the Indian Systems of Medicine;
(iv) To confer certificates, diplomas and degrees on the candidates who are successful at the examinations held by it;
(v) To register medical practitioners;
(vi) To distribute grants placed by Government at the disposal of the Board; and
(vii) To appoint sub-committees to advise the Board on technical questions.

2. The Board of Indian Medicine. U. P., is the department of Government for the development of indigenous systems of medicine. The dispensaries are generally given grants by the Board on the condition that the patients are treated there free of charge. The activities of the Board represent fully what Government is doing in the U. P. for the development of indigenous system of medicine. An important and useful function of the Board is the registration of approved indigenous practitioners, in accordance with the rules approved by Government. This registration gives the practitioners a distinct status and confers on them certain advantages, such as authority to issue certificates of age, leave and fitness for service to employees of local bodies and permission to stock poisonous drugs.

3. Further information may be had from the reports of the Board for 1930-32 available in one volume from the S. P. S., U. P. Allahabad, at twelve annas per copy.

No. 10661—L. S. G.

Government of Bihar and Orissa,

(Ministry of Local Self-Government)

From

Maulavi Saiyid Taqi-ud-din,
Offg. Assistant Secretary to Government.

To

Kaviraj Pratap Singh,
Superintendent, Ayurvedic Pharmacy,
Benares Hindu University, Benares.

Patna, the 31st December 1935.

Subject:—Information in regard to activities of Ayurveda.

Sir,

I am directed to refer to the correspondence resting with your letter dated the 16th October 1935 addressed to the Hon'ble Minister Local Self-Government and to enclose herewith copies of letters no. 1187-157-IX, dated the 7th February 1935 and no. 129/V-578, dated the 9th February 1935 as issued by the Governments of the Central Provinces and the United Provinces respectively to the President, All India Ayurvedic Mahamandal.

There were altogether 41 Ayurvedic dispensaries in the province in 1928 viz. 27 maintained by the local bodies, 11 partially subsidised by them, 2 run by private individuals and only one attached to the Ayurvedic School at Patna maintained by Government. More recent information is not available in the Secretariat. The Ayurvedic School at Patna which is the only teaching institution of its kind is maintained out of provincial revenues. A copy of the Annual report for the year 1933-34 which contains all the details of its working is enclosed.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant.
Offg. Assistant Secretary to Government,

Annual Report for the year 1933-34.

Introduction:—To remove the long-felt want the Government of the Province established the Government Ayurvedic School in the July of 1926 with provisions to develop through training in all eight branches of this great Oriental Science. The school is in the 8th. year of its existence and is under the direct control of the Ministry of Local Self Government administered ordinarily by a Governing Body of Government nominated members.

Sessions:—As usual the new session of the school commenced from the re-opening of the school after the summer vacation on the 17th. of July, 1933.

Location:—The house occupied by the institution on the station road having been found to have offered but insufficient accommodation particularly for new activities and extensions such as openings of Indoor Wards, Dissection Hall and laying out of the herbal garden etc. the authorities were obliged to shift school to a more specious mansion Ali Manzil on the Frazer Road.

Studentry:—The complete strength of the scholars during the year under report was 130 as against 146 of the last year.

Governing Body:—The year under report had two sets of members on the Governing Body. The retiring body was ever keen and enthusiast in introducing several improvements towards the achievements of the aims of the institution. Our thanks therefore to them. The existing Governing Body have ever since the change in November, 1933 ungrudgingly bore additional strains put on it in consequence of the unprecedented quake of fateful January 15th. this year.

School Colony:—The premises of school having been rendered completely inhabitable and dangerous by the terrible quake, the question of housing the school else-where became a taxing problem with the Governing Body more since the ravages of the quake had spared none of the houses in the town to remain in its condition to be occupied by the school. Happily the vacant spaces of Khas Mahal in the New Kadamkuan area solved the housing difficulty. Formal permission of the Khas Mahal having been obtained for a plot in the said area, the school classes were held under canopies and some temporary sheds erected to lay up the school apparatus, Records, Medicines, Furniture and other articles.

Our grateful thanks to Mr. J. L. Merriman for his sympathy and permission to use the Khas Mahal land for the school purposes and to Mr. G. A. Gadbole, I. C. S. for his offer of number of canopies for our use and to Khan Bahadur Hamid, Special Officer, Patna Municipality for his sympathy and promptness in allowing all possible facilities of road, light and water etc, to us in our New Colony.

Advisory Committee:—A committee of experts and savants in the AyurvedictScience exists to advise and counsel the Governing Body in-matters technical and conduct all the External Examinations of the school.

They have as well, with great dexterity and with utmost credit to themselves helped the Governing Body and the Government in deciding what title or degrees should be conferred upon the successful

candidates of the school. As an emblem of real efficiency the title of "Graduate in Ayurvedic Medicine and Surgery" in place of the former "Ayurvedacharya" is admirable and envious which inspite of continued struggle the Hindu University did not have it. Laudable has been the interest evinced by the Advisory Committee in general and that by Mahamahopadhyaya Kaviraj Gananatha Sen, M. A. L. M. S. etc, in particular who even in his most delicate and weak health never evaded his presence in Patna whenever required for the good of the institution.

Library:—The total number of books in the library is 272 only as in the previous year, namely 47 books in English, 206 in Sanskrit, 15 in Hindi and 4 in Bengali.

Teaching staff:—The teaching staff of the school remained practically the same as in the year 1931-32. It consists of a Principal and seven professors.

Out-door Dispensary:—There is an Out-door dispensary attached to the school where free medicines are distributed to the public. Year after year the dispensary has been growing in popularity as is evident from the increasing number of patients attending the same for the last eight years. The dispensary has been of great help to the students of the school in their practical training in diagnosis and treatment of diseases. The work of the dispensary is carried on by the junior compounder with the assistance of the students on duty in batches.

Pharmacy:—Medicines distributed in the dispensary are prepared in the school pharmacy from raw materials under the supervision of the Vaidya-in-charge of the dispensary. The pharmacy work is carried on by the Head Compounder and two menial servants. Students also attend the pharmacy class in batches and learn the method of preparation of medicines. The department is greatly helped by the students, attending the pharmacy class, in the preparation of medicines.

Museum:—The school has got a museum of its own where specimens of different kinds of herbs, minerals and drugs are collected to enable the students to identify them and study their properties. The museum contains at present kinds of such specimens. It receives grant from the Government with the help of which the number of samples have been increasing every year. Medicinal herbs and plants upon the use whereof the Ayurvedic system of medicine chiefly depends are grown within the school compound. The students derive much benefit thereby as they get first hand practical training of distinguishing one herb from the other.

Science Department:—The department contains a physical and chemical laboratory on a small scale, where training is given to students by practical experiments. The equipment of the laboratory has been increased with the help of the Government grant. It is hoped that this department will be of great assistance in doing the research work of the Ayurvedic system.

Anatomical Section:—This section contains a large number of models and charts which are shown to the students in the anatomy and Physiology classes. The demonstrations are very helpful to students in grasping the subjects intelligently and thoroughly. Dissection of goats, frogs etc. were also made several times during the year under review and the students took great interest in them.

Ras Department:—The department has been doing very useful work in teaching the students to prepare important Chemical Compounds of Ayurveda. The dispensary gets its supply to a great extent of reduced metals, medicines and perpared Chemical Compounds from this section. It has got a large number of samples of Chemical Compounds prepared by the students under the supervision of the Professor-in-change.

Pathological Department:—This department contains a small laboratory with necessary apparatus and arrangements for the chemical tests of urine.

Shalya Department:—This department contains apparatus for Shalya Practical demonstrations according to the theories and Shastric formula of Sushruta.

Shalakya Department:—The department deals with the treatment of the diseases of eyes, ears, nose and throats.

Athletic Club:—The club has been in charge of Babu Sukhram Prasad a member of the teaching staff of the school, who is its President. The club has introduced various shorts of games for the students such as Foot-ball, Badminton, Tennis, Hocky etc. Several friendly and inter-class matches of foot-ball were played during the year under review and the students took keen interest in them.

Students Association:—The aim of the association is to improve the general knowledge of the students by writing essays and holding debates on medical and other subjects involving research.

There is also common-room attached to this association where a large number of medical and literary books and Journals subscribed for by the students are available to them and are made use of by them in their hours of leisure and at evening from 5 P. M. to 6 P. M. The association and the common-room are under the supervision of Kaviraj Bidhubhusan Sen, a professor of the school who is the President of the association.

Poor Boys' Fund:—The fund has been started with a view to help the poor students of the school. The chief source of income of the fund is the amount subscribed voluntarily by the professors and students of the school the minimum amount being annas -8- per year. The fund remains under the control of the Principal.

Income and Expenditure:—The total expenditure of the school for the year 1933-34 was Rs. 19,156-0-3 only as against Rs. 18,054-15-6 in 1932-33. The income from fees and fines during the year was Rs. 2,376-7-0 as against Rs. 2,804-9-0 in 1932-33.

Examination:—The final and Preliminary examination of the school for the year 1933 commenced from the 22nd. April and continued upto 2nd. May. Ayurveda Panchanan Pandit Jagannath Prasad Sukul and Kaviraj Pratap Sinha came and conducted the examination.

It is a matter of great satisfaction to note that out of the 20 students in the Final Examination 17 were successful, 9 being placed in the 1 st. Division, 3 in the 2nd. Division and 5 in the 3 rd. Division and out of the 39 who sat for the Preliminary Examination 34 came out successful 5 being placed in the 1 st. Division, 15 in the 2nd. Division and 14 in the 3rd. Division.

Of 6 students who sat at the Supplementary Final and Preliminary Examination held in the month of October, 1933 all were successful.

The results and the names of the examinees are given in Appendix A.

District Board Scholarships:—There are scholarships from the District Boards as noted below:—

(1) Champaran...	One	scholarship	of	Rs.	12-	only
(2) Darbhanga	"	"	"	"	15-	"
(3) Gaya	"	"	"	"	15-	"
(4) Manbhum	"	"	"	"	10-	"
(5) Monghyr	"	"	"	"	12-	"
(6) Patna	"	"	"	"	10-	"
(7) Puri	"	"	"	"	20-	"
(8) Palamu	"	"	"	"	15-	"
(9) Shahabad	"	"	"	"	10-	"
(10) Saran	"	"	"	"	10-	"

(11) Nepal Government ... Ten scholarships
Nine of Rs 20- and
One of Rs 30- only

Principal's Remark:—The baneful effect of the last terrible earthquake has by no means been insignificant and negligible and we have been no exception to its wide and extensive ravages. In the most

miserable plight have been the students the very main interest of our school. The staff has been equally miserable. Furniture and other articles in considerable number both of the school and dispensary have been damaged and broken by tremours, by fall of the roofs and walls and not least through transplantation to our present colony.

Classes are being held either in the open or under canopies in all weathers. All these were enough to embrace the Governing Body and the Principal but their keen sense of duty baffled all confusions. But there is a silver lining behind the darkest cloud. It has afforded opportunities for the display of the latent faculties in our staff and students. Staff has been admirably co-operating with me in maintaining the standard of our efficiency. Students have learnt to render mutual help and nurse their sick fellows with great discipline under the supervision of one of their professors which affords them the additional opportunity for clinical training. Despite all odds by way of accomodation and others the Dispensay has been preparing and stocking for free distribution to the patients medicines of right standard and efficacy. The distress of the quake stricken area awakened the students to the sense of the service and sacrifice they have also imbibed from their Ayurvedic study. To mitigate the sufferings of the people these students in batches rendered the keenest service and most efficient aid all over the stricken area for sufficiently a long period while a centre of theirs still exists at Muzaffarpur as the suffering there was the greatest. These servants of humanity had at their disposal the huge stock of all ordinary and even costliest Medicines of the Ratnaker Aushadhalaya, Hajipur so generously offered by its proprietor for free distribution among the sick. Finally the Principal has to express his sense of personal gratitude to the president Mr. Justice Verma for his ready responses to him.

President's Remarks:—The President and the members of the Governing Body regret that the terrible earthquake in January taxed the resources of the school to its utmost capacity but they are glad to note that the zeal and tact of the Principal and the loyal support of the staff under him did not allow this calamity to interfere much with the teaching in the school. The students also showed great courage and power of endurance in continuing their studies as well as doing relief work at various centres.

The list of the out-gone Governing Body

(1) The Hon'ble Mr. Justice Kulwant Sahay—President.
(2) The Principal Ayurvedic School.—Secretary.
(3) Babu Sukhram Prasad—Representative of the teaching staff.

(4) Babu Kuarnandan Sahay, Vakil, Patna City.
(5) Babu Guru Charan Sinha, „ „ „
(6) Babu Laldher Prasad Advocate, Patna.
(7) Babu Madandhari Singh, Zamindar, Dharhara, Patna.

The list of the present Governing Body

(1) The Hon'ble Mr. Justice S. P. Verma—President.
(2) Babu Lakshmikant Jha.
(3) Babu Bishundeo Narain Singh.
(4) Babu Guru Sahay Lal.
(5) Babu Shashi Shekhar Prasad Singh.
(6) Pandit Harinandan Jha.
(7) Pandit H. N. Chaturvedi—Principal and Secretary.

There were nine meetings of the Governing Body in the year under review.

Number of patients:—The number of patients treated in the out-door dispensary during the last eight year is as follows:—

Dispensary was started on 12th. August, 1926.

Years	Number of patients.
1926—27	7,689
1927—28	31,096
1928—29	42,257
1929—30	46,087
1930—31	52,859
1931—32	56,706
1932—33	61,941
1933—34	55,686

Out of these patients treated in the year 1933-34, 12,292 were new patients. Amongst the new patients 6,218 were mails, 2,419 females 2,221 male children and 1,434 were female children. Patients suffering from all sorts of diseases attended the dispensary but the special diseases which were treated with great success are on the following:—

Rheumatism, Luccorhea, Abdominal Tumour, Chronic fever, Enlarged liver, Spleen, Aneamia, Jaundice, Dropsy, dispepsia, and Pthisis etc.

The shifting of the Dispensary to a locality like that of Ali Manjil in the Fraser Road was enough by itself to bring a sudden fall in attendance of patients and what attendance would remain is due to the wonderful efficacy of the medicine and the growing faith of the people in the system.

Advisory Committee:—The school has got an Advisory Committee consisting of three members viz. Mahamahopadhyaya Kaviraj Gananath Sen, Saraswati M. A., L. M. S., of Calcutta, Ayurveda Punchanan Pandit Jagannath Prasad Shukul of Allahabad and Kaviraj Pratap Sinha of Benares Hindu University. There were six meetings of the Committee during the year under review.

All Communications to Government should give the Number, Date and Subject of the previous correspondence and be addressed to the Secretary of the Department concerned.

All Communications to Government should give the Number, Date and Subject of any previous Correspondence and be addressed to the Secretary of the Department concerned.

Government of Bengal

Local Self-Government Department,
Medical Branch.

From

Babu Rebati Raman Datta, M. A.,
Assistant Secretary to the Government of Bengal,

The Hon. Sir B. P. Singh Roy, Kt.
Minister-in-charge

To

Kaviraj Pratap Sinha, Rasayanacharya,
President, All India Ayurveda Mahamandal,
Benares Hindu University, Benares.
Calcutta, the 21st January 1935.

Sir,

With reference to your letter dated the 19th November 1934, asking for certain informations relating to Ayurvedic Institutions in Bengal it is regretted that Government cannot directly supply these informations.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
Sd. R. Datta
Asstt. Secy. to the Govt. of Bengal.

Government of Assam

The Governor and the Minister of Local Government.
Letter No. 4447 L. S. G.
L. S. G. Department.
Medical Branch

From,
Srijut Nagendra Nath Phukan, B. L.,
Under Secretary to the Government of Assam,

To,
The President,
All India Ayurveda Mahamandal,
Benares Hindu University, Benares.

Shilong, the 11th December 1934

Sir,

I am directed to refer to your letter of the 19th November 1934 asking for the supply of certain particulars about Ayurvedic institution etc in Assam and to say that this Government have no information as to the number of such institutions in the province and how many of them are teaching institutions. No grant is paid by Government to any such organisation but a municipal board was only recently allowed by Government to contribute Rs. 500– per annum towards a private charitable Ayurvedic dispensary at Dibrugarh. As regards question (4) only two students in Ayurvedic Colleges have so far been assisted.

Your obedient servant,
Sd. N. Phukan
Under Secretary to the Government of Assam.

Minister in Charge—The Hon'ble Dr. BA MAW,
Bar-at-law,
Secretariat, Rangoon,
Telegraph Address—
Secretary—QUYATTILIN.

No. 528 SY 34 (1276).

Government of Burma

Ministry Of Education

Public Health Department.

From

Mr. R. M. MacDougall,
Secretary to the Government of Burma,
Education Department.

To

The President,
All India Ayurved Mahamandal,
Benares Hindu University, Benares, U. P.
*Dated Rangoon, the 24*th—December 1934.

Subject :— Information about Ayurvedic Institutions in Burma.

Sir,

In reply to your letter, dated the 23rd November 1934, I am directed to say that the Ayurvedic System of medicine is not an indigenous system of medicine as practised by the people of Burma. The Government of Burma does not keep any census of the Ayurvedic Institutions in Burma nor makes any grant to any such institution.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
Sd. Illigible.
For Secretary.

The Ministry of Health,
P. O. Box No. 500,
Colombo, 8th December, 1934.

Sir,

With reference to your letter dated 23rd November, 1934, addressed to the Hon'ble the Minister for Local Administration, which has been referred to this Ministry for disposal, I am directed by the Hon'ble the Minister for Health to state as follows:—

(1) It is not known how many Ayurvedic Institutions there are in the Island.

(2) There are two Colleges—the College of Indigenous Medicine in Colombo, and the Lanka Ayurvedic Medical College in Jaffna.

(3) An annual grant of Rs. 50,000- is made to the Board of Indigenous Medicine which runs the College of Indigenous Medicine, and small grants are made to a number of dispensaries at which free treatment is provided.

(4) As in (3). A proposal to introduce an Ordinance for the registration of Ayurvedic practitioners is under consideration.

I am, Sir,
Your obedient servant,
Sd. Cl. Tibucy
Secretary to the
Minister for Health

The President,
All India Ayurveda Mahamandal,
Benares Hindu University,
Benares.

It is requested that in future communications on this subject, the no. and date of this letter, and the distinguishing letter above the no. as given opposite, may be quoted, and the reply addressed to

The Surgeon General

With the Govt. of Bombay, Poona.
The Address—Hospitals Bombay, Poona.

No, 258|B of 1934
Office of the Surgeon-General
With the Govt. of Bombay.
Poona 20th December 1934.

FROM,

THE SURGEON-GENERAL,
WITH THE GOVERNMENT OF BOMBAY, POONA.

TO.

The President,
All-India Ayurvedic Mahamandal,
Benares Hindu University,
Benares.

SUBJECT:—

Information about Ayurvedic Institutions in the Bombay Presidency.

SIR.

With reference to your letter dated 19th November 1934, addressed to the Hon'ble Minister, the Local Self Government in this Presidency, which has been forwarded to this Office for disposal, I have the honour to state that it is regretted that the information about Ayurvedic institutions required by you is not available in this office.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
Sign Illigible
I. M. & S., B. M. S.
For Surgn. Genl. with the Govt. of Bombay.

H. E. 19-12

No. 1117-157-IX

Government of the Central Provinces

Medical Administration and Public Health Department

From,

R. N. Banerjee, Esqr, I. C. S,
Revenue Secretary to Government,
Central Provinces.

To

The President,
All-India Ayurveda Mahamandal,
Benares Hindu University, Benares.

Dated Nagpur, the 7th February 1935.

Subject—Information in regard to Ayurvedic institutions in the Central Provinces and Berar.

Sir,

I am directed by the Government of the Central Provinces (Ministry of Medical Administration and Public Health) to refer to your letter dated the 19th November, 1934, on the above subject and in reply to forward the following information as requested by the All India Ayurveda Mahamandal.

1. There are 103 Ayurvedic institutions in this province.
2. Three of them are teaching institutions.
3. No recurring grants are paid by Government to any of these institutions. Non-recurring grants are paid by Government subject to budget provision on the merits of each case.
4. Ten scholarships of Rs. 20 each per mensem are given by Government to students of this province for the study of the Ayurvedic system of medicine at the Benares Hindu University.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
Sd- R. N. Banerjee
Revenue Secretary.

No. 18666 Medl.

From,

P. Marsden, Esquire, I. C. S.,
Secretary to Government, Punjab,
Transferred Departments.

To,

The President,
All India Ayurveda Mahamandal, Benares.

Dated Lahore, the 13th May, 1935.

Subject:—Ayurvedic Institutions.

Sir,

In reply to your letter without number dated the 19th November 1934, on the subject noted above, I am directed by the Punjab Government (Ministry of Education) to enclose a statement embodying the necessary information.

2. In 1930, Government decided to give grants-in-aid towards the pay of Vaids and hakims employed by District Boards, but the offer was accepted by seven District Boards only. These grants were paid for two years, but on account of financial stringency no grants were made thereafter.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
Sd. Illigible.
Superintendent Medical,
for Secretary to Government, Punjab,
Transferred Departments.

A statement showing the Ayurvedic Institutions in the Punjab.

Locality	No. of Ayurvedic Institutions. Teaching	No. of Ayurvedic Institutions. Others	Grant in aid from Government	Remarks
Multan	—	5		
Lyallpur	—	1		
D. G. Khan	—	1		
Kangra	—	14		
Ludhiana	1	—		
Zira	—	1		
Hissar	2	44		
Rohtak	1	9		
Karnal	—	4		
Ambala	—	4		
Simla	—	3 (Two are combined Ayurvedic and Unani Dispensaries)		
Lahore	2	—	Rs. 5, 333–5–4	D. A. V. College = 2666–10–8 Islamia College =2666–10–8
Amritsar	—	1 (dispensary.)		
Gujranwala	—	1 (dispensary)		
Rawalpindi	1	2 (dispensaries)		
Gujar Khan	—	2 (dispensaries)		

D. Dis. No. 1027 of 34-LGB.

Huzur Cutcherry,
Trivandrum, 2' November 1934.

To,

Kaviraj Pratap Sinha Rasayanacharya Esq.,
President, All India Ayurveda Mahamandal
Benares Hindu University,
Benares.

Sir,

With reference to your letter, dated the 30th September 1934, to the Private Secretary to His Highness the Maharaja of Travancore, re: the supply of certain information relating to the Ayurvedic institutions in the State, I have the honour to forward herewith the information asked for therein. A copy of the Administration Report of the Department of Ayurveda for 1108 M. E. (1932-33) is also enclosed.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
Sd. Illigible.
Chief Secretary to Government.

Ayurvedic Institutions in Travancore.

There are in all 262 Ayurvedic institutions in the State, as shown below :—

1.	Government Ayurveda Hospital	...	1
2.	Do Pharmacy	...	1
3.	Grant-in-aid Hospitals	...	3
4.	Grant-in-aid Vaidyasalas	...	127
5.	Recognised Vaidyasalas	...	125
6.	Government Ayurveda College	...	1
7.	Aided High Schools	...	4
			262

To promote the science of Ayurveda and Ayurvedic treatment in the State, a separate department was organised about half a century ago. The department is now in a flourishing condition and the scope of its activities is steadily widening. To meet the growing demands of the department, the State is incurring increased expenditure year after year. The Department comprises of two branches, viz., the medical and the educational, each under the control of an independent officer.

On the medical side, there is a Government Ayurveda Hospital in the capital city. Here, medicines are dispensed free to all people alike and the institution is getting more and more popular as years go by, as seen from the increasing number of in-patients and out-patients that resort to it. There are 3 Aided Ayurveda Hospitals and 127 aided Vaidyasalas (Dispensaries), besides 125 State Recognised Vaidyasalas distributed over the country. The 3 private grant-in-aid Hospitals receive a grant of Rs. 50 each per mensem from Government. Of the 127 grant-in-aid Vaidyasalas (Dispensaries) in the state, 4 receive a grant of Rs. 30 each per mensem, 9, Rs. 25 each, 34, Rs. 20 each and 80, Rs. 15 each. There are also several private reputed Vaidyans of long standing. Lady Vaidyans and Vaidyans belonging to backward communities are specially encouraged by the award of grants-in-aid. Ayurveda Physician of hereditary families are encouraged by the award of honoraria, civil pensions etc., by the Palace. Besides the treatment of general diseases, there are specialists in Balachikitsa and Marma chikitsa and for the treatment of poison cases and of eye

diseases. The state also encourages Vaidyans practising in the Sidha and Unani systems of treatment. The Municipalities in the State are also encouraging Ayurvedic institutions established within their jurisdiction by awarding grants out of their funds.

There is a Government Ayurveda Pharmacy which is intended to meet the demand for the supply of prepared medicines to the Government Ayurveda Hospital and to impart practical training to the students of the Ayurveda College in the preparation of medicines. About 6 months back, a selling branch was opened in the Pharmacy with the object of selling medicines of standard quality to the public at comparativelv cheaper rates than are obtaining in other private pharmacies which are not a few in the State. Steps are in progress for the opening of an Ayurveda Herbarium on a large scale for rearing rare medicinal herbs and for affording facilities to the students of the Ayurveda College to familiarise themselves with the different varieties of herbs. To supervise the work of the Ayurveda medical institutions in the State, there is a separate officer under Government designated as "the Inspector of Ayurveda".

On the educational side of the Department, there are five teaching institutions. One is the Government Ayurveda College at the Capital of the State and the remaining four are aided Ayurvedic High Schools in the moffusil.

The four Aided High Schools receive a monthly grant of Rs. 30- each per mensem from Government. They are correlated to the Government Ayurveda College at the capital. Education in Ayurvedic Science is encouraged by the grant of 40 scholarships to the students of the college till they finish the 5th year course and appear for the diploma of Vaidyakalanidhi. The highest degree awarded by the College is the "Ayurveda Achariya". A gold medal known as "the Shasatiyabdapurthi Gold Medal" has been lately instituted for award each year to an Ayurveda Vaidyan who writes the best scientific account of a successful treatment according to Ayurveda. Stipends and scholarships are awarded to students who go for higher studies in Ayurveda outside the State. At present, there is a scholarship-holder from the State in the College of Ayurveda of the Benares Hindu University. Rare Ayurvedic manuscripts are collected and published at Government cost. Very lately, a valuable book on Ayurveda intended for the use of practising Ayurvedic Physicians was published under the name of "Chikitsa Manjari". The Ayurvedic educational institutions in the State are under the control of the Principal of the Government Ayurveda College.

L. Dis. 3429-1110

Office of the Diwan of Cochin,
Ernakulam,
Dated 6th December 1834.

From,

Rama Varmha Tampuran, M. A., B. Sc. (Lon), Bar-at-law,
Secretary to the Diwan.

To,

The President,
All India Ayurveda Mahamandal,
Benares Hindu University, Benares.

Sir,

Ayurvedic Institutions—Cochin State—particulars of.

Ref:—Your letter dated 2-10-1934 to the Private Secretary to His Highness the Maharaja of Cochin.

I have the honour to furnish the following information.—

There are altogether 191 Ayurvedic Institutions in the State, in 13 of which instruction is imparted. Of these 191 institutions, 17 are Vaidyasalas managed and supervised by Village Panchayats, 6 are institutions for the treatment of snake-bite and other poisons, one is a central institute from which medicines are supplied free to the 6 institutions, one is a vaidyasala for the treatment of Lepers and 2 are hospitals.

2. Each of the Vaidyasalas under the management of the Village Panchayats receives an annual recurring grant of Rs. 600 from the Government. The institutions for the treatment of poison cases are paid an annual grant of Rs. 300 and the Central Institute is entirely financed by Government and is unlike any other Government Hospital. The vaidyasala for treatment of Leprosy is also paid an annual grant of Rs. 600.

3. Of the two hospitals, one is run by the Government with State funds and the other is a private institution. Government have promised to contribute to the latter amounts upto a maximum of Rs. 30,000. More than half of it has already been paid.

4. Besides these, Village Vaidians and Scout Masters are also given every year special training in first aid in poison treatment at Government expense. Medicines are also supplied free to persons so trained.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant.
For Secretary to the Diwan.

No. 347 of 1934

Subject:—Opening the Ayurvedic Dispensaries in the Kolhapur State.

From,

The Darbar Surgeon and Chief Medical Officer Kolhapur

To.

The President, All India Ayurvedic Mahamandal Benares.

Kolhapur / Deccan 24th November 1934

Sir,

With reference to your letter No. 37 dated the 30th September 1934, I have the honour to request you to be so good as to furnish me information regarding the organisation of Ayurvedic Dispensaries either in British India or in Indian States.

At present the Kolhapur State has got one such Dispensary called the Ahilyabai Deshi Davakhana here established in 1896 in memory of the Late Lamented Maharani Shri Ahalyabaisaheb. The total expenses incurred on the same, comes to. about Rs. 1500 and some 30000 patients take advantage of the same, per year.

The information together with the detailed scheme, and the suggestions which your mandal wishes the Darbar to do in the matter, may kindly be supplied to me in order to enable me to submit a Scheme to the Darbar in the matter.

Yours Sincerely
Sd. Illlgible.
Darbar Surgeon and Chief Medical
Officer Kolhapur.

H. 4. No. 12 of 1934-35.

Chief Medical Officer's Office,
Baroda, 13th. October, 1934.
16

From :—
The Chief Medical, Officer,
Baroda State, BARODA.

To :—
Tne President,
All India Ayurved Mahamandal Benares
Hindu University.
BENARES.

Subject :—Information about Ayurvedic dispensaries etc.

Ref :—Your letter No. 25 dated 30-2-34 addressed to the private Secretary to H. H. the Maharaja of Baroda.

Dear Sir,

In reply to your letter mentioned above I have to inform you as under :—

(1) There are in all four Ayurvedic dispensaries which are maintained by the State Medical Department and the local bodies.

(2) Besides there is one teaching institution in Pattan. (Sheth Ujamshi Pitambardas Ayurvedic College). One Rajkiya Sanskrit Mahavidyalaya in Baroda is maintained and managed by the State Educational Department. This Vidyalaya imparts instructions in the Ayurvedic system of medicines over and above the other subjects such as Astronomy, Astrology and Puranic literature.

(3) Sheth Ujamshi Pitambardas Ayurvedic College is maintained on the grant-in-aid system. About Rs. 12000/- (Twelve thousand Rupees) are spent every year. The moity being contributed by His Highness' Government and the other half is provided from the interest of Rs. 1,00,000- (One lac) donated by Late Sheth Ujamshi Pitambardas of Pattan in the year 1921.

(4) If donors come forward to contribute handsome amounts for opening Ayurvedic dispensaries, their applications are taken into consideration.

Yours faithfully.
Sd. R. B. Chardrothor
Chief Medical Officer,
Baroda State.

Private Secretary
to H. H. the Maharana Udaipur

The Palace, Udaipur Meywar
The 7th. October, 1934.

To,

Kaviraj Pratap Sinha Sahib,
President, All India Ayurveda Mahamandal,
Benares Hindu University, Benares.

Dear Sir,

Please refer to your letter dated the 2nd instant. The information required by you is as under:—

1. There are six Ayurvedic Institutions in Mewar,

(a) Ayurvedic class attached to Feteh Bhopal Brahma Vidyalaya, Udaipur.

(b) Sewa Samiti Ayurvedic Institution, Udaipur.

(c) Do. Do. Do. Do. Barapal.

(d) Do. Do. Do. Do. Gogunda.

(e) Dr. Narain Dutt's Ayurvedic Institution at Udaipur.

(f) Ayurvedic Institution at Bhilwara.

2. The Ayurvedic classes attached to the Feteh Bhopal Brahma Vidyalaya and Sewa Samiti Ayurvedic Institution, Udaipur, are teaching Institutions as well.

The Feteh Bhopal Ayurvedic classes are practically maintained by the State at an annual cost of Rs. 1,295

4. To popularise the system of Ayurvedic treatment, the State maintains the Ayurvedic classes in the Fateh Bhopal Brahma Vidyalaya at Udaipur and students are being prepared for the examination of Ayurveda Vidya Pith, Poona. These boys have read upto the Prathma or the Middle standard with Sanskrit as their optionals and will on their passing the Ayurveda examination be sent out as teachers to Primary Schools of the State at important centres where they will work both as Teachers and Vaids and will be placed in special grades of pay which are being reserved for them on the occurence of vacancies in higher grades of village School Teachers.

Yours faithfully,
Sd. Sinha
B. A., LL. B., Private Secretary.

All Communications to be addressed to the Member Mahakma Khas Kotah and not by name.

Tele: Address:—
'MANTRI'

No. 140 of 1933—1934,
9-1

From,
Rai Bahadur Pandit Bishwambhar Nath
Member, Mahakma Khas,
KOTAH STATE.

To,
The President,
All India Ayurveda Mahamandal,
Benares Hindu University,
Benares.

Dated Kotah, the 26th October, 1934.

Sir,

With reference to your letter No. 1027 dated the 30th September, 1934, I have the honour to say that there are five marginally noted aided Ayurvedic Aushadhalayas in the State and the aid given to them by the State is noted against each. None of them is a teaching institution.

1. Ayurvedic Sarv Hiteshi Aushadhalaya, Kotah...... Rs. 15 p. m.
2. Sarafa Panchayat Ayurvedic Aushadhalya, Kotah... Rs. 15 p. m.
3. Ayurvedic Aushadhalya, Nizamat Mangrol, Kotah State Rs. 15 p. m.
4. Ayurvedic Aushadhalaya, Nizamat Chhipabarod, Kotah State Rs. 20 p. m.
5. Ayurvedic Aushadhalaya, Nizamat Digod, Kotah State, Rs. 15 p. m.

Besides these aided Aushadhalayas there are a few more in the State which are independent concerns and in the hands of ill qualified persons. Nothing authentic can be said about them.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant.

No............of 1934

From

The Private Secretary,

To H. H. The Maharaja Sahib Bahadur,

Kishangrah.

To

The President,

All India Ayurveda Mahamandal, Benares

Hindu University Benares.

Dated Kishangarh the 14th November, 1934

Dear Sir,

With reference to your letter dated the 2nd October, 1934, I write to say that there are no Ayurvedic Institutions in this State.

Yours faithfully

Sd. L. Singh

Private Secretary to H. H. the Maharajah,

Kishangarh State. (Rajputana)

Memorandum.

No. P 39

Office of the Personal Private Secretary

to H. H. Maharaja Sahib Bahadur,

Jodhpur

Dated October 6-8-1934.

The President, all India, Ayurveda Mahamandal, Benares is informed that his petition dated 30th September, 1934 asking for certain information has been forwarded to the Home Minister, Government of Jodhpur, Jodhpur, for disposal.

Sd. Illigible.

Personal Private Secretary.

Government of Bikaner

No 4701 of 1934.

From

The Revenue and Home Minister,
Bikâner State,
Bikaner.

To

The President,
All India Ayurved Mahamandal,
Benaras Hindu University,
Benares.

No. of Enclosures, Dated 29-12-1934.

Dear Sir,

In reply to your letter of 30th. September, 1934, to the address of the Private Secretary to His Highness the Maharajah, I write to furnish you with the following information :—

(1 There are 3 Ayurvedic Dispensaries in the State, at Panchu, Ratnanagar and Phephana.

(2) There is one State aided Mohta Ayurvedic Pathshala at Bikaner.

(3) Rs. 122-8 p. m. are paid as grant-in-aid to Mohta Ayurvedic Pathashala by the State and Rs. 2, 403- p. m. are spent over the three Ayurvedic Dispensaries annually.

Yours faithfully,
Sd. Prem Singh
For Revenue and Home Minister.

Telegraphic Address:—
"BLIND"
No. 745

Jai Bilas Gwalior

27th Oct. 1934.

Dear Sir,

With reference to your letter dated the 30th ultimo, I write to inform you that you should directly correspond, in this connection, with the Chief Medical Officer, who will supply you the information you are in need of.

I wish your efforts be crowned with success.

Yours faithfully,
Sd. Illigible
Private Secretary
to H. H. the Maharaja Scindia.

To,
The President,
All India Ayurveda Mahamandal,
Benares.

Office of the Chief Medical Officer, Kapurthala State.

No. 72 *Kapurthala, dated 13. 11. 1934.*

Kaviraj Pratap Sinha Rasayanacharya,
President All India Ayurveda Maha-
mandal Benares.

Dear Sir,

With reference to your letter No. 35, dated the 30th September 1934, to the address of the Private Secretary to His Highness the Maharaja of Kapurthala, I am to intimate to you that no Ayurveda. Teaching Institutions exist in Kapurthala State. With a view, however, to encourage Ayurvedic system of medicine stipends to the aggregate value of Rs. 85 per month are given to various Vaids, practising the system in different parts of the State.

Yours faithfully
Sd. Illigible.
Chief Medical Officer.

No. 110—340 G. 5560 E

From

Rai Bahadur, Diwan Gyan Nath, C. I. E.,
(Indian Political Service)
President, Council of Regency,
Nabha State.

To

The Presidant,
All India Ayurveda Mahamandal,
Benares Hindu University,
Benares.

Dated, Nabha, the 12th January 1935.

Subject:—Supply of information regarding Ayurvedic institutions in the State.

Sir,

With reference to your letter No. 34, dated the 30th September, 1934, I have the honour to say that there are no Ayurvedic Institutions in this State, but that the Durbar have employed two Veds—one at Mandi Phul and one at Mandi Jaitu—for the benefit of the Public and these Veds are also supplied with medicines at State expense. In addition, there are five private individuals who are practising in the State as Veds.

I have etc., etc.,
Sd. Illigible
President, Council of Regency.

Copy of letter sent to various Municipal & District Boards.

Kaviraj Pratap Simha
Rasayanacharya
President
All India Ayurved Mahamandal.

Benares Hindu University
Benares.................1934.

Dear Sir,

On behalf of the All India Ayurved Mahamandal, I beg leave to approach you with the following lines and shall feel grateful if you kindly favour me with an early reply.

The Vaidya Sammelan of Mahamandal, at its meeting held last year at Sikarpur, has decided that the Silver Jubilee of the Mahamandal be held in a befitting manner next year. In this connection, we have to prepare various papers relating to Ayurveda and we have also in view to bring out a Volume giving a brief history of the activities of the Mahamandal, relating to Ayurveda. It is our view also to discuss and place before our public the present position of Ayurveda in the country. For this purpose we have to obtain various informations from different sources and I should feel very highly obliged if you could kindly favour me with the following informations at your earliest convenience.

(1) How many Ayurvedic Institutions are there in your Board ?
(2) How many, out of them, are teaching institutions ?
(3) What grants are paid to them by the Board ?
(4) What, in general, has or is being done by the Board to promote the interest of Ayurveda.

We count and depend upon the help and sympathetic co-operation of the Board and we earnestly hope that the same will not be denied to us.

Yours faithfully
Sd. K. Pratap Sinha
President
All India Ayurveda Mahamandal,

(All the Replies received to the above are given on the following pages. These have been addressed to the President, All India Ayurveda Mahamandal. Benares Hindu University.)

United Provinces

From

The Chairman,
Municipal Board, Lucknow.

No. 111-8-2950 *Dated 30-11-34*

Sir,

With reference to your letter No. nil dated 5-10-34, I have the honour to give below the information as required therein.

1. There are two Ayurvedic Dispensaries under the management of the Board.
2. None of them is a teaching institution.
3. All expenses of the above mentioned dispensaries are met by the Board.
4. The opening of these two institutions is a practical example of the Board to promote the cause of Ayurvedic system.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
Sd. Illegible, B. A. LL. B. Bar-at-law M. L.
Acg. Chairman Municipal Board.

❀ ❀ ❀ ❀

From,

Chairman Municipal Board, Pratabgarh

No. II—114 Station Pratabgarh (Oudh) Date 13-10-34.

Dear Sir,

I give below answers siriatim to questions contained in your letter of October 8-1934.

(1) None ;

(2) Does not arise.

(3) Docs not arise.

(4) There being no need in the town nothing is done by the Board.

Yours faithfully,
Sd. Illegible,
Secretary for Chairman, M. B.

Rama Shankar. No. 318 M. B. SULTANPUR (Oudh)
Dated Octo. 12 1934

M. A. LL. B., ADVOCATE,
Chairman Municipal Board.

Dear Sir,

In reply to your letter d. 8th. instt. I am to say that there are only two Ayurvedic institutions i. e. Ayurvedic Malviya Aushadhalaya in Shawganj and Ram Aushadhalaya in Perkinsganj of which the former gets an annual grant of Rs. 70 from the Board of Indian Medicines, United]Provinces, Lucknow.

2—None of the above are teaching institutions &

3—Owing to paucity of funds no grant has up till now been given by the Board to any of the above Aushadhalayas.

Yours sincerely,
Sd. Ramashankar

* * * *

From,

The Chairman,
Municipal Board, Rae Bareli.
No. 119 Dated October 13, 1934.

Sir,

With reference to your letter No. nil dated 8-10-1935 re furnishing information about the position of Ayurved, I have the honour to state parawise as under :—

1. None
2. None
3. None at all
4. Nothing absolutely

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
Sd. P. Clifford. M. A.
Secretary.

From

Mr. Mohd. Aijaz Hussain, Chairman,
Municipal Board, Meerut.

Dated 24th October 1934. *No. 608 XII-of 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated 5th October 1934 I have the honour to say that the replies to your querries are as below:—

(1) How many Ayurvedic Institutions are there in your Board ? Two

(2) How many, out of them, are teaching institutions ? None.

(3) What grants are paid to them by the Board ? Rs. 600 annually to the one and Rs. 200 to the other.

(4) What, in general, has or is being done by the Board to promote the interest of Ayurveda ? Only grant is paid from this Board.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant.
Sd. Mohd. Aijaz Hussain Chairman.

Municipality, Muttra.
Dated the 26th October 1934.

Dear Sir,

With reference to your enquiry regarding the Ayurvedic institutions in the Muttra Municipality, I am to inform you that as far as I could ascertain there are 5 Ayurvedic Institutions. Two, out of them are teaching institutions.

There are several Vaidyas who keep their own Dawakhana and do private practice. There is no public Ayurvedic Aushdhalaya under the name of Sewa Samiti. Rs. 25 monthly are paid to this institution by the Board as grant-in-aid.

Yours faithfully,
Sd. Jamuna Prasad Chairman.



स्वर्गीय रघुनन्दनजी भट्ट राजवैद्य, बनारस।
[आप काशीके यशस्वी और सुप्रसिद्ध वैद्य थे]

जन्म वि सं. १९४३ निधन वि सं. १९८५

No. 383

Municipal Office,
Bijnor.
24 October 1934.

Dear Sir,

With reference to your letter dated October 14. 1934, I have to inform you as under:—

1. Nil.
2. Nil.
3. Nil.
4. There are a few Vaids in the town who maintain their medical halls, and treat patients.

Yours faithfully
Sd. Illegible
Chairman.

❀ ❀ ❀ ❀

From

Seth Krishna Lal B. A. LL. B.,
Chairman, Municipal Board, Agra.

No. 6375 D. *Dated Agra the 31 X 1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter No. Nil of the 7th October, 1934, I am giving here under the required information in seriatum:—

(1) This Board maintains two Ayurvedic Dispensaries of its own and gives grant-in-aid to one Charitable Ayurvedic Dispensary.

(2) None of these are teaching Institutions.

(3) The Board gives a grant of Rs. 15 p. m. to the Charitable Ayurvedic dispensary and maintains two of its own dispensaries exclusively. It also receives a grant of Rs. 75 per annum from the Board of Indian Medicines towards the Ayurvedic dispensaries maintained by the Board.

(4) The Board considers applications from charitable private Ayurvedic Dispensaries for grant-in-aid and on merits extends its helping hand to them. Some of such applications are before the Board.

One more Ayurvedic Dispensary has of late been granted an aid of Rs. 25 p. m. and the grant of the one already getting raised to Rs. 20 p. m. from 1-10-1934.

Yours faithfully
Sd. Illegible.
Chairman.

From The Medical Officer of Health,
Municipal Board, Cawnpore.

No. 1457 H Dated 27—X—1934.

Sir,

With reference to your letter dated 5th October 1934 addressed to the Chairman, Municipal Board, Cawnpore, I have the honour to inform you that we are helping indigenous system of medicine in the following ways:—

1. Cawnpore Municipal Board is running one Ayurvedic Aushadhalaya in Gwaltoli, a mohalla mainly inhabited by the labour population.
2. It gives grant-in-aid of Rs. 20 p. m. to Ayurveda Vidyalaya, teaching institution run by the local branch of the Mahamandal.
3. Rs. 530 p. m. are given as grants-in-aid to Ayurveda Aushadhalayas.
4. It has also given a plot of land on a nominal rent to Mahamandal for planting botanical herbs.
5. A non-recurring grant of Rs. 500 was also given to the Vidyalaya for building purposes last year.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
Sd. O. Trivedi
Medical Officer of Health

❀ ❀ ❀ ❀

No. 2016-VI-2

Municipal Office, Benares.
Dated. 12-10-1934.

Dear Sir,

Reference your letter dated October 3, 1934 for some information from this municipality, I write to inform you as follows :—

1. 4 Ayurvedic Institutions are in this municipality.
2. None of them is a teaching institution.
3. They are maintained by the municipality costing about Rs. 8500/—
4. 4 dispensaries are being run by the municipality with decent stock of medicines.
5. They are quite popular.

Yours faithfully,
Sd. Illegible,
Executive Officer.

From

B. Banke Lal, B. A. Chairman

Municipal Board, Jaunpur.

No. 481/XIX-3 *Date 13-10-1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter dated 7th October 1934 I beg to say that there are no Ayurvedic institutions either maintained or aided by this Board.

Yours faithfully,
Sd. Gur Lewak Lal.
Secretary,

❀ ❀ ❀ ❀

From,

The Chairman, Municipal Board, Sitapur.

Returned with the following reply:—

(1 & 2 & 3) This board maintains no institution.

(4) This board has employed a Vaidya & distributes Ayurvedic medicines free.

Sd. Devee Prasad Secretary,
for Chairman 1934.

❀ ❀ ❀ ❀

From,

The Chairman, Municipal Board,

SHAHJAHANPUR.

Dated 16. 11. 1934 No. 1869/XIX

Dear Sir,

Reference your letter dated 10-10-1934.

I regret to say that there are no Ayurvedic Institutions in the Board, nor does the Board, on financial grounds, find itself able to promote the interest thereof or pay any grants.

Yours faithfully,
Sd. Illegible
Executive Officer,

From, R. S. Khandelwala Esqr. Chairman.
Municipal Board, Bareilly U. P.

No. 1405 P. H.
X-5-1-31-32 *Dated 27-11-1934.*

Dear Sir,

In reply to your letter No. nil dated 5-10-34, I herewith supply the replies to the querries mentioned therein:—

(1) 9.
(2) Only 1.
(3) One of them is maintained by the Board; the total expenditure in 1933-34 was about 1843/-
(4) Nil.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,
Sd. R. S. Khundelwal.

❁ ❁ ❁ ❁

No. 525 H. D. *Dated November 5, 1934*

From,
The Cnairman Municipal Board,
BUDAUN.

Dear Sir,

Reference your letter No. Nil dated 14. 10. 1934.

I am sorry to inform you that there are no Ayurvedic institutions in the Municipal Board, Budaun.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
Chairman.

❁ ❁ ❁ ❁

From The Executive Officer,
Municipal Board, Almora.

No. 1248 XXX—1—182 Dated 29th October, 1934.

Dear Sir,

In reply to your letter dated 10. 10. 34, I am to inform you that the information asked for is nil.

Yours faithfully,
Executive Officer.



श्रीमान् प्राणाचार्य पं. सदानंद शास्त्री घिल्डियाल ।
खोला-श्रीनगर-गढ़वाल-युक्तप्रांत ।

From Secretary.
Municipal Board Naini Tal.

Dated 23—10—34 *No. 6165 of 1934 XV-18*

Dear Sir,

The answer to all your querries asked for in your letter dated 10th. October 1934 is in the negative.

Yours faithfully,
Sd. Illegible
Secretary.

❀ ❀ ❀ ❀

From the Chairman, M. B. Gonda.

Dear Sir,

In reply to your letter dated 8. 10. 34. I beg to state as follows:—
1. None. 2. Does not arise. 3. Nothing. 4. Nothing is being done in this connection.

Returned in original with this remark.

Sd. Illegible
Ex. Officer 13. 10. 34.

❀ ❀ ❀ ❀

From Chairman,
M. B. Dehradun.

Dear Sir,

In reply to your letter of 8. 10. 34. I beg to state that no Ayurvedic Institutions are managed or aided by the Dehra Municipal Board.

Sd. Illigeble.
E. O. D. Dun

Bihar

No. 1750 VI E. Patna City Municipal Office.

Dated the 31 October 1934.
1—11—34

Dear Sir,

Your letter dated the 16th October 1934. The statistics about the number of Ayurvedic Institutions within the Municipality are not available.

There is one Government Ayurvedic School which does not receive any help from the Municipality.

This Municipality has done nothing yet to promote the interests of the Ayurveda.

Yours faithfully
Sd. Illegible.
Additional District Magistrate.

❀ ❀ ❀ ❀

From Babu Akhileshwari Sahai, Zamindar,
Chairman, Bhagalpur Municipality.

No. 1893 XIII—5 *Dated Bhagalpur, the 25. 10. 1934.*

Sir,

In reply to your letter dated 17th instant I have the honour to inform you that this Municipality does not maintain Ayurvedic Institutions nor give any grant to them.

Your most obedient servant,
Sd. A. Saha
Chairman.

❀ ❀ ❀ ❀

From Babu Hira Lal Mahajan,
Vice-Chairman, Hazaribagh Municipality
HAZARIBAGH.

No. 673 *Dated Hazaribagh the 26th October, 1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter dated 18th October 1934, I beg to inform you that this Municipality has got no Ayurvedic Dispensary under its management.

Yours faithfully
Sd. Illegible.



श्रीमान् कविराज श्रीभूदेव मुखोपाध्याय एम्. ए. कलकत्ता।
लेखक—रसजलनिधि।

From The Secretary of the Municipality, Gaya.

No. G 1546—XX—I *Dated, Gaya, the 29th October, 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated 16th October, 1934. addressed to the Chairman, I have the honour to inform you that there is no Ayurvedic institution under this Board.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible, Secretary.

* * * *

From Babu Harihar Saran
Chairman municipal Board,
CHAPRA.

No. 497 M. *Dated the 26th October 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated 16. 10. 34, I have the honour to inform you as follows:—

1. There is one institution in the Chapra Municipality.
2. It is a teaching institution.
3. No aid is paid by the Municipality.
4. Land has been given for developing a botanical garden which is connected with the institution

Your most obedient servant,
Sd. Harihar Saran
Chairman.

* * * *

Bengal

CORPORATION OF CALCUTTA

Health Department.

No. H 614 *The 20. 11. 1939.*

From Dr. T. N. Majumdar, D. P. H., D. T. M., F. R. S. E.
Health Officer, Corporation of Calcutta.

Dear Sir,

Re : Ayurvedic Institutions.

In reply to the queries regarding the above, as mentioned in your letter dated 30. 10. 34. addressed to the Mayor, Calcutta Corporation which has been forwarded to me for disposal I beg to furnish the following information :

There is no Ayurvedic Institution entirely managed and maintained by the Corporation and there is no such teaching institution.

The total grant paid to different Ayurvedic Institutions is given below : (1933-34)

1. Jamini Bhushan Ashtanga Ayurveda Vidyalaya...170 Raja Dinendra St. 23750-0-0
2. Gobinda Sundari Ayurveda Hospital. 20 Ramakanta Bose Lane... 9650—0—0
3. Viswanath Ayurveda Mahavidyalaya 94, Grey Street. 14375—0—0
4. Svarnamayee Promada Sundary Ayurvedic Charitable dispensary 26 Balaram Mazumdar Street. 225—0—0
5. Calcutta Ayurveda Sabha 3, Kumartali Street. 5000—0—0
6. Vaidya Sastra Pith Hospital 3 A, Jeliatala St. 12450—0—0

Yours faithfully
Sd. Illegible.
Health Officer.

Office of the Municipal Board Commissioners of Howrah.

No. 2379 G *The 22nd November 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated 30th October 1934, I beg to inform you that we have no Ayurvedic Institution under this Municipality.

Your most obedient servant
Secretary.

From Rajendra Lal Sadhu Esq. M. A., B. L.,
Chairman, Hooghly-Chinsurah Municipality.

2475.29 *Dated, Hooghly, the 14th November, 1934*

Sir,

With reference to your letter dated 28-10-34 I have the honour to inform you that no ayurvedic institution is being subsidised by this municipal board and it does not maintain any register to record activity.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible.
Chairman.

From Nawabjada K. Nasarollah, Vice-Chairman.
MUNICIPAL OFFICE, DACCA.

No. 5404 *The 20th Nov. 1934.*

I have the honour to inform you that there is no Ayurvedic Institution under the control or grants-in-aid of this Municipality.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible
Vice-Chairman.

From H. M. Shircore, Esqr., C. I. E., Chairman,
NARAYANGANJ MUNICIPALITY.

No 1748-xxii-i *Dated Narayanganj, the 9th. November, 1934.*

Sir.

With reference to your letter dated the 31st. ultimo, I have the honour to inform you that there is no Ayurvedic Institution here.

Your most obedient servant,
Sd. H. M. Shircore
Chairman.

From Babu Amita Ranjan Mukherjee, M. A. B. L.
Chairman, Suri Municipality.

No. 585, J. N. V. *Dated Suri, the 2nd Novr. 1934.*

Dear Sir,

In acknowledging receipt of your letter dated 28-10-34, I have the honour to state that :—

(1) We have no Ayurvedic Institution connected with our Board, in any way, and therefore questions (2), (3) & (4) do not arise.

Yours truly,
Sd. Illegible,
Chairman.

LOCAL SELF-GOVERNMENT.

Office of municipal Commissioners of Bankura.

No. 2027—VIII—11 *The 1st. November 1634.*

Sir,

In reply to your letter of the 28th. October 1934, I have the honour to inform you that there is no Ayurvedic institution within this Municipality.

Your most obedient servant,
Sd. A. R. Brown
Chairman.

❁ ❁ ❁ ❁

From Babu Nares Chandra Mitra, B. L.,
Chairman, Burdwan Municipality,

No. 3702 XII—6 *Dated Burdwan, 17 Novr : 1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter dated 28—10—34, I beg to inform you that there is no Ayurvedic Institution in this town of Burdwan and nothing can be done as there is no provision in the Budget for the purpose now.

Yours faithfully,
Sd. N. C. Mitra
Chairman.

❁ ❁ ❁ ❁

From Babu Surendra Nath Halder, pleader.
Chairman, Jessore Municipality.

No. Des—890 *Dated Jessore, the 17th November 1919*

Dear Sir,

In reply to your letter of the 30th October last asking for certain informations regarding Ayurvedic Institution of this town. I have the honour to inform you that there is only one Ayurvedic Charitable Dispensary in this town opened by the Jessore District Board, the Municipality contributing Rs 50/— annually (3) We have got no other institutions of this kind in this Municipality nor we have done anything to promote the interest of Ayurveda.

Yours faithfully
Sd. Illegible
Chairman.

Assam.

From Sj. G. N. Bardaloi, M. A., B. L., Advocate,
Chairman, Municipal Board, Gauhati.

No. 1784 *Dated Gauhati, the 14th Novr. 1934.*

Sir.

With reference to your letter of the 2nd Novr. 1934, asking certain informations about Ayurvedic Institutions, I have the honour to say that there is no such institution within this Municipality except some Ayurvedic shops maintained by private Kavirajas.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible.

❋ ❋ ❋ ❋

Office of the Municipality,
Cuttack.

No. 1957 *The 5th November 1934.*

Dear Sir,

Your letter of the 17th. October 1934, No Ayurveda institution draws grant from or is maintained by this Municipality.

Yours faithfully.
Sd. Illegible
Executive Officer,

❋ ❋ ❋ ❋

From Moulvi Abdul Majid Ziaosh-Shams, B. L., M. L. C.,
Chairman, Municipal Board, Dhubri.

No. 979 *Dated the 13th November, 1934.*

Dear Sir,

In reply to your letter, dated the 2nd November, 1934, I beg to inform you that (1) there is no Ayurvedic Institution in this Board. (2 to 4). Do not arise in consequence of the reply to (1)

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
Chairman.

From, Babu Bramhananda Mahanti,
Chairman.
Municipal Office, Puri.

No. 1521 *Dated, Puri, the 16th November 1934*

Sir,

With reference to your letter dated the 18th October 1934, I have the honour to state that as the Municipality maintains no Ayurvedic Institution, the information required therein can not be supplied by this office.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible,
Chairman.

Andra--Dravid

From, M. R. Ry, C. Narasimham Garu, B. A., (Hons) B.L.,
Commissioner, Berhampore Municipality, Berhampore.

D. Dis. No. 4489-34. *Dated 22nd November, 1934.*

Sir,

Reference :—Your letter dated 12-11-1934 respecting certain information on Ayurvedic Institutions.

There are no Ayurvedic Institutions maintained by this Municipality except a dispensary called "The Municipal Indian Medical Dispensary, Berhampore," in which Ayurvedic medicines are used. The other information required in your letter is not available in this office.

Sd. Illegible.
Commissioners

From, M. R. Ry. C. R. Karunakara Menon, Col., B. A., B. L.
Commissioner, Mangalore Municipality.

Dis. No. C. 1011/30-35 *6th December 1934.*

Sir,

Subject:—Your letter dated the 17th November 1934—re information about Ayurvedic Institutions.

With reference to the above letter I have the honour to inform you that there are two Ayurvedic Dispensaries maintained by the municipality. These are not teaching institutions. The entire cost of the maintenance of these Ayurvedic Dispensaries is met from Municipal funds. The dispensary is maintained to give treatment to the deserving poor.

Your obedient servant,
Sd. Illegible.
Commissioner.

Municipal Office,

Ootacamund. 6th December 1934.

R. C. No. L. Dis. Dl. 2572-34.

Sir,

Medical—Ayurveda—Information furnished. Reference :—Your letter dated 17th November 1934.

There are no Ayurvedic institutions in this Municipality.

Sd. Illegible.
Commissioner.

* * * *

From M. R. Ry. M. S. Jagannayukulu Nayudu Garu B. A., Commissioner, Kurnool Municipality, Kurnool.

No. X. L., dated 4-12-1934

Ref ;—Your letter dated 14-11-34.

Sir,

In reply to your above letter, I have to state that the Municipality maintains wholly at its cost one Ayurvedic Dispensary and it is not a teaching institution. In that institution a qualified Ayurvedic Doctor who passed 'Ayurveda Vidwan' from Sree Venkateswar Ayurvedic College, Tirupathi, two compounders, one male ward attendant and a cooly are employed.

Sd. Illegible.
Commissioner.

* * * *

From, M. R. Ry. L. R, Venkataraman Avl., M. A., Commissioner, Coimbatore Municipality,

Dated 11th December 1934.

Sir,

Ref: Information called for-Ayurvedic Institutions.

With reference to your letter dated 16-11-34, I have the honour to furnish the following replies to the questions raised therein.

1. There are two Ayurvedic Dispensaries maintained by this Municipality.
2. None of them are teaching institutions.
3. The two dispensaries are maintained entirely out of Municipal funds.
4. Nil.

Sd. L. R. Venkataraman,
Commissioner.

From J. P. Lasrado Esq., I. C. S.
Commissioner, Madura Municipality, Madura.
L Dis. No. 15716 of 1934—A3. Dated 11th December 1934.
MUNICIPAL OFFICE, MADURA,

Sir,

Madura Municipality—Ayurvedic Dispensaries—Maintenance of information called for—furnished. Your letter dated 16-11-34.

The information called for in your letter quoted above is furnished below :—

1. There are two Ayurvedic dispensaries maintained at the cost of this Municipality.

2. & 3. Nil.

4. The two dispensaries are run by the Municipality itself at a cost of about Rs. 10,000/- a year and free medical aid is being given to the citizens attending the dispensaries.

Sd. J. P. Lasrado,
Commissioner.

❀ ❀ ❀ ❀

From M. R. Ry. A. K. Subbaraman Avl., L. M. & S., B. S Sc.
Commissioner-Delegate, Municipal Council, Tinnevelly.
P. C. 4356/34 *Dated 8th March 1935.*
Sir,

Ref : Your letter dated 16—11—34.

I furnish the following information seriatum.

(1) There are 3 Ayurvedic dispensaries within this municipality.

(2) None.

(3) None at present. The council has recently sanctioned a contribution of Rs. 300/- subject to the sanction of Government.

(4) Nil.

Sd. Illegible.
For Commissioner-Delegate.

❀ ❀ ❀ ❀

From H. C. M. Mclaughlin Esq.,
Commissioner, Trichinopoly Municipality.
TRICHINOPOLY.
No. R. C. 11838. *12th December 1934.*
Sir,

Subject:—Particulars connected with the Ayurvedic Institutions within the limits of this Municipality—furnished

Reference:—Your letter of the 16th November 1934.

This Municipality is not maintaining any Ayurvedic Dispensary. There are several Ayurvedic dispensaries maintained by private persons.

Sd. H. C. M. McLaughlin,
COMMISSIONER.



श्रीमान् स्वर्गीय डॉ. वामन गणेश देसाई
एम्. बी. लंडन (ओनर्स); एम्. सी. (लंडन); एल् एम्. एन्ड. एस्. (बम्बई)।
लेखक-भारतीयरसशास्त्र और औषधिसंग्रह ।

From M. R. Ry. C. Balagurunatham Pillai Avl., B. A.
Municipal Commissioner, Bellary.

Dis L. Gc. No. 1867, dated 8th December 1934
11-12-34

Sir,

Ref:—Your letter dated 14-11-34.

I furnish the information required by you on all the points referred to:—

(1) to (4) There are no Ayurvedic institutions in this Municipality. But there is one Ayurvedic Dispensary maintained by this Municipality for the free use of the people and a sum of Rs. 1000/- is spent annually for its up keep and establishment.

Sd. Illegible.
Commissioner.

* * * *

Bombay, Gujrat, Maharasta and Sind.

From Secretary Municipal Office,
Bombay, 21 November 1934.

Dear Sir,

With reference to your letter, dated (Benares) 12th November 1934, addressed to the "Chairman, Municipal Corporation, Bombay". I am directed by His Worship the Mayor of Bombay to inform you that there are no Ayurvedic Institutions maintained by the Municipal Corporation of Bombay. Some time ago the Corporation considered the question of starting Ayurvedic and Unani Dispensaries in the City but for financial reasons as well as for the fact that the Corporation is already maintaining a sufficient number of allopathic dispensaries in the City, the proposal was given up. The Corporation however pay grants-in-aid to a few of the charitable Ayurvedic Institutions in the City and for the current year they have sanctioned grants of Rs. 900 and Rs. 600 each to two Ayurvedic Institutions.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
Municipal Secretary.

Nasik Municipal office.

No. Sani 455 of 1934-35. *Nasik 5th December* 1934.

Sir,

With reference to your letter dated 4th November 1934, I have the honour to supply the information in serial order of your questions as under :—

1. One Municipal Ayurvedic Dispensary.
2. Nil.
3. This querry does not arise.
4. There is a proposal under consideration for starting another Municipal Ayurvedic Dispensary.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible.
Medical Officer of Health.

❀ ❀ ❀ ❀

From B. H. Shringarpure, Esqr., B. A. LL. B., President, City Municipality, Thana,

No P-393 of 1934-35. *Municipal Office,*
Thana the 17h Novr : 1934.

Sir,

With reference to your letter dated 5th Novr : 34, I have to inform you that this Municipality has not opened any Ayurvedic Institution nor does it patronise any.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.

❀ ❀ ❀ ❀

From Dinkerrav Narbheram Desai Esquire, M. A. LL. B. President Broach City Municipality, *BROACH.*

No. 1105 of 1934-35. *Broach 17th November 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated 3rd November 1934, I have to answer your querries as under.

(1) None.
(2) Nil.
(3) Nil.
(4) Nothing.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
President, B. C. M.



श्रीमान् आयुर्वेदाचार्य पं. नागरलाल मोहनलाल पाठक।
प्रधानाध्यापक, उ. पी. आयुर्वेद महाविद्यालय, पाटण (उ. गुजरात)।

From Medical Officer of Health,
Sholapur Municipality.

No. 1749 *Sholapur 20th Dec. 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated 10th November 1934 addressed to the Chairman, Municipal Board, Sholapur, I have the honour to state as under :—

1. Two.
2. Nil.
3. Nil.
4. The opening of an Ayurvedic Dispensary is under contemplation of the Municipality.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible.
Medical Officer of Health.

❀ ❀ ❀ ❀

Municipal Corporation Karachi.

No. G, 6 B/315—34 *20th November 1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter dated 2nd November 1934, I have to inform you that there is no Ayurvedic Institution in Karachi under the control of the Corporation. There are however a number of Private Ayurvedic dispensaries one of which is doing good work for the poor and which until recently was in receipt of a grant-in-aid of Rs. 1,600 per annum from the Corporation. The grant has held to be discontinued on account of a technical difficulty but the question of reviving the grant is under consideration. The Municipality also used to pay 2 scholarships each for the study of Ayurvedic and Unani systems of medicines as follows.

For the 1st and 2nd year	Rs. 30 p. m. each
For the 3rd year	„ 35 „ „
For the 4th year	„ 40 „ „

I enclose a copy of notice of motion from a Municipal councillor which is under consideration of the Corporation.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
Deputy Chief Officer.

Notice of motion dated 22nd September 1934, from Mr. Kazi Khuda Baksha :—

"That the Corporation is pleased to sanction with effect from the next financial year the establishment of 2 Unani and 2 Ayurvedic Dispensaries to be located in such centres as may be selected by the Public Health Committee and the appointment of necessary staff for such dispensaries with qualifications prescribed by the Standing Committee on report from the Public Health Committee. The initial and recurring cost of the dispensaries be provided in the Budget."

Municipal Office,
19th November 1934.

* * * *

From Dowlatram Bulchand Esq., M.A., LL.B. Chief Officer.
Hyderabad (Sind) Municipality.

No. G-1157 of 1934 *13th Nov 1934,*

Sir,

With reference to your letter dated 2nd November 1934, I have the honour to state that this Municipality maintains an Ayurvedic Dispensary of its own at a cost of about Rs. 5600/-per year.

Your most obedient servant,
Sd, Illegible,
Chief Officer.

* * * *

From, The Chief Officer & Engineer,
Shikarpur Municipality.

No. 2263 of 1934 *6th November 34.*

Dear Sir,

With reference to your letter dated 2nd November 1934, I have the honour to reply as under:—

(1) There are four Ayurvedic Institutions.
(2) There is one teaching institution.
(3) No grant is paid to them by the Board.
(4) Nothing is being done by the Board to promote the interests of Ayurvedic.

Yours Faithfully,
Sd. Illegible,
Chief Officer & Engineer.

Central Provinces.

From, Capt. D. G. Karandikar M, B., B. S., D. P. H.,
Medical Officer of Health.
Jubbulpore Municipality.

No. H-117 *Dated Jubbulpore, the 1st November 1934,*

Dear Sir,

With reference to your letter dated 22—10—34 to the Chairman, Municipal Board, I have the honour to inform that :—

(1) Here are three Ayurvedic Institutions run by the Committee.

(2) One of these is a teaching Institution.

(3) The Committee spends about Rs. 4350- p. A. over the Oshadhalaya.

All the Oshdhalayas are very popular and the public in general is appreciating their work.

Yours faithfully,
Sd. D. G. Karandiker.
Medical Officer of Health

❀ ❀ ❀ ❀

From The Secretary,
Municipal Committee, Bilaspur C. P.

No. 827 *Dated the 5th November 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated the 27th Oct. 1934, I have the honour to inform you that only one Ayurvedic Dispensary is being maintained by the Municipal Committee, since January 1931 and the average expenditure is about Rs. 3000- (Three thousand) per year. There is no teaching institution nor the Committee is paying any grant in absence of any recognised Ayurvedic institution.

Your most obedient servant
Sd. Illegible.
Secretary

❀ ❀ ❀ ❀

From Mr. D. P. Shriwastav,
President, M. C. Damoh.

No. 1-Q-34. *Dated, the 31st Oct., 1934.*

Dear Sir.

With reference to your letter dated the 24th October 1934, I give below the information called for therein.

1, There are 6 Ayurvedic Institutions in this town.

2. There are no regular teaching institutions but in two Ayurvedic institutions where there are vaidyas holding Ayurvedic Mahamandal Acharya certificates, some teaching is done in them.
3. No grant is paid to any Ayurvedic institution by this committee.
4. This municipal committee is not doing any thing at present to promote the interest of Ayurvedic but it is contemplating to open one Ayurvedic institution from its fund.

Yours Faithfully,
Sd. Illegible,
President.

From G. R. Trivedi Esqr. B. A. LL. B. President
CHHINDWARA.

No. 927 *Dated 1st. November.*

Sir,

With reference to yours dated 26th October 1934, I have the honour to inform you that the Chhindwara Municipal Board has no Ayurvedic Institutions, to none any grants are paid by the Board. I regret to say that this Board has hitherto done nothing to promote the interest of Ayurveda.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
President

Office of the Secretary, Municipal Committee, Balaghat.
No : 762 *Dated 13-11-34.*

Your letter of the 27th ultimo. There is no Ayurvedic institution under the management of this Committee hence no information can be given.

Sd. H. S. Jhallay
Secretary, M. C.
Balaghat

From, The Secretary, Municipal committee,
Burhanpur.

Dated the 27th october 1934,

Sir,

In reply to your letter dated 23rb October 1934 I have the honour to state as under :—

As there are no Ayurvedic institutions under the management of this committee. I am not in a position to supply you with the required information. Besides the committee has no scheme under its contemplation in this connection.

Sd. Illegible,
Secretary.

❀ ❀ ❀ ❀

From The Secretary M. C. Wardha,

Dear Sir

In reply to letter dated 23-10-36 I beg to state that this Municipal Committee does not maintain an Ayurvedic Dispensary. It however pays an Annual Grant of Rs. 250 to the local Marwari Sewa Samaj Ayurvedic Dispensary.

Sd. Bhadyala
Secry. M. C. Wardha.

❀ ❀ ❀ ❀

From Chief Officer, M. B. Salari.

Dear Sir,

I beg to return herewith your letter with thanks.

The following information is supplied as desired :—

1 & 2. There is only one Ayurvedic Institution in this city which imparts Ayurvedic education.

3. This Municipality pays an annual grant of Rs. 300 to the Ayurvedic Institution.

4. Encouragement is given to the Ayurvedic Institution by paying it a grant of Rs. 300 per year.

Sd. Illegible
Chief Officer
16-11-34

From Secretary M. Committee, Betul.

Dear Sir,

In reply to your letter dated 26. 10. 34. I beg to state that there are no Ayurvedic Institution under this Municipality.

Sd. Illegible.
H. Secry. M. C. Betul

❋ ❋ ❋ ❋

Office of the President Municipal Committee, Bhandara.

No. 1051. *Dated the 20th Dec. 34*

With reference to your letter dated 27-10-34, I have to inform you that there is no Ayurvedic Institution in my Committee nor there are any run by private funds. There are 14 or 15 private practicing Physicians.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
President.

❋ ❋ ❋ ❋

Punjab

From Secretary, Municipal Committee,
Simla.

No. 148 H *Dated 12-1-1935*

Sir,

With reference to your letter dated 20th October 1934, I am directed to inform you that there are two combined Unani and Ayurvedic dispensaries and one Ayurvedic dispensary in this Municipality. None of these however is a teaching institution. The total amount spent for medicines on these five dispensaries during the year 1933-34 was Rs. 2,599- which is likely to be exceeded next year owing to their popularity.

I have etc.,
Sd. S. Douman
Secretary.

From the Municipal Medical Officer of Health,
LAHORE.

No. 1251 H *Dated 19-12-1934.*

Sir,

With reference to your letter, dated the 18th October 1934, to the Chairman, Municipal Board, Lahore, I have the honour to give below the information asked for therein :—

1. There are no Ayurvedic dispensaries maintained by this Committee.
2. None.
3. None. But the Committee pay Rs. 500 as an Annual grant to each of the Anjuman Himayat Islam, Tibbia College and D. A. V. College which are private teaching institutions.
4. The Committee have sanctioned Rs. 10,000 for opening a Unani and an Ayurvedic dispensaries in Lahore and the provision for the same has been made in the Annual budget for the year 1935-36.

I have etc.,
Sd. Illegible
Municipal Medical Officer of Health, Lahore

❀ ❀ ❀ ❀

From L. Wazir Chand Sikka B. A. (Hons), LL. B., P. C. S.,
Secretary, Municipal Committee, Rawalpindi.

No. 1701—M. *Dated 1-11-34*

Dear Sir,

In reply to your letter dated 19th October 1934 I have the honour to inform you that we do not maintain any Ayurved Institution.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
Secretary.

❀ ❀ ❀ ❀

From Dr. C. L. Sahni, D. P. H.
Municipal Medical Officer of Health, Sialkot City.

No. 725 *Dated the 15-11-194.*

Sir,

With reference to your Circular letter dated the 19th ; October, 1934, to the address of Chairman, Municipal Committee, Sialkot, I have the honour to inform you that there is no Ayurvedic Institution in this town, and to promote the interest of Ayurveda the Municipal Committee has appointed a Vaid who is paid Rs. 30 per mensum from the Committee as detailed below:—

1—Pay.. .... Rs. 20 p. m.
2—Rent of Dispensary. Rs. 3
3—Cost of medicines Rs. 7
Total Rs. 30 p. m.

Your most obedient servant,
Sd. Illigible D. P. H.
Municipal Medical Officer of Health.

❀ ❀ ❀ ❀

From, The Chairman.
Municipality Board, Dera Ismail Khan.

Dear Sir,

The reply to your querries dated 27-11-34 is that there is no Ayurvedic Institution in this Municipality Committee. The reply to other questions (2-4) does not arise.

Yours Sincerely,
Sd. Kazi Ahmad.
President. 10. 12. 34.

❀ ❀ ❀ ❀

From The Chairman, M. C. Kohet

Dear Sir,

The reply to your querries dated 24-11-34 are as follows :—

There are no Ayurvedic Institution in the Municipality and no grants are paid in this account.

There are however private practitioners for Ayurvedic treatment but there is no teaching Institution.

Yours Sincerely,
Sd. Illegible.

❀ ❀ ❀ ❀

The Khushdil Mag. Amritsar.

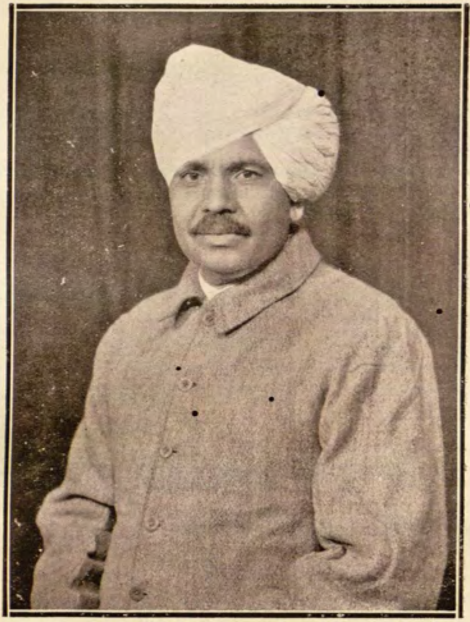
No. 173/ E/2 *Dated 20-11-1934.*

Sir,

Reference your letter dated 6th inst. I have the pleasure to inform you that the Municipal Vedic & Unani dispensaries were started on 16th Dec. 1930.

(2) In the year 1933-34 in all the five Vedic & Unani dispensaries 83210 patients were treated and out of them there proportion was as following.

Male.	Female	Children
28505.	22528.	32177



श्रीमान् पं. विश्वेश्वरदयालु स्वामी।

अर्श चिकित्सक, अजमेर।

आपके परिवारमें ५०० वर्षसे अर्श, भगन्दरादि रोगोंकी विशेष चिकित्सा प्रचलित है।

3. The Municipal Committee of Amritsar has spent Rs. 10433 this year. No income can be derived out of them, as they are purely free dispensaries.

The other dispensaries have not prepared there report yet & so I am unable to send anything regarding them.

Any service
Ever your
Sd. Illegible

United Province

From The Chairman,
District Board, Lucknow.

No. 8, XII-1 (32-33) *Dated October 10, 1934.*

Dear Sir,

I am to acknowledge the receipt of your letter dated October 5, 1934, and to say that this Board maintains three Ayurvedic dispensaries at important places in the district and spends annually Rs. 4000/- on them. It is also giving grant to two other Ayurvedic dispensaries to the amount of Rs. 390/- per annum, all these dispensaries provide medical relief to rural masses free of cost and near their homes. The number of patients so treated during the financial year 1933-34 was 52949.

There are no teaching institutions under the management of the Board nor is any grant given by the Board to any such institution.

This Board is doing all what it can to promote the interest of Ayurveda.

Yours faithfully,
Brahma Datt Bajpai. M. L. C.
Chairman,

From District Board office Sitapur.

D. O. No 604 *November 5, 1934.*

Dear Sir,

With reference to your note dated October 9, 1934 asking for certain information regarding Ayurvedic institutions I have to note below the information needed by you and to say that we are gladly willing to co-operate in the matter.

Yousr faithfully
Sd. Illegible,
Secretary.

1. There is one Ayurvedic Dispensary in the district directly maintained by the Board.
2. There is no teaching institution.
3. No grant is paid by the Board to any teaching institution but a grant of Rs 5/- is given to one Ayushdhalaya.
4. The Board has every sympathy with these institutions and is ready to help them in as much as it is possible.

From The Chairman, District Board, Etah.

No 675 *dated the 16th November 1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter dated 16th October 1934, I have the honour to inform you that 16 Ayurvedic and 3 Unani Dispensaries are maintained by this Board and Rs 4.700/- have been provided to be spent on them this year.

Yours faithfully.
Sd. Illegible,
For Chairman.

❁ ❁ ❁ ❁

From The Chairman. District Board Agra U.P.

No 548 *Dated Agra, the 22-11-1934.*

Dear Sir,

I am furnishing the information as asked for in your letter dated the 7th October 34.

1. There are 7 ayurvedic dispensaries maintained by the Board and 19 dispensaries aided by the Board.
2. There is no teaching institution in this district.
3. The Board is paying Rs. 2036/- annually as grant-in-aid to ayurvedic dispensaries.

This Board is doing its best to promote the interest of ayurved by maintaining a ayurvedic dispensaries and giving grant-in-aid to them.

Yours faithfully,
Sd. Illegible,
for chairman.

From, The Chairman,
District Board, Aligarh

Dated 26—10—34.

Dear Sir,

Reply to your letter of 16—10—34 is nil in this District Board.

Yours truly
Sd. Illegible.
Secretary D. B.

❀ ❀ ❀ ❀

District Board Office,
Bijnor, 31-10-34.

Dear Sir,

I am to inform you in reply to your P. C. of 14-10-34 reg. your certain, querries

1. There are 10 Ayurvedic and Unani Institutions.
2. There are no teaching institutions.
3. Four Hakims and Vaids are paid @ Rs 10— P. M. each, five Vaids @ 5— P. M. each and one @ 4— P. M. as grant-in-aid.
4. The Board is giving aid to Vajds for free treatment of the Public.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
for Chairman.

❀ ❀ ❀ ❀

From, The Chairman, District Board,
Saharanpur.

Dear Sir,

With reference to your letter dated 31—10—34 the required information is noted below :—

1. There are at present 5 aided Ayurvedic Institutions under this Board.
2. Two of these are teaching institutions as well.
3. The Board pays a grant-in-aid of Rs. 15- P. M. each.
4. To promote the interest of Ayurveda the Board has sanctioned aids to such deserving institutions.

Yours truly,
Sd. Illegible.
Chairman D. B.
25-10-34.

From, the District Board,
Muzaffarpur.

Dear Sir,

Ref : Your letter dt. 11th Oct. 34. I beg to say that there are no Ayurvedic Institutions under this Board, sometime back an aid was given to some of the Unani or Ayurvedic Aushdhalias in this district but that System is stopped for long. Hence the reply is in the negative.

Yours truly,
Sd. Illegible.
Secretary 20-10-34.

❀ ❀ ❀ ❀

From, The Chairman
District Board, Dehra Dun.

No. 521 *Dated the 23. 10. 1934.*

Sir,

I am in receipt of your letter dated the 11th October 1934, and wish to inform you that the Board has every sympathy with the promotion of Aurveda, but stringency of funds has always stood in our way. Inspite of all this difficulty, we have recently stablished one ayurvedic dispensary at Ranipokhri village which is reported to be doing good work.

2. There is no teaching institution under the Board nor the Board can assist any institution out of its funds at present.

Your most obedient servant
Sd. Illegible,
Secretary.

❀ ❀ ❀ ❀

From, The Chairman District Board, Jhansi.

No. 743-iv-59-4 *Dated Jhansi, the 28. 11. 1934.*

Dear Sir,

In reply to your query dated October 7, 1934 I beg to say as follows:—

(1) This board is maintaining six ayurvedic, one unani and one aided unani dispensaries,

(2) None,

(3) The board spent Rs. 5346--in the year 1933-34 as per details below:—

Rs. 4451—on the six ayurvedic dispensaries,
Rs. 715—on the unani dispensary and.
Rs. 180—as grant-in-aid to a unani dispensary in the district.

(4) This board has increased the number of Ayurvedic dispensaries in the district in comparison with allopathic ones, and is distributing medicines free of charge on an increased scale every year and has also provided a few instruments in each such dispensary. It has in view to increase the number still more so that every possible part of the district be benefitted by this system.

No doubt the annual grant of Rs. 200—given to this board by the Board of Indian Medicines is too inadequate, and as such further progress is a bit difficult.

Yours faithfully,
Sd. Illegible,
Secretary for chairman.

* * * *

From The Chairman District Board, Fatehpur.

No. 476—xvii—47 *Dated 4—12—34*

Sir,

With reference to your letter Dated October 8, 1934 I have the honour to furnish as below the information required therein:—

1. There are seven (7) Ayurvedic Institutions in this Board.
2. None of them is a teaching institution.
3. This Board pays nearly the whole cost of their maintenance.
4. The measures taken to promote their interests are:—

a—Proposals for opening a number of such institutions have been sanctioned by the Board.

b—A supervisor has been appointed.

c—They are watched through inspections.

Your most obedient servant,
Sd. A. M. Panday.
Chairman.

* * * *

From, The Chairman, District Board,
Rae Bareilly,

Dear Sir,

With reference to your letter Dt. 8. 10. 34 I beg to reply as follows :—

1. Only two.
2. None.

3 and 4. One Vaid is paid Rs. 30/- as pay and Rs. 15/- as cost of medicines for free distribution to poor and needy patients while the other gets a pay of Rs. 20- P. M. plus Rs. 10- a month for free distribution of medicines,

Yours truly,
Sd. Illegible.
Secretary, 28-10-34

From, The Chairman, District Board,
Partapgarh.

जनाब आली,

२०००) सालाना चन्दा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड परतापगढ़ रियासत से मिलता है। वी० एन० मेहता विद्यालय पर खर्च किया जाता है।

Sd. Illegible.
30-11-34.

❀ ❀ ❀ ❀

District Board Office,
Fyzabad, 5th. November, 34.

Dear Sir,

The following informations regarding Ayurvedic dispensaries which are wholly maintained or aided by this Board are furnished as desired in your D. O. Letter of the 8th ultimo.

Yours faithfully,
Sd. Illegible,
Secretary

1. There are only 3 Ayurvedic dispensaries in this Board.
2. None of these are teaching institutions.
3. Two of them are wholly maintained by this Board and one is given Rs. 20/- as an aid.
4. These dispensaries are provided with medicines for free distribution and are regularly inspected and accounts checked by the Inspecting Officers.

❀ ❀ ❀ ❀

From, P. N. Singh, Esq., Secretary,
District Board, SULTANPUR.

No. $\frac{327}{24\text{-}27\text{-}1}$ *Dated the October 12. 1934.*

Sir,

With reference to your enquiry dated 8. 10. 34, I have the honour to say that there are no Ayurvedic institutions whether teaching or medical maintained by this Board. We have appointed a vaid at Rs. 50 p. m. I may further add that there is no institution of this kind in the district.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible,
Secretary.

From, The Chairman,
District Board, Azamgarh,

Dear Sir,

With reference to your letter No. nil Dt. 8-10-34, I beg to say that no Ayurvedic Institutions are either maintained, aided or supervised by this Board.

Yours Faithfully,
Sd. Illegible,
for Chairman.

❀ ❀ ❀ ❀

From Raja Harpal Singh Saheb, Chairman,
District Board. Jaunpur.

No, 543–XVII–II 1–43 *Dated the Oct 30, 1934*

Sir.

With reference to your querry of October 7, 1934, I have the honour to inform you that the Jaunpur District Board entertains 4 Vaids at the above noted places. They have been given one menial servant each and are allowed fixed monthly charges for medicines. None of them is a teaching institution.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible,
for Chairman.

❀ ❀ ❀ ❀

From, Vireshwarnath Roy B. A., LL. B., M. R. A. S.
Senior Advocate & Chairman,
District Board, Ghazipur, U. P.

No. 311, *Dated 12-10-1934.*

Sir,

In reply to your letter of 7. 10. 34, I have the honour to inform you that this Board has no Ayurvedic institutions under it's direct control & management. But with a view to improve the indigenous system of medicine, the Board has been pleased to award a grant-in-aid of Rs 10/. P. M. to each of the 14 Ayurvedic & Unani private dispensaries, who have applied for help from the Board.

None of them appear to be teaching institutions.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible,
Secretary, for Chairman.

District Board, Office,
BALLIA
22. 10. 1934.

Dear Sir,

I am in receipt of your letter dated the 7th October, 1934, regarding silver Jubilee of the All India Ayurved Mahamandal. The information asked for you are given below :—

1. There are 8 Ayurvedic Aushadhalyas in this District, out of which three are maintained and the rest aided by the district Board.
2. There is no District Board teaching Institution.
3. In District Board Aushadhalyas, the entire cost viz. pay of Vaidyas Compounders, cost of medicines etc. are paid by the District Board. In aided ones, the Board gives aid from 5 to 15 P. M. for vaidya and Rs. 5 per institution for medicines. The total cost incurred by the Board during 1933-34 was Rs. 2815.
4. The vaidyas are required to prepare medicines at their Aushadhalyas so that hey may get actual experience. Besides we annually hold vaidya conference and exhibition to give incentive to the vaidya and public.

Yours Truly,
Sd. Illegible.
Chairman

* * * *

From, The Chairman,
District Board, Gorakhpur,

No. 757 *Dated 2/XI/1934.*

Dear Sir,

Reply to your letter dated 7th October. 1934, is noted below in seriatum :—

1. Six Ayurvedic dispensaries (4 in Sardar and 2 in Deoria).
2. None.
3. Rs. 37-8- p. m. each.
4. Nil.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
for Chairman,

From, The Chairman,
District Board, Basti, U. P.

No. 478 *Dated 9–11–1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter dated 8th October 1934, I have the honour to give below the information required therein.

1. There are 3 Ayurvedic and one Unani Aushdhalayas in this District.
2. No teaching is imparted in any of these institutions.
3. All Aushdhalyas are maintained by the Board, and it meets their full cost which, as provided in the current years budget, is Rs. 5016- p. a.
4. Though the Board's financial condition is not satisfactory yet it tries to effect an expansion. It has accordingly arranged to provide Rs. 30- p. m. this year for giving grant-in-aid to Ayurvedic and one Unani Aushdhalyas in the district.
5. There is also a Rasayanshala at sadar where medicines are prepared and stocked for outlying Aushdhalyas.
6. The Board this year is arranging to provide a new building for one of its Aushdhalyas.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
For Chairman.

From, The Chairman, District Board,
Mirzapur.

Dated 19. 10. 34.

Dear Sir,

With reference to your letter of 7th October 34 I beg to say that only one Ayurvedic dispensary has recently been opened at Ramgarh in Robertsganj Tahsil of this district. It is not a teaching institution. A vaid has been appointed there at Rs. 25 and Rs. 100 annually is given by the Board for medicines etc.

Yours truly,
Sd. Illegible.
Secry. D. B.

Bihar

From, Babu Parmeshwardhari Sinha,
Vice-Chairman, District Board, Patna

No. 1649 *Dated the 27th October 1934.*

Sir,

In reply to your letter dated the 16th October 1934, I have the honour to inform you as follows:—

(1) Patna District Board maintains nine Ayurvedic Dispensaries (2 Board managed and 7 subsidized).

(2) None of the Ayurvedic Dispensaries under this Board is a teaching institution.

(3) A sum of Rs. 510-annually is paid to each subsidized dispensary.

Your most obedient servant.
Sd. Illegible,
Vice—Chairman.

❀ ❀ ❀ ❀

From, Babu Bijay Singh, M.A.B.L., Vice-Chairman
District Board, Bhagalpur.

No. 162 *Dated the 19—1—1935.*

Dear Sir,

In response to your letter dated 17—10—34 on the subject of furnishing with certain informations relating to Ayurved, I have the honour to reply as follows :—

Para 2 of your letter :—

(1) Two Ayurvedic Dispensaries.
(a) One at Shahkund directly managed by D. B.
(b) One at Nirmali under the Union Committee.

(2) None are teaching institutions.

(3) (a) Grant of Rs. 800- is paid to (b) annually.
(b) Approximately Rs. 2000- is spent in case of (a) annually.

(4) Nothing is being done to promote the interest of Ayurved.

Yours faithfully
Sd. Illegible,
Vice-Chairman.

From, Babu Padmanabh Prasad, Vice-Chairman
Darbhanga District Board, Laheriasarai.

No. 9848 *Dated the 24th November 1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter No. Nil dated the 10th October, 1934, I beg to send herewith the following informations as desired in your letter under reference.

1. There are 5 Ayurvedic dispensaries under this Board.
2. None of them are teaching institutions.
3. All expenses in connection with the upkeep of the dispensaries are met by the Board. There is one Ayurvedic dispensary at Harhacha to which a contribution of Rs. 30 per month is paid.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
for Vice-Chairman.

From the Vice Chairman,
District Board, Muzaffarpur.

No. 6960 *Dated, the 7th November 34.*

Sir,

With reference to your enquiry dated the 16th October 1934 I have the honour to inform you as follows :—

(1) There are 5 Ayurvedic institutions under this Board.
(2) There is no teaching institutions here.
(3) They are managed institution and the entire cost is met by the Board.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible.
Vice-Chairman.

From, S. Rafiuddin Ahmad Rizvi Esqr., B. A. LL. B.,
Vice-Chairman.District Board, MONGHYR.

No. 4688 L. *Dated the 3rd November 1634.*

Sir,

With reference to your letter dated 17. 10. 34, I have the honour to inform you that there are 5 subsidised dispensaries under this Board getting medicines worth Rs. 500 a year and that an allowance of Rs. 35 p. m. is allowed to each of the Vaidyas of the dispensaries.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible,
Vice-Chairman D. B.

From, Samuel Purti Esqr. Vice-Chairman.
District Board Ranchi.

No. 6034 *Dated the 9-11-1934.*

Sir,

I have the honour to inform you that there is no Ayurved dispensary under the management of this Board.

Your most obedient servant,
Sd. Samuel Purti.
Vice-Chairman

From, The Chairman,
District Board, Cuttuck.

No. 5679 *Dated the 31st October 1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter dated 17th October 1934, I beg to furnish you following informations as required :—

(1) This Board has at present only one Ayurvedic Dispensary at Bijoynagar.
(2) There are no teaching institutions.
(3) This dispensary is entirely financed by the Board.
(4) The Board makes a subsidy towards a Kaviraj at Rambag Pallimangal Samiti and is going to establish another dispensary next year.

Yours faithfully,
Sd. Illegible
Chairman.

Bengal

From, Babu Charu Chandra Paul, Vice-Chairman
District Board, Howrah.

No. 781 E. *Dated 24th November 1934.*

Sir,

With reference to your letter, dated 30. 10. 34. received in this office on 5. 11. 34, I have the honour to furnish below the informations asked for therein.

Item No. 1 ⎫
" " 2 ⎬ nil.
" " 3 ⎭

" " 4—2 stipends are paid to the students reading in the recognised Ayurvedic Colleges in Calcutta to promote the interest of Ayurved.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible.
Vice-Chairman.

Balasore District Board's Office.

From, Rai Saheb Prafulla Chandra Patnaik, Vice-Chairman District Board Balasore.

No. 4200 *Dated the 16. 11. 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated the 18th October 1934, I have the honour to state that there is a subsidised Kaviraji dispensary under this Board which receives a subsidy of Rs. 25 p. m. There is no other institution either for teaching or treatment.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible.
Vice-Chairman.

* * * *

From, Dwijendra Nath Mookerji Esqr., M. A. B. L., Secretary District Board, 24-Parganas, Alipore.

No, 8620 D. B. *Dated, the 6-12-1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter dated 30th October, 1934, I beg to inform you that there are no Ayurveda Institution under this Board. A stipend of Rs. 10 per month is granted to a student of the rural area of this district tenable at the Astanga Ayurvedic College. One Kaviraj has been appointed for treating patients free in an Ayurvedic Charitable dispensary at Arbelia with a centre at Bagjola.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.

* * * *

From, Rai Surendra Narayan Sinha Bahadur, Chairman, District Board, Murshidabad.

Dated 20 January, 1935.

Dear Sir,

I am in receipt of your favour of the 31st October in which you have enquired for certain informations regarding Ayurved system of treatment obtaining in this district.

In reply, I send answers to your queries ad-seriatim.

(1) There is only one institution which receives a grant-in-aid from the Board.

(2) None.

(3) Rs. 40/- per month.

(4) Nothing except making the aforesaid contribution.

Sincerely yours
Sd. Illegible.

Birbhum District Board's Office.

No. 5954 *Dated, Suri, The 13th November 1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter dated 28. 10. 34, I beg to inform you that there are no Ayurvedic institutions under this Board, but it grants a scholarship of Rs. 10 p. m. for training a student in Ayurvedic College at Calcutta.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
Vice-Chairman

❀ ❀ ❀ ❀

From Rai Nagendra Nath Mukerji Bahadur B.L. Chairman District Board Nadia.

No. 6955 *Dated, Krishnagar, the 17th Nov. 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated the 30th October 1934 asking for certain informations regarding Ayurvedic Institutions in this district, I have the honour to inform you that this Board maintains only one Ayurvedic dispensary which has no teaching branch, at an annual cost of Rs. 600. Moreover the Board is paying a stipend of Rs. 15 per month to the Baidyasastra Pith at Calcutta.

Your most obedient servant
Sd. Illegible,
Chairman.

❀ ❀ ❀ ❀

From, K. Shahabuddin, Esq., Chairman, District Board Dacca.

No. 8052 *Dated the 22-11-1934*

Sir,

With reference to your letter of the 31st ultimo, I have the honour to inform you that nothing of the kind referred to by you is in this Board except that only an Ayurvedic charitable dispensary is maintained by this Board at an annual expenditure of Rs. 680.

Your most obedient servant,
K. Shahabuddin.
Chairman.

From, The Vice-Chairman,
District Board, Jessore.

No. 1434 m. *Dated 30. 11. 34.*

Sir,

With reference to your letter of the 30. 10. 34. I have the honour to inform you as follows :—

There is only one Ayurvedic Dispensary maintained by Jessore District Board. There is no teaching institution under it. The District Board spends Rs. 1823 a year for its maintenance.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible.
Vice-Chairman.

From, Moulvi Shamsur Rahman, B. L., Vice-Chairman.
District Board, Khulna.

No. 8011 *Dated the 19. 11. 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated 30-11-34, I have the honour to say:--

1. That there are two regular Ayurvedic Charitable Dispensaries and one Subsidised Dispensary under this Board.

2. That these are not teaching institutions as far as we know.

3. That the District Board bears entire cost of Rs. 1135 and 1421 for the maintenance of two regular Ayurvedic Dispensaries and pays a grant of Rs. 180—per annum to the Subsidised one.

4. That the District Board promotes interest of Ayurveda by appointing Kavirajes when needed.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible.
Vice-Chairman.

Office of the District Board of Midnapur.

No. 1313 M. *Dated the 28 XI 34.*

Sir,

With reference to your letter no. nil dt. 28. 10. 34. I am directed to inform you that we have no Ayurvedic Institutions under this board neither do we subsidise any with District Board grants.

I have etc.
Sd. B. B. Roy
Secretary.

From Chairman, Local Board, Dhubri.

No. 2455. *Dated, the 20th November, 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated the 2nd November 1934, I have the honour to inform you that there are no Ayurvedic Institutions under this Board.

Yours faithfuylly
Chairman.

❀ ❀ ❀ ❀

Andra-Dravid

From, The President, District Board. Kistna
Chilakalapudi.

No. 834 pel. *Dated 24. 11. 34.*

Sir,

I have the honour to furnish hereunder the information wanted by you in siriatum.

1. There are 16 Ayurvedic institutions under this District Board.
2. None.
3. An annual subsidy of Rs. 500 in some cases and in respect of others remuneration is being paid in the shape of monthly salaries ranging from Rs. 40 to 70.
4. The Board is contemplating to establish additional Ayurvedic medical institutions in the rural areas in the district.

By order,
Secretary.

❀ ❀ ❀ ❀

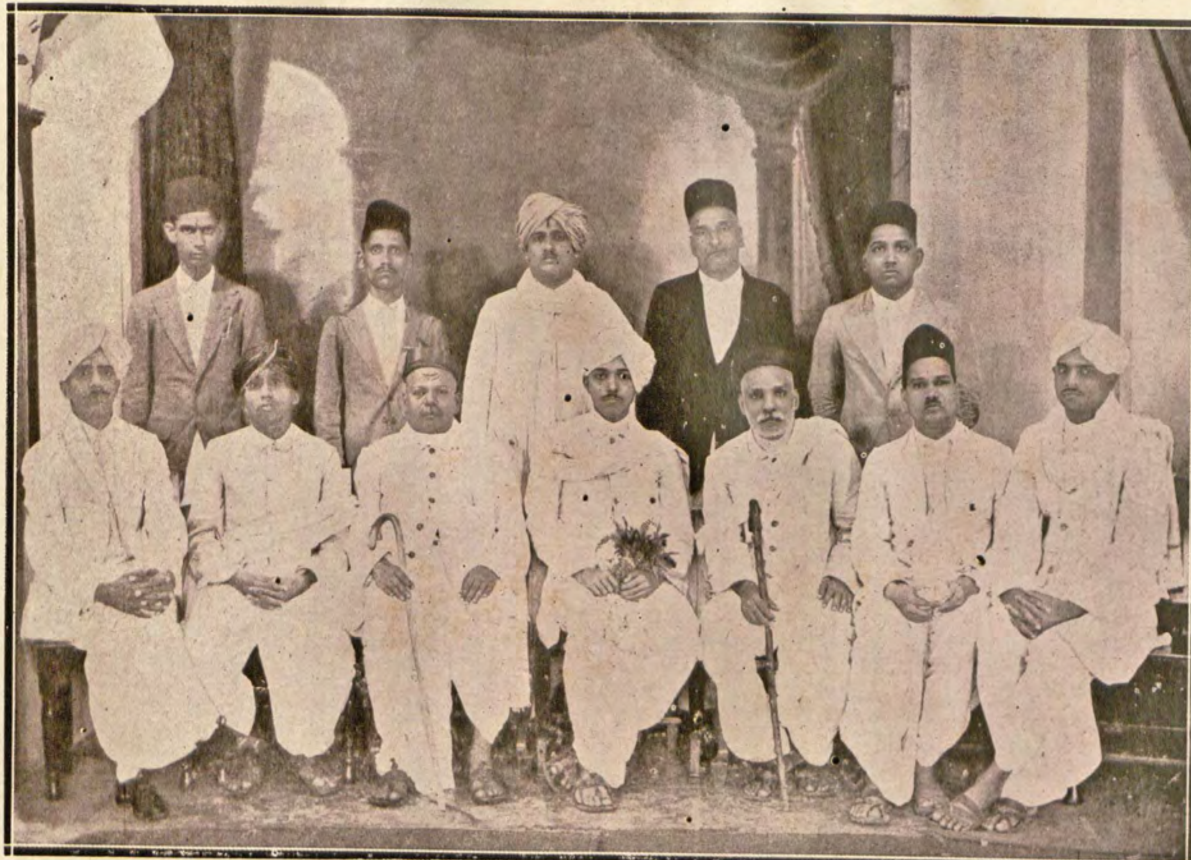
From, Janab C. Abdul Hakim Sahib Bahadur,
President Distict Board, North Arcot.

D. Dis. No. 257/ of 1934. *Dated 26-12-1934.*

Sir,

I have the honour to furnish below the information asked for in your letter dated 15th November 1934 which was received in this office only on the 14th December 1934 i. e. a month hence and I therefore feel sorry I was not able to reply as desired by you.

1. There are 6 Ayurvedic Rural Institutions in this District.
2. None of them are teaching institutions.



अध्यक्ष और अध्यापक मंडळ महाराष्ट्र आयुर्वेद विद्यालय बम्बई (सन १९३२)। स्थापना शके १८५४।

3. 56% of the Government subsidy towards the pay of the Rural Medical Practitioner besides meeting the entire cost of medicine etc. from the Board's funds.
4. Nothing has or is being done to promote the interest of Ayurveda for want of funds.

Your most obedient servant,
For President.

❁ ❁ ❁ ❁

From, President, District Board, South Kanara,
Mangalore.

No. 12729-A4. 34 *Dated 8-12-1934.*

Sir,

Information required in your above letter is furnished below :—

1. There are 7 Ayurvedic Rural dispensaries in the District.
2. Nil.
3. (a) A contribution of Rs 360—each is paid by the District Board towards the cost of medicines for 4 rural dispensaries.

(b) A contribution of Rs 500—is paid towards the pay of the Medical officer and 360—for the cost of medicines in respect of 1 institution.

(c) The question of payment of contribution towards the pay and cost of medicines for one dispensary is under correspondence.

(d) Cost of medicines for the remaining one dispensary is met from the funds of a Sanga of Mundaje.

The subsidy at Rs 500—per annum in the case of Medical officers under (a) and (c) is met from Provincial funds.

Sd. Illegible.
For President.

❁ ❁ ❁ ❁

From, The Chairman, District Board,
Mudura.

Dated 29-11-34.

Dear Sir,

Retransmitted with the information that there are no Ayurvedic dispensaries under the control of this District Board at present except one Siddha Dispensary at Vallalore.

Sd. Illegible.
For President.
D. B. Madura.

From, The Chairman, District Board,
Salem.

Dated 12-12-34.

Dear Sir,

Retransmitted with the information that there is no Ayurvedic Institution in this D. B. and the question of replying to other querries does not arise.

Sd. Illegible,
for President.

❀ ❀ ❀ ❀

From, The President, District Board, Malabar.

Ref. on C. No. 951 D. 1934. *Dated 5-12-1934.*

Sir,

The information required by you is given below :—

1. There are 5 Ayurvedic dispensaries under this Board.
2. There is no teaching institution.
3. Two of the institutions are rural dispensaries and are given a subsidy of Rs. 500 each per annum by Government under the scheme of rural medical relief. The medical officer of one of the remaining three dispensaries is paid by this Board a salary of Rs. 40 p. m. in the scale of pay of Rs 40-3 B. 70 and the other two medical officers, as they are not registered practitioners, are each paid Rs. 25 p. m. for the present. In addition to this, medicines to the value of Rs. 360 per annum are also given to each of these dispensaries at the cost of this Board.
4. Two stipends of Rs. 15 and Rs. 25 each p. m. are awarded by the Board to two poor deserving pupils belonging to the District who undergo training in the Government school of Indian Medicine, Madras.

Your obedient servant,
Sd. Illegible.
For President.

❀ ❀ ❀ ❀

From, The President, District Board, The Nilgiris,
Ootacamund.

L. Dis. ENo. 15742—34. *Dated 6th Desr. 1934.*

Sir,

No Ayurvedic Institution is maintained by this Board.

(Sd.) H.B. Ari Gowder,
President.

The chairman, District Board, Nellore
No. C. No. 2360 Gl. D. B. of 34 D. 1. 12. 1934.
Dear Sir,
Reply to your letter Dt. 14 Nov. 1934 is in the negative.
Yours truly,
Sd. Illegible.

Bombay, Gujrat, Maharastra and Sind.

From, The President,
District Local Board, Kolaba.
Alibag, 13 December 1934.
Sir,
With reference to your letter dated 12-11-34 I have the honour to supply the following information para by para :—

(1) There are two Ayurvedic Dispensaries of this Board.

(2) None.

(3) The Dispensaries are fully maintained by the Board at an approximate cost of Rs 2000.—Per year.

(4) No special steps have been taken in this direction except opening of these two dispensaries.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible.
Chief officer.

From, The President,
District Local Board, Ahmedabad.
No. 1373 of 1934. 1935, *Dated 15 November 1934.*
Dear Sir,
In reply to your letter of the 3rd November 1934. I have to state as under:—

(1) The Ayurvedic Dispensarise are run by the Board.

(2) There are no teaching institutions of Ayurved under theBoard.

(3) The whole cost of these Dispensaries is defrayed by the Board. The estimated cost of each dispensary is from Rs, 1,000 to Rs. 1, 200—per annum.

(4) The Board is unable to do anything further in the direction of promoting interest in Ayurved beyond the present responsibility of bearing the whole burden of the cost of these dispensaries.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
President.

From, The Chairman,
District School Board, Broach.

No. 1513. *3rd November, 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated 3rd November, 1934, I have the honour to state that there is no Ayurvedic Institution under the management and control of this Board.

Your most obedient servant.
Chairman.

❀ ❀ ❀ ❀

From, Sardar Rao Bahadur Bhimbhai R. Naik, M.L.C.
President, District Local Board, Surat,

No. D.S.P. 147 of 1934. *Dated the 20 November 1934.*

Sir,

With reference to your letter of the 4th October 1934, receined on 15-11-34 I have the honour to inform you that there are no Ayurvedic Institutions under the District Local Board, Surat.

Your most obedient servant
Sd. Illegible,
President.

❀ ❀ ❀ ❀

From, The President,
District Local Board, Poona.

No. G. C. 2128 *Dated 21st November 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated 4th November 1934, on the above subject, I have honour to state that the District Local Board, Poona, has not maintained any Ayurvedic Teaching Institutions but that it maintains six Ayurvedic dispensaries in the District at an average cost of Rs. 9,000 per year.

Your most obedient servant,
Sd. B. R. Ghosh.
For President.



श्रीमान् वैद्यराज नगीनदास छगनलाल जी
संस्थापक—ऊँझा आयुर्वेदिक फार्मेसी, अहमदाबाद ।

From, The President,
District Local Board, Satara.

No. P.H.D 499- 2-2-35 of 1934-35. *Dated 21st November 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated 4th November 1934, I have the honour to supply with the following information:—

1. There are six Ayurvedic dispensaries in the District.
2. None of them is a teaching institution, but the Board pays Rs. 400 every year as grant to the Aryangla Vaidyak Vidyalay, Satara, which is a teaching institution.
3. The Six Ayurvedic dispensaries are wholly maintained by the Board.

Your most obedient servant,
President.

❀ ❀ ❀ ❀

From, the President,
District Local Board, Ratnagiri.

No. 790 of 1934 *26th November 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated 12-11-34, I have the honour to state that the Board has maintained two Ayurvedic dispensaries in this district with an annual grant of Rs. 200 to each. The Board is in favour of taking interest in Ayurvedic Institutions but so far it has not been able to do anything more for want of funds.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible,
Secretary,

❀ ❀ ❀ ❀

Office of the District School Board,
DHARWAR.

No. 2817 of 1934. *Dated 24-11-1934.*

Sir,

With reference to your letter dated 11-11-1934, I have the honour to state that there are no Ayurvedic Institutions under the Board and hence the information asked for has not been supplied.

Your most obedient servant,
for Chairman.

From the President,
Dist. Local Board, Bijapur.

No. 2419 of 1934–35 *14th Decr. 1934.*

Sir,

With reference to your letter of 11-11-1934, I have the honour to state that this Board has not opened any Ayurvedic Dispensary nor any grant is paid to such a dispensary. I regret therefore that the information asked for cannot be supplied.

Your most obedient servant
President.

❁ ❁ ❁ ❁

From, Chief Officer,
District Local Board, Hyderabad.

No. 1933 of 1934. *Dated 5 January 1935.*

Dear Sir,

With reference to your letter of the 2nd November 1935, I have the honour to inform you as under :—

1. There is only one Ayurvedic dispensary within the jurisdiction of this board.
2. To my knowledge, there are no such teaching institutions.
3. The Board pays an annual grant of Rs. 600.
4. No particular steps for the promotion of Ayurvedic treatment have so far been taken by the Board. It has been left to private venture.

Your most obedient servant,
Chief Officer.

❁ ❁ ❁ ❁

From, The Chief Officer,
District Local Board, Karachi.

No. 5206 of 1934. *Dated 17-11-1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter dated the 2nd instant regarding celeberation of the Silver Jubilee of the Mahamandal and requesting for supply of information in connection with Ayurvedic Institutions, I am to inform you that neither any Ayurvedic Institution is maintained by this Board nor is any grant paid to any such Institution in this District.

Yours faithfully,
Sd. Illegible,
Chief officer.

Punjab

From, The Chairman,
District Board, Delhi.

Dated 25-10-34.

Dear Sir,

I beg to let you know that reply to your letter Dt. 18-10-34 is in the negative.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.

❀ ❀ ❀ ❀

From, The Chairman,
District Board, Lahore.

No. 7426. *Dt. 22-10-1934.*

Dear Sir,

With reference to your letter Dt. 18. 10. 34. I beg to state that the reply is in the negative.

Yours truly,
Sd. Illegible.

❀ ❀ ❀ ❀

From, The Chairman, District Board,
Gujranwala.

Dated 29-10-34.

Dear Sir,

In reply to your letter dated 21-10-34 I beg to state that there are no Ayurvedic Institutions in this D. Board.

Yours faithfully,
Sd. Illegible,
Secretary.

❀ ❀ ❀ ❀

From, The Chairman, District Board,
Rawalpindi.

No. 937. *Dt. 23. 10. 34.*

Dear Sir,

In reply to your letter Dt. 19-10-34 I beg to inform you that the D. B. Rawalpindi has got no Ayurved Institution under D. B.

Yours Sincerely,
Sd. Illegible.

From, The Chairman, District Board,
Ludhiana,

No. 2406 *Dt. 24-10-36*

Dear Sir,

Referring to your letter by points, the reply is in the negative.

Yours truly,
Sd. Illegible.

* * * *

From, The Chairman, District Board,
Simla.

No. 343 L. F. *Dt. 23-10-1934*

Dear Sir,

In reply to your letter Dt. 20th October 1934 I beg to state that the District Board Simla, being a board in name only, it has no Ayurvedic Institution under its control.

Yours truly,
Sd. Illegible.
For Chairman, D. B. Simla.

* * * *

From, The Vice-Chairman,
District Board, Faridpur.

No. 5536. *Dated the Novr. 1934.*

Sir,

With reference to your letter dated the 2nd Novr. 1934, asking for some informations relating to Ayurveda, I have the honour to inform you that I am not in a position to supply you with any information as there is no Ayurvedic Institution managed or aided by this Board.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible.
Vice-Chairman.

* * * *

From, The Chairman,
District Board, Jullundur.

No, 1186 *Dated 1st November 1934.*

Dear Sir,

In reply to your letter dated 19th October 1934, I am to inform you that there is no Ayurvedic Institution in this District Board and no grant is made. The District Board gives a scholarship tenable at Dayanand Ayurvedic College, Lahore.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
For Chairman.

From, The Chairman,
District Board Multan.

No. 2415 *Dated 30—11—1936.*

Sir.

With reference to your letter dated the 19th October, 1934, I have the honour to inform you that this Board has appointed 3 Vaids (2 @ Rs 30—p.m. and I @ Rs, 25—p.m. each) in this District.

2. There is no teaching institution under the Board.

3. Medicines are not supplied by the Board,

I have etc,
Sd. Illegible
For Chairman

From, Deputy Commissioner, & Chairman,
Dist. Board, D. I. Khan.

No. 952 D. *Dated the 15th December 1934.*

Sir,

Reference your letter No. nil dated 27. 11. 34.

There is no Ayurveda institution in this Board and the Board has done nothing in particular in this connection.

Yours
Secretary.

From, The Vice Chairman,
District Board, Bannu,

No. 1648 *Dated 14-18-34.*

Dear Sir.

I have to inform you that there are no such like Institutes within the jurisdiction of the Board in this District.

Yours,
Sd. Illegible.
Vice Chairman.

Central Provinces.

From, Office Of The District Council, Nagpur.

No. 1067 Az *Dated the 31st Octr, 1934.*

Dear Sir,

There are no Ayurvedic dispensaries under the charge of this Council and hence no information can be given on the points mentioned in your letter under reference.

Yours,
Sd, Illegible,
Secretary.

❀ ❀ ❀ ❀

From, Secretary,
District Council, Jubbulpore.

No, 5045 Ad. *Dated 29. 10. 1934.*

Sir.

In reply to your letter dated 22nd October 1934 I have the honour to inform you that there are no Ayurvedic Institutions of any kind under this District Council and as such no grant is paid towards this head. Alopathic Dispensaries are given grants every year.

The Council has already framed a scheme for opening Ayurvedic dispensaries but it is very regretable to state that due to general economic depression this Council is helpless to enforce the scheme. However it has kept some Ayurvedic medicines in middle schools of the District Council for distribution to the public.

Your most obedient servant,
Sd. Illegible.
Secretary.

❀ ❀ ❀ ❀

The Chairman, District Board,
Hoshangabad.

No. 1317, *Dt. 31-10-34.*

Dear Sir,

Referring to your letter dated 24. 10. 34. I beg to state as follows,

There are no Ayurvedic Institutions under this Board and due to paucity of funds no help can be given. There are Ayurvedic Aushdhalaya under the Municipalities at Itarasi and Harda but none of these imparts instructions. One private Aushadhalaya named Hamudi is managed by Pt. R. K. Sastri at this place who distributes medicines free to poor.

Yours truly
Sd. Choudhary Radhakanta Prasad,
Vice-Chairman.

From, Office Of The District Council,
Bhandara.

No. 4554. *Date. 15—11—34.*

Dear Sir,

With reference to your letter D—27-10-34, I regret to inform you that this Council is helpless in patronising Ayurved owing to Government's refusal to include the Vaidyas in the scope of "Subsidised Medical Practitioners". However, this Council purchases certain patent Ayurvedic Medicines for free distribution.

Yours,
Sd. Illegible,
Secretary.

From, Office of the District Council,
Chanda.

No. 1747 *Dated. of 31—10—34.*

Dear Sir,

There are no Ayurvedic institutions under this council and hence no information can be supplied.

Yours faithfully,
Sd. Illegible.
Chairman.

From, Office of the District Council,
Chhindwara.

No. 3092. *Dated the 27th Novr. 34.*

Dear Sir,

There is no Ayurvedic Institution under this Council.

Yours
Sd. Illegible.
Chairman.

* * * *

From, The Chairman, District Board,
Sagor.

Dear Sir,

I beg to inform you that the reply to your letter Dt. 23. 10. 34 is in the negative.

Yours truly,
Sd. Illegible.
V. Chairman.

From, Office of the District Council,
BETUL.
Dated the 31st October, 1934.

Dear Sir,

I may inform you that no Ayurvedic Institutions are working under this District Council and as such the further information asked for is nil.

Yours,
Sd. Illegible.
Vice-Chairman



राजवैद्य श्री० पं० अमृतलाल प्राणशंकर पट्टणी,
प्राणाचार्य, लिंबड़ी (काठियावाड़)
भू० पू० प्रिंसिपल—सेठ ऊजमशी पीताम्बर आयुर्वेदिक कालेज, पाटन (गुजरात)
सभापति—गुजरात-कच्छ-काठियावाड़ प्रान्तीय षष्ठ वैद्यसम्मेलन, अहमदाबाद ।

Price, 3 annas.]

I.—RULES FOR THE REGISTRATION OF PRACTITIONERS OF INDIAN MEDICINE.

[*Corrected up to 31st March* 1936]

(*G. O. No. 231, P. H., dated 1st February 1933*)

SECTION I.

1. Persons possessing any of the following qualifications shall be eligible for registration :—

(i) Diplomas in Indian Medicine granted by the Board of Examiners in Indian Medicine appointed by the Gevernment of Madras.

(ii) Diplomas in Indian Medicine granted by or under the authority of the Government of India or a Provincial Government or an Indian State or by any recognized University, or Examination body in India, provided that applications for the recognition of such diplomas are recommended by the Central Board of Indian Medicine, Madras, and accepted by the Government of Madras.

(iii) Holders of Government titles of professional eminence like Vaidya Ratna and Shifa-ul-Mulk.

(iv) Other practitioners of Indian Medicine who do not hold any of the qualifications noted above but are granted special recognition by the Government of Madras on their applications being recommended by the Central Board of Indian Medicine.

G. O. No. 999, P.H., dated 31st March 1936. *Proviso* (1) Notwithstanding anything contained in these rules, it shall be competent for the Central Board of Indian Medicine to register, during the period of the first five years from 1st February 1933 any person who is proved to the satisfaction of the Board to be an eminent practitioner of Indian Medicine of not less than ten years' standing and is not less than 28 years of age at the time of application for registration.

G. O. No. 1401, P.H, dated 7th June 1935. *Proviso* (2) Till 1937 any person who had practised for at least five years and pass the special examination conducted by the Board of Examiners in Indian Medicine will be registered in class B. Application for admission to the test should be followed by a certificate signed by one of the authorities given in the note to rule 4, in the prescribed form given on page 96. For details of the examination please see page 98 of the rules. (given in this book.)

2. Practitioners registered under these rules shall be divided into two classes as noted below.

Class A.—Practitioners whose qualifications denote at least a minimum standard of professional training for undertaking medical, surgical (including obstetrical) and medico-legal work.

Class B.—Practitioners whose qualifications denote at least a minimum standard of professional training for undertaking medical work only.

G. O. No. 2660 P.H., dated 24th November 1933.

3. Except with the special sanction of the Government, no one other than a practitioner of Indian Medicine registered under class A referred to in rule 2 above, shall be competent to hold any appointment as medical officer, in any institution of Indian Medicine maintained or aided by the Government or a local body or both.

4. The registration of applications under sub-rule (iv) of rule I above shall be subject to the condition that the applicant gives proof to the satisfaction of the Board that he has been a practitioner of not less than ten years' standing except where the Board decide otherwise, and that he has undergone adequate professional training—both theoretical and practical—for a period of not less than four years before the commencement of his practice.

G. O. No. 105 P. H., dated 15th January 1934.

NOTE.—The proof required under this rule regarding the period during which a practitioner has exercised his profession shall be a certificate in the form annexed to this order (annexure 2) from an officer of the Revenue Department of and above the rank of a Deputy Tahsildar or the executive authority of the municipality or the President of the District Board within whose jurisdiction the applicant resides.

5. The following rules shall govern applications for registration under sub-rule (iv) of rule I above :—

(*a*) All applications shall be sent through a local association of practitioners of Indian Medicine if there is one in the locality.

(*b*) All applications received shall first be considered by a standing sub-committee constituted for the purpose consisting of seven members elected by the Board, of whom not less than five shall be from among city members of the Board with the President of the Board as ex-officio member and chairman of the sub-committee. In the absence of the President, the subcommittee shall elect one of their members as chairman. The sub-committee shall ordinarily meet during the time of the meetings of the Central Board of Indian Medicine.

(*c*) All applications received from a district in the mufassal where a member of the Board permanently resides shall be referred to that member for remarks before the same is considered by the standing sub-committee.

6. *(a)* Every person who applies to be registered under these rules shall pay a registration * fee of fifteen rupees and a stamp duty of twelve annas.

(b) This rule shall not apply to any person whose name has been registered under any Act or rule for the registration of practitioners of Indian Medicine for the time being in force in any part of British India, if the said Act or rule provides for the registration of persons registered under these rules without the payment of any fee.

7. The Local Government may eithe *suo moto* or otherwise revise any order passed by the Board under the rules in this section.

Section II.

8. The following rules shall regulate the procedure to be adopted for revoking or cancelling the registration of those who abuse the privilege of registration:—

Rules governing enquiries by the Central Board of Indian Medicine, Madras, or a Committee thereof.

(i) The Board may refuse to permit the registration of any person who has been convicted of any such offence as implies, in the opinion of the Board, a defect of character, or who, after an enquiry at which an opportunity has been given to the candidate to be heard in person or by pleader, has been guilty of professional misconduct.

(ii) The Board may, if it sees fit, and after giving due notice to the person concerned and inquiring into hisobjections, if any, order that any entry in the register which shall be proved to the satisfaction of the Board to have been fraudulently or incorrectly made or brought about, be cancelled or amended.

(iii) The Board may, after holding an enquiry at which an opportunity has been given to the person concerned to be heard in person or by pleader, direct the removal altogether or for a special period, from the register of the name of any registered practitioner for the same reasons for which registration may be refused by the Board under rule (i) above. The Board may also direct that any name so removed shall be restored.

(iv) Any enquiry under the above rules may be held by a Committee consisting of five members of the Board elected for the purpose by the Board. The Board or the Committee, as the case may be,

---

G. O, No. 1819 P.H. dated 17th July 1935.

* The Registration fee and stamp duty should be paid into a Government Treasury or the Reserve Bank of India under the heads "XXII, Medical" and "VII. A—Stamps". respectively and the treasury or Bank receipts should be submitted to the President of the Central Board of Indian Medicine along with the application. All correspondence should be addressed to the President,

may, at its discretion hold such an enquiry *in camera*. The decision of the Committee shall be deemed to be the decision of the Board.

(v) An appeal shall lie to the Local Government against every decision of the Board under rules (i) to (iv) above. Such appeal shall be preferred within three months from the date of the Board's decision. The Local Government may *suo moto* revise any order passed by the Board or the Committee as the case may be under rules (i) to (iv) above.

(vi) Whenever information is received that a medical practitioner who is an applicant for registration, or whose name has already been registered has been guilty of conbuct which *prima facie* consiitutes professional miscouduct, the Secretary shall make an abstract of such information.

(vii) Where the information in question is in the nature of a complaint by a person or body charging a medical practitioner with professional misconduct, such complaint shall be made in writing addressed to the Secretary, and shall state the grounds of complaint and shall be accompanied by one or more declarations as to the facts of the case.

(viii) Every declaration must state the description and true place of abode of the declarant ; and where the facts stated in a decleration are not within the personal knowledge of the declarant, the source of the information and grounds for the belief of the declarant in its truth must be accurately and fully stated.

(ix) (*a*) The abstract and where a complaint has been lodged, the complaint, and all other documents bearing on fhe case, shall be submitted by the Secretary to the President, who may, if he thinks fit, instruct the Secretary to furnish the medical practitioner concerned with a copy of the complaint and other documents and invite him by means of a registered letter to submit any explanation he may have to offer. The documents, including any explanation submitted by the practitioner to the Secretary, shall then be placed before the Board.

The Board may then—

(1) order that all further proceedings be stopped ; or

(2) appoint a Committee to consider the matter and submit a report to the Board as to whether proceedings should be instituted under rules (i) to (ii) above ; or

(3) direct that a regular enquiry be held by the Board or a Committee thereof appointed under rule (iv) above.

A Committee appointed to make a preliminary inquiry shall have power to cause further investigation to be made and further

evidence to be taken and to take any legal advice or procure any legal assistance it may think necessary. The Committee shall report to the Board.

(*b*) If the Board consider that the case is one in which an inquiry under rule (i) or rule (ii) or rule (iii) above ought to be held, the President shall direct the Secretary to take steps for the institution of any inquiry and for having the case heard and determined by the Board.

(x) The Board or Committee thereof appointed under rule (iv) above shall observe in inquiries held by them the procedure laid down in the following rules.

(xi) When the charge is brought by a complainant they shall require the complaint to be reduced to writing and accepted by the complainant. The articles of charge and a list of documents and witnesses by which each charge is to be sustained shall then be prepared and the Secretary shall issue a notice in writing on behalf of the Board addressed to the medical practitioner concerned. Such notice shall be accompanied by a copy of the articles of charge and list of witnesses and documents referred to above and shall inform the medical practitioner concerned, of the day on which and hour at which the Board or Committee intend to deal with the case and shall call upon him to attend before the Board or Committee on that day and hour. The notice shall be in the form appended to these rules, with such variations as circumstances may require. It shall be served on the medical practitioner fifteen clear days before the beginning of the inquiry and shall be accompanied by a copy of rules (i), (ii), and (iv) above and of the rules to regulate the procedure for conducting any inquiry referred to in those rules. Service of the notice may be made either by delivery to the medical practitioner in person or by registered letter addressed to his usual residence.

(xii) In every case in which the Board resolve that an enquiry shall be instituted and notice of inquiry is issued accordingly, the complainant (if any) and the medical practitioner concerned shall, upon request in writing signed by the party or his pleader, be entitled to be supplied by the secretary with a copy of any declaration, explanation, answer or other dacument given or sent to the Board by or on behalf of the other party, which such other party will be entitled on proper proof to use at the hearing as evidence in support of, or in answer to, the charge specified in the notice of inquiry.

(xiii) Any answer. evidence, or statement forwarded, or application made by the medical practitioner between the date of the issue of the notice and the day named for the hearing of the charge, shall be dealt with by the President in such manner as he shall think fit.

(xiv) Copies of all material documents which are laid before the Board or Committee as evidence in regard to the case shall be made and furnished to each member of the Board or Committee as the case may be before the hearing of the case.

(xv) At the hearing of the case by the Board or Committee the complainant and also the medical practitioner concerned may, if they so desire, be represented or assisted by pleaders.

(xvi) When the complainant appears personally or by pleader, the order of procedure shall be as follows :—

(*a*) The complainant shall exhibit the articles of charge to the Board or Committee, which shall be openly read.

(*b*) The medical practitioner concerned shall then be called upon to plead "guilty" or "not guilty" to each of them, which plea shall forthwith be recorded with the articles of charge. If the medical practitioner refuses or without reasonable cause neglects to appear to answer the charge either personally or by pleader, he shall be taken to admit the truth of the articles of charge.

(*c*) The complainant may then address the Board or Committee in explanation of the articles of charge and of the evidence by which they are proved.

(*d*) The oral and documentary evidence shall then be exhibited. The witnesses shall be examined by or on behalf of the complainant and may be cross-examined by or on behalf of the medical practitioner concerned. The complainant shall then be entitled to re-examine the witnesses on any point on which they have been cross-examined. No questions should be asked in re-examination on any new matter without leave of the Board. The Board or Committe may put such questions as they think fit.

(*e*) If before the close of the case for the complainant, it shall appear necessary, the Board or Committee may in their discretion, allow the complainant to exhibit evidence not included in the list furnished to the medical practitioner concerned or may themselves call for new evidence, and in such case the medical practitioner shall be entitled to have, if he demands it, an adjournment of the proceedings for three clear days, before the exhibition of such new evidence, exclusive of the day of adjournment and of the day to which the proceedings are adjourned.

(*f*) When the case for the complainant is closed, the medical practitioner concerned shall be required to make his defence,

orally or in writing, as he shall prefer. If made in writing, it shall be openly read and a copy shall be given at the same time to the complainant.

(*g*) The evidence for the defence shall then be exhibited, and the witnesses examined, who shall be liable to cross-examination and re-examination and to examination by the Board or Committee in the same manner as the witnesses for the complainant.

(*h*) The Board or Committee or some persons appointed by them shall take notes in English of all the oral evidence, which shall be read aloud to each witness by whom the same was given, and if necessary explained to him in the language in which it was given, and shall be recorded with the proceedings.

(*i*) If the medical practitioner concerned makes only an oral defence and exhibits no evidence, the inquiry shall end with his defence. If he records a written defence or exhibits evidence, the complainant shall be entitled to a general oral reply on the whole case and may also exhibit evidence, to contradict any evidence exhibited for the defence, in which case the medical practitioner concerned shall not be entitled to any adjournment of the proceedings, although such new evidence were not included in the list furnished to him.

(*j*) When the Board or Committee shall be of opinion that the articles of charge, or any of them, are not drawn with sufficient clearness and precision, the Board or Committe may, in their discretion, require the same to be amended, and may thereupon, on the application of the complainant or the medical practitioner concerned, adjourn the inquiry for such time as they may consider reasonable. The Board or Committee may also, if they think fit, adjourn the inquiry from time to time, on the application of either the complainant or the medical practitioner concerned, of the ground of sickness or unavoidable absence of any witness or such other cause as they may consider reasonable. When such application is made and refused, the Board or Committee shall record the application and their reasons for refusing to comply with it.

(xvii)—(*a*) When there is no complainant, or no complainant appears the proceedings shall begin by the Secretary reading to this Board the notice of inquiry addressed to the medical practitioner concerned and the articles of charge and stating the evidence by which the articles of charge are supported.

(*b*) The medical practitioner shall then be called upon to plead "guilty" or "not guilty." The further proceedings shall be conducted in substantial accordance with the procedure laid down in rule (xvi) above.

(xviii) The Board or Committee may, at their discretion, hold the inquiry *in camera.*

(xix) (*a*) Upon the conclusion of the case, the Board or Committee will deliberate thereon in private, and at the conclusion of the deliberations the Board or Committee shall vote on the question whether the articles of charge are proved or not and whether they show that the medical practitioner concerned has been guilty of professional misconduct or not.

(*b*) If the Board or Committee by a majority find the medical practitioner guilty of professional misconduct, the President shall direct the Secretarv not to register his name if he be an applicant for registration, or to erase his name altogether or for a specified period from the register of medical practitioners if he is already a registered practitioner, except in cases where the Board or Committee consider that in view af extenuating circumstances the practitioner may be let off with a warning.

(xx) When the registration of the name of any medical practitioner is refused or when the name of any registered medical practitioner is removed from the register in accordance with the provisions of the preceding rules, the Secretary shall forthwith send notice of such refusal or removal to the medical practitioner concerned, and such notice shall be sent by a registered letter addressed to his last known address. The Secretary shall also send forthwith intimation of any such refusal or removal to the body or bodies from whom the medical practitioner received his qualification or qualifications and shall request them not to admit him to any examination for any new qualification which is registrable in the register of registered practitioners without previous reference to the Board.

Notice referred to in Rule (ix) of Seciion II.

SIR,

On behalf of the Central Board of Indian Medicine, Madras, I give you notice that information and evidence have been laid before the Board by which the complainant makes the following charge or charges against you, namely (here set out the circumstances briefly) and that you have thereby been guilty of professional misconduct.

And I am directed further to give you notice on the day of 19 a meeting of the Board will be held at



o'clock in the to consider the above-mentioned charge or charges against you and decide whether or not they should direct that your name $\frac{\text{shall not be registered in}}{\text{be removed from}}$ the register of registered practitioners pursuant to rule (xix) of the rules governing enquiries by the Central Board of Indian Medicine or a Committee thereof. You are invited and required to attend in person or by pleader before the Board at the abovenamed place and time, to establish any denial or defence that you may have to make to tha above-mentioned charges ; and you are hereby informed that, if you do not attend as required, the Board may proceed to hear and decide upon the said charges in your absence.

Any reply or other communication or application which you may desire to make respecting the said charges or your defence thereto should be addressed to the Secretary to the Central Board of Indian Medicine and transmitted so as to reach him not less than three clear days before the day appointed for the hearing of the case.

A copy of the rules governing enquiries by the Central Board of Indian Medicine, Madras, or a Committee thereof is enclosed herewith for your information.

A copy of the articles of the charge and of list of documents and witnesses by which each charge is to be sustained are attached.

2. FORM OF CERTIFICATE OF TEN YEARS' PRACTICE REFERRED TO IN RULE 4.

OFFICE OF THE

Dated 193 .

On the basis of records in this office or facts known after due enquiry I certify that Mr, has been shown or proved as following the occupation of a practitioner of Indian Medicine for not less than ten years—

(*a*) at	1	(*b*) from	to
	2	from	to
	3	from	to

1. The date of birth of the applicant is
2. Present occupation of the applicant is
3. Father's name and occupation are
4. Other occupations (if any) of the applicant are

Signature.

Designation.

(*a*) Here enter the name or names of the place or places where the applicant is shown as practising.

(*b*) Here enter dates showing duration of practice in each place,

N. B.—The certificate should bear the date stamp of the office of issue.

3. CERTIFICATE OF FOUR YEARS' TRAINING REFERRED TO IN RULE 4.

This is to certify that Mr. has undergone a course of prescribed professional study in the theory and practice of Ayurvedic/Sidha/Unani Medicine for a period of not less than four years' duration as shown below :—

A.—Certificate of Theoretical Training.

Name or names of the institution or institutions where the training was obtained	Duration at each of the institutions.	Signature, designation and qualifications of the head of each of the institutions.
1. 2. 3.		

B.—Certificate of Practical Training.

Name or names of the dispensary or hospital where training was obtained.	Duration at each of the institutions.	Signature, designation and qualification of the head of each of the institutions.
1. 2. 3.		

4. SCHEME OF EXAMINATION FOR PRACTITIONERS OF FIVE YEARS' STANDING.

G. O. No. 843, P.H. dated 17th March 1934.

Candidates appearing for the special examinations referred to in rule I, proviso 2, will be examined in the tests theoretical, practical and clinical of the first to fourth year L.I.M. Board Examination in the subjects of Indian Midicine only. Those who fail in the examintions in the subjects of Indian Medicine will be allowed to complete the test

by sitting again at the subsequent examinations for the subject or subjects in which they have failed. The subjects for the examinations will be as follows:—

	Subject.	test Written practical and-or oral test
1	Fundamental Principles of (Indian) medicine.	One paper—3 hours—Oral.
2	Materia Medica (generl) (Indian).	One paper—3 hours Practical and oral.
3	Do. (special) (Indian) ..	One paper—1½ hours—Practical and oral.
4	Pathology (Indian)...	One paper—3 hours—Oral.
5	Hygiene (Indian)	Do.
6	Medicine (Indian)	One paper—3 hours—Clinical and oral (conducted separately).
7	Surgery (Indian)	One paper—3 hours—Clinical and oral (on sitting).
8	Midwifery (Indian)	Do.
9	Toxicology (Indian)	One paper—1½ hours—practical and aral.

Fees for the Examination.

Rupees 40 for the whole examination and Rs. 5 for each subject. Candidates are required to appear for the whole examination in the first instance; thereafter, they may appear in the subject or subjects in which they have failed. Examination fees once paid will not be refunded or adjusted for any subsequent examination.

संयुक्त प्रान्त में वैद्यों और हकीमों के रजिस्टरी सम्बन्धी
नियमों का अनुवाद

जिनको बोर्ड आफ इन्डियन मेडिसिन संयुक्त प्रान्त ने बना कर गवर्नमेंट गजट भाग ८ पन्ना ४०१ तारीख २ मई १९३१ में प्रकाशित किया।

१—बोर्ड का सेक्रेटरी वैद्यों और हकीमों का एक रजिस्टर निर्धारित शेष पत्र नं० १ के अनुसार रखेगा। यह रजिस्टर चार भागों में विभाजित होगा। प्रथम दो भागों में उन वैद्यों के नाम होंगे जो 'अ' और 'ब' श्रेणियों में रक्खे जावेंगे। इसी भाँति तृतीय और चतुर्थ भागों में उन हकीमों के नाम होंगे जो 'अ' और 'ब' श्रेणियों में रक्खे जावेंगे।

प्रत्येक भाग में लिखावट वर्णमाला के क्रमानुसार होगी।

२—चेयरमैन बोर्ड के हस्ताक्षर द्वारा रजिस्टर की सत्यता प्रमाणित होगी।

३—प्रत्येक व्यक्ति के लिये जो रजिस्टर में अपना नाम अंकित कराने का प्रार्थी हो, अपनी योग्यता तथा रजिस्टर में नाम अंकित कराने के अधिकार सम्बन्धी सूचना सेक्रेटरी के आदेशानुसार सेक्रेटरी को देना अनिवार्य होगा।

४—प्रत्येक रजिस्टर्ड वैद्य अथवा हकीम को उचित है कि अपना पता बदलने पर उसकी सूचना शीघ्र ही सेक्रेटरी को दे। और इस सम्बन्ध में जो प्रश्न सेक्रेटरी करे उसका उत्तर दे जिससे कि उसका ठीक पता नियमानुसार रजिस्टर में लिखा जा सके।

५—गत ३१ दिसम्बर तक उपरोक्त नियमित रजिस्टर को संशोधित कर सेक्रेटरी प्रत्येक वर्ष के जनवरी मास में छपवा कर प्रकाशित करेगा। सेक्रेटरी इस प्रकार छपी हुई नामावली की एक ऐसी प्रति जिसके बीच में सादे पृष्ठ लगे हुए होंगे और जिसमें वह वर्ष के अन्तर्गत कोई संयोजना, अदल-बदल काट-पीट जो आवश्यक होगी, करता रहेगा, अपने पास रखेगा, प्रत्येक रजिस्टर्ड वैद्य और हकीम से वह यह भी जाँचता रहेगा कि उसने अपना व्यवसाय तो नहीं छोड़ दिया है, अपना निवास स्थान एवं अपनी नियुक्ति तो नहीं बदली है। यदि किसी ऐसे पत्र का उत्तर, पत्र भेजने की तिथि से छः मास के समय के भीतर न प्राप्त हो तो सेक्रेटरी ऐसे रजिस्टर्ड अध्यवसायी का नाम चेयरमैन की आज्ञा लेकर रजिस्टर से काट सकता है। परन्तु ध्यान रहे कि इस प्रकार का काटा हुआ नाम बोर्ड की आज्ञानुसार पुनः रजिस्टर में लिखा जा सकता है।

६—प्रत्येक रजिस्टर्ड वैद्य अथवा हकीम को अपनी ही प्रार्थना पर रजिस्टर से नाम कटवाने के प्रार्थनापत्र के साथ एक प्रमाणपत्र भी सम्मिलित करना होगा कि उसे अपने प्रतिकूल किसी ऐसी कार्यवाही या ऐसी कार्यवाही के उठ खड़े होने के कारण का ज्ञान नहीं है, जिसका परिणाम उसकी इच्छा के विरुद्ध उसका नाम रजिस्टर से कटवाने का निमित्त बने अथवा अपनी इच्छा के विरुद्ध उसको किसी ऐसी योग्यता या लाइसेन्स से वंचित कर दे कि जिसके आधार पर वह रजिस्टर में नाम लिखवाने का अधिकारी हो। सेक्रेटरी ऐसे प्रार्थना-पत्र को बोर्ड की आगामी सभा में उपस्थित करेगा जिसमें उस प्रार्थनापत्र तथा उसके

विरोधों पर विचार होगा। रजिस्टर से नाम कट जाने पर सेक्रेटरी उसकी सूचना प्रार्थी को उसके रजिस्टर्ड पते से पत्र द्वारा देगा।

७—उपरोक्त प्रकार के छपे हुये रजिस्टर के प्रत्येक भाग के अन्त में एक विवरण पत्र होगा जिससे निम्नाङ्कित बातें प्रगट होंगी—

(१) वर्ष के आदि में उस भाग के मनुष्यों की पूर्ण संख्या।

(२) वर्ष के अन्तर्गत बढ़े हुए रजिस्टर्ड मनुष्यों की संख्या।

(३) रजिस्टर में पुनः लिखे गये मनुष्यों की संख्या।

(४) उन मनुष्यों की संख्या जिनके नाम रजिस्टर से काटे गये कारण सहित।

(५) मृत्यु के कारण नाम कट जाने वालों की संख्या।

(६) अन्यान्य कारणों से नाम कट जाने वालों की संख्या, और

(७) वर्ष के अन्त में उस भाग में बची हुई पूर्ण संख्या।

नामों का सूचीपत्र भी वर्णमाला के क्रमानुसार होगा।

८—प्रत्येक व्यक्ति जिसका नाम रजिस्टर में लिखा गया है चेयरमैन से रजिस्ट्री का प्रमाणपत्र लेने का अधिकारी होगा, जो कि नियमित शेष पत्र नं० २ के अनुरूप होगा।

९—रजिस्ट्री के लिये प्रार्थनापत्र नियमित शेष पत्र नं० ३ के अनुरूप होगा।

१०—कोई प्रार्थनापत्र मूल (इब्तिदाई) रजिस्ट्री के दुबारा सार्टीफिकेट के लिये तब तक न लिया जायगा जब तक कि प्रार्थी का इस बात का प्रमाणपत्र उसके साथ न होगा जिसमें कि संपूर्ण विवरण लिखा हो और जिससे यह बात प्रगट हो कि यह वही व्यक्ति है कि जिसका नाम प्रथम बार रजिस्टर में लिखा जा चुका है। प्रार्थनापत्र के साथ प्रार्थी के व्यक्तित्व की पुष्टि के लिये ऐसा मसाला होना चाहिये कि जिसको चेयरमैन पर्याप्त समझे। दुबारा सार्टीफिकेट तीन रुपया शुल्क देने पर भेजा जायगा। उक्त रुपये सेक्रेटरी के पास मनीआर्डर द्वारा भेजे जाने चाहियें।

११—प्रकाशित रजिस्टर की एक प्रति जिसमें उसका नाम प्रथम बार लिखा गया है प्रत्येक रजिस्टर्ड वैद्य अथवा हकीम को निःशुल्क दी जावेगी। यदि प्रकाशित होने वाले वर्ष के समाप्त होने के पूर्व सेक्रेटरी को ऐसी प्रति की प्राप्ति के लिये प्रार्थनापत्र दिया गया हो और डाक व्यय आदि के लिये आठ आने का मनीआर्डर भी उसके साथ भेजा गया हो। यदि ऐसा न हो तो सुपरिन्टेन्डेन्ट गवर्नमेन्ट प्रेस इलाहाबाद यू० पी० से मूल्य देने पर प्रतियाँ मिल सकती हैं।

१२—रजिस्टर का केवल अंतिम संस्करण ही न्यायानुकूल रजिस्ट्री का प्रमाण है। परन्तु ध्यान रहे कि ऐसी दशा में जब कि किसी व्यक्ति का नाम छपे हुये रजिस्टर में न मिले तो प्रमाणित प्रति चेयरमैन के हस्ताक्षर सहित ऐसे व्यक्ति के नाम की लिखा-पढ़ी उस रजिस्टर में जो कि बोर्ड के दफ़्तर में रहता है इस बात का प्रमाण होगी कि उस व्यक्ति की रजिस्ट्री हो गई है।

१३—वे सब व्यक्ति जिनके नाम रजिस्टर में लिखे होंगे उन स्वत्वों के पाने के अधिकारी होंगे जो कि इन नियमों के अनुसार उनको प्राप्त होंगे।

१४—रजिस्ट्री अनिवार्य नहीं है और यह उन वैद्यों या हकीमों के व्यवसाय में कोई बाधा न डालेगी जो रजिस्टर्ड नहीं हैं।

रजिस्ट्री कराने के नियम

१—प्रत्येक ऐसे व्यक्ति के लिये जो वैद्य या हकीम के रजिस्टर में अपना नाम अंकित कराने का प्रार्थी हो अनिवार्य होगा कि बोर्ड को इस बात का विश्वास दिलाये कि उनके पास ऐसी डिगरी या योग्यता का प्रमाण पत्र है कि जिसका वर्णन नामावली नं० १ जो कि इन नियमों का परिशिष्ट है दिया गया है। जिसमें बोर्ड के विज्ञापन द्वारा (यदि कोई हों) यदा कदा परिवर्तन किया गया हो और यदि उसका नाम एक अथवा एक से अधिक डिगरी या योग्यता के प्रमाण पत्र के विषय में रजिस्टर में अङ्कित हो चुका है तो उसे सेक्रेटरी को ऐसी रजिस्ट्री की तिथि को ठीक २ सूचना देनी होगी और अपनी योग्यता के प्रमाणपत्र के सम्बन्ध में जिसके विषय में इस प्रकार रजिस्ट्री हो चुकी है, उन तिथियों के सहित जब उसने यह डिगरियाँ प्राप्त की हों यथोचित विवरण से सेक्रेटरी को सूचित करना होगा।

२—यदि कोई व्यक्ति जिसका नाम रजिस्टर में अङ्कित किया जा चुका है कोई उपाधि या प्रमाणपत्र अतिरिक्त उस उपाधि या योग्यता के प्रमाणपत्र के कि जिसके विषय में उसकी रजिस्ट्री हो चुकी है, प्राप्त करे तो वह प्रत्येक अतिरिक्त उपाधि या योग्यता को २) शुल्क देने पर रजिस्टर में अङ्कित कराने का अधिकारी होगा जो कि उसके नाम के सम्मुख रजिस्टर में अङ्कित किये जायेंगे चाहे वह प्रथम रजिस्टर्ड उपाधि या प्रमाणपत्र के स्थान में अथवा उसके अतिरिक्त शुल्क सेक्रेटरीको मनीआर्डर द्वारा प्रेषित करना होगा।

३—यदि बोर्ड को रजिस्टर की किसी लिखा पढ़ी के विषय में यह पूर्ण विश्वास हो जाय कि यह छल द्वारा कराई गई है अथवा अशुद्ध है तो ऐसी लिखा पढ़ी बोर्ड को लिखित आज्ञानुसार उस व्यक्ति को सूचना देने और उसके किये हुये विरोधों पर यदि कोई हो विचार करने के पश्चात् काटी जा सकती है।

४—यदि कोई व्यक्ति जिसका नाम रजिस्टर में नहीं लिखा है इस विषय का मिथ्या और कपट पूर्ण बहाना करे कि उसका नाम रजिस्टर्ड है अथवा अपने नाम और उपाधि के साथ ऐसे शब्दों या अक्षरों का उपयोग करे जिससे प्रगट हो कि उसका नाम उसी भांति रजिस्टर्ड है तो ऐसे व्यक्ति पर अदालत फौजदारी में मुकद्दमा चलाया जा सकता है चाहे किसी को उससे धोखा हुआ हो अथवा नहीं।

५—बोर्ड निम्नांकित दशाओं में भी वैद्य अथवा हकीम का नाम रजिस्टर में लिखा जाने का निषेध कर सकता है अथवा उसका नाम रजिस्टर से पृथक करने की आज्ञा प्रदान कर सकता है—

(अ) जिसको अदालत फौजदारी से किसी अपराध में कारागृह-दण्ड दिया जा चुका हो जो बोर्ड के विचार से उसके आचरण में ऐसी त्रुटि लाता हो कि जिससे रजिस्टर में उसके नाम का लिखना अथवा बनाये रखना न्याय संगत न हो।

अथवा

(ब) जिसको बोर्ड ने जाँच करने के पश्चात् (जिसमें उसको अपनी रक्षा के लिये साक्षी उपस्थित करने और स्वयं अथवा किसी वकील, प्लीडर, कौंसिल अर्थात् अटारनी के द्वारा उपस्थित होने का अवसर दिया गया हो और ऐसी जाँच बोर्ड द्वारा अपनी इच्छानुकूल बन्द कमरे में की हो) उसके व्यवसाय में किसी

कुत्सित आचरण के कारण दोषी ठहराया हो। यह बोर्ड की इच्छा पर निर्भर होगा कि आगामी किसी तिथि को ऐसे व्यक्ति का नाम जिसके विरुद्ध ऐसी आज्ञा निकल चुकी है रजिस्टर में पुनः लिखने की आज्ञा प्रदान करे।

६—रजिस्ट्री के सम्बन्ध में बोर्ड के प्रत्येक फैसले के विरुद्ध फैसले की तिथि के तीन मास के भीतर प्रान्तीय सरकार में अपील की जा सकेगी।

अपील लिखित होगी जिसमें उन कारणों का दिखलाना अनिवार्य होगा जिनके आधार पर अपील की गई है और जिसमें विस्तार पूर्वक मामले का विवरण होना चाहिये।

७—यदि किसी समय किसी अधिकार का दुरुपयोग होगा तो बोर्ड के हाथ रजिस्ट्री क खण्डन अथवा काटने की शक्ति सुरक्षित रहेगी।

नामावली नं० १

वे व्यक्ति जो वैद्यों अथवा हकीमों के रजिस्टर में अपना नाम अंकित कराने के अधिकारी हैं

१—वे वैद्य या हकीम जिनके पास प्रान्त अथवा प्रान्त के बाहर के राज्य सम्बन्धी आयुर्वैदिक अथवा यूनानी कालेज या स्कूल की डिगरी अथवा प्रमाणपत्र हैं। अथवा जिनको नियमानुसार स्थापित किसी भारतीय विश्वविद्यालय के इण्डियन मेडिसिन की डिगरी प्राप्त हैं।

२—वह वैद्य और हकीम जिन्होंने संयुक्त प्रदेश के बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन द्वारा ली हुई अन्तिम परीक्षा पास की है।

३—वे वैद्य अथवा हकीम जिन्होंने प्रान्त अथवा प्रान्त के बाहर के किसी आयुर्वैदिक अथवा यूनानी संस्था की परीक्षा पास की है।

परन्तु इस बात का ध्यान रहे कि रजिस्ट्री के लिये ऐसी संस्था की बोर्ड द्वारा स्वीकृत हो जाने की आवश्यकता है।

४—ऐसे वैद्य अथवा हकीम जो कि बोर्ड की दृष्टि में पर्याप्त समय से व्यवसाय करते हुये प्रसिद्ध और उपयोगी सिद्ध हो चुके हैं और जिन्होंने व्यवसाय में अपनी कार्य-कुशलता से ख्याति प्राप्त की है

५—जो वैद्य अथवा हकीम इस नियमावली की धारा ३ और ४ में गणना के योग्य हैं उनमें से रजिस्ट्री केवल उन्हीं के लिये परिमित है जो अपना व्यवसाय कम से कम ५ वर्ष तक कर चुके हों। ऐसे वैद्य या हकीम १० वर्ष तक व्यवसाय करने के पश्चात् 'अ' श्रेणी में रक्खे जायँगे जिनका व्यवसाय करने का दस वर्ष का समय पूर्ण नहीं हुआ है वरन् ५ वर्ष पूरे हो चुके हैं वह 'ब' श्रेणी में रक्खे जायँगे।

ध्यान रहे कि दस वर्ष तक व्यवसाय करने के पश्चात् वह 'अ' श्रेणी में रक्खे जाने के योग्य समझे जा सकते हैं।

वैद्य और हकीम जिनके पास डिगरी या प्रमाणपत्र इस प्रान्त अथवा प्रान्त के बाहर के किसी राज्य सम्बन्धी आयुर्वैदिक अथवा यूनानी कालेज का है अथवा जिनको किसी नियमानुसार स्थापित भारतीय विश्वविद्यालय की इण्डियन मेडिसिन की डिगरी अथवा कालेज की डिगरी प्राप्त है (अथवा जिनके पास संयुक्त प्रदेश के बोर्ड आफ़ इण्डियन मेडिसिन का प्रमाणपत्र है) वह 'अ' श्रेणी में रक्खे जायंगे और जिन्होंने इस प्रान्त अथवा प्रान्त के बाहर

के राज्य सम्बन्धी आयुर्वेदिक अथवा यूनानी पाठशाला की परीक्षा पास की है अथवा संयुक्त प्रदेश के बोर्ड आफ इण्डियन मेडिसिन की अन्तिम पाठशाला की परीक्षा पास की है वह 'ब' श्रेणी में रक्खे जायँगे।

ध्यान रहे कि सात वर्ष अपना व्यवसाय करने के पश्चात् वह 'अ' श्रेणी के योग्य समझे जा सकेंगे।

वैद्य अथवा हकीम जो 'ब' श्रेणी से 'अ' श्रेणी में परिवर्तित किये जांयगे उनको बोर्ड के सेक्रेटरी के पास ५) अधिक शुल्क परिवर्तन के समय मनीआर्डर द्वारा भेजना होगा।

नामावली नं० २

रजिस्टर्ड वैद्यों अथवा हकीमों को प्रदान किये जाने वाले अधिकार

१—एक अथवा अधिक रजिस्टर्ड वैद्य अथवा हकीम को शेष रजिस्टर्ड वैद्यों अथवा हकीमों की ओर से बोर्ड में प्रतिनिधि चुनने में वोट देने का अधिकार होगा।

२—विष सम्बन्धी नियमानुसार दिये हुये लाइसेन्स के अनुसार जिलाधीश के सन्मुख रजिस्ट्रेशन प्रमाणपत्र प्रेषित करने पर उनको विष रखने का अधिकार प्राप्त होगा।

३—'अ' श्रेणी के वैद्यों और हकीमों को आयु, निरोगता, योग्यता अथवा छुट्टी के प्रमाणपत्र स्थानीय कर्मचारियों को जिनका मासिक वेतन ५०) और १००) के बीच में हो देने का अधिकार है। और 'ब' श्रेणी वालों को उपरोक्त प्रमाणपत्र स्थानीय कर्मचारियों में से उनको जिनका मासिक वेतन ५०) से कम हो, प्रदान करने का अधिकार होगा।

टिप्पणी—प्रमाणपत्र जो वैद्य अथवा हकीम अपने हस्ताक्षर सहित दें; उसका तारतम्य अपने निजी ज्ञान से यथार्थ घटनाओं से ठीक-ठीक हो और जो असत्य, गड़बड़, अनुचित कदापि न हो।

अयोग्य और अनावश्यक कारणों में प्रमाणपत्र कदापि न प्रदान किया जाना चाहिये। जो वैद्य अथवा हकीम उपरोक्त नियमों के विरुद्ध प्रमाणपत्र देगा उसका नाम रजिस्टर से काट दिया जायगा।

नामावली नं० ३

रजिस्टर में नामाङ्कित कराने का शुल्क

(१) 'अ' श्रेणी में रजिस्ट्री कराने का प्रारम्भिक शुल्क	...	१०)
(२) 'ब' श्रेणी में रजिस्ट्री कराने का प्रारम्भिक शुल्क	...	५)
(३) 'ब' श्रेणी से 'अ' श्रेणी में पुनः परिवर्तन कराने का रजिस्ट्री शुल्क	...	५)
(४) प्रत्येक प्रतिरूप (मुसन्ना) प्रमाणपत्र का रजिस्ट्री का शुल्क	...	३)
(५) प्रत्येक अतिरिक्त योग्यता के प्रमाणपत्र का रजिस्ट्री का शुल्क	...	२)

टिप्पणी—शुल्क सम्बन्धी धन जो बोर्ड को चुकाया जायगा उसकी रसीद दिये हुए फ़ार्म पर जो कि इसमें लगा है, होगी। और रुपया सर्कारी हिसाब में जमा हो कर मूलकोष में (Head-quarters Treasury) रक्खा जायगा। बोर्ड के सेक्रेटरी के पास शुल्क मनीआर्डर द्वारा भेजा जायगा।



वैद्यराज श्री० पं० रंगलालजी ओझा, आयुर्वेद केसरी ।

प्रधानाध्यापक—वासिष्ठ आयुर्वेदविद्यालय ।

फार्म रसीद

बोर्ड आफ़ इण्डियन मेडिसिन, संयुक्त प्रान्त, लखनऊ

नं०————

तिथि———————— १९३ ई०

किससे प्राप्त हुआ————————

मुबलिग————————

विषय————————

सेक्रेटरी

बोर्ड आफ़ ईण्डियन मेडिसिन, संयुक्त प्रान्त, लखनऊ

नं०————

तिथि———————— १९३ ई०

किससे प्राप्त हुआ————————

मुबलिग————————

विषय————————

सेक्रेटरी

शेष पत्र नं० १

चिकित्सकों के रजिस्टर का फार्म

नंबर	नाम	पिता का नाम	पता	योग्यता	जाति	आयु	व्यवसाय करने का स्थान	रजिस्ट्री की तिथि और स्थान	विवरण

शेष पत्र नं० २

रजिस्ट्री के प्रमाणपत्र का फार्म

बोर्ड ऑफ इण्डियन मेडिसिन संयुक्त प्रान्त

प्रमाणपत्र नं० ———

१—नाम

२—पिता का नाम

३—पता

४—योग्यता

५—जाति

६—आयु

७—व्यवसाय करने का स्थान

८—रजिस्ट्री की तिथि और स्थान

यह प्रमाणित किया जाता है कि इण्डियन मेडिसिन संयुक्त प्रान्त द्वारा स्थापित वैद्यों और हकीमों के रजिस्टर में उक्त नाम की लिखा पढ़ी की यह शुद्ध प्रति है।

लखनऊ

तिथि ………………… १९३ ई० चेयरमैन

Rules regulating the election of registered Vaidyas and Hakims as members of the Board of Indian Medicine, U. P.

1. In these rules "Board" means the Board of Indian Medicine, United Provinces; "Chairman" means the Chairman of the Board; "Secretary" means the Secretary of the Board and a "registered Vaidya" means a Vaidya and a "registered Hakim" means a Hakim whose name is entered in the Register of Vaidyas and Hakims prescribed by rule I of the Rules for compilation and publication of the register of Vaidyas and Hakims.

2. Two electoral rolls of persons eligible for election as members of the Board shall be prepared by the Secretary—one for registered Vaidyas in form no. I and the other for registered Hakims in form no. II annexed to these rules.

3. A copy of the electoral roll in form no. I shall be sent by registered post to each registered Vaidya, and a copy of the electoral roll in form no. II shall be similarly sent to each Hakim, at least two months before the date of an election. Such copy shall be accompanied by a nomination paper in form no. III or IV annexed to these rules as the case may be specifying therein the date and time fixed for the return of the nomination paper.

4. An election shall take place at the office of the Board on such date and time or between such hours as may be fixed by the Chairman. The date and the time fixed for the return of the nomination paper and the date, time and place of election shall be recorded in forms nos. I and II before they are issued.

5. Any person whose name appears on the electoral roll shall be eligible for nomination as a candidate for election.

6. Any Vaidya or Hakim whose name is on the roll and who intends to stand for election shall fill up a nomination form in form no. III or IV as the case may be and after signing it himself and getting it signed by one elector as proposer and by another as seconder shall send the same in a sealed cover by registered post or by hand to the Secretary so as to reach him not later than the date and time specified for the return of the same.

7. No elector shall subscribe, propose or second the nomination of more persons than there are seats in the particular electorate to which he belongs. If more than such number of nominations signed by the same elector be received, all such nomination papers shall be held to be invalid.

8. When a nomination paper is received, the Secretary, or any other person authorized by the Chairman, shall forthwith endorse thereon the date and hour of the receipt and shall place it in safe custody, and shall also have the date and hour of receipt entered in a register in form no. V annexed to these rules.

9. The Secretary shall fix a date and hour for the scrutiny of the nomination papers not larer than a week from the date fixed for the presentation of the nomination papers, notice whereof shall be given by entering the same in forms nos. III and IV before they are issued. On the date and hour so fixed the Secretary shall lay for scrutiny all nomination papers received by him together with the register in form no. V before the Chairman. The Chairman shall scrutinize such nomination papers and shall decide all questions which may arise as to the validity of any nomination, and his decision on all such questions shall be final.

10. Any candidate or his proposer or seconder may be present at the scrutiny of nomination papers and shall be entitled to examine any nomination papers he desires.

11. Nomination papers which are received in the office of the Board after the date and hour specified in form no. III or form no. IV shall be rejected.

12. If any objection is made that any nomination paper does not comply with these rules or with the instructions contained therein or in any other paper, or is for any other reason invalid, or if an objection is taken to the rejection of a nomination paper such objection. shall be decided by the Chairman, whose decision shall be final.

13. The Chairman shall at the time of the scrutiny endorse "Rejected" on any nomination paper which is rejected under rule 11 or which is held to be invalid.

14. Any nominated candidate may withdraw his candidature by sending to the Secretary a written and signed withdrawal not later than two clear days before the date fixed for the scrutiny of the nomination papers. Such withdrawal shall not be allowed subsequently to be cancelled.

15. If on the scrutiny of the nomination papers it is found that the number of duly nominated candidates does not exceed the number of members to be elected, the Chairman shall forthwith declare such candidate or candidates to be elected.

16. In case the number of nominated candidates exceeds the number of members to be elected, the Secretary shall prepare a voting paper for duly nominated Vaidyas in form no. VI and voting paper for duly nominated Hakims in form no. VII (annexed to these rules). He shall then send a copy of the voting paper in form no. VI to all registered Vaids and a copy of voting paper in form no. VII to all registered Hakims, and require them to send their votes in accordance with these rules by registered post or by hand in a sealed cover within fifteen days of the issue of the voting paper. The vote shall be recorded by the entry of the name of the person to be elcted in the column prescribed therefor by the elector with his own hand. Each registered Vaidya or Hakim shall be entitled to vote for as many persons as there are vacancies to be filled up from the electorate to which he belongs, but he shall not be entitled to give more than one vote to one person.

17. As soon as a voting paper is received, the Secretary or any other person authorized by the Chairman shall note the date and hour of receipt thereon, and shall place it in safe custody, and shall also have such date and hour entered in a register in form no. VIII.

18. Voting papers which are received in the office of the Board after the date and hour specified therein shall be rejected.

19. On the date and at the hour fixed for election, the Secretary shall lay for scrutiny and counting of votes all voting papers wnich he may have received together with the register in form no. VIII before the Chairman who shall scrutinize them and shall decide all questions which may arise as to the validity of any voting paper and his decision on such questions shall be final.

20. Any nominated candidate may be present in person or may send a representative duly authorized by him in writing to watch the process of counting. If a candidate or his duly authorized representative desires to examine any voting paper, he shall be allowed to do so on the date and during the hours fixed for the election.

21. If any objection is made that any voting paper does not comply with these rules or with the instructions contained therein or in any other paper or is otherwise invalid or if any objection is taken to the rejection of a voting paper under Rule 18, such objection shall be decided by the Chairman. whose decision shall be final.

22. The Chairman shall at the time of scrutiny endorse "Rejected" on any voting paper which he may reject under Rule 18, or on the ground that it does not comply with these rules or with the instructions on the voting or any other paper.

23. After the votes have been counted, the Chairman shall forthwith declare the candidate or candidates to whom the largest number of votes have been given to be elected.

24. In case of equality of votes between any two or more candidates election shall be made by lot to be drawn in the presence of the Chairman and in such manner as he may direct.

25. Upon the completion of the scrutiny and the counting of votes and after the result has been declared, the Secretary in the presence of the Chairman shall seal up the voting, nomination and other papers and shall retain the same for a period of two months from the date of the election and thereafter cause them to be destroyed.

26. The names of the elected candidates shall be reported to the Local Government, which shall declare the date from and the period for which the election shall be operative, and the result of the election with such declaration shall be published in the *United Provinces Government Gazette.*

27. No election shall be invalidated by reason of the non-receipt by an elector of his voting or any other paper.

28. The decision of the Local Government on any question that may arise as to the intention, construction or application of these rules shall be final.

29. These rules shall apply as far as may be to elections to be made to fill up casual vacancies occurring within the prescribed term. Such election shall be made for the residue of the term of the member whose vacancy is to be filled.

(Note—Necessary forms for purposes of the election will be supplied to each elector in due course.)

WAZIR HASAN, KT.,
Chairman,
Board of Indian Medicine,
United Provinces.

LUCKNOW :

September 24, 1935.

Board of Indian Medicine,

UNITED PROVINCES

Ayurvedic Schools

PROSPECTUS

SECTION A.

Ayurvedic Schools.

Ordinances and Regulations.

1. No candidate shall be admitted to the Diploma of Ayurveda-Visharada unless he shall have attended the prescribed course of studies which shall cover a period of four years after his passing the examination, qualifying him for admission to the school of Ayurveda.

2. No student shall be admitted to a course of studies in the school unless he shall have passed the admission examination which the Principal of the school will hold every year :—

(i) Students who have passed the व्याकरण प्रथमा of Kashi or equivalent examination of some other recognized institution will be exempted from Sanskrit papers.

(ii) Students who have passed the Matriculation Examination of the High School and Intermediate Board will have to appear in Sanskrit and Hindi only.

3. Students will have to appear in practical examination at the end of the first year in (1) रसायन शास्त्र (Chemistry) and भौतिक विज्ञान (Physics), and प्राणी विज्ञान (Biology).

Before presenting themselves for examination candidates shall produce evidence of—

(i) having completed the first year of their prescribed course,

(ii) having completed the course of practical classes.

4. The first professional examination shall be held in (i) शरीर-रचना-विज्ञान (Anatomy), (ii) शरीर-कार्य-विज्ञान (Physiology) and (iii) द्रव्यगुण शास्त्र [Materia Medica including परिभाषा, रसशास्त्र and भैषज्य कल्पना (Practical Pharmacy)]

Before presenting themselves for examination candidates shall produce evidence of

(i) having completed the second year of their studies,

(ii) having attended the complete course of studies prescribed by the Board,

(iii) having completed the dissection of at least one human dead body.

(iv) having acquired practical knowledge in (*a*) identification of common indigenous drugs and (*b*) preparation of common pharmaceutical recipes used in Ayurveda.

5. The second and final professional examination shall be divided into two groups :—

Group no. I shall include—

(*a*) प्रसूति शास्त्र, स्त्री रोग और बाल तंत्र (Obstetrics, Gynaecology and common diseases of children),

(*b*) व्यवहारायुर्वेद और अगद तंत्र (Jurisprudence and Toxicology),

(*c*) स्वस्थ्य वृत्त (Hygiene).

Group no. II shall include—

(*a*) रोग विज्ञान चिकित्सा सहित (Practice of medicine and treatment).

(*b*) विकृति विज्ञान और जीवाणु विद्या (Pathology and Bacteriology).

(*c*) शल्यशालाक्य तंत्र (Surgery).

Examination in Group no. I will be held at the end of third year while that in Group no. II at the end of fourth year.

(i) having passed the second professional examination,

(ii) having attended the complete course of lectures, demonstrations and practical classes according to curriculum,

(iii) having completed the third and the fourth year of their studies for the examinations of Group no. I and Group no. II respectively,

(iv) of having, for Group no. II—

(*a*) attended as a clinical clerk in the medical wards for six months,

(*b*) attended as a surgical dresser in the surgical wards for three months.

(*c*) attended as a clinical clerk in the medical outdoor department for three months,

(*d*) attended as a surgical dresser in the surgical out-door for two months.

6. A student who fails in one subject in any professional examination may be permitted to re-appear at the ensuing examination in that subject only in which he has failed, provided he has obtained not less than 25 per cent, marks in the aggregate of that subject.

7. No re-examination of the answer-books is allowed, but re-totalling of marks can be done on the candidate paying a fee of Rs. 5 only.

8. On payment of a fee of Rs. 2 only, the applicant will be supplied with his aggregate marks as well as the marks obtained in the subject in which he fails. The candidate must apply for his marks within two months from the date of publication of the results.

GENERAL REGULATIONS.

1. No student will be allowed to appear at any examination unless he has attended at least 75 per cent. of the lectures in each subject.

2. No student will be allowed to appear at any examination with whose progress the lecturers of different subjects are not satisfied.

3. Before appearing at the examinations students must produce a certificate from the teacher of having attended a full course of practical classes.

4. Students must keep regular notebooks of their work in practical classes which will have to be produced before the examiner who will pay them due consideration.

5. The lecturer shall keep a regular record of the marks obtained by the students in various examinations held in the class from time to time and shall produce it before the examiner who will duly consider it.

6. Attendance at all the examinations, whether of class or Board, is compulsory. Students, not present in the examinations, even if due to illness, will be supposed to have obtained O marks which be entered against their names.

Curricula of Studies for the School of Ayurveda.

FIRST YEAR.

1. रसायन शास्त्र तथा भौतिक विज्ञान (Chemistry and Physics)
   A course of 40 lectures.
   A course of 20 practical classes.
2. प्राणी शास्त्र (Biology).
   A course of 40 lectures.
   A course of 30 practical classes.

3. शरीर कार्य विज्ञान (Physiology).
Lectures ... ... 1 term.
4. शरीर रचना विज्ञान (Anatomy).
Lectures and Demonstrations ... 3 terms.
शवच्छेद (Dissection) ... ... 2 terms.
5. द्रव्यगुण शास्त्र (Materia Medica)
Lectures and Demonstrations ... 3 terms.
Lectures and Demonstrations ... 2 "

At the end of first year, students will be examined only in Physics and Chemistry and Biology.

SECOND YEAR.

1. शरीर रचना विज्ञान (Anatomy) ... 3 terms.
शवच्छेद Dissection ... ... 2 "
2. शरीर कार्य विज्ञान (Physiology) ... 3 "
(Practical) ... 2 "
3. द्रव्यगुण शास्त्र (Materia Medica) ... 3 "
Practical Pharmacy ... 3 "

At the end of second year students will be examined in शरीर शास्त्र, शरीर कार्य विज्ञान and द्रव्यगुण शास्त्र ।

THIRD YEAR.

1. प्रसूति शास्त्र स्त्री रोग और बाल तंत्र ... (Obstetrics, Gynaecology and some common diseases of children).
2. व्यवहारायुर्वेद और अगद तंत्र ... (Elementary Jurisprudence and Toxicology).
3. स्वस्थ्य वृत्त ... (Hygiene).
4. रोग विज्ञान और चिकित्सा ... (Medicine and treatment)
5. शल्य शालाक्य तंत्र ... (Elementary surgery).
6. विकृति विज्ञान जीवाणु विद्या सहित ... (Elements of Pathology and Bacteriology).

At the end of the third year students will be examined in स्वस्थ्य वृत्त, प्रसूति तंत्र तथा स्त्री रोग और बालतंत्र, व्यवहारायुर्वेद तथा अगदतंत्र ।

FOURTH YEAR.

1. रोग विज्ञान और चिकित्सा ... (Medicine and treatment).
2. शल्य शालाक्य तंत्र ... (Surgery, elementary)

3. विकृति विज्ञान ... (Pathology and Bacteriology)

Students will be examined in रोग विज्ञान (चिकित्सा सहित) शल्य शालाक्य तंत्र and विकृति विज्ञान और जीवाणु विद्या at the end of the fourth year.

The number of lectures, demonstrations and practical classes in different subjects should be as follows :—

Subject.	Lectures.	Demonstrations.	Practical classes.
1. Chemist›y and Physic.	40	...	20
2. Biology ...	40	...	30
3. Hygiene ...	20	5	
4. Anatomy ...	60	60	(6 terms)
5. Physiology ...	50	20	20
6. Meteria Medica ...	60	60	40
7. Medicine ...	60	15	Clinical Tutorial.
8. Surgery ...	50	15	Ditto.
9. Bacteriology ...	10	5	10
10. Jurisprudence and Toxicology.	20	...	(Post mortem examinations).
11. Obstetrics and Gynaecology.	30	10	

Syllabus for Admission Examination for the Diploma of Ayurveda-Visharad.

1. Candidates appearing at this examination shall be examined in the following subjects :—

1. Sanskrit.
2. Hindi.
3. Geography of India.
4. Arithmetic, and
5. English.

SANSKRIT.

There will be two papers of 100 marks each. First paper will be set from the prescribed text-books. The second paper will contain questions on general composition and translation from Hindi to Sanskrit and *vice versa*.

1st paper ... व्याकरण लघुकौमुदी

2nd paper ... तर्क संग्रह पदकृत्य सहित । अनुवाद हिन्दी से संस्कृत और संस्कृत से हिन्दी, पत्र लेखन इत्यादि । निबन्ध रचना

HINDI.

One paper of 100 marks containing questions on general composition and books.

Text-books ... १ हिन्दी निबन्ध माला भाग १ प्रकाशक, काशी नागरी प्रचारिणी सभा । २ संक्षिप्त रामायण बाबू श्याम सुन्दरदास कृत, इण्डियन प्रेस, प्रयाग में मुद्रित ।

GEOGRAPHY.

One question paper of 100 marks.

Text-books भारतवर्ष का भूगोल ... बाबू कालिका सिंह एम० ए० लिखित

Arithmetic.

Addition, subtraction, multiplication, division, simplification and simple rule of three.

One paper of 100 marks.

English.

One paper of 100 marks containing passages for translation from Hindi to English and *vice versa.* There will also be a paper on general composition in the form of an essay or a letter. (The standard expected will be that of the VIII standard of High School Board.)

SECTION B.

Syllabus.

रसायन शास्त्र और भौतिक विज्ञान ।

(रसायन शास्त्र)

१—पदार्थ की परीक्षा, उसके रंग, गंध, स्वाद इत्यादि के अनुसार ।

२—घोल (Solution) मिश्रण (Mixture) एमल्शन (Emulsion) निस्यन्दन (Filtration), स्फटकी करण (Crystalization) स्रवन (Distillation) और ऊर्ध्वपातन (Sublimation).

निम्नलिखित वस्तुओं के साथ ऊपर लिखित प्रयोगों का ज्ञान करनाः—

साधारण लवण, शोरा, खटिव, चूना, बालू, नील, तुत्थ, कसीस, गंधक, गंधकाम्ल, नाइट्रिक अम्ल (शोरे का तेजाब), हाईड्रोक्लोरिक अम्ल (नमक का तेज़ाब) – लोह, यसद, सीसा, ताम्र, कपूर, तेल।

३—वायु—संगठन, दहन (Combustion) धातुओं में जंग लगाना।

४—जल-संगठन, सोडियम व मगनेशियम की जल पर क्रिया, वाष्प की तप्त लोह पर क्रिया।

५—निम्नलिखित गैसों को बनाना और उनके साधारण गुणों का ज्ञान—

अक्सीजन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, क्लोरिन, कारबोनिक अम्ल (Carbonic Acid) इनके मुख्य योगों का ज्ञान करना।

६—मौलिक तथा संयोगिक पदार्थ, अणु और परमाणु, इनके सिद्धान्त, रसायनिक संयोजन के नियम।

७—निम्नलिखित वस्तुओं का सामान्य ज्ञान—

एलकोहल (Alcohol), ईथर (Ether) क्लोरोफ़ारम (Chloroform) एसेटिक (Acetic) अम्ल, औक्ज़ैलिक (Oxalic) अम्ल और टारटैरिक (Tartaric) अम्ल।

पाठ्य पुस्तक—प्रारम्भिक रसायन, भाग प्रथम और द्वितीय, लेखक—प्रोफ़ेसर फूलदेव सहाय वर्म्मा प्रकाशक—नन्दकिशोर एण्ड ब्रादर्स, बनारस।

(भौतिक विज्ञान)

८—साधारण—पदार्थ (Matter), जड़त्व (Inertia) शक्ति (Energy), बल (Force), दबाव (Pressure), पदार्थों की भौतिक अवस्थाएँ; क्षेत्रफल, लम्बाई, और आयतन की माप; मात्रा (Mass) और तोल (Weight), गुरुत्वाकर्षण का नियम (Law of Gravitation) रसायनिक तुला (Chemical Balance), घनत्व और विशिष्ट गुरुत्व (Density and specific gravity) आर्किमिडीज का सिद्धांत (Theory of Archimides).

९—ताप (Heat) का घन (Solids), द्रव (Liquids), और गैसों पर प्रभाव, आयतन और तापक्रम का परिवर्तन, थर्मामीटर, क्वथनाङ्क (Boiling point) गलनाङ्क (Melting point), वाष्पीकरण (Evaporation), द्रवीकरण (Condensation), स्रवन (Distillation), ताप की मात्रा, आपेक्षिक ताप (Specific heat) गुप्तताप (Latent heat) तापगमन (Conduction of heat), तापवहन (Convection), तापविसर्जन (Radiation).

१०—प्रकाश (Light) सरल रेखात्मक गमन—छाया (Shades) समतल और गोलीय दर्पणों से परिवर्तन (Reflection of light from plain and spherical mirrors) वास्तविक और अवास्तविक प्रतिबिम्ब (Real and virtual images), समतल, त्रिपार्श्व और तालों से परिवर्तन (Refraction from plain surfaces, prisms and lenses), सूक्ष्म दर्शक (Microscope) दुरबीन (Telescope) रश्मिवर्णमाला (Spectrum).

११—विद्युत और चुम्बकत्व (Electricity and Magnetism) चुम्बक और चुम्बकीय पदार्थ—आकर्षण ध्रुवदिक्-सूचक (Magnetic Compass), संघर्षण के द्वारा विद्युत की उत्पत्ति—धन और ऋण विद्युत (Positive and Negative Electricity), संचालक और रोध पदार्थ (Conductors and non-Conductors), विद्युतधारा, विद्युतघटिका, विद्युतधारा का चुम्बक पर प्रभाव, धारामापक, विद्युतधारा से ताप और प्रकाश की उत्पत्ति, विद्युत विश्लेषण स्वर्णपत्र विद्युत-दर्शक (Gold leaf Electroscope), वोल्टे तथा लेकलांची का विद्युत घट (Volte's and Lachlanche's cells)

१२—सांख्य और वैशेषिक के अंतर्गत जो भौतिक शास्त्रोपयोगी आयुर्वेदीय अंश हैं विद्यार्थी को उनका ज्ञान होना चाहिये।

अभिसरण (Osmosis).

१६—शब्द—शब्द के विस्तार सम्बन्धी प्रारम्भिक नियम।

पाठ्य पुस्तक—प्रारम्भिक भौतिक विज्ञान by Dr. Nihalkaran Sethi, D. Sc., published by Benares Hindu University.

वनस्पति शास्त्र और जन्तु विज्ञान, (वनस्पति)

बीज की रचना और स्फुटन (Germination), उसकी आवश्यक अवस्थायें—सेम व मटर व एरण्ड के बीज का उदाहरण।

जड़—प्राकृतिक और अप्राकृतिक रूप (Normal and adventious roots) जड़ का कार्य—वृक्ष का स्तंभ—उसकी शाखायें, अंकुर, अधोतलीय मूल का स्तंभ से भेद, स्तंभ के भिन्न २ रूप।

N. B. पाठ के समय साधारण वस्तु जैसे हरिद्रा, अदरक, आलू व अन्य आयुर्वेद में प्रयोग होने वाली औषधियों का व्यवहार करना चाहिये। पत्र—पत्रक्रम (Phyllotaxis); भिन्न २ प्रकार के पत्र; संयुक्त पत्र (Compound leaf) और शाखा का भेद, निम्नलिखित विधि के अनुसार पत्र की व्याख्या:—

(१) पतन शील (Deciduous) व चिरहरित (Evergreen) पक्षान्तर (Alternate) व संमुख (Opposite) मूल—सहित (Petiolate) व मूल रहित, वेष्टित (Sheathed) इत्यादि।

पत्र का आकार।

(२) पुष्प—पुष्प क्रम, पुष्प का आकार, उसके भिन्न २ भागों की स्थिति पुष्प की व्याख्या।

Calyx.
Corrolla.
Androecium.
Gynaecium,
Ovaries.

(३) फल (Fruit)—जाति, बीज और फल का वितरण।

वृक्ष-क्रिया-विज्ञान—श्वास क्रिया; भोजन का ग्रहण करना, जाति अवरोहन, प्रकाश का वृक्ष पर प्रभाव।

(जन्तु विज्ञान)

व्याख्या—जन्तुओं के वर्गीकरण के मुख्य २ सिद्धान्त—भिन्न वर्ग और जातियां—मनुष्य की स्थिति, सेल और प्रोटोप्लाज़म-विकासवाद के स्थूल नियमों की सूक्ष्म रूप से व्याख्या-मेंढक के शरीर की व्याख्या-उसके मुख्य २ संस्थानों की रचना और उनका कार्य॥

शरीर रचना विज्ञान (Anatomy).

There will be one paper in Anatomy containing questions from modern as well as classical literature on the subject carrying 100 marks of 3 hours' duration. There will also be a practical examination of 100 marks.

अस्थि संस्थान—अस्थियों के प्रकार, उनकी रचना, तथा कार्य्य, करोटि के अतिरिक्त शरीर की अस्थियों का विशद ज्ञान; तथा करोटि की अस्थियों के नाम और तत्सम्बन्धी विशेष बातें।

संधि संस्थान—प्रकार—रचना तथा कर्म। निम्नलिखित संधियों का विशद ज्ञान।

(१) स्कंध (Shoulder).

(२) कूर्पर (Elbow).

(३) वंक्षण (Hip).

मास संस्थान – शरीर की पेशियों के नाम, उनका उद्भव और निवेश, उनकी क्रिया का सामान्यतः ज्ञान।

रक्त-वाहक संस्थान—हृदय की रचना, स्थिति, आकार इत्यादि तथा शरीर की मुख्य धमनी और शिराओं का विवरण, मुख्य धमनियों के संबंध।

नाड़ी संस्थान – मस्तिष्क की स्थूल रचना का सामान्य ज्ञान, मस्तिष्क के केन्द्र, मस्तिष्क तथा सुषुम्ना से निकलने वाली नाड़ियां तथा उनका विवरण।

आशय खंड—निम्नलिखित आशयों का उपयुक्त ज्ञानः—

मुख, अन्न प्रणाली, आमाशय, पक्वाशय—क्षुद्र अंत्रिया, बृहद आंत्र, मल स्थान, उदर गुहा, औदर्या कला (Peritoneum) तथा आंत्र सम्बन्धी कला, (Mesentry)

वृक्क, उपवृक्क (Suprarenals) गवीनी, (Ureter) मूत्राशय शिश्न, मूत्र मार्ग।

अंड कोष, उसके स्तर, उपाण्ड।

गर्भाशय, डिम्बग्रन्थि (Ovary) योनि, भग। फुस्फुस, श्वास—प्रणाली तथा प्रणालिकायें, अवटुका (Thyroid) और पीयूष (Pituitary) ग्रन्थियाँ।

विशेष ज्ञानेन्द्रियां—नेत्र, श्रोत्र, नासिका, त्वचा तथा जिह्वा।

पाठ्य ग्रंथ – वाग्भट्ट—शरीर स्थान।

प्रत्यक्ष शारीरम्—गणनाथ सेन (हिन्दी) Supplemented by notes.

क्रियात्मक—एक सम्पूर्ण शव का शवच्छेद।

शरीर क्रिया विज्ञान (Physiology).

There will be one paper in Physiology carrying 100 marks of 3 hours' duration containing questions from modern as well as classical text-books dealing with the subject. There will also be a practical examination of 100 marks.

जीवन के लक्षण—

जीव कोषाणु (Cell)—आद्यसार (Protoplasm), उसका भौतिक और रसायनिक संगठन तथा उसके गुण।

धातु (Tissues), प्रकार—अस्थि, सुक्कि (Cartilage) इत्यादि।

नाड़ी, (Nerve), प्रकार, उनका कार्य तथा मांस पेशी से संबंध।

मांसपेशी (Muscles), उनकी भौतिक रचना, संकोच तथा विस्तार, मृत्यूत्तर संकोच, (Rigor Mortis).

रक्तवाहक संस्थान—हृदय का कार्य, हृत्कार्यचक्र—भिन्न भिन्न-भाग जैसे कपाट—(Valves) इत्यादि के कार्य—हृत्कार्य चक्र का समय, हृदय का शब्द—रक्तपरिभ्रमण या संवहन (Circulation of Blood), रक्त भार (Blood Pressure), हृदय की नाड़ियाँ, और फुफ्फुस का सबंध।

श्वासोछ्वास संस्थान (Respiratory system)—फुफ्फुस, श्वास प्रणाली तथा श्वास प्रणालिकाओं की रचना, श्वास कर्म, श्वास के कारण वक्ष में गति, वायु और रक्त की गैसों का परिवर्तन, श्वास का कारण, कृत्रिम श्वास क्रिया—

पाचक संस्थान (Digestive system)—भोजन के अवयव (Constituents of diet), कुछ साधारण भोजन पदार्थों का संगठन, भिन्न-भिन्न पाचक रस, उनकी उत्पत्ति तथा क्रिया, पित्त, भोजन का अंत्रियों द्वारा शोषण, आमाशय और अंत्रियों में गति—

मूत्रवाहक संस्थान (Urinary system)—मूत्र की मात्रा तथा संगठन, वृक्क द्वारा मूत्र की उत्पत्ति, मूत्र के स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक अवयव,।

नाड़ी मंडल—(Nervous system) वृहद मस्तिष्क, लघु मस्तिष्क, सुषुम्ना तथा नाड़ियों के कर्म, केन्द्रों का अन्वेषण, स्वतंत्र मंडल (Sympathetic or Autonomous Nervous system) का साधारण ज्ञान।

विशेष ज्ञानेन्द्रियां—नेत्र, कर्ण, जिह्वा, नासिका, और त्वचा की रचना, और उनके कर्म का साधारण ज्ञान।

निःस्रोत ग्रन्थियां (Ductless Glands) निम्नलिखित निःस्रोत ग्रन्थियों का विशेष ज्ञान—

अवटुका (Thyroid).
पीयूषिका (Pituitary).
उपवृक्क (Suprarenals).
चयापचय (Metabolism).

पाठ्य पुस्तक—(१) मानव शरीर रहस्य by Dr. M. S. Varma. Published by Newal Kishore Press, Lucknow.

(२) वाग्भट्ट तथा चरक के विषय सम्बन्धी प्रकरण का ज्ञान ।

क्रियात्मक—

सूक्ष्म रचना (History)—धातु, आमाशय, क्षुद्रांत्र, वृहदांत्र, अग्न्याशय, वृक्क, यकृत्, मासपेशी, नाड़ी सूत्र, और अंडकोष की सूक्ष्म रचना का ज्ञान ।

रक्त की परीक्षा—रक्त का Slide बनाना और उसका रञ्जन (making and staining a blood film), रक्त कणों (blood corpuscles, red and white) की गणना ।

रक्तभार को मापना

मूत्र की परीक्षा

द्रव्य गुण-शास्त्र तथा रस शास्त्र परिभाषा सहित

There will be one paper in Materia Medica containing questions on the following syllabus of 3 hours' duration carrying 100 marks. There will also be a practical examination of 100 marks.

साधारण परिभाषाओं की व्याख्या

वानस्पतिक, जान्तव और खनिज औषधियों का उनके प्रभाव के अनुसार वर्गीकरण ।

परिमाण—मात्रा का निश्चय—गुण विरोध्य, (incompatibility)

रस, वीर्य्य, विपाक, प्रभाव, तथा गुण—औषधि के शरीर में प्रवेश के मार्गप्रयोग पत्र (prescription) लिखना ।

निम्नलिखित औषधियों के उत्पत्ति व प्राप्ति स्थान, उनका स्वरूप, प्रभाव, मात्रा, प्रयोग इत्यादि का पूर्ण ज्ञान—

त्रिफला, त्रिमद, चतुर्जात, दशमूल, त्रिणपंचमूल, अम्ल वर्ग, अष्टवर्ग, परोल, पर्पटक, तुलसी, निर्गुण्डी ब्राह्मी, केतकी, मंडूकपर्णी, क्षुरक, इक्षुपा, गोरक्षमुंडी, इन्द्रवारुणी, मदन फल, कोषातकी, पंचवल्कल, क्षाराष्टक, वासा, भार्ङ्गी, लवंगयमानी, शतपुष्पद्वयम्, कुष्ट, शृंगी, ताम्बूल, कुस्तुम्बरु, शठी, तालीषपत्र, जीरक, देवदारु, पुनर्नवा, दुरालभा, बलाचतुष्टय, अश्वगंधा, विदारी, वृद्धदारुक, भल्लातक, त्रिवृत्त, रण्ड, दन्ती, आरग्वध, जयपाल, दारुहरिद्रा निम्ब, गुडुची, अगुरु, कुंकुम, चन्दन, जटामांसी, पलाण्डु, रसोत, कटफलं, कपूर, उषीर, हिंगु अशोक, सारिवा, सप्तपर्ण, शालसा, अहिफेन, गंजा भंग, वत्सनाभ, विषमुष्टि, धतूरा, गुंजा-फल, देवदाली, ज्योष्मिनी, अम्बर, मुक्ता, प्रवाल, शंख, शुक्ति ।

निम्नलिखित वस्तुओं के अष्ट संस्कार, उनके बनाने की रीति, गुण और प्रयोगों का ज्ञान—

रसभस्म, महारस, लोह, फेनाश्म, मृद्दारशृंग, हिंगुल, रसपर्पटी, रससिंदूर मकरध्वज रसकपूर, ताम्र, नाग, वंग, स्वर्ण, रजत, यशद, अभ्रक, हरताल, मनःशिल, रसमाणिक्य, अंजन, तुत्थ, कासीस ।

Arsenic and its salts, Potassium Iodide, Potassium Permanganate, Potassium Bromide, Ammonium Bromide, Ammonium Chloride, Sodium Bromide, Hydrarg perchlor, Acids—Nitric, Hydrochlor, Hydrochloric and Sulphuric. Iodine, Stramonium, Datura, Digitalis, Strophanthus, Nux Vomica, Strychnine, Opium, Morphine, Aconite, (मीठा तेलिया) Ergot, Alcohol, Ether, Chloroform, Thymol, Carbolic Acid, Mustard, Castor oil, Cascara Sagrada, Rhubarb, Santonine, Cinchona and quinine, Adrenalin, Pituitarin, Thyroid Extract, Anisi, Anithi, Cinnamon, Cajuput, Cloves.

क्रियात्मक—औषधि निर्माण

निम्नलिखित श्रेणियों के कम से कम दो योग बनाने होंगेः—

(१) कषाय—हरीतक्यादि, मंजिष्टादि, पुनर्नवा, कुटजाष्टक ।
(२) पुटपाक—कुटजत्वक, विभीतक, सूरण ।
(३) चूर्ण—लवणभास्कर, चित्रकादि. तालीषादि, सितोपलादि ।
(४) अवलेह—च्यवनप्राश, कष्टकारी, वासा, स्वर्णमुखी ।
(५) घृत—पंचतिक्ता, विन्दुघृत ।
(६) तैल निस्सारण—वाकुची, स्वर्णक्षीरी, चालमुग्रा, (तुवरक तैल) ।
(७) अरिष्ट तथा आसव—अहिफेन, पुनर्नवा, द्राक्षा ।
(८) पानक—चंदन, बनपलांगु ।
(९) अर्क—शतपुष्प, गुलाब, कर्पूर, त्वक ।
(१०) प्रलेप—त्रिफला, राल, शतधौत ।

निम्नलिखित उपकरणों का ज्ञान—

खल्व, स्थाली, तथा Infusion pot.

Pill machine,	Pill Roller.
स्वेदन यंत्र,	कच्छप यंत्र ।
अर्क ,, ,	त्रियक पातन ,, ।
डमरू ,, ,	ऊर्ध्वपातन ,, ।
भस्म ,, ,	अधः पातन ,, ।
भूधर ,, ,	लवण ,, ।
पाताल ,, ,	नाडिका ,, ।
डोला ,, ,	
गुदवर्ति के सांचे ।	

निम्नलिखित श्रेणियों के कम से कम दो योग बनाने होंगे—और दो प्रक्रिया करनी होंगी :—

(१) कज्जली—रसगंधक, खटिक ।
(२) शोधन—शिलाजीत, बंग, नाग, गंधक ।

(३) सत्वपातन—अभ्रक, हरताल, तुत्थ ।
(४) मारण—वंग, ताम्र, लोहनाग, अभ्रक ।
(५) जारण—गंधक ।
(६) रस—इच्छाभेदी, स्वच्छन्द भैरव, मृत्युञ्जय, जयमंगल, कस्तूरी ।
(७) पर्पटी—पञ्चामृत, रसगंधक ।
(८) लेप—दशांग, सिक्तकादि ।
(९) वटी—आरोग्यवर्धनी, सञ्जीवनी ।

पाठ्य ग्रंथ—(१) भावप्रकाश का निघण्टु,
(२) गंगाधरी परिभाषा,
(३) आयुर्वेद प्रकाश,
(४) Materia Medica by Ghosh.

रोग विज्ञान (Medicine). चिकित्सा सहित

There will be two papers, one from modern and the other from classical text-books, each carrying 100 marks and of 3 hours' duration. There will also be a practical examinatian of 100 marks.

निम्नलिखित रोगों के लक्षण, सम्प्राप्ति, कारण, परीक्षा तथा उनकी चिकित्सा का ज्ञान होना चाहिये ।

संक्रामक रोग—भिन्न २ प्रकार के ज्वर, वातज्वर, पित्तज्वर, श्लेष्मज्वर, तथा संधिवातज्वर (Rheumatism), विषमज्वर (Malaria), काला-अजार (Kala-Azar), मस्तिष्कावरणज्वर (Cerebral Meningitis), कर्ण ग्रन्थिज्वर (Parotitis), वातश्लेष्मज्वर (Influenza), डिप्थीरिया (Diptheria), धनुर्वात (Tetanus), आंत्रज्वर (Enteric fever) प्लेग (Plague) मसूरिका (Small pox), आतपज्वर (Heatstroke), विशूचिका (Cholera), प्रवाहिका (Dysentery), फिरंगरोग (Syphilis), पूयमेह (Gonorrhoea), राजयक्ष्मा (Tuberculosis), पराश्रमी–कृमिज रोग, जैसे अंकुर कृमि रोग (Ankylostomiasis), अन्य रोग—बेरी बेरी (Beri beri), स्कर्वी (Scurvy), रिकेटस (Rickets), गठिया (Gout), पाचन के रोग—कंठशालूक, गलशोथ, (Pharyngitis), अजीर्ण और मंदाग्नि, (Dyspepsia) आमाशय व्रण (Gastric ulcer), आमाशय का कैंसर (Cancer of stomach), अतिसार (Diarrhoea), क्षयजन्य अतिसार कोष्टबद्धता (Constipation), संग्रहणी, आन्त्र परिशिष्ट शोथ (Appendicitis), उदर शूल (Intestinal colic), गुल्म ।

यकृत के रोग—कामला (Jaundice), यकृत शोथ, (Hepatitis) पित्ताश्मरी (Billiary calculus).

औदर्याकला—औदर्याकला का साधारण शोथ (Simple Peritonitis), क्षयजन्य शोथ (Tuberculous Peritonitis), जलोदर (Ascitis)

प्लीहा—प्लीहा वृद्धि (Enlargement of Spleen)

श्वास सम्बन्धी रोग—प्रतिश्याय, स्वरयंत्रशोथ (Laryngitis), पार्श्वशूल तथा उरस्तोय (Pleurisy), कास (Bronchitis), श्वास रोग, (Asthma), फुस्फुस प्रसार (Emphyseima), श्वासज्वर (Pneumonia), फुस्फुस विद्रधि (Abscess of lungs),

मूत्ररोग—तरुण तथा जीर्ण वृक्क शोथ (Acute and Chronic Nephritis),

वृक्कशूल (Renal Colic)

वृक्काश्मरी (Renal Calculus)

मूत्रविषसंचार (Uraemia), इक्षुमेह (Diabetes Mellitus), उदकमेह (Diabetes Insipidus).

रक्तमेह (Haematuria).

वसामेह (Chyluria).

रक्त संवहन के रोग—हृदयपर्यावरण तथा अंतरावरण शोथ (Pericarditis and Endocarditis), हृत्कपाटों के रोग (Valvular diseases of heart) हृत्प्रसार और हृदयाति वृद्धि (Dialatation and Hypertrophy), हृच्छूल (Angina Pectoris).

रक्तरोग—पांडु (Anaemia), घातक पांडु (Pernicious Anaemia), नासारक्तस्राव (Epistaxis), रक्तवमन (Haemoptysis), रक्तातिसार।

त्वग्रोग—शीतपित्त, दद्रु (Ringworm), पामा (Eczema), कंडु (Scabies), श्वित्र, त्वक्क्षयरोग (Lupus), लोमनाश (Alopaecia),

नाड़ीमंडल के रोग—पक्षाघात (Hemiplegia), मस्तिष्क रक्तस्राव (Cerebral Haemorrhage), मस्तिष्क सिरारोध (Cerebral Embolism), मस्तिष्कावरणशोथ (Cerebral Meningitis), उन्मत्तपक्षाघात।

अपस्मार (Epilesy), नाड़ीवातशूल (Neuritis),
अर्धावभेद (Forticollis) सूर्यावर्त (Hemicrania),
धनुस्तम्भ (Tetanus),

विसर्पीमांसक्षीणता (Progressive muscular Atrophy)

दृष्टिनाडीशोथ (Optic Neuritis), त्रिशाखा नाडीशूल (Trigemiral Neuralgia) अर्दित, गृध्रसी (Sciatica).

पाठ्यग्रंथ—वाग्भट्ट—सूत्रस्थान अ० १, १२, १३, १४, १६ से २४ तक

" शरीरस्थान-अ० ५, ६

" निदानस्थान-समग्र

" उत्तर तंत्र अ० २२, ३१, ३३, ३४, ४०

" चिकित्सास्थान, अ० १ से १२, १४ से २२,

" कल्पस्थान—समग्र।

Wheeler's Hand book of Medicine.

स्वाध्याय ग्रंथ—Taylers Practice of Medicine.

विकृति विज्ञान (Pathology).

There will be one paper in Pathology carrying 100 marks and of 3 hours' duration, consisting of questions from modern as well as classical text-books. There will also be a practical examination of 100 marks.

त्रिदोष सिद्धान्त—

स्वास्थ्य और रोगावस्था का सामान्य ज्ञान। शोथ (Inflamation) व्रण-रोहन (Repair of wound), क्षीणता (Atrophy) अतिवृद्धि (Hypertrophy) अर्बुद, सामान्य तथा घातक (simple and malignant ulcers).

निम्नलिखित रोगों में विकृत दशा का साधारण ज्ञान—

ज्वर (Fevers), विषम ज्वर (Malaria), आंत्रज ज्वर (Enteric), राजयक्ष्मा (Tuberculosis), श्वसन ज्वर (Pneumonia), श्वास रोग (Asthma), वृक्क शोथ (Nephritis), वसामेह (Chyluria), फिरंग रोग (Syphilis), हृदय के मुख्य मुख्य रोग जैसे हृत्कपाट के रोग (Valvular diseases of heart), प्लीहा और यकृत के कुछ विशेष रोग—

पराश्रयी जीवन ज्ञान—

मुख्य २ पराश्रयियों का जीवन चक्र—

गंडूपद कृमि (Round worms.)

सूत्र कृमि (Thread worms) श्लीपद कृमि (Filaria)

अंकुर कृमि (Ankylostoma duodenale)

जीवाणु विद्या (Bacteriology) के साधारण नियम—

जीवाणुओं की उत्पत्ति, वृद्धि, भोजन, वायु और प्रकाश का प्रभाव, जीवाणुओं के प्रकार तथा आकार, रोगक्षमता (Immunity) का ज्ञान—

निम्नलिखित रोगों के जीवाणुओं का ज्ञान तथा उनकी परीक्षा—

पाक (Suppuratian), श्वसनक ज्वर (Pneumonia), पुनराक्रमक ज्वर (Relapsing fever), डिप्थीरिया (Diphtheria), आंत्रज ज्वर, राजयक्ष्मा, विशुचिका, कुष्ट, पूयमेह, फिरंग रोग, प्लेग, एक्टिनोमाइकोसिस (Actinomycosis)

पाठ्य ग्रंथ—प्राचीन ग्रंथों के विषय सम्बन्धी भाग का अध्ययन—

Green's Text Book of Pathology.

जीवाणु विद्या, गुरूपदेशानुसार

शल्य तथा शालाक्य तंत्र (Surgery, General and Special)

There will be one paper in Surgery containg questions from modern as well as classical text-books, carrying 100 marks of 3 hours' duration. There will also be a practical examination of 100 marks.

निम्नलिखित विषय का ज्ञान—

शोथ (Inflamation), पाक (Suppuration), विद्रधि (Abscess), अधस्त्वक शोथ (Cellulitis), गतिव्रण (Sinus), व्रण (Ulcer) रोहन (Repair).

अष्ट विधि कर्म

निर्विष तथा विषहारी चिकित्सा (Aseptic and anti-septic surgery) विसंक्रामक पदार्थ तथा उनका प्रयोग (Anti-septics).

अर्बुद (Tumours), भिन्न-भिन्न प्रकार—चिकित्सा।

पूय संचार (Pyaemia), क्षतजविसर्प (Erysepilas), धनुर्वात (Tetanus), फिरंग रोग (Syphilis), पूयमेह (Ganorroea), क्षयव्रण (Tuberculosis).

स्तब्धता (Schock), अस्थिभग्न (Fractures)—अस्थिभग्न के प्रकार तथा चिकित्सा के साधारण नियम।

निम्नलिखित अस्थियों के भग्नों का विशेष ज्ञान—

अक्षक (Clavicle), प्रगंडास्थि (Humerous), बाहु की अस्थियाँ (Radius and ulna), उर्वस्थि (Femur), जंघास्थियाँ (Tibia and Fibula) जान्वस्थि (Patella), हन्वस्थि (Mandabile), पादास्थियाँ (Tarsals), करभास्थियाँ (Carpals) और अंगुल्यास्थियाँ (Digital bones).

संधिविश्लेष—

निम्नलिखित संधियों के विश्लेषों का विशेष ज्ञान—

हनुसन्धि (Mandibular Joint), अंसफलक की संधियाँ (Acromial Joints), कूर्पर (Elbow), मणिबंध (Wrist), अंगुष्ठ (Thumb), वंक्षण (Hip), जानु (Knee), गुल्फ (Ankle)

संधि तथा अस्थियों के रोग—

संधिविवर्त (Sprain), संधिशोथ (Arthritis), अस्थिशोथ (Periostitis), अस्थिमज्जा शोथ (Osteomylitis.).

निम्नलिखित रोगों का पूर्ण ज्ञान—

रक्तस्राव (Haemorrhage)—भिन्न-भिन्न प्रदेशों का रक्तस्राव तथा उसकी चिकित्सा के उपाय।

मूत्रावरोध (Incontinuance of urine), मूत्रकृच्छ्र (Retention of urine), मूत्रपरिविसार (Extravasation of urine), मूत्राशयाश्मरी (Stone in bladder) वृक्काश्मरी (Renal calculus), बद्धगुद (Intestinal obstructure), आंत्रपरिशिष्ट शोथ (Appendicitis), आंत्रवृद्धि (Hernia), अर्श (Piles), भगन्दर (Fistula-in-An), मूत्रमार्गसंकिरण (Urethral stucture), यकृत विद्रधि (Liver abscess).

व्रणोपचार का पूर्ण ज्ञान—व्रण तथा कुशावन्धन—व्रण शोधन।

शस्त्र कर्म, पूर्व कर्म, प्रधान कर्म, पश्चात् कर्म, सूची वेधन, बन्धन तथा सीवन (Lignatures and sutures), उत्तर वस्ती, मूत्र मार्ग परिशोधन।

संज्ञाहरण (Anaesthesia)

पाठ्य ग्रंथ—(१) वाग्भट्ट —सूत्र स्थान अ० २५–३०। शरीर स्थान अ० ३–४।
,, चिकित्सा स्थान अ० १३–१८। उत्तर स्थान अ०२८–३०।
(२) संक्षिप्त शल्य विज्ञान by Dr. M. S. Verma,
PUBLISHED BY
MESSRS NAND KIHORE & BROTHERS, *Chowk, Benares.*

प्रसूति तंत्र, स्त्री रोग तथा बालतंत्र।

(Obstetrics, Gynæcology, diseases of children).

There will be one paper containing questions from modern as well as classical text-books, carrying 100 marks and of 3 hours' duration There will also be practical and viva-voce examinations of 100 marks.

शुद्ध आर्तव का लक्षण—बीजोत्पत्ति (Ovulation), पुरुष तथा स्त्री बीजों का संयोग और उससे गर्भ स्थापना—अपरा की उत्पत्ति (Development of Placenta) और उसके कर्म, भ्रूण का रक्त संवहन, गर्भाशय की भिन्न भिन्न अभिकालिक वृद्धि, गर्भ के लक्षण (signs of pregnancy.)

साधारण प्रसव का ज्ञान (Course and mechanism of normal labour)

मूढ़ गर्भ तथा विपरीत उदयन (abnormal labour and malpresen tations), कष्ट प्रसव (difficult labour), उनकी परिचर्या (management).

प्रसूति काल।

गर्भ रोग—अर्बुद (Tumours), भ्रूण कोषाति वृद्धि (Hydramnios), रक्तस्राव (Haemorrhage),—(Antepartum and Postpartum), गर्भस्राव (Abortion and miscarriage), बहिर्गर्भस्थिति (Extrauterine pregnancy).

फिरंग रोग, क्षय रोग, हृत रोग तथा गर्भाशय रोग।

विष संचार (Scepticaemia), जीवाणु संचार (Pyaemia).

आर्तव सम्बन्धी रोग—

कष्टार्तव (Dipmenorrhoea), अत्यार्तव (Metrorrhagia and Menorrhagia), नष्टार्तव (Amenorrhoea), श्वेत प्रदर (Lencorrhoea)

भग शोथ—योनि शोथ (Vulvitis and vaginitis), गर्भाशय के शोथ (Metritis endometritis and para-metritis), योनि तथा गर्भाशय के अर्बुद श्रोणि-पर्यावरण-शोथ (Pelvic cellulitis).

नवजात शिशु का स्नान, भोजन, स्तन पोषित तथा हस्त पोषित—(breast fed and hand fed), शिशुओं की भिन्न-भिन्न अवस्था पर भोजन विधि, दन्तोत्पत्ति, तत्सम्बन्धी परिचर्या, शिशु स्वास्थ सम्बन्धी साधारण नियम, विशेष बाल रोगों का ज्ञान, बाल-अतिसार (Infantile Diarrhoea), मलबंध (Constipation), काली खांसी (Whooping cough), आध्मान (Tympanitis), वातश्लेष्म ज्वर (Broncho-pneumonia), आक्षेप (Convulsions), बाल-शोथ (Rickects), कुकूणक पारिगर्भिक तालुकंटक (Stomatitis).

पाठ्य ग्रन्थ—यामिनी भूषण राय कृत (१) प्रसूति तन्त्र (२) कौमार तन्त्र (३) गुरूपदेशानुसार

व्यवहारायुर्वेद और अगद तंत्र ।

(Medical Jurisprudence and Toxicology).

There will be one paper in Medical Jurisprudence and Toxicology of 3 hours' duration carrying 100 marks.

स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक मृत्यु, दुर्घटनायें, आत्महत्या, परहत्या, शिशुहत्या । मृत्यु के लक्षण, मृत्यूत्तर संकोच (Rigor mortis).

क्षतों के लक्षण (wounds), भेद तथा परिचय, आत्मकृत तथा परिकृत ।

विषों का वर्गीकरण तथा उनकी शरीर पर क्रिया, चिकित्सा के साधारण नियम — निम्नलिखित विषों के लक्षण और उनकी चिकित्सा ।

धात्वीय तथा वानस्पतिक अम्ल (Mineral and vegetable acids) दाहक क्षार ।

धात्वीय विष—संखिया, पारद, नीलाञ्जन, सीसा, ताम्र, धतूरा, भंग, कुचला, वत्सनाभ, अफ़ीम, जायफल, चित्रक, सर्प-विष, कांच, हीरा ।

पाठ्य ग्रन्थ—

(१) व्यवहारायुर्वेद—गुरूपदेशानुसार ।

(२) अगद तंत्र—विष विज्ञान by Dr. M. S. Varma published by University Stores, Benares Hindu University.

स्वस्थ्य वृत्त (Hygiene).

There will be one paper in Hygiene carrying 100 marks of 3 hours' duration containing questions on modern as well as classical text-books.

वायु—संगठन, दोष, उत्पन्न होने वाले रोग; व्यजन (Ventilation) श्वास के लिये उपयुक्त वायु ।

जल—संगठन, संग्रह, वितरण दोष, उससे उत्पन्न होने वाले रोग ।

भोजन—भूल अवयव, पर्याप्त मात्रा, भिन्न-भिन्न प्रकार के भोजन, दूषित भोजन से उत्पन्न होने वाले रोग ।

वासस्थान—शुद्धता, आदर्श स्थान, सूर्य्य प्रकाश।

वैयक्तिक स्वस्थ्य वृत्त—निद्रा, स्नान, भिन्न २ प्रकार के स्नान, और उनसे लाभ, व्यायाम और दिनचर्य्या, रात्रिचर्य्या, आहारचर्य्या, ऋतुचर्य्या, उद्वर्तन, अभ्यंग।

संक्रामकरोग—मलेरिया, प्लेग, विशूचिका, प्रवाहिका, मसूरिका, तथा अन्य मुख्य-मुख्य रोग, उनके कारण, लक्षण और रोग को रोकने के उपाय। निस्संक्रामण की विधि, मुख्य निस्संक्रामक वस्तुयें और उनका प्रयोग।

पाठ्यग्रंथ—(१) वाग्भट्ट—सूत्र स्थान, अ० २—८।

(२) स्वास्थ्य विज्ञान, by Dr. M. S. Varma, publishd by The Secretary, Hindi Publication Board, Benares Hindu University.

THE PROSPECTUS OF THE GOVERNMENT SCHOOL OF INDIAN MEDICINE, MADRAS.

Introduction.

1. The Government School of Indian Medicine, Madras, was established in pursuance of G. O. No. 1581, P.H., dated 3rd November 1924, and regular work was begun on the 5th January 1925.

2. The school works in three sections, viz, Ayurveda, Siddha and Unani.

3. The School is intended to provide such training to its alumni as will enable them to become competent practitioners of Indian systems of Medicine with a good working knowledge of the western system also. It is with this end in view that provision has been made in this school not only for the proper training of students in Ayurveda, Siddha and Unani but also for giving them courses of instruction in such subjects like Modern Anatomy, Physiology and Surgery in all its branches, including Midwifery and Ophthalmology. Provision has also been made for clinical teaching (both out-patient and in-patient) as well as for Herbarium, Museum, Library. etc. Vernaculars (Tamil, Telgu and Urdu) are the general Media of instruction, but subjects of western medicine are at present taught in English. It is hoped, however. that Vernaculars will soon be used as the media of instruction for these subjects also.

Admissions.

4. The number of admissions is, for the present, fixed as a maximum of 120 per annum, of whom 60 will ordinarily be allocated to the Ayurvedic section and 30 to each of the two sections, Siddha and Unani. The vacancies occuring in any one section may, however, be filled in by admission to any other section, provided that the total number in all sections does not exceed 120.

5. Selection will be made by a Selection Committee appointed by the Government.

6. The standard of preliminary general qualification required is a working knowledge of English in addition to proficiency in (*a*) Sanskrit or Telugu, (*b*) Tamil, (*c*) Urdu for admission to the Ayurveda, Siddha and Unani sections respectively. Other things being equal, preference will be given to candidates who possess the Secondary School-Leaving Certificate (especially to those who took up science subjects as optionals) or any other equivalent or higher qualification.

7. The academical year of the school extends over a period of ten months consisting of two terms—a long term of six months from the beginning of July to the end of December and a short term of four months from the beginning of January to the end of April. The months of May and June constitute the school recess.

8. Canditates seeking admission to the school should not be below 16 years of age at the time of their admission to the school.

9. (*a*) Applications for admission should be made before the 15th June in the prescribed form which may be had on application to the Principal. A Registration fee of Rs. 5 should be paid into a Government Treasury or the Imperial Bank of India to the Credit of 'Government School of Indian Medicine, Madras—Fees' and the Treasury or Bank receipt should accompany the application. No application will be registered without the production of such a receipt. The registration fee will be counted towards the school fees in the case of candidates selected for admission who will then be required to pay only the balance due to complete the payment. The Registration fee will be returned to the candidates not selected for admission but forfeited in the case of those who are selected but do not join on or before the prescribed date.

(*b*) Intimation of selection will be duly sent to all selected candidates who should then pay their fees and join the school on or before the prescribed date.

(*c*) Every application for admission should be accompanied by the following certificates without which it will not be considered:—

(1) Cerficate of physical fitness from a registered medical practitioner.

(2) Certificate of Character.

(3) Certificate of the standard of general education attained.

Fees.

10. (*a*) The fees payable by students will be as follows :—

	Per annum. Rs.	
Candidates who are natives of the Madras Presidency.	60	Payable in advance in two equal half-yearly instalments,
Other Candidates	100	

(*b*) A fee of Rupee one for a term or Rupees two for a whole year towards the Athletic Union of the school shall be paid in advance by each student.

(*c*) The fees should in all cases be paid into a Government Treasury or the Imperial Bank of India to the credit of 'Government

School of Indian Medicine, Madras—Fees' and the receipt granted by the Treasury or Bank filed at the School office on or before the prescribed date.

(*d*) If a student leaves the school during a session, he shall have no right to claim a remission of any portion of the fee paid.

Freeships and Scholarships.

11. (*a*) The Government have provided 20 free studentships to be awarded annually to deserving students who belong to this Presidensy, preference being given to women and to students of backward communities.

The Goverment have also instituted five scholarships of the monthly value of Rs. 20 each to be awarded annually to women students who are not in receipt of stipends from other sources. The stipendiaries will be supplied with books and instruments at the cost of Government. On the completion of the course, successful candidates who were in receipt of stipends from the Government will be liable to serve the Government, if required, for a period not exceeding five years; but no guarantee of such employment will be given to any candidate.

(*b*) Local bodies are permitted to depute their own stipendiaries for study in the school subject to certain conditions. A few scholarships provided by private donors are also available.

(*c*) Applications for all freeships and scholarships should be made in the prescribed form which may be had on application to the Principal. Applications should reach the Principal not later than the 1st July of each year. Every such application should be accompanied by the certificates and other documents mentioned in the prescribed form. No application will be considered without the production of such certificates or documents.

Attendance, leave and general discipline.

Attendance.

12. (*a*) No student will be eligible for promotion to a higher class unless his attendance and progress have been found to be satisfactory and all the school and hospital demands against him have been duly paid.

(*b*) Every student is required to attend regularly and punctually at the stated hours for lectures, dissections and demonstrations.

(*c*) No student will be eligible for the grant of a certificate of attendance in any class unless he has attended at least 80 per cent of the meetings of that class.

(*d*) No student will be eligible for the grant of a certificate of progress in any subject unless he has obtained at least one-third of the maximum number of marks allotted to that subject in the class and sessional examinations of the school.

13. Every student who obtains not less than 75 per cent of the total number of marks in any subject will be eligible for the grant of a certificate of honour in that subject.

14. Student found indulging in unfair practices during any examination such as being in possession of or using text-books, notes or manuscripts or copying will be forthwith removed from the examination room and the matter reported to the Principal.

Absence and leave.

15. Candidates should not absent themselves without leave; in emergent or other exceptional circumstances, however, the cause of absence should be satisfactorily explained in writing at the earliest possible opportunity.

16. Absence at any sessional examination must be accounted for by production of a medical certificate when a re-examination may be held to determine the grant of the progress certificate.

17. Any student who absents himself without leave shall be liable to be punished by loss of marks or fines unless such absence is satisfactorily explained.

18. When sickness necessitates absence, a student shall produce a medical certificate to that effect from a registered medical practitioner.

19. Candidates applying for leave are strictly warned that the total number of their days of absence in any class should in no case exceed 20 per cent of the meetings of such class. The grant of leave to any student means that the reasons given for the grant of such leave are deemed satisfactory; it does not, in any sense, convey a guarantee that, after excluding the period of such leave, the student has, or will have enough attendance to enable him to obtain the certificate of attandance referred to in rule 12 (*c*) above. Students applying for leave are therefore strictly warned that, in every case it is at the risk of the student himself that the leave is granted and that he will not be eligible for certificate of attendance referred to in rule 12 (*c*) if, after deducting the number of days he was absent on leave, it is found that the number of attendance in any class is less than 80 per cent of the meetings of that class.

Class room.

20. On the teacher entering the class room the students shall

rise and remain standing till they are desired to sit or till the teacher takes his seat.

21. No student shall leave the class room without the permission of his class teacher or until the class is dismissed.

22. Students are expected to assemble in the class rooms five minutes before the appointed time when the rolls shall be called and the absence of any student noted. A student coming into the class after roll call may be punished by loss of marks or by a fine. Any misconduct in the class shall subject a student to such loss of marks or to such fine as the offence may appear to the teacher to warrant. Should the punishment be deemed insufficient, a report will be made to the Principal.

Dress.

23. No special dress is prescribed, all accepted types of dress being permitted, provided the dress is clean. Foot-wear is recommended, especially when working in dissection rooms and hospitals.

Correspondence.

24. Students are forbidden to address the Government direct. Fvery such communication should be submitted through the Principal.

Books and apparatus.

25. Every student is expected to provide himself with all the prescribed text-books, dissecting instruments, and other necessary equipment.

26. Every student to whom books or other property of the Government are entrusted shall be held responsible for their preservation in good condition and, in the event of their being lost or damaged, shall be required to replace them or defray their cost.

27. Any student breaking or injuring any school property shall be required to pay the cost of repair or replacement; in case of wilful damage, he shall also be liable to such punishment as the Principal may think fit.

General discipline.

28. The scale of punishments is as under :—

(1) Loss of marks gained by students at class examinations.

(2) Slight fines—the amount not to exceed annas eight.

(3) Heavy fines—amount not to exceed rupees two.

(4) Forfeiture of a portion or whole of leave during holidays and the school recess.

(5) Forfeiture of prize and class distinction.

(6) Forfeiture of stipends from one to three months in the case of Government and other stipendiaries or forfeiture of free studentships in the case of students holding such studentships.

(7) Expulsion from school with forfeiture of certificates and of fees paid, if any.

Numbers (1) and (2) may be inflicted by Lecturers, Assistant Lecturers and Clinical teachers. Numbers (3), (4) and (5) by the Principal. Numbers (6) and (7) by the Principal subject to appeal to the Government.

The Curriculum of Studies.

29. The following is the curriculum of studies for all sections:—

(The name of the subject are given in English so as to be applicable to all sections, viz. Ayurveda, Siddha and Unani, but instruction in the various subjects will be based upon the Ayurvedic, Shiddha and Unani writings, respectively, the subjects included in Western Medicine being taught in accordance with books on the subject.)

First year.

(1) Anatomy and Dissections, first course.
(2) Physiology, first course.
(3) Materia Medica and Pharmacy—General, first course.
(4) Materia Medica and Pharmacy—Special (Mineral preparations), first course.
(5) An elementary course of lectures on the physical and biological sciences with special reference to their applications in medicine, first course.
(6) Fundamental principles of Medical Science, first course.

Second year.

(1)
(2)
(3) Subjects Nos. (1) to (5) of first year *(continued)* second course.
(4)
(5)
(6) Pathology and Diagnosis, first course.

Clinical Practice.

Compounding and dispensing practice	...	3 months.
General out-patient practice ...	...	3 "
Total	...	6 months.

Third year.

(1) Pathology and Diagnosis *(continued)*, second course.
(2) Medicine—General and special first course.
(3) Surgery, first course.

(4) Midwifery and diseases of women and children, first course.

(5) Toxicology and Medical Jurisprudence, first course.

(6) Hygiene and preventive medicine, first course.

Clinical practice.

Out-patient's department	...	...	2 months.
Medical wards	... ..	...	3 "
Surgical wards	... ...	...	3 "
Women and children wards	...	...	2 "
	Total	...	10 months.

Fourth year.

(1)
(2)
(3)
(4)
(5) Subjects Nos. (2) to (6) of third year *(continued)*, second course.

(6) History of Medicine, first course.

Clinical practice.

(Ten months as in third year)

30. At the end of the first, second and third year, there will be an annual school examination to test the fitness of candidates for promotion to the next higher class; final year students will however be examined by a special Board appointed by the Government, and those who are suceessful in this examination will be granted the Deploma of Licentiate in Indian Medicine (L. I. M.).

The examination will be held each year in the month of April, candidates will not be considered qualified for promotion to the next higher class or, in the case of the final year candidates, for the grant of the Disploma of L. I. M. unless they secure a pass at these examinations.

31. To secure a pass at any of these examinations, candidates will be required to obtain not less than one-third of maximum number of marks in each subject in which they are examined.

A candidate who passes in all the subjects and obtains not less than 75 per cent of the aggregate total number of marks will be declared to have passed in the first class.

32. Candidates of the first, second and third year classes who fail to secure a pass at the examination held in April will be re-examined in the month of July of the same year in the subject or subjects in which they have failed. If they then secure a pass in

the subjects concerned, they will be considered to have passed the annual school examination and be declared eligible for promotion to the next higher class. If however they again fail in any subject or subjects, they will be referred to a further study of one year in the class in which they failed. Candidates of the final year class who fail at the Board examination will be referred to a further study of six months and be re-examined at the end of that pariod in the subject or subjects in which they failed.

33. Every student who completes the prescribed course of study in the school successfully and passes the prescribed examinations will be entitled to style himself a Licentiate in Indian Medicine and to affix the title L. I. M. to his name.

ANNEXURE A.

(Vide Rule No. 9).

Form of application for admission to the Government School of Indian Medicine, Madras.

Questions. Answers iu applicant's handwritting.

1. Name of applicant *(in full)* ... ...
2. Name and address of father or guardian.
3. Rank and occupation of father or guardian.
4. Nationality, caste and religion ...
5. Province and district to which the applicant belongs.
6. Age and date of birth
7. School or College at which the applicant last studied *(a testimonial as to character and abilities from the Headmaster or Principal should be invariably attached).*
8. Certificates or Diplomas gained (*copies to be sent*) or standard of general education with special reference to the applicant's knowledge of Sanskrit, Tamil, Urdu and English.
9. Mother tongue
10. Section to which the applicant seeks admission. Ayurveda, Siddha, Unani
11. Are the following documents attached ?

(*a*) Certificate of Physical fitness from a registered medical practitioner.

(*b*) Certificate of character and abilities

(*c*) Receipt granted by the Imperial Bank or Government Treasury in evidence of payment of registration fee,

12. Address (*in full*)

Signature of applicant.

Annexure B.

Rules for the grant of stipends to women students studying in the Government School of Indian Medicine, Madras.

1. Stipends of the monthly value of Rs. 20 each are awarded to women students subject to a maximum of five stipends in any one year. Each stipend is ordinarily tenable for the full period of the course of studies in the school.

2. These stipends are open to women students of any nationality who are under the age of twenty-five and are not in receipt of stipends from any other source. Preference will, however, be given to those who belong to the Madras Presidency.

3. Applications for stipends must be submitted in the form appended so as to reach the Principal, School of Indian Medicine, Medras, before the Ist July in each year. Printed copies of the form may be obtained from the Principal.

4. Every candidate who is awarded a stipend will be required to furnish security by a bond executed by two sureties approved by the Principal, to refund the amount drawn by her or such portion of the same as in the circumstances of the case the Principal may see fit to demand in the event of her (*i*) failing from any cause, except illness or accident, to complete her course of study within the prescribed time or such extension thereof as may be sanctioned by the Principal; (*ii*) failing within one month of notification from the Government to join any appointment to which she has been posted; (*iii*) failing to serve for the term of years stated in the bond at any place or places in the Madras Presidency to which she may be posted at the rates of pay approved by Government; or (*iv*) being dismissed for misconduct or inefficiency while holding such an appointment or whilleundergoing her course of study.

5. Every candidate must produce a certificate from a Magistrate or other responsible person to the effect that the sureties who will execute a bond on her behalf are persons of sufficient means and capable of fulfilling the conditions of the bond. In the event of a recipient of stipend resigning her appointment at any time after passing out of the school and before the completion of the compulsory period of service, the sum which she or her sureties may be called on to refund will ordinarily be determined with reference to the period by which her service, if any, falls short of the compulsory period.

Note— (1) The Government do not guarantee employment to any or every successful candidate.

(2) The surety bond is to be executed before a Magistrate, a District Medical Officer or a Civil Surgeon.

6. Books and instruments will be provided for the stipendiaries but will remain the property of the Government. The Principal may, however, permit students who have successfully completed their course to retain their instruments and text- books.

7. The Pincipal has power to suspend or withdraw any stipend if the holder of it misbehaves, shows a want of zeal or is unlikely to prove efficient.

8. Should the holder of a stipend fail to obtain a pass at any of her examinations, the Principal may either grant an extension of stipend for not more than one year at its former monthly value or on less favourable terms or may withhold all stipends until the candidate passes her examination.

Form of application for stipend.

(To be filled in by women students of the School of Indian Medicine.)

Questions, | Answers in applicant's handwritting.

1. *Name* (in full) ... ...
2. *Age* (last birthday) ... ...
3. *Name and address of father or guardian.*
4. *Occupation and rank of father or guardian.*
5. *Nationality, religion and caste* ... ...
6. *Single, married or widow* ... ...
7. *District to which the applicant belongs* ...
8. *School or College where the applicant was last studying* (a testimonial as to applicant's character and capabilities from the Headmaster or Principal should be invariably attached)
9. *Certificate or Diploma gained* (copies to be sent).
10. *Are the following documents attached ?*

    (*a*) The necessary certificate from a Magistrate or other responsible person to the effect that the sureties who will execute a bond on your behalf are persons of sufficient means and are capable of fulfilling the conditions of the bond.

    (*b*) A certificate of physical fitness, age and personal marks from a registered medical practitioner.

    (*c*) Certificate of character and abilities.
11. *Do you possess any means of support besides the stipend applied for ?*
12. *Are you in receipt of stipends from any other source ?*
13. *Do you realize that the acceptance of a stipend involves the obligation after successfully completing your course to serve the Government for a period not exceeding five years in any appointment or appointments to which you may be posted and also that the Government do not guarantee to provide a stipendiary with an appointment after she successfully completes her course or*

to make any payments to stipendiaries between the time of success at the final examination and the time of posting?

14. *Your permanent address* (in full)

Signature of applicant.

ANNEXURE C.

Bond to be executed by stipendiaries of Local Boards and Municipalities deputed for the study at the Government School of Indian Medicine, Madras.

Know all men by these presents that we (student) of of and severally bound to $\frac{\text{the}}{\text{the}}$ $\frac{\text{Board}}{\text{Municipal Council}}$ (hereinafter referred to as the $\frac{\text{Council}}{\text{Board}}$ or to its certain attorney or attorneys to the extent of Rs. of lawful money of British India to be paid to the said $\frac{\text{Board}}{\text{Council}}$ or to its certain attorney or attorneys for which payment, will and truely to be made, we bind ourselves, our heirs, executors, administrators and legal representatives and each of us binds himself, herself, his or her heirs, executors, administrators and legal representatives firmly by these presents.

Whereas the said (student) is disirous of qualifying $\frac{\text{himself}}{\text{herself}}$ for the medical profession by undergoing the course of studies in the Government school of Indian Medicine Madras.

And whereas the said (student) has applied for the award to $\frac{\text{him}}{\text{her}}$ of a stipend to enable $\frac{\text{him}}{\text{her}}$ to pursue $\frac{\text{his}}{\text{her}}$ studies in the Government school of Indian Medicine at Madras.

And whereas the said (student) has been granted a stipend of Rs. per month for a period of years from under and subject to the rules and conditions laid down by the Government of Madras and embodied in G. O. No. 850, P. H., dated 22nd April 1925.

And whereas it has been agreed by and between the said (student) and the said $\frac{\text{Board}}{\text{Council}}$ that the said (student) shall *if so required* by the said $\frac{\text{Board}}{\text{Council}}$ at any time after the completion of the said course of instruction serve in any appointment to which $\frac{\text{he}}{\text{she}}$ may be posted for a period of not less than

seven yeats at a specified rate of salary to be fixed by the $\frac{\text{Board}}{\text{Council}}$ and in consideration of the stipend so to be paid to the said (student) it has been agreed that the said (student) and the said and the said as $\frac{\text{his}}{\text{her}}$ sureties shall execute the above written bond (subject to the conditions hereinafter contained).

Now the condition of the abovewritten bond is such that if the said (student) shall, unless prevented by illness or accident, complete $\frac{\text{his}}{\text{her}}$ course of study within the prescribed time or such extension thereof as may be sanctioned by the Principal for the time being, of the Government School of Indian Medicine, Madras, and shall join within one month from the date of notification by the said $\frac{\text{Board}}{\text{Council}}$ any appointment to which $\frac{\text{he}}{\text{she}}$ may be posted and serve for the term of seven years as abovementioned and conduct $\frac{\text{himself}}{\text{herself}}$ without giving cause for being dismissed for misconduct or inefficiency while holding the said apointment or undergoing the said course of study or if the said (student) and and or any one or more of them, their or any of their heirs, executors, administrators or representatives shall well and truely indemnify the said $\frac{\text{Board}}{\text{Council}}$, its successors and assigns against all loss, damage and expenses which it or they might or may in any way suffer or be put to by reason of the said (student) not completing $\frac{\text{his}}{\text{her}}$ course of study within the prescribed time or not joining the said appointment or not serving for the said term or in the event of dismissal while holding the said appointment or while undergoing $\frac{\text{his}}{\text{her}}$ course of study and if the said (student) and and or any one or more of them, their or any of their heirs, administrators or legal representatives shall also pay the said $\frac{\text{Board}}{\text{Council}}$ such a sum not exceeding Rs. as may be determined by the said Principal then the abovewritten bond or obligation shall be void otherwise the sum shall remain in full force and virtue.

Signed by the above bounden in the presence of

Signature of sureties with the address in full.

Signature.

RULES FOR THE GOVERNMENT AYURVEDIC SCHOOL, PATNA.

GENERAL.

1. The general management of the school shall vest in the Governing Body described in rule 2, subject to the control of Government, and to these rules.

2. (1) The Governing Body shall consist of not less than seven and not more than eleven persons appointed by Government including a President nominated Government who shall hold office for one year or until fresh members are appointed.

(2) The Principal shall be the Secretary *ex-officio*.

3. (1) The duties and powers of the Governing Body shall include—

(*a*) general supervision over the welfare and discipline of the students;

(*b*) the award of such scholarships or free studentships as may be sanctioned by Government;

(*c*) control over the expenditure of such sums of money as may by allotted by Government or from other sources for the maintenance of the school subject to such conditions as may be imposed; the preparation of annual budget, and the examination and passing of the accounts of the school;

(*d*) the initiation and consideration of projects for the extension, improvement and repair of the school buildings and property;

(*e*) the determination subject to the provisions of rule 5 of the general scheme of studies, the curriculm, equipment and external examinations of the school;

(*f*) advising Government with regard to appointments, punishment and leave of the teaching staff.

(*g*) the selling or disposing of worn out or obsolete tools, furniture, apparatus and other articles upto a limit of Rs. 100 for each article, the sale being public and the proceeds being deposited in the treasury;

(*h*) deciding appeals made by students against orders of punishment passed by the Principal, where the punishment inflicted is other than punishments nos. 1—5 provided in rule 19;

(*i*) the appointment, dismissal or punishment of the clerical staff and the menial servants;

(*j*) the consideration of such matters as may be referred to it by Government;

(*k*) the exercise of such additional functions as may be assigned by Government.

(2) The Governing Body may authorize the President to exercise such of their powers as they may consider necessarv for speedy disposal of matters relating to the administration of the school.

(3) The Governing body may ordinarily delegate the powers required for the ordinary administration of the school to the Principal whose orders passed in the exercise of the powers so delegated to him shall be final.

(4) In order to enable Government to exercise their general powers of revision and control the Governing Body shall maintain a record of its proceedings and shall report them to Government after each meeting.

(5) All correspondence between the Governing Body and Government shall be addressed to the Secretary to Government in the Local Self-Government Department by its President.

4. The duty and power of selecting students for admission to the school shall be exercised by a selection committee consisting of three members of the Governing Body to be nominated by Government every year. One of these members shall be the Principal.

5. The duty and power of fixing the courses of studies and generally of advising the governing body on matters relating to the curriculum, equipment, external examination and other similar administrative matters requiring expert advice shall be performed by the Advisory Committee constituted by Government in their resolution no. 968-L. S. -G., dated the 26th January 1927,

6. (1) The term of office of a member of the Advisory Committee referred to in rule 5 shall continue until his resignation or until his removal by Government or until the committee is re-constituted by Government.

(2) The Advisory Committee shall ordinarily meet once a year before the beginning of the school session, but may for urgent reasons meet on other occasions on the requisition of the Governing Body.

(3) The Advisory Committee shall maintain a record of its proceedings and shall forward a copy of them after each meeting to the Governing Body and to Government.

(4) The Advisory Committee may correspond with Government direct. Such correspondence shall be signed either by all the members

or, if the committee so resolves, by one of its members, and shall be addressed to the Secretary to Government in the Local Self-Government Department.

7. The Principal shall, unless for reasons to be specially recorded the Governing Body otherwise resolves, be empowered—

(*a*) to spend the grants which are provided in the sanctioned budget of the school for contingencies and for supplies and services on the purposes for which they have been sanctioned and subject to such conditions, if any, as may have been imposed, provided that no re-appropriation may be made from one unit to another without the sanction of Government;

(*b*) to contersign bill for scholarships;

(*c*) to submit indents for form with the countersignature of the President of the Governing Body;

(*d*) to draw his own pay and that of the officers of the teaching staff and of the clerical and menial establishment;

(*e*) to draw contingent charges;

(*f*) to draw from the treasury and keep a permanent advance for emergent expenditure.

ADMISSION.

8. Not more than 40 students shall be admitted in the first year class every year.

9. Admissions shall be made by the salection committee described in rule 4.

10. (1) Candidates for admission to the school shall submit their applications in writing to the Principal in form A appended to these rules in time to reach him by the 30th June in each year,

(2) No candidate shall be admitted unless—

(*i*) he is not less than 16 years of age at the beginning of the session at which he applies for admission; and

(*ii*) he is a native of or domiciled in Bihar and Orissa ; and

(*iii*) he has passed either—

(*a*) the Matriculation examination from any recognised University : or

(*b*) the final examination from any of the first grade training schools ; or

(*c*) the Madhyama examination in Sanskrit from any institution recognised by Government ; and

(*iv*) he produces a certificate of good character from the head of the institution in which he has last studied; and

(*v*) he passes the text examination prescribed in rule 12.

(3) A candidate who claims to be domiciled in Bihar and Orissa under clause (*ii*) of sub-rule (2) of this rule shall produce a domicile certificate granted in accordance with the rules of Government in force for the grant of such certificate.

11. The Principal shall lay all the applications of candidates qualified under clauses (*i*) to (*iv*) of sub-rule (2) of rule 10 without delay before the selection committee described in rule 4.

12. The selection committee shall hold a test examination of such candidates in the following subjects, namely :—

Elementary Arithmetic, Sanskrit, Hindi and English.

13. The selection committee shall then admit such candidates as appear to be the most suitable.

FEES.

14. (1) The annual fees specified in the statement below shall be payable by the persons and at the times specified :

Description of fees.	By whom payable.	Amount of fee	Time of payment.
1	2	3	4
		Rs.	
(i) Admission fee ...	By every candidate admitted under rule 13.	5	On or before the 15th July unless any other date has been fixed by the selection committee.
(ii) Tuition fee ...	(*a*) By every student of the first year class.	(*a*) 12	(*a*) Monthly on such date as may be fixed by the Principal.
	(*b*) By every student of the higher classes.	(*b*) 24	(*b*) Ditto.
(*iii*) Athletic club fee	By every student ...	1	At the beginning of the session each year on such date as may be fixed by the Principal.
(*iv*) Students Association fee.	By every student ...	Annas 12	Ditto.

(2) If any candidate selected under rule 13 fails to pay the admission fee in accordance with sub-rule (1) of this rule the Principal may remove his name from the list of candidates admitted under rule 13.

(3) If any student fails to pay the tuition fee in accordance with sub-rule (1) of this rule the Principal may impose on him a daily fine of one anna, and if the fee plus the daily fine. if any, imposed has not been paid in full by the end of the month in which it was due, may strike his name off the rolls :—

Provided that the Principal may for reasons to be recorded order the re-entry of the student's name on the rolls either on payment of an additional fee of Rs. 5 or, for special reasons to be recorded, without such additional fee, on subsequent payment of the fees due under this rule.

(4) No fees shall be refunded after they have been credited into the school's accounts.

Discipline.

15. No student shall address any external authority, such as the President of the Governing Body, member of the said body or of the Advisory Committee except through the Principal. An infringement of this rule shall be treated as a breach of discipline.

16. Students are required to be orderly and quiet at all times in the school.

17. Every student who does not reside with his parent shall be required to reside with a guardian approved by the Principal.

18. For the maintenance of discipline, the punishments set forth in the rules immediately below may be inflicted.

19. The ordinary punishments shall be (1) verbal reprimand. (2) written reprimand in the order book, (3) extra duty, (4) fine, (5) stoppage of leave, (6) deprivation of studentship. (7) rustication and, (8) expulsion.

20. Expulsion from the school shall only be inflicted for offenses of a heinous nature involving disgraceful or dishonourable conduct or persistent and wilful infringement of the school rules, or for gross insubordination and disrespect to the constituted authorities of the school. A student who cheats or attempts to cheat at an examination shall, on the first occasion on which he is found guilty of such offence, be liable to rustication for one year with or without fine, and shall, if found guilty of the same offence on the second occasion, be expelled from the school. Should it be apparent to the Governing Body, on the report of the Principal that any students have combined to stay away from school or in any other way to defy authority or to defeat

discipline the names of the students shall be struck off the rolls and such students shall not be re-admitted to the school, unless they can give such an explanation of their absence as may appear sufficient to the Governing Body, or unless the Governing Body may, for other sufficient reasons, think proper to re-admit them.

21. On the expulsion of a student from a school, his name, with as much information as may be available for his identification. shall be reported to Government in the Local Self-Government Department to enable Government to take such measures as it thinks fit to prevent him from being admitted into any other Government school.

Attendance.

22. The Principal shall, before the commencement at each session, circulate for the information of the students a programme of the lectures of each teacher.

23. Every student is required to attend punctually at the stated hours, for lectures (practical or theoretical) and shall not leave the class or duty without premission.

24. Every student shall attend seventy-five per cent of the lectures in each subject to entitle him to a certificate of attendance, provided that no certificate of attendance shall be granted to a student unless he has satisfied the authority or authorities responsible for granting the certificate or certificates that his progress has been satisfactory and until he has paid all demands due from him.

25. Students of the third, fourth and fifth year classes are required to be present in the dispensary for clinical duties and instruction, according to the duties assigned to each of them.

Leave and Absence,

26. Students shall not absent themselves without leave,

27. The students shall be granted the following holidays :—

(*i*) the long summer vacation ;

(*ii*) the Durga Puja vacation ;

(*iii*) the Christmas and the New Year's Day holidays ; and

(*iv*) such other holidays as may be approved by the Governing Body ; provided that the total number of holidays shall not exceed 165 days exclusive of the Durbar Day and the King-Emperor's Birth day.

Note.—The regular vacation leave shall be notified in the school orders on each occasion.

28. The Principal may grant casual leave to students up to a maximum of ten days at a time which may be extended to fifteen days in exceptional cases,

29. In the following cases no leave, except on medical certificate, shall be allowed :--

(*a*) in extension of regular vacation leave ;

(*b*) when a student is undergoing any punishment ;

(*c*) when there is any matter pending in connection with which the student has been directed to appear before his teacher or the Principal :

(*d*) when the leave is for absence from any periodical examination,

No departure from this rule shall be permitted except with the written sanction of the Principal and then only under the most urgent circumstances.

30. A student absenting himself for more than fifteen days without the previous sanction of the Principal shall be liable to expulsion.

31. (1) No student, who has not attended at least seventy-five per cent of all lectures and demonstrations in all subjects including dispensary and pharmacy classes for a diploma examination, shall on any account be certified as having completed his course of instruction or shall receive promotion or shall be permitted to appear at such examination :

Provided that in special cases it shall be within the competence of the Governing Body to condone for sufficient and satisfactory reasons shortages in the required attendance.

(2) Students will be required to work in the out-door dispensary during the vacations in batches as arranged by the Principal ; and any student absenting himself from that work without the permission of the Principal will not, until specially permitted by the Governing Body, be eligible to sit at the next diploma examination.

32. All medical certificates in support of absence from classes or dispensary duty shall be signed either by a medical officer in Government employ or by a competent Vaid to the satisfaction of the Principal. They shall be forwarded to the Principal within three days of the date on which the student states that he was ill.

Courses of study, sessions and curricula.

33. The course of study shall extend over a period of five years.

34. The session shall commence in the month of July and terminate in the month of June every year.

35. The curricula and syllabus of the school are given in the Appendix.

EXAMINATIONS.

36. (*a*) Examinations shall be of two kinds, namely Internal and External.

(*b*) Internal examinations shall be conducted by the school staff and shall consist of—

(*i*) (*a*) Progress examinations in January and October;
(*b*) Test examinations for the preliminary and final diploma examination.

(*ii*) Annual examinations at the end of the 1st, 2nd and 4th year classes.

(*c*) External examinations shall be conducted by such outside examiners, members of school staff and members of the Advisory Committee as may be selected by a sub-committee of the Governing Body appointed for this purpose and shall consist of—

(*i*) Preliminary examination at the end of 3rd year class.

(*ii*) Final diploma examination at the end of 5th year class.

(*d*) Fees for the external examination shall be Rs. 3 for the preliminary and Rs. 5 for the final diploma examinations.

(*e*) For all internal and external examinations—

(*i*) the full marks assigned in written paper and practical tests shall be 100 in each;

(*ii*) the standard for passing in written paper and practical test combined on each subject shall be 40 per cent. of the total marks except that for the science (i. e., Physics and Chemistry) written paper it shall be 33 per cent.; and

(*iii*) the standard for passing in aggregate shall be 40 per cent. except that in the final diploma examination it shall be 50 per cent.

37. No promotion shall be given to a higher class unless a student secures at least the pass mark as described in clause (*e*) of rule 36;

Provided that—

(*i*) In the event of a student failing to appear at any annual examination owing to his illness or for other reasons considered satisfactory by the Principal, promotion may be given on the result of his progress examinations.

(*ii*) Students failing in one subject only in the annual examinations or in the Preliminary examination may be promoted to the next higher class subject to the condition that he will be reverted to the class from which he has been promoted if he fails to pass in that subject at a supplementary examination to be held within three months of his promotion.

38. A student who fails to pass the annual preliminary or the final diploma examination in more than one subject may be permitted to continue his studies in the same class during the next session.

39. For students who fail in one subject in the final diploma examination, there will be a supplementary examination in October.

40. (1) A certificate shall be granted to the students passing the final examination in form B appended to these rules.

(2) A certificate shall be granted to the students passing the final examination in form C appended to these rules.

STUDENTSHIPS.

41. Free studentships may be allotted by the Governing Body to deserving students up to a maximum of 5 per cent. of the number of students on the roll.

42. Studentships shall be liable to forfeiture on the recommendation of the Principal for misconduct, unsatisfactory progress, or irregular attendance.

APPENDIX TO RULE 35.

Syllabus of the Government Ayurvedic School, Patna.

Preliminary Examination.

अध्ययनकालः—वर्षत्रयम् ।

प्रतिपत्रं पूर्णाङ्काः—१०० ।

द्रव्यगुणशास्त्रम् (Materia Medica).

(१) प्रथमपत्रस्य ज्ञेयांशाः—

द्रव्यगतरसादिपदार्थानां स्वरूपज्ञानम् , द्रव्याणां परिचयः, प्रसिद्धनामानि, रसादि-निरूपणम् , गुणाः परिभाषा च ।

ग्रन्थांशाः—

(क) भावप्रकाशान्तर्गतमिश्रवर्गस्य द्रव्यगतपञ्चपदार्थवर्णनादिक्षुवर्गस्यान्तं यावत् ।	७०
(ख) चरकसंहितायां विमानस्थाने प्रथमाध्यायः	१०
(ग) परिभाषाप्रदीपस्य प्रथमद्वितीयतृतीयखण्डाः	२०
	१००

(२) द्वितीय (Practical) पत्रस्य ज्ञेयांशाः—

(क) गुरूपदिष्टभेषजानां परिचयः...	६०
(ख) ,, प्रसिद्धनामानि	२०
(ग) ,, प्रसिद्धगुणाः (यथा-अर्जुनो हृद्यः, शिरीषो विषापह इत्यादयः)	२०
	१००

रसशास्त्रम् (Hindu Chemistry).

(१) प्रथमपत्रस्य ज्ञेयांशाः—

(प्राचीनमते)—रसशब्दस्य व्युत्पत्तिः, रसस्य शोधनमूर्च्छनासंस्कार—बन्ध—भेद—गतयः, हिङ्गुलाद्रसाकृष्टिः, रसमारणम् , जलूकाबन्धः, रसे गन्धकजारणम् , रसकर्पूर—रससिन्दूर—मकरध्वज-रसमाणिक्य-हिङ्गुलीयमाणिक्यरसानां निर्म्माणम् , अभ्रादिमहारसानां गंन्धकाद्युपरसानां कम्पिल्लादिसाधारणरसानां रत्नोपरत्नानां स्वर्णादिलोहानां च यथोक्तं शोधन—मारण—सत्वपातन—द्रुतिकरणानि, मयूरपक्षस्य सत्वपातनम् , भूनागस्य सत्त्वपातनं मुद्रिका च । स्वर्णरजतयोर्मण्डलीकरणम् स्थावर—विषोपविष—सर्पविष—रक्तचित्रक—वृद्धदारक—निम्बूकबीज—हिङ्गु—गुग्गुलु—खटी—दुग्धपाषाण—गोदन्त—शङ्ख—शुक्ति—वराटिका—

मृगश्रृङ्ग—समुद्रफेन—कान्तपाषाणानां यथोक्तं शोधनं मारणम्, क्षारत्रयस्य तिलार्कपलाशापामार्गस्नुहीचिञ्चाक्षाराणां सैंधवविट्-सौवर्चल-सामुद्र-रोमक-लवणानां च समुचितविवरणम्, रसपरिभाषायाः कोष्ठी-पुट-मूषा-यन्त्राणाञ्च कृत्स्नं परिज्ञानम्, रससिन्दूराभ्रक-स्वर्ण-रजत-ताम्र-वंग-यशद्-लौह-शिलाजतु-विद्रुमाणामामयिक प्रयोगाः ।

ग्रन्थांशाः—

(क) रसरत्नसमुच्चयस्यादित एकादशाध्यायं यावत्		...	५०
(ख) रसतरङ्गिण्याः प्राचीनरसोपयोगिनोंऽशाः	...	...	२५

(नवीनमते) रसतरङ्गिणीतः—

निम्बूकाम्ल-भूतघ्नचक्रिकयोर्निर्माणम् ।

सजलसोरकद्रावकस्य गुणाः ।

सोरकद्रावक-गंधकद्रावक-लवणद्रावक-चूर्णोदक- सोरकाम्लीयरजत - गंधकाम्लीययशद्-नवसादरबाष्प-रसपुष्प-रसकर्पूर-सुवर्णलवण-आरनालीयसीसद्रव-टंकणाम्लानां निर्माणविधयो गुणाश्च ।

चतुर्थशंखद्रावकस्य कृत्रिमतुत्थस्य कासीसस्य च निर्म्माणप्रकारः—

मुग्धरसस्य निर्म्माण-गुण-मात्रामयिकप्रयोगाश्च	...	...	२५
			१००

(२) (क्रियामूल) द्वितीयपत्रस्य ज्ञेयांशाः—

यथालब्धद्रव्याणां शोधनमारणसत्त्वपातनादिकम् ।

(प्राचीनमते)—

(क) रसशालायामनुष्ठितरसक्रियायां	...	...	२५
(ख) रसशालायां सम्पादितरसौषधपरिचये	...	...	१५
(ग) यन्त्र-मूषा-कोष्ठी-पुटादि निर्म्माणे	...	...	३५
(नवीन मते) (घ) प्रथमपत्रोक्तविषयाणां यथासम्भवं क्रियानुष्ठाने		...	२५
			१००

शरीरशास्त्रम् (Anatomy)

(१) प्रथमपत्रज्ञेयांशाः—

शारीरज्ञानस्य प्रयोजनम्, शवच्छेदप्रकारः, शरीरोपादनानां त्वगादीनां स्थूलपरिचयः, अस्थिसंख्याने नव्यप्राचीनमतसमन्वयः, अस्थ्नां विशेषज्ञानम्, संधिस्नायुज्ञानम्, पेशीनां सामान्यविज्ञानमावरणज्ञानञ्च, महाप्राचीरा, पर्शुकान्तराला, द्विशिरस्का, त्रिशिरस्का, अंगुष्ठप्रसारणी, अंगुष्ठसंकोचनी, कनिष्ठाप्रसारिणी, कनिष्ठासंकोचनी, उरश्छदा, गुर्वी, लघ्वी, आसां तथा तिसृणामुदरच्छदानामुदरदण्डिकायाश्च विशेषवर्णनम्, रक्तसंवहनयन्त्रम्, रसरक्तलसीकासंवहनम्, महाधमनीवर्णनम्, महाधमनीविभागवर्णनम्, उदर्य्यधमनीवर्णनम्, तत्सहचरीणां सिराणां वर्णनम्, सम्वाहिनीसिरावर्णनम्, सिराणामुत्तानगम्भीरत्वज्ञानपूर्वकं विषूचिकादौ लवणजलनिक्षेपयोग्यानां सिराणां परिचयमात्रम्, रसप्रपारसकुल्यादिज्ञानम्, लसीकाग्रन्थीनां निर्माणप्रकारः, श्वसनयन्त्रम्, अन्नपचनयन्त्रम्, मूत्रणयन्त्रम्, प्रजननयन्त्रम्, इत्येतेषां प्रतिकृतिप्रदर्शनपूर्वकं कार्यवर्णनसहितं विशेषवर्णनम् ।

ग्रन्थांशाः—

(क) प्रत्यक्षशारीरेप्रथमभागस्य १-२-३-४ अध्यायाः, संधिस्नायुखण्डम्, द्वितीयभागस्य पेशीखण्डे प्रथमाध्यायः, तृतीयाध्यायश्चोपरिनिर्दिष्टपेशी वर्णनमात्रकः चतुर्थाध्यायश्च निर्दिष्टपेशीवर्णनपरः, धमनीखण्डे १-२ अध्यायौ, तृतीयाध्यायश्चनिर्दिष्टधमनीविवरणपरः, सिराखण्डेप्रथमाध्यायः निर्दिष्टसिरावर्णनमात्रकः, रसायनीखण्डे प्रथमाध्यायः, आशयखण्डं सम्पूर्णम् । ७०

(ख) सुश्रुतसंहितायाः शारीरस्थाने ४-५-७-९ अध्यायाः अवेध्यसिराज्ञानंविना २०

(ग) भावप्रकाशस्य शारीरप्रकरणे दोषाणां स्थानसंस्थानकार्यवर्णनम् १०

(२) द्वितीय (व्यावहारिक) पत्रस्य ज्ञेयांशाः—

प्रथमपत्रोक्तशारीरवस्तूनां प्रत्यक्षपरिचयः ।

१००

शारीरक्रियाविज्ञानम् (Physiology)

ज्ञेयांशाः—

अन्नपरिपाकक्रिया, श्वासयन्त्रक्रिया-रक्तसंवहनक्रिया-मूत्रयन्त्रादिक्रिया सविज्ञानी समस्तिष्क नाडीक्रिया च ।

ग्रन्थांशाः—

"हमारे शरीर की रचना" इतिनाम्नः पुस्तकस्य पूर्वोक्तज्ञेयांशोपयोगिनोंऽशाः ।

Physiology.

In addition to the existing syllabus, as detailed above, an elementary knowledge of the following :—

Reproduction.

Metabolism.

Excretory system.

Cells of the Human Body and the various tissues minor knowledge of Histology.

रोगविज्ञानम् (Diagnosis of diseases).

(१) क—माधवनिदाने—ज्वर—अतिसार—प्रवाहिका—ग्रहणी—अर्शः—अग्निमान्द्य—अलसक—विलम्बिका—भस्मक—क्रिमि—पाण्डु—कामला—हलीमक—रक्तपित्त—राजयक्ष्म, उरःक्षत—कास—हिक्का—श्वास—स्वरभेद—अरोचक—छर्दि—तृष्णा—दाह—वातव्याधि—वातरक्त—उरुस्तम्भ—आमवात—शूलउदावर्त—गुल्म—हृद्रोग—मूत्रकृच्छ्र—मूत्राघात—अश्मरी—शर्करा—प्रमेह—मेदोरोग—उदर—शोथ—गलगंड—वृद्धि—श्लीपद—शीतपित्त—अम्लपित्त—कुष्ठ—विसर्प—मसूरिका—विस्फोट—उपदंश—फिरंग—ध्वजभंग—कार्श्यरोगाः । ५५

(ख) चरकसंहितायां निदानस्थाने—

—ज्वर—रक्तपित्त—गुल्म—प्रमेह—कुष्ठ—शोषरोगाः १५

(ग) आयुर्वेदविज्ञाने—

अंशुघात—अपमुमूर्षु—उरस्तोय—ओजोमेह—औपसर्गिकमेह—योन्याक्षेप—शीर्षाम्बु—स्नायुशूल—हृद्रोग—ध्वजभंग—गदोद्वेगरोगाः।

योषापस्मारः सोमरोगश्च १५

(घ) सिद्धान्तनिदाने—

आन्त्रिकज्वर—ग्रन्थिकज्वर—सन्धिज्वर—श्वसनकज्वर—दण्डकज्वर—कर्णमूलिकज्वर—कालज्वर—श्लीपदिकज्वर—औपद्रविकज्वराः। १५

१००

(२) व्यावहारिकपरीक्षाविषयः—

यथोपदेशं रोगिपरीक्षापूर्वकं रोगनिर्णयः—

	प्राप्याङ्काः—
(क) रोगिपरीक्षाक्रमे	३०
(ख) पत्रीलेखने	३०
(ग) रोगनिर्णये	४०
	१००

स्वस्थवृत्तम् (Ayurvedic Hygiene).

तत्र—सुश्रुतसूत्रस्थानषष्ठाध्यायस्य विषया—यथा—कालनिर्वचनम्—कालस्य निमेषादिप्रविभागः तेषां विवरणञ्च—

ऋतूनां लक्षणानि दिग्वातगुणाश्च—

सुश्रुतसूत्रस्थानीय—४६ अध्यायस्य विषयाः—आहारविधिवर्णनञ्च।

सुश्रुतस्य चिकित्सास्थान—२४ अध्यायस्य अनागतबाधाप्रतिषेधनीयं चिकित्सितम्।

अष्टाङ्गहृदयस्य सू० २ अ०, दिनचर्य्या—रात्रिचर्य्या—

" " ४ अ०, रोगानुत्पादनीयक्रमः।

चरकस्य सू० ६ अ० सम्पूर्णः।

" " सप्तमाध्यायस्य संकलिताविषयाः—

यथा—दोषसञ्चयहरणकालनिर्देशः, विकाराणामनुत्पत्तौ हेतुनिर्देशः, आगन्तूनाञ्चानुत्पत्तौ मार्गनिर्देशः, सेव्या असेव्याश्च पुरुषाः नक्तं दधि न सेव्यम्,—सेवनविधिश्च।

" " अष्टमाध्यायस्य—अखिलेन सद्वृत्तस्योपदेशः।

चरकस्य विमान अ० ३ जनपदोद्ध्वंसनीयः।

सुश्रुते	४०
अष्टाङ्गहृदये	२०
चरके	४०
	१००

औषधनिर्म्माणम् (Pharmacy).

(क) औषधनिर्म्माणविषये	...	...	...	३०
(ख) निर्मितौषधीनां परिचये	...	...	...	२५
(ग) ,, प्रयोगे	...	...	...	३०
(घ) ,, पत्रीकरणे	...	...	...	१५
				१००

ज्ञेयांशाः—अधोलिखतानां चूर्णवाटिकावलेहानां यथासम्भवं निर्म्माणम् ।

चूर्णम् ।

१—सितोपलादिचूर्णम् ।
२—हिंग्वादिचूर्णम् ।
३—विजयचूर्णम् ।
४—लवणभास्करः ।
५—रसपिप्पली ।

वटी ।

१—हिंगुदेश्वररसः ।
२—मृत्युञ्जय ,,
३—वातगजांकुश ,,
४—यकृत्प्लीहारिलौहं ।
५—लोकनाथरसः ।
६—कलधौतरसः ।
७—कांकायनवटी ।
८—वातरक्तान्तकरसः ।
९—पथ्यादिवटी ।
१०—कनकसुन्दररसः ।
११—सिद्धप्राणेश्वर ।
१२—योगराजगुग्गुलुः ।
१३—कैशोरगुग्गुलुः ।
१३—सिंहनादगुग्गुलुः ।

अवलेहाः

१—च्यवनप्राशः ।
२—वासावलेहः ।
३—अमृतप्राशः ।

ग्रन्थांशाः—

भैषज्यरत्नावल्या उपयोगिनोंऽशाः ।
अन्योवा कश्चिदुपयोगी ग्रन्थः ।

विज्ञान (Science).

रसायन (Chemistry).

(१) प्रथमपत्रस्य ज्ञेयांशाः—

विलयन (solution) निस्यन्दन (Filteration) निस्राव (Decantation) वाष्पीभवन (Evaporation) द्रवीभवन (condensation) स्रवण (Distillation) स्फटिकीकरण (Crystallisation) ऊर्ध्वपातन (Sublimation).

रासायनिक और भौतिक परिवर्तन (Physical and Chemical changes)—तत्व और यौगिक (Elements and compounds) मिश्रण और यौगिक (Mixtures and compounds) धातु और अधातु (Metals and non-metals) विश्लेषण और संश्लेषण (Analysis and Synthesis).

वायु—वायु में जलना—मोरचा लगना—वायुमण्डल में भिन्न-भिन्न गैस ।

ओषजन (Oxygen) तैयार करना, ओषजन के गुण ओषिद (oxide).

नत्रजन (Nitrogen) तैयार करना—नत्रजन के गुण, जल—वर्षाजल—नदी-जल—स्रोतजल—खनिजजल—समुद्रजल—जल के गुण, उदजन (Hydrogen) की प्राप्ति, जल से—अम्ल से, उदजन के गुण ।

कार्बन और उसके भेद—कार्बन द्विओषिद गैस (Carbon Dioxide)—कार्बन एकौषिद (carbon monoxide gas).

नमक—उदहरिकाम्ल गैस (Hydrochloric Acid) तैयार करना और इसके गुण—हरिन (chlorine) तैयार करना और उसके गुण —

नवसादर—अमोनिया (Ammonia)—शोरक—नत्रिकाम्ल (Nitric Acid) की प्राप्ति और गुण—

गन्धक द्विओषिद (Sulphur dioxide) की प्राप्ति और गुण, गन्धकाम्ल (Sulphuric Acid) की प्राप्ति और गुण—

अम्ल (Acid), भस्म (Base) और लवण (Salt) अणु (Molecules) और परमाणु (Atoms) रासायनिक संयोग के नियम, पदार्थ का अमरत्व, अणु और परमाणु भार ।

स्फुरक (Phosphorus) की प्राप्ति और गुण—

स्फुरक के भेद और उपयोग—

ब्रोमिन और नैल (Iodine) की प्राप्ति और गुण—नैल का उपयोग—

शैल (Silicon) के प्रसिद्ध यौगिकों का साधारण वर्णन ।

धातुओं के भौतिक और रासायनिक गुण ।

निम्नलिखित धातुओं का तथा उसके प्रसिद्ध योगिकों का सामान्य ज्ञान—

(१) सोडियम (२) पोटाशियम (३) खटिक (calcium) (४) मग्न (magnesium), (५) यशद (zinc) (६) ताम्र (copper) (७) पारद (mercury) (८) स्वर्ण (९) रजत (silver) (१०) वङ्ग (tin) (११) सीसा (lead) (१२) ताल (Arsenic) (१३) अञ्जन (Antimony) (१४) विसथ (Bismuth) (१५) मङ्गल (manganese) और (१६) लोहा (iron) ।

कार्बनिक रसायन (organic chemistry) मिथेन गैस की प्राप्ति—मद्यसार (Alcohol) क्लोरोफार्म, आयडोफार्म और इथर का साधारण परिचय और इनका उपयोग—

पिपीलिकाम्ल (Formic Acid), सिरकाम्ल (Acetic Acid) निम्बूकाम्ल (Citric Acid), द्राक्षाम्ल (Tartaric Acid) यूरिया—शर्करा (sugar) और कार्बोलिकाम्ल (Carbolic Acid) ।

भौतिक विज्ञान (Physics).

क्षेत्रफल (area) और आयतन (volume) निकालना, पदार्थों की अवस्थायें—ठोस, द्रव और गैस पदार्थों के गुण, द्रवों का भार, गैसों का भार, वायुभारमापक यन्त्र (Barometer) और वायुनिष्कासकयन्त्र (Air Pump)।

तुला का उपयोग—मात्रा, आयतन और घनत्व (Density) और आपेक्षिक घनत्व (Relative Density) तापमापक यन्त्र (Thermometer)—द्रवणांक—क्वथनाङ्क (Boiling point) ताप परिचालन (conduction) परिवाहन (conviction) और विकिरण (Radiation)।

प्रकाश (Light) की गति, प्रतिक्षेप (Reflection) वक्रीभवन (Refraction) प्रकाश-रचना (composition of light) और ताल (Lenses)—चुम्बक (Magnetism), शब्द (Sound) और विद्युत् (Electricity) का सामान्य और अतिसंक्षिप्त ज्ञान।

(२) प्रथमपत्रोक्त विषयाणां:—

प्रायोगिक (Practical) परीक्षा १००

द्वितीयखण्डपरीक्षा ।

Final Degree Examination.

अध्ययनकालः – वर्षद्वयम् ।

प्रतिपत्रं पूर्णाङ्काः १०० ।

शल्यतन्त्रम् (Surgery).

प्रथमपत्रस्य ज्ञेयांशाः —

(क) आयुर्वेदोत्पत्तिः, शल्याद्यष्टांगनिरूपणम्, चतुष्पादसिद्धिः वैद्यकर्त्तव्यनिर्णयः, अग्रोपहरणम्, यन्त्रशस्त्रविधिस्तद्रूपविज्ञानादिसहितः, कर्माभ्यासविधिः, शल्यतंत्रोक्तरोगज्ञानोपायाः क्षाराग्निजलौकावचारणविधिः, वज्राभिहतोपायाः, दुष्टरोगवर्णनम्, मर्मविज्ञानम्, सिराव्यधविधिः, व्रणस्यामपक्वताविज्ञानम्, व्रणालेपनबंधवर्णनम्, बंधस्वरूपविज्ञानम्, आतुरालयवर्णनम्, व्रणितोपासनम्, व्रणस्रावविज्ञानम्, कृत्याकृत्यव्रणविज्ञानम्, अष्टविधशस्त्रकर्मीयव्रणविज्ञानम्, प्रनष्टशल्यविज्ञानम्, शल्यापनयनम्, विपरीताविपरीतव्रणविज्ञानम्, व्रणानां विम्लापनादियोगाः, द्विव्रणीयोपक्रमः, सद्योव्रणोपक्रमः, भग्नोपक्रमः, अर्शःसु क्षाराग्निशस्त्रोपक्रमः, भगन्दरोपक्रमः, उदररोगे शस्त्रकर्म, मूढगर्भे शस्त्रकर्म, अश्मर्युपक्रमः, विद्रध्युपक्रमः, नाडीव्रणस्तनविद्रध्युपक्रमः, ग्रन्थ्यपच्यर्बुदगलगण्डोपक्रमः, वृद्ध्युपदंशश्लीपदव्रणोपक्रमः, क्षुद्ररोगोपक्रमः, शूकदोषोपक्रमः उपरिनिर्दिष्टानां रोगाणामुपक्रमः हेतुलिंगज्ञानसहितः ।

ग्रन्थाशाः —

सुश्रुतसंहितासूत्रस्थानस्य १-५-७-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१७-१८-१९-२२-२३-२५-२६-२७-२८-३७—अध्यायानामुपयोगिनोंऽशाः । निदानस्थानस्य ३-४-८-९-१०-११-१२-१३-१४-१५-अध्यायाः । शारीरस्थानस्य ६-८-अध्यायौ; चिकित्सास्थानस्य-१-२-३-६-७-८-१४-१५-१७-१८-१९-२०-२१ अध्यायानामुपयोगिनोंऽशाः ।

निबंधसंग्रहस्य शस्त्रस्वरूपवर्णनम्—बंधस्वरूपवर्णनञ्च। अष्टांगहृदयसूत्रस्थानस्य २१-२६-३० अध्यायाः। अथवा वामदेवकृतः शल्यतन्त्रसमुच्चयः। ६०

(२) द्वितीय (क्रियामूलक) पत्रस्य ज्ञेयांशाः—

प्रथमपत्रोक्तविषयेषु चिकित्सालये सम्पादनयोग्यानां क्रियानुष्ठानम्, Practical Shalya and Bandaging, etc.

शालाक्यतन्त्रम् (Diseases of Ear, Eyes, Nose and Throat, etc., and their treatment).

(२) प्रथमपत्रस्य ज्ञेयांशाः—

श्रवणनयनवदनघ्राणशिरःसंश्रितानां रोगाणां सनिदानचिकित्सा।

ग्रन्थांशाः—

सुश्रुतसंहितायाः सूत्रस्थानस्य १६ अध्यायः, निदानस्थानस्य १६ अध्यायः, चिकित्सास्थानस्य २२ अध्यायः, उत्तरतन्त्रप्रथमाध्यायात् षड्विंशाध्यायं यावत्।

(२) कर्माभ्यासः पूर्णाङ्काः १००।

तर्पणाश्च्योतनसेकाञ्जनादीनि।

DENTAL SURGERY.

Extraction of tooth—Operation of (Gum boils.)

EAR, NOSE, THROAT AND EYE.

Diseases of Eye (elementary knowledge of)

EAR.—Removal of foreign bodies, Ear Syringing—Use of Auriscope—Elementary knowledge of diseases of the ear.

NOSE—Nasal Donche, Elementary knowledge of the diseases of the nose.

THROAT.—Tonsilitis—Pharyngitis, Removal of foreign bodies, Diptheria.

अरिष्टविज्ञानम् (Prognosis of diseases).

ग्रन्थांशाः—

(क) चरकसंहितायाइन्द्रियस्थानं सम्पूर्णम्।

(ख) अष्टाङ्गहृदयस्य शारीरस्थानस्य ५ अध्यायः।

(ग) सुश्रुतसंहितायाः सूत्रस्थानस्य २९, ३०, ३१, ३२, अध्यायाः।

Pathology (Vikriti Vijnan).

(1) First paper 100

An elementary knowledge of the following:—

(1) Germs (Pathogenic), (2) Parasites (including Helminthology), (3) Infection, (4) Immunity, (5) Phthisis

(Tuberculosis of lungs), (6) Typhoid fever, (7) Malaria, (8) Kala Azar, (9) Plague, (10) Pneumonia and Pleurisy, (11) Cholera, (12) Gonorrhoea, (13) Syphilis, (14) Leprosy, (15) Mumps, (16) Cerebro spinal fever, (17) Dengue, (18) Influenza, (19) Filariasis, (20) Tuberculosis of Intestine and bones, (21) Small-pox, chicken-pox and measles, (22) Beri-beri, (23) Pathological conditions of urine and its examination, (24) Pathological conditions of stool and its examination, (25) Examination of sputum, (26) Simple examination of blood films, (27) Whooping cough, (28) Diphtheria.

(2) Second paper (practical) 100

मानसरोगः (Mental diseases and their treatment).

ज्ञेयांशाः—आयुर्वेदोक्तदार्शनिकविषयाणां स्थूलपरिचयः अन्तरिन्द्रयाणां बहिरिन्द्रियाणाञ्च परिज्ञानम्, उन्मादापस्मारमूर्च्छाभ्रमसन्न्यासमदात्ययानां कामक्रोधादीनाञ्च सनिदानचिकित्साविधिः।

ग्रन्थांशाः—

(क) सुश्रुतसंहितायां शारीरस्थानस्य प्रथमाध्यायः, चरकसंहितायां सूत्रस्थानस्य प्रथमाध्याये सामान्यादि पदार्थषट्कवर्णनमात्रम् ८।११ अध्यायौ, विमानस्थानस्याष्टमाध्यायः शारीरस्थानस्य १।५ अध्यायौ, च। एतेषामुपयोगिनोंऽशाः। ५०

(ख) पूर्वोक्तमानसरोगाणां निदानंचिकित्सा च ५०

१००

अगदतन्त्रं व्यवहारायुर्वेदश्च (Toxicology and Medical jurisprudence).

ज्ञेयांशाः—अन्नपानरक्षाविधिः, त्रिविधविषविज्ञानम्, सविज्ञानां सर्पदष्टचिकित्सा, अलर्कविषचिकित्सा, वृश्चिकादिदष्टचिकित्सा, अहिफेन भङ्गा—धतूर—वत्सनाभ—विषतिन्दुक—करवीर—फेनाश्म—क्षार—द्रावक—वाष्पविषजुष्टाना सविज्ञाना चिकित्सा, व्यवहाराधिकरणोपयोगिनां विषयाणां स्थूलपरिचय आशुमृतकपरीक्षाविषयकं स्थूलज्ञानं यथासम्भवं तच्चिकित्सा च?

ग्रन्थाशाः—

(क) चरकसंहितायां चिकित्सास्थानस्य २३ अध्यायः, सुश्रुतसंहितायां कल्पस्थानम्। ५०

(ख) "व्यवहारायुर्वेद और विषचिकित्सा" इतिनाम्नः कानपुरतः प्रकाशितस्य हिन्दीपुस्तकस्य पूर्वोक्तज्ञेयांशोपयोगिनोंऽशाः।

Jurisprudence (Medical).

An elementary knowledge of the following :—

(1) Post mortem Examination (signs of death, etc),

(2) Toxicology (signs, symptoms and treatment).

(3) Preservation of exhibits in medicolegal cases. 50

100

प्रसूतितन्त्रं कौमारभृत्यञ्च (Midwifery and Diseases of children and their treatment).

प्रसूतितन्त्रस्य ज्ञेयांशाः ।

(क) (प्राचीनमते) गर्भलक्षणानि, गर्भिणीचर्य्या, पुंसवनविधिः, मृतामृतगर्भपरीक्षा, मूढगर्भस्य परिज्ञानं तस्य चिकित्सा च, गर्भपातगर्भस्रावयोर्भेदः, चिकित्सा भेदश्च, सूतिकासन्निपातः (Septicermia) प्रसूतायाः प्रायोभाविनोरोगाः, तच्चिकित्सा च, योनिव्यापदस्तच्चिकित्सा च, प्रदराद्या अपरे स्त्रीरोगाः । २५

(ख) (नवीनमते) —

"प्रसूतिपरिचर्य्या" नामकं पुस्तकमवलम्ब्य पञ्चोपदेशाः ... २५

(ग) कौमारभृत्यस्य ज्ञेयांशाः ।

प्रसवात् प्रभृति शिशोः पालनविधिः, स्तन्यपरीक्षा, स्तन्यशोधनवर्द्धनोपायाः, स्तन्याभावे शिशोः पथ्यविधिः, धात्रीनियुक्तिकथनम्, दन्तोद्गमकालः, शिशोः तल्पपरिच्छदादिकम्, परिचारकगुणाः, शिशूनां प्रायोभाविनोरोगास्तत्प्रतीकारश्च । ५०

१००

ग्रन्थांशाः—

चरकसंहितायां शारीरस्थानस्य २।३।४।८ अध्यायाः (सम्पूर्णाः) ६ अध्यायः (गर्भोत्पत्तिप्रकरणतोऽन्तं यावत्)। चिकित्सास्थानस्य ३० अध्यायः (क्लैब्यप्रकरणं विना, स्तन्यदोषबालरोगप्रकरणं यावत्)।

सुश्रुतसंहितायां शारीरस्थानस्य २।३।१० अध्यायाः सम्पूर्णाः, ५ अध्यायः (गर्भगर्भाशययोः स्थित्यादिवर्णनमात्रम्)। निदानस्थानस्य ८ अध्यायः। चिकित्सास्थानस्य १५ अध्यायः (सम्पूर्णः) १७ अध्यायः (स्तनरोगचिकित्सामात्रम्) उत्तरतन्त्रस्य २७ अध्यायात् ३७ अध्यायं यावत्।

अष्टाङ्गहृदये शारीरस्थानस्य १।२ अध्यायौ। उत्तरतन्त्रस्य १।२।३।३४ अध्यायाः (सम्पूर्णाः) ३३ अध्यायः (योनिव्यापत्तिमात्रम्)।

Midwifery.

An elementary knowledge of the following :—

Normal delivery.

Position and lie of child in normal and abnormal pregnancy.

Extraction of dead foetus.
Twins (Delivery of locked twins).
Asphyxia Neo Natorum.
Forceps (Application of low forceps).
Treatment of Retained Placenta.
Treatment of Post Partum Haemorrahage.
Section of the Umbilical cord.

रसशास्त्रम् (Hindi chemistry).

(१) ज्ञेयांशाः—

रससिन्दूरम् , स्वर्णसिन्दूरम् , बृहच्चन्द्रोदयः, मकरध्वजः, स्वर्णभस्म, तारभस्म, ताम्रभस्म, रसपर्पटी, स्वर्णपर्पटी, मृगांकरसः, महामृगांकरसः, राजमृगांकः, वसन्तमालती, वसन्तकुसुमाकरः, ज्वरधूमकेतुः, श्रीवेतालः, कस्तूरीभैरवः, जयमंगलरसः, ज्वरार्यभ्रम्, लोकनाथः, सुधानिधिः, शृंगाराभ्रम् श्वासचिन्तामणिः, रामबाणः, अमृतार्णवः, पीयूषवल्ली, गुल्मकालानलः, रसमाणिक्यम् , रसकर्पूरः, बृहद्वातचिन्तामणिः, वसन्ततिलकः, आमवातारिः, चन्द्रप्रभावटिका, स्वर्णवंगम् , पूर्णचन्द्रः, रत्नप्रभावटी, गर्भचिन्तामणिः, कुमारकल्याणरसः, बृहत्कांचनाभ्रम्— इत्येतेषां यथासम्भवं निर्म्माणं तथा विषपित्तादिघटितानामौषधीनामपि यथाशक्ति निर्माणम् ।

(क) निर्मितानामौषधानां पंञ्जीकरणे		...	...	२०
(ख) ,, ,,	निर्माणप्रकारे	...	...	४०
(ग) ,, ,,	परिचये	...	...	२०
(घ) ,, ,,	प्रयोगज्ञाने	...	...	२०
				१००

ग्रन्थांशाः—

भैषज्यरत्नावली, अन्यो वा कश्चिदुपयोगी ग्रन्थः ।

चिकित्सा (Practice of Medicine).

ज्ञेयांशाः—

स्नेहः	...	...	च० सू० १३ अ०
स्वेदः	...	...	,, ,, १४ ,,
वमनम् }	...	...	,, ,, १५ ,,
विरेचनम् }	...	...	,, ,, १६ ,,
निरूहः, अनुवासनम्, उत्तरवस्तिः	...	...	चरकसिद्धिस्थानम् ।
लंघनम्, बृंहणम्	...	...	च० सू० २२ अ०
सन्तर्पणम्	...	...	,, ,, २२ ,,
रसायनम्	...	...	,, चि० २३ ,,

वाजीकरणम् ...	...	...	,, ,, १ ,,
ज्वरचिकित्सा	...	...	,, ,, ३ ,,
अतीसार — चिकित्सा	...	...	च० चि० १९ अ०
ग्रहणी ,,	...	...	,, ,, १५ ,,
अर्शोरोग ,,	...	...	,, ,, १४ ,,
पाण्डु ,,	...	...	,, ,, १६ ,,
छर्दि ,,	...	...	,, ,, २० ,,
तृष्णा ,,	...	...	,, ,, २२ ,,
रक्तपित्त ,,	...	...	,, ,, ४ ,,
राज्ययक्ष्म ,,	...	...	,, ,, ८ ,,
क्षतक्षीण ,,	...	...	,, ,, ११ ,,
हिक्काश्वास ,,	...	...	,, ,, १७ ,,
कास ,,	...	...	,, ,, १८ ,,
वातव्याधि ,,	...	...	,, ,, २८ ,,
वातरक्त ,,	...	...	,, ,, २९ ,,
उरुस्तम्भ ,,	...	...	,, ,, २७ ,,
गुल्म ,,	...	...	,, ,, ५ ,,
हृद्रोग ,,	...	...	,, ,, २६ ,,
			आयुर्वेदविज्ञानञ्च
मूत्रकृच्छ्र ,,	...	...	,, ,, २६ ,,
अश्मरी ,,	...	...	,, ,, २६ ,,
प्रमेह ,,	...	...	,, ,, ६ ,,
मेदोरोग ,,	...	...	च० सू० २१ ,,
उदररोग ,,	...	...	च० चि० १३ ,,
शोथ ,,	...	...	,, ,, १२ ,,
कुष्ठ ,,	...	...	,, ,, ७ ,,
कार्श्य ,,	...	...	च० सू० २१ ,,
ध्वजभंग ,,	...	...	च० चि० २ ,,
विसर्प ,,	...	...	,, ,, २१ ,,
दाह ,,	...	...	भैषज्य रत्नावली ।
आमवात ,,	...	...	,, ,,
अजीर्णादि ,,	...	...	,, ,,
शीतपित्त ,,	...	...	,, ,,
आम्लपित्त ,,	...	...	,, ,,
शूल ,,	...	...	सु० उ० ४२ अ०
			भैषज्य रत्नावली ।

विसूचिकाचिकित्सा	...	...	सु० उ० ५६ अ०
क्रिमि	,,	...	...	,, ,, ५४ ,,
अरोचक	,,	...	...	,, ,, ५७ ,,
उदावर्त	,,	...	...	,, ,, ५५ ,,
आनाह	,,	...	...	,, ,, ५६ ,,
मूत्राघात	,,	...	...	,, ,, ५८ ,,
स्वरभेद	,,	...	...	,, ,, ५३ ,,
वृद्धि	,,	...	...	सु० चि० १९ ,,
गलगण्ड	,,	...	...	,, ,, १८ ,,
श्लीपद	,,	...	...	,, ,, १९ ,,
उपदंश	,,	...	...	,, ,, १९ ,,
क्षुद्ररोग	,,	...	...	,, ,, २० ,,
अंशुघात	,,	}	...	आयुर्वेदविज्ञानम् ।
गदोद्वेग	,	}		
योषापस्मार	,,	}		
उरस्तोय	,,			
सोमरोग	,,	}	...	भावप्रकाशः ।
फिरङ्ग	,,	}		
विस्फोट	,,	}	...	गदनिग्रहः ।
मसूरिका	,,	}		
ग्रन्थिकज्वर	,,	}	...	आयुर्वेदविज्ञानम् ।
श्लैष्मिकज्वर	,,	}		
श्वसनकज्वर	,,	}		
दण्डकज्वर	,,	}		
कालज्वर	,,	}		

(२) द्वितीय (practice) पत्रस्य ज्ञेयांशाः—

रोगिपरीक्षया रोगनिरूपणं तच्चिकित्सानिर्देशश्च । १००

चरकसाधारणपत्रम् (General paper on Charak Sanhita).

ग्रन्थांशाः—

चरकसंहितायां सूत्रस्थानस्य १।२।३।४।५।९।१०।१२।१७।१८।१९।२०।२४।२५।२६।२८।२९।३०।

अध्यायाः । विमानस्थानस्य २।४।५।६।७। अध्यायाः (सम्पूर्णाः) शारीरस्थानस्य ६।७। अध्यायौ ।

Final Degree Examinations.

औषधिनिर्माणम् (Pharmacy).

औषधिनिर्माणविषये ३०

निर्मितौषधीनाम्पत्रीकरणे	... ...	१५
,, ,, परिचये	... ...	२५
,, ,, प्रयोगे	... ...	३०
		१००

ज्ञेयांशाः—अधोलिखितानां तैलघृतखण्डमोदकासवारिष्टसुराप्रभृतिनामोषधालये यथासम्भवं निर्माणम् ।

तैलानि ।

१—नारायणम् ।
२—श्रीविष्णुतैलम् ।
३—सैंधवादितैलम् ।
४—विषगर्भतैलम् ।
५—महामाषादितैलम् ।
६—सोमराजीतैलम् ।
७—पुनर्नवादितैलम् ।
८—दीपिकातैलम् ।
९—विजयभैरवतैलम् ।
१०—शूलगजेन्द्रतैलम् ।

घृतानि ।

१—पञ्चतिक्तघृतम् ।
२—अशोकघृतम् ।
३—ब्राह्मीघृतम् ।
४—शतावरीघृतम् ।
५—छागलादिघृतम् ।

मोदकाः ।

१—मदनानन्दमोदकः ।
२—कामेश्वरमोदकः ।

आसवारिष्टाः ।

१—कनकासवः ।
२—पुनर्नवासवः ।
३—लौहासवः ।
४—चन्द्रनासवः ।
५—द्राक्षारिष्टः ।
६—कुटजारिष्टः ।
७—अश्वगन्धारिष्टः ।
८—दशमूलारिष्टः ।
९—तक्रारिष्टः ।
१०—मृतसंजीवनीसुरा ।

खण्डाः ।

१—कुष्माण्डखण्डः ।
२—नारिकेलखण्डः ।

ग्रन्थांशाः—भैषज्यरत्नावली अन्यो वा कश्चिदुपयोगी ग्रन्थः ।

Hygiene and Bacteriology (स्वस्थ वृत्त और जीवाणुवाद) ।

Air.—(Compositon, Purification and the ordinary impurities found in it).

Requirement for the healthy and the sick, air space ventilation.

Water.—[Distribution. kinds of, compositon, impurities, purification, its need for life, tanks, wells (disinfection of water in tanks and wells) methods for prevention of pollution of water during epidemics.]

Food.—(Varieties, proximate principles, the kind of food required for the support of health and life.)

Refuse water.—Its removal (removal of sewage and night-soil).

Drains and drainage.

Conservancy and latrines.

Infectious diseases.—Small-pox, Chicken-pox, Measles, Mumps, Influenza. Dengue, Malaria, Kala Azar, Plague, Typhoid, Cholera. Tuberculosis, Leprosy, Dysentery, Diphtheria, whooping cough and Beri-beri.

Bacteriology.

An elementary knowledge of the following:—

(1) Germs (Pathogenic), (2) Parasites (including Helminthology), (3) Infection, (4) Immunity, (5) Phthisis (Tuberculosis of Lungs), (6) Typhoid Fever, (7) Malaria, (8) Kala Azar, (9) Plague, (10) Pneumonia and Pleurisy, (11) Cholera, (12) Gonorrhoea, (13) Syphilis, (14) Leprosy, (15) Mumps, (16) Cerebro spinal Fever, (17) Dengue, (18) Influenza, (19) Filariasis, (20) Tuberculosis of Intestine and Bones, (21) Small-pox, Chicken-pox and Measles, (22) Beri-Beri, (23) Pathological conditions of urine and its examination, (24) Pathological conditions of stools and its examination, (25) Examination of Sputum, (26) Simple examination of blood films, (27) Whooping couch (28) Diphtheria.

FORM B [APPENDIX TO RULE 40 (1)].

Government of Bihar and Orissa.

Certified that..,
son of...................................., aged...................years..................
months duly passed the Preliminary Examination in Ayurveda, both theoretical and practical, held in..........................19..............from the Government Ayurvedic School, Patna, and was placed in the.............. Division.

Principal,
Government Ayurvedic School,
Patna.

President,
Governing Body,
Government Ayurvedic
School, Patna.

Patna:

Dated the......................19 .

[FORM C APPENDIX TO RULE 40 (2)].

Government of Bihar and Orissa.

Certified that..
son of.......................................aged.....................years...................
months duly passed the Final Examination in Ayurveda, both theoretical and practical, held in.......................................19...................
from the Government Ayurvedic School, Patna, and was placed in the ....Division, The diploma of Graduate in Ayurvedic medicine and surgery is hereby conferred on him and he is authorized to practise Ayurveda.

Principal,	*President,*
Government Ayurvedic School, Patna.	*Governing Body, Government Ayurvedic School, Patna.*

Patna:

Dated the......................19 .

COLLEGE OF INDIGENOUS MEDICINE,
Jaffna. 9th Nov. 1935.

To,
The President,
All India Ayurveda Mahamandal,
Benares Hindu University, Benares.

Sir,
With reference to your letter dated 24th Oct. 1935 I have the honour to inform you that there are two Colleges of Indigenous Medicine in Ceylon. One situated at Colombo and the other at Jaffna. The one situated at Colombo promotes the Ayurvedic System of Medicine and the other situated at Jaffna promotes the Siddha System of Medicine in particular.

In Ceylon Singhalese Physicians practice the Ayurvedic System and the Thamil Physicians practice the Siddha System of Medicine.

College of Indigenous medicine, Colombo, was started in the year 1929 and the College of Indigenous medicine, Jaffna was started in the year 1935.

The Principal of the College of Indigenous medicine, Colombo, is Capt. A. N. N. Pannikker, M. B. L. LB. (Edin), M. R. C. S. (Eng.) L. R. C. P. (Lond) I. M. S. (Retired), Ayurveda Bhushan (Madras) and the Principal of the College of Indigenous Medicine, Jaffna is Dr. E. T. Maç Intyre, M. D. (•Dees) D. T. M. (Lond.), L. R. C. P. & S. (Edin), L. R. F. P. & S. (Glas) etc.

The Registrar of the College of Indigenous Medicine. Colombo, is Dr. J. M. L. Mendis, L. M. S. (Ceylon) and the Registrar of the College of Indigenous Medicine, Jaffna, is Dr. S, M. Ponnaiyah. L. I. M. (Madras) First Class

If you desire to have the photos of the Principals and the Registrars of both the Colleges along with the Building's of both the Colleges, I shall send same on receipt of a reply from you.

I shall send you a report of Both the Colleges in the meanwhile.

Thanking you for your kindness

I have the honour to be,

Sir,

Yours obediently.

Sd. S. M. Ponnaiyah.

Registrar

College of Indigenous Medicine,

Jaffna.

N. B. In Ceylon there are two Indigenous Medical association. One is known as the "All Ceylon Ayurvedic Congress" and the other "All-Ceylon Thamil Medical Conference."

All Ceylon Ayurvedie Congress is an organization of the Singhalese Physicians and the other is an organization of the Thamil Physicians of Ceylon. Each of the Conferences have each a medical council of their own incorporated for the purpose to regulate the singhalese and Thamil medical practitioners of Ceylon and also to force registration for the better control of the Indigenous Medical Practictioners on the same lines as those of the Modern Medical Practitioners.

Sd. S. M, Ponnaiyah.

Prospectus of the College of Indigenous Medicine

The Aim.

The College of Indigenous Medicine has been established for training those who desire to practise the three indigenous systems of medicine: Ayurveda, Siddha and Unani.

Referring to the need for this training, the Report* on Indigenous Medicine says :—

"When so large a number of persons either from choice or necessity have recourse to native treatment it becomes the duty of Government to see that those who practise the indigenous systems are not quacks. Government has done something to eliminate the quack from those professing the allopathic system. Nothing has been done to protect the public against the quacks professing the indigenouss ystems. At present manypersons who have got hold of a few recipes but without adequate training and experience are going about practising the indigenous systems. The danger to the public from these unqualified persons cannot be exaggerated"

"The exclusive appropriation of the term "Scientific" to Western Medicine is unwarranted. Even if the indigenous systems are not scientific in the sense that they are based on incorrect theories as to the causes of diseases it does not follow that the indigenous systems can be dismissed as mere quackery.

These systems have been spoken of in terms of high praise by those who are competent judges. Sir Pardey Lukis who was Director General of the Medical Services for India, said:

"I wish to impress upon you most strongly that you should not run away with the idea that everything that is good in the way of medicine is contained within the ringed fence of allopathy or Western medicine. The longer I remain in India and the more I see of the country and the people, the more convinced I am that many of the empirical methods of treatment adopted by the Vaids and Hakims are of the greatest value, and there is no doubt whatever that their ancestors knew ages ago many things which are nowadays being brought froward as new discoveries.

---

* S.P. No. 1 of 1927.

On another occasion he said:

"We re ourselves just emerging from the slough of empiricism. Until a few years ago we believed malaria to be due to foul air as its name implies...... Personally if I were ill I may frankly say that I would prefer to be treated by a good Vaid or Hakim rather than by a bad doctor. I resent strongly that spirit of Medical Trades Unions which leads many modern doctors to stigmatise all Vaids and Hakims as quacks and charlatans Many of the so-called discoveries of recent years are merely rediscoveries of the facts known centuries agò to the ancients."

Sir Havelock Charles, when professor of the Calcutta Medical College often used to say to his pupils: "I am only repeating to you what the Aryan medical science preached two thousand years ago and am reproducing to you only a small fragment of the lesson taught by Charaka."

The "Sadler Commission" reporting on the Calcutta University said? "This ancient system possesses an imposing treasure of empirical knowledge and technical achievement which cannot be safely ignored even in these days of rapid progress.

Sir Edward Denham in his Ceylon Cencus Report for 1911 bore testimony to the skill of the Vederalas in these terms: There has been considerable controversy as to the merits and methods of Vederalas. It can however scarcely be disputed that amongst them there are men of considerable knowledge, experience, and skill, while many of their remedies have been proved to be wonderfully efficacious...... Many Vederalas have undoubtedly performed successful operations as occulists and as bone-setters; while their treatment of dysentery and certain bowel diseases, abrasions. sores, and even snake bites have been in many cases successful."

The object of the College is to preserve as far as possible the treasures of medical knowledge "which cannot be safely ignored even in these days of rapid progress," and to make the exponents of the indigenous sytems more efficient.

The curriculum therefore provides for the training of students not only in the three indigenous systems but for elementary instruction in modern science and discoveries relating to medicine.

Though about 12 million rupees are spent annually for providing medical relief there are many parts of Ceylon which are inadequately served by existing hospitals and dispensaries. Allopathic private practitioners find it unprofitable to establish themselves in practice in many areas. It is hoped that the graduates of this College will be specially useful in carrying efficient and cheap medical aid to

such areas and in ministering to the poor in all parts of Ceylon who cannot now afford to summon to there houses Allopathic doctors.†

The Board of Indigenous Medicine receives from Government a grant of Rs. 50,000 per annum.

The Ministry of Health has informed the Board (19th September, 1934), that the Government Grant will stop at the end of 10 years—i. e. in 1938.

The hope of making the Board self-supporting lies in making the Pharmacy a revenue yielding institution.

It wonld not be possible to reduce the aggregate sum now paid under the head of salaries and travelling allowances, which now exceeds the Government Grant.‡ The rest of the expenditure is now met from the revenue derived from fees.

HISTORY OF THE COLLEGE,

In 1925 the Government appointed a Committee consisting of Mr. K. Balasingham (Chairman), Hon. Mr. E. R. Tambimuttu, Hon. Mr. C. W. W. Kannangara, Hon. Mr. T. B. Jayah, Hon. Mr. F. A. Obeyesekera, Hon. Mr. S. Rajaratnam, Hon. Mr. W. A. de Silva, Hon. Mr.

---

† In 1934 the Board paid for salaries :—

	Rs.	c.
Hospital	9,952	79
Pharmacy and Dispensary	7,059	69
College	33,594	12
Examining Fees	510	25
...	51,116	85
Ground Rent paid to Government, and Municipal Taxes	1,249	31

The total expenditure of the Board for 1934 was Rs. 88,661.68.

‡ The President of the All India Medical Conference of Allopathic doctors) bore testimony to the value of Ayurvedic College in these terms. (Dec. 26, 1933) :—

Conditions being what they are I am not quite sure that we can fight the misery of our people on a country wide scale except through men and women trained by such indigenous institutions. They will be efficient enough to fight the general diseases that are the bane of our country. They can be trained in less time and at less cost and they will be valuable to the general body of the population. Indeed it is these medical men who can constitute the answer in the present conditions to the crying needs of rural India."

P. B. Rambukwelle, Sir Marcus Fernando, † Dr. L. F. Hirst, M. D. (Lond.), and Mr. C. T. Symons, B. A., to report

(*a*) Whether it is practicable for the Government to assist financially or otherwise

(i) in the training of those seeking to qualify themselves as practitioners of the indigenous systems of medicine;

(ii) and in the investigation of the medicinal value of drugs used by those practising such systems; and

(*b*) If practicable, to prepare a detailed scheme of such training and investigation for the consideration of Government.

The Committe‡ in October. 1926, made the following recommendations:—

I. That a Board of Indigenous Medicine be constituted to deal with all matters connected with the education of those seeking to qualify themselves as practitioners of the indigenous systems of medicine.

II. That the number of members of the Board be 15 and that the Controller of Revenue be the Chairman. Ten members, six of whom shall be members of the Legislative Council, shall be nominated by Government and the remaining five shall be persons practising the indigenous systems nominated by the above-mentioned ten members.

III. That a college be established in Colombo for the training of those who seek to practise the indigenous systems or any of them.

IV. That a hospital and out-door dispensary be attached to the college and that adequate provision be made for growing plants used in the indigenous system.

V. That the course of instruction at the college be for a period of four years.

VI. That the course of instruction be according to the syllabus prescribed in Schedule I.

VII. That during the last two years of the course, lectures in Sidda and Unani methods of treatment and pharmacology be delivered to such students as may desire instruction in those subjects.

VIII. That students be required to attend the hospital, dispensary, and pharmacy, during the last three years of their course of studies.

---

† Dr. Gunasekera was appointed a member of the Committee in place of Sir Marcus Fernando, when he left for England in May, 1926.

‡ Dr. S. T. Gunasekera, Dr. Hirst and Mr. Symons did not agree to these proposals.

IX. That privately established schools which in the opinion of the Board of Indigenous Medicine are properly conducted be paid a grant of Rs. 50 for each student who passes the first, Rs. 100 for the second, and Rs. 150 for the final examination held by the Board for this purpose.

The syllabus of studies at the privatevely managed schools should be approved by the Board.

X. That for the present till the college proposed in Recommendation III. is established, 12 scholarships each of the value of Rs. 360 per annum be granted by Government to enable students to proceed to some of the Schools of Indigenous Medicine established in India.

XI. That a register should be kept of all persons qualified to practise the indigenous systems of medicine.

XII. That no person who is not so registered be permitted to practise medicine as a profession whether for gain or otherwise after seven years from the day specified for registration.

XIII. That all persons who have been practising the indigenous system for a period of not less than three years on a date to be notified should have the right to be registered.

XIV. That after a specified date no person should be registered unless he has passed an examination prescribed by the Board of Indigenous Medicine, or is a preson trained by a specialist of repute and is in the opinion of the Board qualified to practise as a specialist.

XV. That a Research Institute be established in connection with the Government Analyst's Department, and every facility be given to those desirous of doing research work in the institute.

XVI. That two scholarships each of the value of Rs. 125 per mensem for three years be given to graduates in Western medicine to study the Ayurvedic systems in India and after that with some of the physicians of great repute in this country.

XVII. That one scholarship of the value of Rs. 300 per mensem for two years be given to one graduate in Westen medicine to study research work in indigenous drugs at the school of Tropical Medicine, Calcutta.

The earlier history of the movement to train Ayurvedic practitioners is thus stated in Section 4 of the report of this Committee :—

"In 1916, the Government was prepared to consider favourbly a practical scheme for the granting of assistance for the training of those seeking to practise the indigenous system of medicine (*vide* Hansard 1916, pages 218 and 232). In 1916 the Government offered to the Oriental Medical Science Society, a valuable site in Colombo †

† Maining Town houses were subsequently built on this site.

for the establishment of an Ayurvedic College and Hospital. This offer was withdrawn in 1922 as the funds then collected by the Society were not sufficient for building, equipping, and endowing the purposed institutions. When the Supply Bill, 1925-1926, was considered in Committee the Government was asked by several members to vote a sum of money for the training of those seeking to practise the indigenous systems of medicine, and the Acting Colonial Secretary requested the Chairman of this Committee to prepare a scheme in detail. As it was thought more desirable that a Committee should prepare such a scheme, a motion was introduced by the Chairman for the appointment of a Committee for the purpose. The Government accepted the motion, but desired that the Committee should also report on the practicability of giving assistance in the investigation of the medicinal value of drugs used by those practising the indigenous system."

The College of Indigenous Medicine was opened in rented premises, "The Bower," Cotta Road, by His Excellency Sir Herbert Stanley, G.C.M.G., on 10th June, 1929, with 72 students on the roll.

Though "The Bower" was a spacious house situated in a large garden it was soon found to be inadequate, and an additional hall had to be built.

An applicantion was made to the Chairman of the Municipal Council for permission to dissect bodies at the College premises.

The Council imposed certain conditions which made it almost impossible to conduct dissection classes in the permises. Besides it was not easy to obtain permission from the lessor to make structural alterations.

The Board applied on 10th September, 1929, to the Government Agent, W. P., for permission to erect a temporary iron shed on the land leased from the Crown which was situated just outside the Municipal limits on the Cotta Road. The Government Agent replied that the land should be used, according to the lease, and only for a medicinal farm.

The Board thereupon applied in November, 1929, to Government for four acres of land for the erection of a dissection hall, hospital etc.

On the 31st July, 1930, the Government gave the Board an acre of land bordering on Cotta Road for the erection of a dissection hall. The erection of this building was commenced in October when the Director of Electrical Undertakings objected to it, as being too close to the electric high tension transmission line. The Board then applied to Government for a site near the Government Printing Office and Bacteriological Institute for the erection of the College, hospital, and

dispensary. Government replied that this site was reserved for the proposed Research Institute. The Government also intimated that it was also not in a position to offer suitable land in the City. The Board subsequently obtained permission of Government to erect the Anatomy Block at Cotta Road further to the west of the original site. As no other site was available, a lease of the grass field to the west of the Anatomy Block was accepted by the Board for erecting the other buildings. Temporary structures were immediately erected on the new site, as "The Bower" provided far too insufficient accomodation for the rapidly growing needs of the College. Plans were then prepared for housing the College, Hospital, Out-door Dispensary, Library and quarters for resident officers in one and the same building on this small area.

When later, after commencing to build according to the plan, more land to the north of the Anatomy Block became available it was resolved to erect the College buildings on it. Later a Block to the east of the Anatomy Block was also obtained, and the Out-patients' Clinic, Quarters for the Superintendent and for resident officers were built on it.

As the accommodation required for the Institutions controlled by the Board increased beyond anticipation it became necessary to make frequent modifications on the original plan even when the buildings were in progress.

The portions of the hospital built for class rooms had to be made suitable for hospital wards. A building erected for a garage was converted into a Dispensary and Pharmacy. This was again converted into quarters for attendants, etc. Later, the Anatomy Shed had to be rendered suitable for a Pharmacy. Soon experience showed that far more accommodation was needed for the Pharmacy than the original Anatomy shed could have given. Large extensions had to be made making the area available more than three times the former area. A building built for a Hostel for students have to be converted into quarters for 5 Resident Officers. A portion of the hospital originally intended as a waiting hall had to be converted into a portico and then converted partly into an office and partly into a portico, and then into 2 office rooms.

The Western Ward which was used for non-paying patients was converted into a Maternity Ward.

Owing to the nature of the ground, many of the buildings had to be steel structures on concrete foundation with walls of brick and cement, and floors of cement concrete.

The ground being swampy and subject to floods, had to be filled up.

The ground level has to be raised if the land to the north of the College is to be built upon.

BUILDINGS.

THE COLLEGE.

The following College buildings have been completed and are of the total area of 10,767 square feet.

LIBRARY BLOCK consists of a hall and two rooms and is of the area of 2,325 square feet (93×25)

SCIENCE BLOCK is (99'×31') 3069 square feet and is divided into two halls and two rooms.

ANATOMY BLOCK is of the same size and is divided into three Dissection Halls and three rooms.

There are seven other class rooms, three of these rooms are between the Science and Anatomy blocks and are of the total area of (24'×46') 1104 square feet. Another hall 60'×29' is divided into 4 class rooms (1200 square feet).

THE HOSPITAL.

The following buildings have been completed and are of the total area of 21216 sq. ft.

- (*a*) ONE PAYING WARD. 121'×40' divided into nine rooms with verandahs on all sides (3840 sq. feet).
- (*b*) TWO PAYING WARDS. (84'×40' each) divided into 14 rooms and verandahs (6729 sq. ft.)
- (*c*) TWO WARDS FOR "ORDINARY" PATIENTS. (98'×32' each) divided into 2 rooms and 8 wards. (6272 sq. ft.)
- (*d*) AN OFFICE. (24'×31') 744 sq. ft.
- (*e*) A DETACHED PAYING WARD. (64'×30') divided into four rooms.
- (*f*) A KITCHEN BLOCK divided into three rooms (24'×30') 720 sq. ft.

The Hospital Wards provide accommodation for 165 patients.

PHARMACY.

The old Anotomy Block of 1580 sq. ft. (60'×26½') has been converted into Pharmacies for the preparation of medicine by the addition of four rooms, two verandahs, and a new hall (60'×28'). The total area now available for the Pharmacy is 4430 sq. ft. As this

building is now required for an extension of the Hospital, the Pharmacy will soon be housed elsewhere.

QUARTERS FOR RESIDENT OFFICERS.

Quarters for 5 resident officers have been completed and are of the area of about 7250 sq. ft.

A house for the Superintendent of the Hospital of the floor area of 3768 sq. ft. (office room, 3 bed-rooms, drawing room, dining room, and 6 verandahs and out-houses) has been erected between the Out-patients, Department and the Quarters for the Resident Medical Officers.

OUT-PATIENT BLOCK.

This consists of 6 consulting rooms, a dispensary and two waiting halls and is of the area of 4800 sq. ft.

OTHER BUILDINGS.

Other buildings include a Mortuary, rooms for attendants, garage, and the necessary out-houses.

COST OF BUILDINGS.

The total cost of all buildings erected is Rs. 121,153.25 † This expenditure as well as all cost of eqaipment has been paid out of the annual grant.

NEED FOR MORE BUILDINGS.

There is an urgent need for the following buildings :

(1) A pathological museum, laboratory and lecture hall.
(2) A Physiological Laboratory and Lecture Hall.
(3) Retiring room for lecturers and physicians.
(4) A Common room for lady students.
(5) A Common room for male students.
(6) An isolation ward.
(7) A Pharmacy.
(8) An out-patients' clinic for non-paying patients.
(9) Three Class rooms.

Land is also required for a medicinal farm (five acers) and for a dysentery ward and tuberculosis ward, not far from the Hospital.

The Board has no funds available for these buildings.

---

† The Physiological Block of the Medical College cost Rs. 425,000 ; the Anatomy Block cost Rs. 106,000. The Walasmulla Hospital (56 beds, quarters for Medical Officers, nurses, etc.). cost Rs 135,000. The Kayts Hospital (46 beds, quarters, etc.) Rs. 167,000, the Giriulla Hospital (46 beds, quarters, etc.), Rs, 133,000.

THE BOARD OF INDIGENOUS MEDICINE.

The Board of indigenous Medicine was constituted by the Government of Ceylon in September, 1928, with the following members :—

Hon. Mr. K. Balasingham, (Chairman),
Hon. Mr. (later Sir) D. B. Jayatileke,
Hon. Mr. A. F. Molamure,
Hon. Mr. D. S. Senanayake,
Hon. Mr. W. A. de Silva,
Donald Obeyesekere, Esqr.,
Pandit M. S. P. Samarasinhy, Esqr.
G. Muttukumaru, Esqr.

The following were appointed members of the Board in June, 1933:-

Mr. K. Balasingham (Chairman),
Mr. W. A. de Silva, M. S. C.,
Mr. Donald Obeyesekere.
Pandit M. S. P. Samarasinha,
Mr. V. Siva Subramaniam,
Mr. P. M. P. Abeyasinghe,
Mr. K. W. Y. Attukorala,
Mr. U. B. Dolapihilla,
Mr. Daniel Fernando,
Mr. A. Ratnayake, M. S. C.,
Mr. S. Vythialingam M. S. C.
Pandit Wickramaratchi.

Vacancies caused by the death of Mr. K. W. Y. Attukorala and Mr. Siva Subramaniam, were filled by Mr. E. S. Jayasinghe and Mr. M. Katiravalupillai

The following were appointed in June, 1935 :—

Mr. K. Balasingham (Chairman).
Mr. W, A. de Silva, -
Mr. Donald Obeyesekera.
Mr. A. Ratnayake.
Mr. S. P. Vytilingam.
Mr. E. S. Jayasinghe,
Mr. U. B. Dolapihilla,
Veda Mudaliyar M. S. P. Samarasinha,
Veda Mudaliyar W. Daniel Fernando,
Mr. P. M, P, Abeysinghe,
Mr. V. S, Ramanathan,
Mr. Z. D. Jalaldeen.

THE STAFF OF THE COLLEGE.

The Principal

Capt, A. N. N. Panikker. Apurveda Bushana (Madras), M. B., Ch. B. (Edin), M. R. C. S. (Eng.), L. R. C. P. (Lond.), L. C. P. & S. (Calcutta). L. M. & S (Homeo), A. M. A. C. (Madras), I. M. S. (Retd.)

Medical Snprintendent and Registrar

Dr. J. M. L. Mendis. L. M. S. (Ceylon),

Lecturers

Dr. T. Nallainathan, M. R. C. S. (Eng.), L. R. G. P. (Lond.).
G, N, Nanayakkara Esq., B. Sc. (Lond.)

Kaviraja R. B. Lonora, Master of Ayurvedic Medicine (Hons). Calcutta, L.A.M.S. (Calcutta), M.B.H.S. (Calcutta), Bhishagacha. riya (Ashtanga Ayurvedic College. (On study leave in England.)

A. Kanakaratnam, Esq., Bhishagwara (Madras), Vaidya Simham (Siddha), A. M. A. C. (Madras), Bhishak, All India Ayurvedic Board (Ist Class).

D. L. Wimalajeeva Esq., L. A. M. S., Bhishagaratne (Ashtanga Ayurvedic Vidyalaya, Calcutta).

C. Sambasiva Iyer. Esq., L. A. M. S., Bhishagaratne (Calcutta), and Pundit (Tamil and Sanskrit).

D. D. Obeysekere, Esq., L. A. M. S. (Calcutta).

T. Bhoologasundram, Esq., L. I. M. (Madras).

Mr. M. A. Ahamed, Esq., L. I. M. (Madras).

Mr. Jaffer, Esq., L. I. M. (Madras).

† Dr. A. D. P. Wijegoonewardene, L. M. S. (Ceylon.)

† Dr. S. Ariaratnam, L. M. S. (Ceylon).

† Dr. M. Thiruvalingam, L. R. C. P. & S. (Edin.) L. R. A. P. & S. (Glas.)

J. E. F. Wickremesinghe, Esq., L. M. P. (Madras). [On study leave in Madras.]

R. Perera, Esq , L. M. P. (Madras).

B. L. S. Silva, Esq., B.S. (Lond.)

† K. C. Thilliampalam, Esqc. (Passed First Professional M.B. (Lond).

Assistant Lecturers

A. Ganapathy, Esq., D. I. M. S. (Ceylon).

T. P. Gunawardene, Esq., D. I. M. S. (Ceylon).

D. Rajapakse, Esq., D. I. M. S. (Ceylon)

R. D. A. Seneviratne, Esq., D. I. M. S. (Ceylon).

---

† Visiting Lecturers,

BOARD OF EXAMINERS.‡

The following have been appointed Examiners for the Pracheena Vaydyachariya Examination :—

Dr. Gananath Sen (Calcutta)
Dr. L. Lakshmipathi (Madras)
Dr. A. N. N. Panikker
PanPit M. S. P. Samarasinha, Mudaliyar
Pandit G. P. Wickramaratchi.

The Board of Examiners for the Final Examination consists of:—

Ayurvedic Section.

Principal and Lecturers,
Veda Mudaliyar Pandit Samarasinha,
Dr. D. H. Samarasinghe,
Pandit G. P. Wicramarachi of Gampaha,
Dr. Abeyrante of Borellasgamowa,
Kavichintamani P. M. P. Abeyasinghe,
B. L. Sarnelis Silva Kavitilaka.

Siddha Section.

Principal and Lecturers,
Dr. Kandiah of Point Pedro,
Dr. M. Kathiravaloopillai, of Jaffna,
Dr. S. Ramanathan, of Jaffna.

Unani Section.

The Principal,
Dr. M. A. Ahamad.
Dr. S. M. Jaffer.

ADMISSION OF STUDENTS.

The number of admissions is for the present fixed at a maximum of 100 per annum ; of whom 45 will ordinarily be allocated to the Ayurvedic Section, and 40 to the Siddha Section and 15 to the Unani Section. The vacancies occuring in any one section may be filled in by admission to any other section.

Applications for admission to the College should be made to the Registrar before the 25th of April every year on the prescribed form which may be had on application to the Registrar.

Candidates who have not passed an approved entrance examination will be examined in the following subjects :—Grammar, Literature, General Knowledge and Arithmetic. Candidates can offer Sanskrit in lieu of General Knowledge or Arithmetic. Candidates must obtain 50 per cent in the aggregate for a pass.

‡ For 1934-1935.

A registration fee of Rs. 3 should be paid by candidates who have passed a qualifying examination. Candidates who have not passed a qualifying examination should pay Rs. 6 as examination and registration fee.

The fee should be deposited in the Imperial Bank of India to the credit of the Board of Indigenous Medicine and should not be sent to the Registrar. The Bank receipt should be annexed to the application and sent to the Registrar.

The following are the approved Entrance Examinations:—

(1) Matriculation Examination of London or Indian Universities.

(2) Cambridge Senior or Junior Examinations.

(3) School Leaving Certificate Examination of the Ceylon Education Department,

(4) Vaidya Pracheena Examination, or

(5) Pracheena Prarambha Examination (Oriental Studies Examination), or

(6) Vernacular School Leaving Certificate Examination, or

(7) Oriental Studies Examination (Tamil),

Candidates who have passed the above examinations will be entitled to admission in preference to others,

Candidates who have not passed the approved examination in Singhalese or Tamil will be examined in one of these languages before admission.

RULES FOR STUDENTS.

1. All fees must be paid into the Imperial Bank of India, Colombo, to the credit of Board of Indigenous Medicine, and a receipt obtained, and that receipt must be handed personally to the Registrar or Clerk nominated by him.

2. Every student will receive from the Registrar at the commencement of each Session an enrolment card signed by the Registrar. Students may only attend such courses as are entered on their enrolment cards and in the Students' Register.

3. The enrolment card is to be taken to the lecturer on each specified subject, and is to be signed by him as evidence that the student has been entered on his roll.

4. A student who has not passed a professional examination will not be permitted to attend lectures in a higher class without the permission of the Board.

5. At the end of a course of lectures or other classes of instruction a student, provided he has attended regularly and has satisfactorily performed the work of the class, will receive a Class Certificate

These certificates are to be produced when entering for professional examinations.

6. A student who fails to attend regularly or to perform satisfactorily his work in the class will be refused a Class Certificate by the lecturer and will be called upon to take the course over again.

7. Irregular attendance or neglect of work will be reported to the Registrar.

8. Punishment for irregularity in attendance, persistent idleness, misconduct or for breach of discipline may be according to the nature of the case, a warning, fine, suspension from membership of the College for a period not exceeding one month, or recommendation to the Board for expulsion from the College for the Academic year, or detention from being sent up for the examination or for rustification.

9. In case of serious misconduct or habitual idleness, the punishment may be accompanied by the entry of the offender's name in the Conduct Book. When the name of a student has been entered thrice in the Conduct Book he shall be liable to expulsion from the College.

10. A student desiring leave of absence must apply to the Registrar. For absence without leave he will be liable to a fine of -/10 cents a day, and if the period of such absence exceed a fortnight his name may be struck off. In emergent and other exceptional instances however cause of absence should be satisfactorily explained in writing at the earliest opportunity possible.

11. Students who have absented themselves without permission from class examinations will not be entitled to a certificate of attendance in the class.

12. Students who do not return to the College punctually at the beginning of the session or after the vacation are liable to be fined. In case of illness or other unavoidable cause a student must without loss of time notify the fact to the Registar.

13. Students are required to keep the Registrar informed oftheir addresses. Any change of address must be communicated without delay.

14. Students must appear at periodical examinations and if their progress is found unsatisfactory they will be liable to be refused admission to the higher classes or to the profesional Examination as the case may be, or they may be required to repeat their course of study before appearing for the Professional Examination.

15. No student will be eligible for promotion to a higher class, unless his attendance and progress have been found to be satisfactory and all the school fees have been duly paid.

16. Every student is required to attend regularly and punctually at the stated hours for lectures, dissections and demonstrations.

17. No student will be eligible for a grant of certificate of attendance in any class unless he has attended at least 75% of the meetings of that class.

18. No student will be eligible for a grant of a certificate of progress in any subject unless he has obtained at least one third of the maximum number of marks allotted to that subject in the class and sessional examination of the school.

19. Absence at any sessional examination must be accounted for by production of a medical certificate when a re-examination may be held to determine the grant of progress certificate.

20. When sickness necessitates absence, a student shall produce a medical certificate to that effect. Candidates applying for leave are strictly warned that the total number of their days of absence in any class should in no case exeeed 25% of the meetings of such class. The grant of leave to any student means that the reasons given for the grant of such leave are deemed satisfactory; it does not in any sense, convey a guarantee that, after excluding the period of such leave, the student has, or will have, enough attendance to enable him to obtain the certificate of attendance referred to in rule 17 above. Students applying for leave are therefore strictly warned that in every case it is at the risk of the student himself that the leave is granted and that he will not be eligible for certificate of attendance referred to in rule 17 if, after deducting the number of days he was absent on leave, it is found that the number of attendance in any class is less than 75% of the meetings of that class.

21. On the teacher entering the class room, the students shall rise and remain standing till they are desired to sit or till the teacher takes his seat.

22. No student shall leave the class room without the permission of his class teacher or until the class is dismissed. Students are expected to assemble in the class rooms five minutes before the appointed time when the rolls shall be called and the absence of any student noted. A student coming into the class after roll call may be punished by loss of marks or by a fine. Any misconduct in the class shall subject a student to such loss of marks or to such fine as the offence may appear to the teacher to warrant. Should the punishment be deemed insufficient, a report will be made to the Registrar.

23. The Principal may for good reason remit or modify any punishment imposed by the Registrar or Lecturer.

24. Students suffering from infectious or contagious diseases are not allowed to attend the College

25. It is within the power of any Lecturer to suspend temporarily any student or students from his class pending a report to the Registrar.

26. It is within the power of the Registrar to suspend any student for misbehaviour pending reference of his case to the Board, which may inflict such punishment, including dismissal from the College, as it may consider necessary.

27. Apparatus lost or broken by a student must be replaced or paid for within fourteen days of the occurrence otherwise he will not be allowed to attend the class at which the damage was done. In the case of valuable apparatus the time of payment may be extended. In any case payment must be made before a certificate of attendance is issued.

28. Students failing to pass their Final Examination at the end of their tenth year or the First Professional Examination at the end of their fourth year or the Second Professional at the end of their sixth year shall cease to be members of the College.

29 Students entering for an examination or a term are particularly warned to see that receipts for fees and all certificates are brought to the Registrar personally at least forty eight hours before the day fixed for the examination. On presentation of the necessary certificates and receipts an admission card to the Examination will be issued by the Registrar. Students who do not produce the admission card, will not be allowed inside the Examination Hall.

30. If a certificate is lost, another may be obtained on payment of Rs. 2-50.

31. In connection with medical Associations, Societies, or functions, students are not permitted to collect subscriptions from the Staff or others without previous sanction from the Registrar.

32. The Medical College compound and buildings will be closed to students daily at 6–30 p. m. Special sanction must be obtained from the Registrar if the use of College compound, buildings, or rooms is required after closing hours.

33. Students should not enter hospital wards without the permission of the Superintendent, except in the company of lecturers.

34. All communications to the Board shall be made through the Registrar.

Rules and Regulations with Regard to Examinations.

1. Students not sitting for the examinations are not allowed access to the College and College grounds during the examinations. The Registrar may by special notice exclude students from a part of the College buildings only.

2. Candidates must present themselves for all the subjects of an examination at one and the same time. Any Candidate who obtains 50% in any subject need not be examined again in these subjects, but may complete the examination in the remaining subjects on a subsequent occasion.

3. On no consideration whatever must the Candidate write his name on the answer books. A Candidate so doing is liable to be disqualified at the discretion of the Examiners.

4. Any Candidate more than fifteen minutes late shall not be allowed to enter the examination Hall.

5. No Candidate shall be allowed to leave the Examination Hall before the expiration of half an hour.

6. A Candidate copying from the papers of other Candidates, or obtaining assistance from other Candidates or from persons outside the Examination Room, or introducing books, manuscripts, or papers of any kind into the Examination Room, will be at once dismissed from the examination. His case shall be brought before the next meeting of the Board.

7. At the discretion of the Examiners in any subject on consultation with the Principal and Registrar, a Candidate may be informed that he has not obtained sufficient marks in the written examination to enable him to proceed with the practical.

8. No Candidate will be eligible for a pass unless he obtains 50% in the aggregate and not less than 35% in each subject. Candidates who obtain 75% in the aggregate shall be placed in the Honours Division.

9. Candidate who obtains 85% in any subject will be entitled to a certificate for proficiency in that subject.

RESULT OF EXAMINATIONS.

In publishing the results the names of the candidates who have passed in all subjects at the correct term will be placed in two classes in order of merit.

Each rejected candidate shall be informed in which subjects he failed to satisfy the Examiners and at the same time shall be informed which courses of instructtion he must attend before being again admitted to the examination.

THE RULES OF THE STUDENT'S LIBRARY.

1. The Library is open from 8-30 to 10 a. m. and from 12 noon to 1-30 p. m., 4 to 6 p. m., daily, except on Saturdays when it is open from 9 a. m. to 1 p. m.

2. Library is open during the vacations from 9 to 12.

3. The marking of any book belonging to the Library is strictly forbidden.

4. Students must give a receipt to the Librarian for every book issued for use.

5. On returning the book to the Librarian, the student must see that Librarian enters the receipt of the book in the Library book, otherwise he will be responsible for the loss of the book.

6. Silence must be strictly observed in the Library, and smoking is prohibited.

7. One table is specially reserved for women students.

8. Books are not allowed to be removed by any student from the Library unless he deposits half the value of the book so removed. The deposit will be refunded when the book is returned.

9. No student will be allowed to remove books marked "Not for Lending" or any manuscripts.

COURSES OF CLINICAL INSTRUCTION.

Students of the third and fourth year classes will be given instruction in the diagnosis and treatment of diseases in the Out-patient Department and in the wards of the Hospital.

A.—OUT-PATIENT DEPARTMENT.

1. Students of the third year are expected to attend the practice of the O. P. D. during two College terms.
2. They should work in batches and submit their names to the Physicians attending the O. P. D. who will enter them in a Register and keep a record of their attendance.
3. Students must attend daily from 9-10 a. m.
4. They must examine cases under the direction of the Physician in charge and enter details regarding treatment, etc., in their note books.
5. At the end of the period of instruction if his attendance is regular and work satisfactory a certificate of attendance will be issued to him by the Physician in charge.
6. These certificates of attendance must be produced before the Registrar when entering for the Final Examination.
7. Students must obtain at least 80% attendance to qualify for a certificate.

B.—THE HOSPITAL.

1. Students of the Final year are expected to attend the practice of the Hospital.

2. They should submit their names to the Physician under whom they desire to work, who will keep a record of their attendance.
3. They must attend daily from 8-10 a· m· and 4-5 p. m· during three College terms·
4. A 80% attendance is necessary and no student should absent himself without the permission of the Medical Officer keeping the attendance register·
5· The Physician in charge will allot a number of beds in the non-paying section to the students who are working under him, and the student will be responsible for the conduct of the cases so allotted to them.
6. They shall enter every morning the daily states of the patients under their care in the bed-head ticket·
7· In the case of new admissions students must write a full history of the case in a separate case sheet and submit it to the Physician in charge for approval· This should be done preferably in the evenings.
8· If the examination of urine, blood, etc., of a patient under his care has been orderd he shall be personally responsible for such examination and for entering the details in the bed-head ticket.
9. Everv student attending the practice of the Hospital must keep a full record of at least six cases that have come under his care and shall submit such record for the examination of the Physician in charge before obtaining a card of attendance.
10. Students will be premitted the practice in the nonpaying section only. In the case of the paying section the Physician in charge may with the consent of the patient demonstrate any case of interest to the student.
11. Students are premitted to write only the daily states in the bed-head ticket· They shall not write any prescription or other lines of treatment which properly belong to the Medical Officers of the Hospital·
12· At the end of a course of clinical instruction a student will be awarded a certificate of attendance if his attendance is regular and work satisfactroy. This should be produced when entering for the Final Examination·
13· Loitering in the corridors and verandahs of the Hospital or smoking in the Hospital are Strictly Forbidden·

COLLEGE PHARMACY.

Rules For Students Attending The Pharmacy·

1 Students of the Second year must attend the Pharmacy twice a week during two College terms·
2· They must familiarise themselves with the herbs and other raw drugs ordinarily used in the preparation of medicines·
3 They must study the method of preparation of the various pills, powders, arishtams, asavams, avalehas, etc., stocked in the Pharmacy
4. Candidates at the examination will be expected to identify medicinal herbs, other raw drugs and prepared medicines· They may also be asked to enumerate the more important ingredients that enter into the composition of any medicinal preparation·
5· The Pharmaceutist shall keep a record of the attendance of students and shall issue a certificate of attendance at the end of the course of instruction·
6. Certificates of attendance must be produced before the Registrar when sitting for examinations·

DIPLOMA.

Graduates of the College will receive the Diploma in Indigenous Medicine and Surgery (D. I· M· S·) with the title of Vaidya Kalanidhi.

DOCTOR OF ORIENTAL MEDICINE.

The title of Pracheena Vaidyacharya, Doctor of Oriental Medicine, will be conferred on:

1. Diplomates of the College,
2· Graduates of other recognised Indigenous Medical Colleges,
3· And Allopathic Doctors,

who have undergone a course of postgraduate study and pass a Theoretical and Practical examination on advanced Subjects of Indigenous Medicine·

COLLECE TERMS.

1st Term begins on 2nd Wednesday in May every year and lasts till the 31st of July·

2nd Term begins on the 3rd Wednesday of August and lasts till the 2nd Wednesday in December·

3rd Term begins on the 3rd Wednesday in January and lasts till the 20th of March·

FEES.

Fees payable by students are :—

(1) Registration fee on admission Rs· 3—

(2) Examination for admission when required Rs. 3—

(3) Tuition fee Rs. 5 per mensem (60 per term).
(4) Sports : Rs. 1 per annum.
(5) Library : Rs. 1-50 per annum.
(6) First Professional Examination : Rs. 5.
(7) Second Professional Examination : Rs. 7-50.
(8) Final Examination : Rs. 15.
(9) Diploma : Rs 15.

Students are to deposit their tuition fee along with other fees in the Imperial Bank of India to the credit of the Board of Indigenous Medicine, on or before the 15th of each month, and the receipt is to be handed over to the Registrar.

Defaulters shall have to pay a fine of 50 cents after the 15th.

Students who are in arrears for more than one month will not be permitted to attend any class until all arrears are paid with an additional fine of Rupee one per mensem.

FREE STUDENTSHIPS.

1. Fifteen per cent of the total number of students may be granted whole or half free-studentships which is liable to be cancelled on the ground of misconduct, irregularity in attendance or unsatisfactory progress.

2. Application for full or half free-studentships should be made to the Board of Indigenous Medicine before the 20th of May.

3. A list of the students whose application are granted will be published as early as possible towards the end of the month.

4. A free or half free-studentship will not be granted as a rule to Scholarship holders.

5. Every year in May a list showing the names and classes of the students whose free studentships and half free-studentships are renewed is published.

6. Free or half free students so announced should pay the other fees of the College.

N. B.—There is no exemption from any fee except the tuition fee.

SCHOLARSHIPS.

Scholarships of the value of Rs. 240 per annum are awarded to students who have high academic qualifications. A scholarship of a higher value may by special resolution of the Board be granted where the student possesses exceptionally high academic qualifications.

CURRICULUM.

Provision is made for the training of students in Ayuryeda, Siddha, and Unani systems of medicine. Instruction is also given in

Anatomy, Physiology, Modern Science, Modern methods of diagnosis, Principles of Western Medicine, Hygiene, etc.

Lectures are delivered in Singhalese, Tamil or Sanskrit.

Lectures in Comparative Medicine are delivered to the 3rd and 4th year students.

One hour a day is devoted to the study of Sanskrit, Singhalese or Tamil by all students of the 1st and 2nd year classes.

Besides the classical writers on the Indigenous Systems of Medicine, Text-books prepared by the Government School of Indian Medicine are also prescribed for study.

Opportunity is given to students of one system of medicine to study the methods of treatment adopted in any of the other systems of Indigenous Medicine.

The following is the Curriculum† of studies for all sections :—

The names of the subjects are given in English so as to be applicable to all sections, viz., Ayurveda, Siddha and Unani, but instruction in the various subjects will be based upon the Ayurveda, Siddha and Unani writings, respectively, the subjects included in Western Science being taught in accordance with English books on the subjects.

FIRST YEAR.

General Science.
Biology.
Anatomy.
Physiology.
Fundamental Principles of Indigenous Systems of Medicine.
Sanskrit or Tamil.

SECOND YEAR.

Anatomy.
Physiology.
Nidana.
Chikitsa.
Darviya and Pharmacy.
Sanskrit or Tamil.

THIRD YEAR.

Nidana.
Chikitsa.
Medicine.
Surgery.

---

† For list of text-books and reference books recommended for study and for syllabus, see "Syllabus of Studies" available in English Singhalese and Tamil.

Pathology and Bacteriology.
Hygiene and Public Health.
Toxicology.

FOURTH YEAR.

Nidana.
Chikitsa.
Medicine.
Surgery.
Midwifery and Diseases of women and Children.
Medical Jurisprudence.

Students should attend Pharmacy in the Second year, and the Out-patient Departments in the Third and Hospital in the Fourth Year.

THE HOSPITAL.

The Hospital was opened on the 23rd February, 1933. The fee ranges from 60 cents per day to Rs. 5/- according to the accommodation and comforts provided. In all there are 165 beds. The Board bears the cost of non-paying patients and also the cost of equipment. The Hospital is now in a position to afford specialised treatment for the following diseases :—

Paralysis, Rheumatism, Carbuncle, Catarrh and Nose diseases, Eye diseases, Dysentery and bowel complaints, Diseases of pregnancy, Mental diseases.

Capt, A. N. N. Panikker, Ayurveda Bhushana (Madras), M. B., ch. B. (Edin.), M. R. C. S. (Eng.), L. R. C. P., (Lond.), L. C. P. & S. (Calcutta), L. M. & S. (Homeo), A. M. A. C. (Madras), I. M S. (Retd.), is the chief Pysician of the Hospital. Dr. J. M. L. Mendis, L. M. & S. is Superintendent.

Dr. Kanagaratnam (Siddha),
Dr. Wimalajeewa (Ayurveda), and
Dr. Ahmed (Unani), are visiting Physicians.

Several specialists of high repute have been appointed to serve as Honorary Physicians in the Hospital.

The "Specialist" Visiting Physicians are :—

Dr. D. H. Samarasinghe—(Paralysis).
Veda Mohandiram Attygala of Madapatha—(Dysentery and Bowel Complaints).
Dr. Wethasinghe of Pamangada-(Rheumatism and Joint Diseases).
Dr. Kaviratna—(Eye Diseases).
Dr. Wanaguru—(Specialist for Fractures and Dislocations).
Dr. Lewis Appuhamy—(Children's Disease).
Veda Arachy Gunasekara of Moratuwa—(Mental Disease)
Sathiyaloka Wijayasinghe—(Carbuncle and Boil, Ulcer).

OUT-PATIENT CLINIC.

Out-patient Department is in charge of four full-time officers.

Opportunity is given to eminent physicians who are reputed to be specialists to treat patients both in the Dispensary and Hospital.

Specialists selected by the Board to be Honorary Physicians are paid their travelling allowance at the prescribed rate. When they have to travel from out-stations they are provided with board and lodging as well.

Specialists for the treatment of the following diseases have been apppointed as Honorary Physicians :—

(1) Paralysis.
(2) Rheumatism.
(3) Carbuncle.
(4) Catarrh and Nose diseases.
(5) Eye diseases.
(6) Dysentery and bowel complaints.
(7) Diseases of pregnancy.
(8) Mental Diseases.

Clinical training is given to third and fourth year students in the Hospital and Dispensary.

THE PHARMACY.

The Board resolved in November, 1929, to establish a Pharmacy and Dispensary at the "Bower." As this was estimated to cost Rs 4,000 per annum, the project was abandoned for want of funds.

In January, 1931, it was felt that pharmacological and clinical training could not any longer be delayed and it was decided to establish an Ayurveda and Siddha Pharmacy and Dispensary on a self-supporting basis at the "Bower."

Pandit Samarasinghe and Dr. A. Kanakaratnam were invited to undertake the training of students in Pharmacology of Ayurvedic and Shiddha systems, and conduct the Ayurvedic and Siddha Dispensaries on the following conditions :—

They shall receive no remuneration for their services or for the services of any of their staff beyond what they themselves can get by the sale of Medicines prepared by them.

The total sum to be advanced by the Board on account of Drugs to be purchased shall at no time exceed Rs. 2,000 for the Siddha Section and Rs. 1,500 for the Ayurvedic Section. These sums shall be paid back as soon as the dispensaries are able to pay, at the latest from 6 months after opening.

The Pharmacy and Dispensary shall be housed and eqipped at the expense of the Board and the charges shall not be added to the cost of the Dispensary for the first 3 years.

That a Pharmaceutist, Dispenser and an assistant for each section be appointed on their recommendation.

That Pandit M. S. P. Samarasinghe and Mr. A. Kanakaratnam be asked to be personally responsible for the repayment of any sum to the Dispensaries. [Extract from minutes of Board meeting of 19th January, 1931]

Both the physicians very kindly undertook this work. Subsequently a third pharmacy and dispensary were established by Dr. Lenora.

These pharmacies were closed in February, 1932. A new Pharmacy was started in May, 1932, and Mr. M. S P. Samarasinghe was appointed Pharmaceutist. He was assisted by two lecturers in the preparation of Siddha and Unani medicines—Mr. Bhoolagasundram and Mr. Ahmed. Mr. L. G. Perera was appointed to assist in the preparation of certain metalic Ayurvedic preparation.

At present the Ayurveda, Siddha and Unani Pharmacies are working independently of each other.

It is hoped that these Pharmacies will become Central pharmacies for supplying medicines of proved value to both Western and Indigenous Medical practitioners.

NURSES, MIDWIVES AND ATTENDANTS.

There is a paucity of qualified nurses, midwives and trained attendants.

It is proposed to start, after the midwifery department is probably organised, classes for training nurses, attendants, midwives, and to give them a practical training in the preparation and administration of medicaments according to the Indigenous systems. These would, besides taking proper care of the sick in their homes for reasonable remuneration, serve to disseminate the rules of sanitation of the sick room, as now understood, and reduce thereby the spread of contagious diseases.

PHARMACY APPRENTICES.

A limited number of apprentices are admitted to the Pharmacy to learn the art of preparing medicines. They are started on an allowance of cents 40 a day.

RESEARCH.

It is not possible with the funds available to establish a properly equipped Research Institute in connection with the College of Indige-

nous Medicine. Government is about to establish a Reseach Institute and it would be possible to get adequate facilities there for research for those interested in Indigenous Medicine.

There is however a phase of research for which this College and the associated hospital and pharmacy are specially suited.

Some physicians are reputed to have remedies of the greatest value for the cure of certain diseases. Rooms are reserved in the hospital for the treatment of patients by these specialists. Medicines of proved value will be prepared at the pharmacy and made available to the members of all branches of the medical profession.

The improving of the methods of preparation and the isolating of the curative or active principle will subsequently become the subject of further research at the laboratory.

A fund has been started for compensating in some measure persons possessing secret recipes of proved value, if they should consent to making them available to the profession generally.

The generous donation of Mr. Gunaratne of Rs. 1000 has been set apart for this purpose. Other donations to the fund willbe thankfully received.

MEDICINE FARM.

On the 21st December, 1928, the Board applied for a block of land for the cultivation of medicinal plants. On the 15th March, 1929, Government replied that a block of 3 acres would be leased to the Board at Rs. 400 per annum. But it was not possible to take possession of the block for about one year owing to some delay in giving notice to the previous lessee. The Board spent some money in preparing the ground for the cultivation of medicinal plants. But during the floods of May, 1930, the land got under water. The Board, requested Government to cancel the lease.

An application subsequently made to Government for a lease of 5 acres of high land for a medicinal farm was also Refused.

The establishment of nursery for the distribution of plants of great medicinal value is under contemplation. The planting of such trees and shrubs in private gardens or public parks cannot but be of great benefit to the country.

LIBRARY.

There is a good collection of English, Sanskrit, Arabic, Sinhalese, and Tamil Medical books. A large number of Sinhalese and Tamil Manuscript (ola) books have been purchased. Many of those olas have been copied into folio books and are easily accessible for reference. Members of all branches of the Medical profession and all College students are entitled to become members of the Library.

EXTENSION LECTURES FOR PRACTISING VAIDYAS.

At the request of the All Ceylon Ayurvedic Committee a course of lectures and practical demonstration classes on Anatomy, Physiology and Sick room methods for the benefit of the practitioners of Indigenous Systems of medicine has been instituted.

1. The course axtends for a period of three months.
2. Fee for the Course is Rs. 15.
3. The classes will be held twice a week.
4. Intending Vaidyas should apply to the Registrar College of Indigenous Medicine, Cotta Road, Colombo.

Lecture 1. Anatomy and Physiology of the Brain.
Lecture 2. Anatomy and Physiology of the Spinal Cord and Nerves.
Lecture 3. Anatomy and Physiology of the Special senses.
Lecture 4. Anatomy and Physiology of the Lungs and Bronchial Tubes.
Lecture 5. Anatomyand Physiology of the Pleura Thoracic Wall.
Lecture 6. Anatomy and Physiology of the Heart and the Main Blood Vessels.
Lecture 7. Circulation of Blood.
Lecture 8. Anatomy and Physiology of the Digestive System.
Lecture 9. Physiology of Digestion.
Lecture 10. Anatomy and Physiology of the Urinary System.
Lecture 11. Examination of Urine and Foecal Matter.
Lecture 12. Anatomy and Physiology of Generative Organs.
Lecture 13. Physiology of the Liver and Spleen.
Lecture 14. Anatomy and Physiology of the eye.
Lecture 15. Anatomy and Physiology of the Teeth and Gums.
Lecture 16. Muscular System.
Lecture 17. Bones and Ligaments of the Body.
Lecture 18. The Ductless Glands.
Lecture 19. General Hygiene.
Lecture 20. Sick Room Methods.

Two courses have been already given.

SPORTS.

The extent of land leased out from Government for use as a playground for the students had been found unsuitable, and an attempt is being made to secure a playground in front of the College.

A Tennis Court and a Volley Ball Court are maintained in the College premises. The Board of Indigenous Medicine gives an annual

grant to the Sports Club which is run by a committe selected amongst the staff and the students of the College and Hospital. A sports fee of Re. 1—per annum is recovered from every student along with the 1st term fees by the College. Dr. J. L. M. Mendis is the President, S. C. Wijayaretnam, General Secretary, S. Solomon Silva, Esq., B. Sc. (London), Treasurer of the Sports Club.

STUDENTS' ASSOCIATIONS.

There are four associations formed by the College students :—

Swadesia Vaidya Sisya Samaja,

Oriental Medical Students' Union (Third and Fourth Year students),

Indigenous Medical Students' Union (First and Second Year Students).

Siddha Students' Association.

PROSPECTUS FOR GRADUATES.

At present, graduates must in the main look forward to private practice. Every student is given, not merely a thorough training in the practice of Indigenous Medicine and the principles of that Science, but is also taught the methods of diagnosis known to Western Medicine and the discoveries of Modern Science relating to medicine. It is but reasonable to hope that physicians who have received such a training will have, other things being equal, a better prospect of success in the medical profession than these trained in only one system of medicine.

The Secretary of the British Medical Association, Ceylon Branch, who went to India to report on the study and practice of Ayurvedia there said that there were several practitioners in Calcutta who combined both Eastern and Western systems of medicine and that they were credited with charging Rs. 63 for a visit and Rs. 31-50 for a consultation in their rooms, and that one or two of them were reported to be enjoying an income of Rs. 15,000 to Rs. 20,000 per annum.

The Government is now granting subsidies to persons running Ayurvedic dispensaries which fulfil certain conditions.

An endeavour is being made to obtain for graduates of the College recognition of their superior claims to be placed in charge of the increasing number of Ayurvedic Hospitals and Dispensaries maintained by Municipal Councils, and Urban District Councils ; and of hospitals and dispensaries maintained on estates by planting companies and of some hospitals and dispensaries maintained by Government in rural areas.

विहारोत्कल संस्कृत समितेः सामान्यनियमाः

१—विहारोत्कलप्रान्तीया एव विद्यालया विहारोत्कलसंस्कृतसमित्याङ्गीकृता भविष्यन्ति। अङ्गीकृतिश्च तेषां प्रार्थितेषु विषयेषु तत्तत्परीक्षार्थमध्यापकयोग्यतानुसारं भवेत्।

२—अङ्गीकृता एव विद्यालयाः परीक्षार्थं छात्रान् प्रेषयितुं शक्नुवन्ति। अङ्गीकृतविद्यालयेऽपठन्तः परीक्षार्थिनः स्वतन्त्रतया परीक्षासूपस्थातुमर्हन्ति।

३—विद्यालयस्याङ्गीकृत्यर्थमावेदनपत्रं तत्तमण्डलस्य डिस्ट्रिक्ट-इन्स्पेक्टर औफ स्कूल्स द्वारेण स्वतन्त्रप्रदेशेषु (Feudatory States) च इन्स्पेक्टर औफ स्कूल्स द्वारेण मार्चमासस्यान्तिमदिनात्प्रागेषु समितिनिर्धारितमुद्रितपत्रे कार्यसम्पादकसमीपे प्रेषणीयम्।

४—प्रतिवर्षं समितिनिर्धारितसमये (प्रायेण वैशाखे चैत्रे वा) प्रथमामध्यमाचार्यपरीक्षा भविष्यन्ति।

५—प्रोक्तपरीक्षा लेखद्वारेण गृहीता भविष्यन्ति। आयुर्वेदाचार्यतृतीयखण्डे चतुर्थपत्रपरीक्षा तु मौखिकी गृहीतां भविष्यन्ति। प्रश्ना उत्तराणि च विशिष्य निर्देशमन्तरा संस्कृते भविष्यन्ति।

६—अस्याः समितेः काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य वा मध्यमां पञ्चनदप्रान्तीयविशारदपरीक्षां वोत्तीर्ण एवाचार्यपरीक्षायां प्रवेष्टुं शक्नोति। संस्कृते बी० ए० परीक्षोत्तीर्णश्च साहित्य एव। तत्र च प्रथमखण्डपरीक्षामुत्तीर्ण एव द्वितीयखण्डे तामुत्तीर्णस्तृतीयखण्डे तथा तामुत्तीर्णश्चतुर्थखण्डे परीक्षायाम्प्रवेष्टुं शक्नोति। एवमुक्तसमितेः काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य वा प्रथमां पञ्चनदस्य प्राज्ञपरीक्षां वोत्तीर्णो वर्षत्रयं नियतान् ग्रन्थानभ्यस्यैव मध्यमपरीक्षायां प्रवेष्टुमर्हति। आई० ए० परीक्षोत्तीर्णश्च व्याकरणसाहित्य एव।

७—यस्मिन्विषये मध्यमपरीक्षामुत्तीर्णस्तस्मिन्नेवाचार्यपरीक्षां दातुं शक्नोति। पुराणाचार्यपरीक्षां दातुन्तु ज्योतिषायुर्वेदो विहायापरस्मिन् यस्मिन् कस्मिन्नपि विषये समुत्तीर्णमध्यमपरीक्षः शक्नोति। एकस्मिन्विषय उपाधिपरीक्षोत्तीर्णो विषयान्तरे मध्यमामनुत्तीर्यापि आचार्यपरीक्षायाम्प्रवेष्टुं शक्नोति। १९२४ खृष्टाब्दे ततः परतो वा मध्यमां तथा १९२५ खृष्टाब्दे ततः परतो वाचार्यपरीक्षामुत्तीर्णानां विषयान्तरे पुनस्तस्यामेव परीक्षायां प्रवेष्टुकामानां सर्वसाधारणपरीक्षायामुपस्थानं नावश्यकम्। परन्तु सर्वसाधारणपत्रपरीक्षायामनुपस्थायच्छात्रवृत्तिमध्यापकपारितोषिकं वा नार्जयितुमर्हन्ति।

८—प्रथमा परीक्षा सर्वेषामपि विषयाणामेकैव पत्रचतुष्टयेन गृहीता भविष्यति।

९—मध्यमपरीक्षोपरिष्टादङ्कितेषु विषयविभागेषु षड्भिः पत्रैर्गृहीता भविष्यति।

(१) वेदकर्मकाण्डधर्मशास्त्राणि। (२) व्याकरणसाहित्ये। (३) ज्योतिषम्। (४) मीमांसावेदान्तशास्त्रे। (५) न्यायसांख्ययोगशास्त्राणि। (६) आयुर्वेद। (७) आगमः।

१०—आचार्यपरीक्षा चतुर्भिर्वर्षैः सम्पन्ना भवेत्। तत्र च खण्डचतुष्टयं भविष्यति। प्रतिखण्डं पत्रद्वयम्। चतुर्थखण्डे द्वितीयपत्रं। सर्वसाधारणम् केवलमायुर्वेदस्य चतुर्थखण्डे द्वितीयपत्रं विषयसम्बन्धि मौखिकोत्तरम्।

११—आचार्यपरीक्षा वक्ष्यमाणविषयेषुः—

(१) वेदः। (२) व्याकरणम्। (३) ज्यौतिषम् (गणितं फलितञ्च) (४) धर्मशास्त्रम्। (५) नव्यन्यायः। (६) प्राचीनन्यायः (७) सांख्ययोगौ। (८) मीमांसा (९) वेदान्तशास्त्रम्। (१०) आयुर्वेदः। (११) साहित्यम्। (१२) कर्मकाण्डम्। (१३) पुराणम्। (१४) आगमः।

१२—सर्वासु परीक्षासु शतं पूर्णाङ्का भविष्यन्ति। प्रश्नाश्च होरात्रयेणोत्तरणीयां भविष्यन्ति।

१३—परीक्षाप्रवेशार्थमुपरिष्टान्निर्दिष्टं शुल्कं देयम्।

	प्रान्तनिवासिभिः।	अन्यप्रान्तनिवासिभिः।
आचार्ये प्रतिखण्डम्	३)	६)
मध्यमायाम्	२)	४)
प्रथमायाम्	१)	२)

१४—आचार्यपरीक्षायाः केन्द्रं * प्रान्तीय विभागस्य प्रधाननगरे प्रथमामध्यमयोश्च मण्डलस्य प्रधाननगरं भवेत्। विहारोत्कलसंस्कृत (कौंसिल) समितेरनुमत्यान्यदपि स्थानं परीक्षाकेन्द्रम्भवेत्।

१५—प्रान्ताद्बहिन किमपि परीक्षाकेन्द्रम्भवेत्।

१६—कार्यसम्पादकस्यानुमतिमन्तरा न कश्चित्परीक्षार्थी स्वाधिगम्यकेन्द्रं विहायान्यत्र परीक्षार्थमुपस्थातुंशक्नुयात्। केन्द्रान्तरे समुपस्थित्यै तु परीक्षादिनान्मासन्तदधिकं वा पूर्वमेवविद्य कार्यसम्पादकस्यानुमतिः प्रापणीया।

१७—विद्यालयस्य निखिलैरेवच्छात्रैरेकस्मिन्नेवाधिगम्यकेन्द्रे परीक्षार्थमुपस्थानीयम्।

१८—अङ्गीकृतविद्यालयानां छात्रैर्मुद्रितपत्रेषु कृतमावेदनमध्यापकेन यत्रैकाधिकाध्यापकसंख्या तत्र च प्रधानाध्यापकेन मण्डलस्य डिस्ट्रिक्ट-इन्स्पेक्टर-समीपे स्वतन्त्रप्रदेशेषु च इन्स्पेक्टर-स्कूल्स्-समीपे च नवेम्बरमासस्यान्तिमदिनात्प्रागेव प्रेषणीयम्।

१९—प्रान्तीयः स्वतन्त्रः परीक्षार्थी स्वयमेव डि० इन्स्पेक्टर-औफ्-स्कूलस् समीपे स्वावेदनं प्रपयेत्।

२०—अन्यप्रान्तनिवासिभिः परीक्षार्थिभिः स्वावेदनपत्राणि सशुल्कानि साक्षादेव समितिकार्यसम्पादकसमीपे प्रेषणीयानि। तत एव च परीक्षावेदनपत्राणि लब्धव्यानि। एते क्वापि केन्द्रे परीक्षायामुपस्थातुम्प्रभवन्ति।

२१—सर्वेषामपि स्वन्त्रपरीक्षार्थिनामावेदनपत्राणि सुप्रतिष्ठितेन केनापि प्रमाणितानि भवेयुः।

---

* आचार्य-परीक्षायाः केन्द्राणिः—(१) पटना (२) मुजफ्फरपुर (३) भागलपुर (४) पुरी (५) कटक (६) बोलङ्गीर (७) रांची।

प्रथमा-मध्यमपरीक्षयोः केन्द्राणिः—(१) पटना (२) गया (३) आरा (४) मुजफ्फरपुर (५) छपरा (६) मोतीहारी (७) दरभङ्गा (८) भागलपुर (९) लक्ष्मीपुर (१०) मुङ्गेर (११) पुर्णियां (१२) दुमका (१३) रांची (१४) हजारीबाग (१५) डालटेनगञ्ज (१६) पुरुलिया (१७) चाईबासा (१८) कटक (१९) पुरी (२०) बालासोर (२१) सम्बलपुर (२२) अङ्गुल (२३) बोलाङ्गीर (२४) मधुबनी।

२२—अस्मिन्प्रान्ते आवेदनार्थपत्राणि स्कूल-डिस्ट्रिक्ट-इन्स्पेक्टरैः स्वतन्त्रप्रदेशेषु च स्कूल-इन्स्पेक्टरैरध्यापकानां स्वतन्त्रपरीक्षार्थिनाञ्च समीपे प्रेषितानि भवेयुः। यानि च तैः संख्यां निश्चित्य प्रतिवर्षं जूनमास एव कार्यसम्पादकाल्लप्स्यन्ते।

२३—प्रतिवर्षं नवेम्बरमासस्यान्तिमदिनात्प्रागेव शुल्कसहितानि परीक्षावेदनपत्राणि स्कूलडिस्ट्रिक्ट-इन्स्पेक्टरकार्यालये प्रापणीयानि। जनवरीमासस्य द्वितीयदिनं यावत्प्रथमामध्यम परिक्षार्थिभिरर्धमुद्राचार्याभिश्चैका मुद्रा यदि दण्डरूपेण दीयेत तदावेदनपत्राणि गृह्येरन्।

२४—स्वतन्त्रपरीक्षार्थिभिर्मध्यमपरीक्षार्थावेदनकाले प्रथमोत्तीर्णतासूचकं मूलप्रमाणपत्रं तथाचार्यावेदनकाले मध्यमोत्तीर्णतासूचकं मूलप्रमाणमवश्यं प्रदर्शनीयम्।

२५—आवेदनपत्राणि सशुल्कानि प्राप्य तत्प्रेषकाणां समीपे तत्तत्परीक्षाप्रवेशकपत्राणि परीक्षार्थिभ्यो वितरणार्थं समितिकार्यसम्पादकः प्रेषयिष्यति। यानि दर्शयित्वा परीक्षार्थिनः केन्द्रेष्वन्तःप्रवेशं लप्स्यन्ते।

२६—परीक्षाणां निर्धारितग्रन्थनामानीहैव पुस्तकेऽग्रे निर्दिष्टानि सन्ति।

ईश्वरीदत्तदौर्गादत्तिः,

विहारोत्कलसंस्कृतसमितिकार्य सम्पादकः।

विशेष—आचार्यपरीक्षाया द्वौभागौ सञ्जातौ साम्प्रतमतः प्रथमभागपरीक्षाया उपाधिः 'शास्त्री' इति दीयते। प्रत्येकभागो वर्षद्वयेन सम्पन्नो भवतीति सम्पादकः। २४–१०–३६

आयुर्वेदीयामध्यमापरीक्षा

		लभ्याङ्कः
प्रथमंपत्रम् —	१—भावप्रकाशस्य निघण्टुभागस्तत्परिभाषा प्रकरणसहितः।	६०
	२—रसेन्द्रसारसङ्ग्रहः।	४०
द्वितीयम् ,,	१—भावप्रकाशस्यादितो गर्भप्रकरणान्तोभागः	६०
	२—भावप्रकाशस्य दिनचर्यारात्रिचर्यर्तुचर्यामिश्रवर्गाः	४०
तृतीयम् ,,	१—माधवनिदानम् (पी० के० सेन प्रकाशितम्)	७०
	२—आयुर्वेद विज्ञानस्य यकृद्धृदयोरस्तोयौपसर्गिकोपदेश विषोपदंश भोगोपदंशागन्तुज पक्षाघात भदोद्वेग शैशवसन्यास योषापस्मार तत्वोन्माद स्नायुशूल ताण्डवक्षोम वृक्कौजो मेहौपसर्गिकमेहशीर्षाम्बु मस्तिष्कवेपन मैस्तिष्कचयापचपांशुवात वाधकयोनि कण्डूयोन्याक्षेप ज्वराम्बण्डाधार रोगाणां निदानांशाः।	२०
	३—भावप्रकाशतो नाडीनेत्रमूत्रपुरीष जिह्वापरीक्षाः	१०
चतुर्थकम् ,,	१—चक्रदत्तः सम्पूर्णः	८०
	२—आयुर्वेदविज्ञानस्य यकृद्धृदयोरस्तोयादि रोगाणां चिकित्सांशः।	२०
पञ्चमम् ,,	१—मनुस्मृतेर्द्वितीयाध्यायमात्रम्	३५
(सर्वसाधारणम्)	२—श्रुतबोधः	१५
	मातृभाषा	५०
	{ १ – हिन्दी—तुलसीदास कृत रामायणस्य सुन्दरकाण्डम्	
	{ २—हिन्दी कौमुदी, व्याकरणचन्द्रोदयो वा	

			लभ्याङ्काः
		अथवा	
पञ्चमम् (सर्वसाधारणम्)	—उत्कलीया—	१—सीतावनवासः नन्दकिशोरबलेन कृतः २—व्याकरणं चन्द्रमोहन महाराणा कृतम्	
		अथवा	
	वंगीयाः—	१—सीतावनवास ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कृतः २—व्याकरणं लोहाराम कृतम्	
षष्ठम् —	अनुवादः (मातृभाषातः संस्कृतेततश्च मातृभाषायाम्)		७०
	संस्कृते प्रबन्ध रचना		३०

उपाधिपरीक्षा

प्रथमम् —	(१) सुश्रुतसंहितायाः सूत्रनिदान शारीरस्थानानि	१००
	(२) सुश्रुतसंहितायाश्चिकित्साकल्पोत्तर तन्त्राणि	१००
द्वितीयम्—	(१) अष्टाङ्गहृदयस्य सूत्रशारीरनिदानस्थानानि	१००
	(२) अष्टाङ्गहृदयस्य चिकित्साकल्पोत्तर तन्त्राणि	१००
तृतीयम् —	(१) चरकसंहिताया आदितइन्द्रियस्थानान्तो भागः	१००
	(२) चरकसंहितायाश्चिकित्सास्थानात्समाप्तिं यावत्	१००
चतुर्थम् —	(१) रसरत्नसमुच्चयः	१००
	(२) मौखिकपरीक्षा व्यावहारिकी	१००

१—औषधपरिचयः ।
२—औषधनिर्माणम् ।
३—शारीरपरिचयः ।
४—रोगपरीक्षा ।



Benaras Hindu University Ayurvedic College Staff & Final year Students (II Batch) 1935.

CHAIRS 1st row:–Pt. J. S. Bajpeyi, Capt. G. S K. Iyer, Dr. M. S. Verma, Principal D. D. Kaviraj, K. P. Singha, Dr. B G. Ghaneker, Pt S. N. Shashtri, Pt. P. D. Upadhyaya,

„ 2nd row:–H. D. Dube, Dr. K. N. Misra, prof. R. S. Singh, Pt. R. D. Misra, Dr. P. N. Misra, Dr. V. N. Pathak, Prof. B. Singh, Prof. D. A. Kulkarni,

Benares Hindu University.

Prospectus of studies for Examinations of the College of Ayurveda.

1935 .

ADMISSION.

The College session commences on the 10th of July. Admission to the 1st and 2nd year classes begins from the 1st of July. Applications for admission should be made to the Principal in the form precribed for the purpose, a copy of which can be obtained from the office at the time of seeking admission.

A student coming from another University shall be required to produce the following *Certificates for enrolments.*

1. A Leaving or Transfer certificate from the school or college testifying to the satisfactory conduct of the student and mentioning the highest examination he has passed.

2. A certified copy of all the entries against his name in the enrolment register of his University, if such a copy is obtainable.

3. The Migration Certificate in the case of students who come from other Universities. Those who have passed the examination conducted by a duly constituted Board of High School and Intermediate Education or the Admission Examination, Benares Hindu University, or the School Leaving Certificate Examination of Madras are not required to produce migration certificates.

4. A certificate of good conduct from a gazetted officer or from a respectable person will be produced by those who have passed the examination as private candidates.

N. B.—Students must produce the necessary certificates for enrolment either at the time of seeking admission or within *one month* from the date of their admission.

Equivalent Examinations.

1. The School Leaving Examination of Ajmer-Merwara.
2. The Senior Oxford Local Examination.
3. The Senior Cambridge Local Examination.
4. The Final Examination prescribed for European Schools.
5. The Diploma Examination of a Chief's College.

6. The Secondary School Leaving Certificate Examination of the Madras Presidency provided that the candidate has fulfilled the conditions regarded as necessary for admission to college classes by the University of Madras.

7. The School Final Examination of the North-Western Frontier Province provided that the papers of the candidate have been classified under Article 151 of the Educational Code of that Province as (a) Excellent (b) Satisfactory in one year in any complete group of subjects required for the Admission Examination of the Benares Hindu University.

8. The School Leaving Certificate Examination of Bombay provided that the candidate has fulfilled all the conditions demanded by the Bombay University for purposes of Matriculation, that is that he has passed it in one and the same examination, in English, Additional Language, Arithmetic, Algebra, Geometry, and History and has produced a certificate from the Head Master of a registered school showing that he possesses a satisfactory knowledge of Geography and Vernacular (or optional English) and Elementary Science, according to the courses prescribed by the Board and has carried out satisfactorily the prescribed course in the latter subject.

9. The Entrance Examination of the Mysore University.

10. The School Leaving Certificate Examinatlon held in the States of Hyderabad, Mysore, Travancore, and Cochin provided the successful candidate has been declared eligible for admission to College classes by the University of Madras.

11. The Matriculation Examination of the Punjab or the Delhi University.

N. B.—Any other Examinations equivalent to the Admission Examination of the Benares Hindu University which will be added to the list of the equivalent examinations from time to time as accepted by the proper authorities.

It is compulsory for the students to pass in Sanskrit as one of their optional subject at the aforesaid examinations.

ATHELETICS.

The Atheletic department is in charge of a special Association, which looks after the various games and affords all facilities to students for taking active part in them. The games usually played are Football, Hockey, Cricket, Lawn-Tennis, and Volleyball. Swimming classes are organised every year for the benefit of swimmers. Instruction in Gymnastic and arts of self defence is given to the students of the University attending the gymnasium.

Student seeking admissian to the club have to pass a swimming test. No student will be allowed to join the Swimming and Boating Club *except with the permission of his Guardian.*

TUITION AND OTHER FEES.

The students of the Ayurvedic College shall have to pay the following fees for ten months in the year.

1. Tuition Fees Rs. 4 for ten months in the year, at persent.
2. Game Fee Annas Four per month for ten months in the year.
3. Boarder's Union Fee Rs. 2 for the whole session.
4. University Enrolment Fee Rs. 2 at the time of admission.
5. Admission Fee Rs. 2.
6. Library Fee—Every student has to deposit Library Caution money of Rs. 5 which will be refunded on his leaving the College.
7. Hostel Rent—Re. 1 p. m.
8. Light charge—Re. 1 p. m.

N. B.—The rates of tuition fees and other fees noted above are liable to revision at the end of the academic year. Any other additional fees will be levied from the students after they are sanctioned by the Council of the Benares Hindu University.

Free Studentships.

1. Fifteen percent of the total number of the students are granted whole or half-free studentships, which may be cancelled on the ground of misconduct, irregularity in attendance, or unsatisfactory progress.

2. Application for full or half-free studentships should be made to the Principal before the 20th of July. A list of the students whose applications are granted will be published as early as practicable towards the end of the month.

3. A free or half-free-studentship will not be granted as a rule to scholarship-holders.

4. Every year in July a list showing the names and classes of the students whose free-studentships and half-freestudentships are renewed is published.

5. Free or half-free students, so announced, should take particular care to pay the other fees of the college.

N. B.—There is no exemption from any fee except the tuition fee.

Students who desire that their names should be removed from the College Registers should apply to the Principal in writing stating therein the cause of such removal. Otherwise they will be liable to pay the tuition fees till the end of the session in which they were admitted.

Students as a rule are to deposit their tuition fees along with other fees, such as Games etc., on or before the 20th of each month. Defaulters shall have to pay a fine of four annas for late payment between the 20th and the 26th (both inclusive) and eight annas between the 27th and the end of the month. On the first of the month following that for which the fees have not been paid the names of the defaulters will be removed from the rolls, and they will not be re-admitted except by a special order of the Principal on payment of arrears of fees with such additional fine and re-admission fee as the Principal may direct.

Scholarships.

At present there are the following scholarships (Special) for the Ayurvedic students. Application for these scholarships should be made to the Pro-Vice-Chancellor at the end of July. The granting of these scholarships will be subject to the recommendation of the scholarship Committee appointed by the Syndicate.

1. Thakur Dutta Sharma Scholarship. Rs. 12 p. m (10 months).
2. Bidani Scholarship Rs. 10 (10 months).
3. Pandit Harbhajan Scholarship Rs. 12 (10 months).
4. Pandit Hari Prasad Dwivedi's Rs. 8 p. m.
5. Lady Willinker's Rs. 10 p. m.
6. Pandit Tulsi Ram Pathak Rs. 6-6
7. Pandit Govind Ramji Vaidya's Rs. 6
8. Pandit Yajna Dutta Bhola Dutta 2 scholarships of Rs. 10 each.

Rules of Discipline.

1. All students belonging to a constituent college of the University shall be under the disciplinary control of the Principal of the college. The discipline of students not belonging to any constituent college and of all students while outside the college shall be under the control of the Pro-Vice-Chancellor.

2. A Professor or Assistant Professor may for sufficient cause punish the misconduct of a student in his class-room by a fine not exceeding one rupee, or cancellation of the day's attendance in the subject, or suspension from his class for a period not exceeding three days, provided that the punishment in each case is communicated to the Principal. Cases requiring more severe punishment shall be reported to the Principal for necessary action.

3. In the absence of the Principal from the college, all his powers with regard to discipline will be exercised by the members of the staff in charge for the time being.

4. Punishment for irregularity in attendance, presistent idleness, misconduct or for breach of discipline may be, according to the nature of the case, a warning, fine, suspension from membership of the college for a period not exceeding one month, or recommendation to the University for expulsion from the college for the academical year, or detention from being sent up for the examination or for rustication.

5. In case of serious misconduct or habitual idleness the punishment may be accompanied by the entry of the offender's name in the Conduct book. When the name of a student has been entered thrice in the Conduct book, he shall be liable to expulsion from the college.

6. A student desiring leave of absence must apply to the Principal. For absence without leave he will be liable to a fine of four annas a day and if the period of such absence exceed a fortnight his name may be struck off.

7. All cases of grave misconduct or persistent idleness will also be reported to the parent or guardian concerned.

8. Subsidiary rules of discipline may be framed by the Principal of a college for the proper maintinance of discipline in the institution.

9. Any question of discipline not covered by the regulations of Chapter 12 and the above rules, shall be dealt with by the Pro-Vice-Chancellor.

10. Students who have absented themselves without permission from class examinations will not be entitled to a certificate of attendance in the class.

11. Students who do not return to the University punctually at the beginning of the session or after vacations, are liable to be fixed under Rule 6 or to be refused permission to attend courses of instruction. In case of illness, or other unavoidable cause, a student must without loss of time notify it to the Principal.

12. No student who has suffered from any infectious disease shall be allowed to attend his class without a medical certificate stating that he is free from infection.

13. Students are required to keep the Principal informed of their addresses. Any alteration of address must be communicated without delay.

14. A student expelled for idleness or misconduct shall forfeit all fees and privileges.

15. Students must appear at periodical examinations and if their progress is found unsatisfactory, they will be liable to be refused admission to the higher class or to the University Examination as the case may be, or they may be required to repeat their courses of study before appearing for the University Examination.

16. Breaches of hostel regulations shall be dealt with in accordance with the rules laid down by the Syndicate for the purpose from time to time.

17. Breaches of college regulations shall be dealt with by the Principal.

18. Any student of the University, whether resident or non-resident, who is guilty of misbehaviour or improper conduct, anywhere outside his college or hostel, shall be dealt with by the Pro-Vice-Chancellor.

19. All breaches of discipline involving expulsion whether from hostel or college shall be reported forthwith to the Pro-Vice-Chancellor.

20. Every officer of the University and every member of the teaching staff shall have the power of demanding from a student of the University his name and that of the college to which he belongs both in and outside the precincts of the University, and the student must comply with the demand. Failure to do so will make the student liable to such punishment as the Pro-Vice-Chancellor may determine.

21. As long as a student's name remains on the college roll, he shall be amenable to the discipline of the University authorities wherever he may be.

22. It shall be competent to the Syndicate to lay down special subsidiary rules for the enforcement of discipline in the University.

The Faculty of Medicine and Surgery (Ayurveda) Regulations.

1. The Faculty of Medicine and Surgery (Ayurvéda) shall, so far as funds permit, consider and devise such measures as it may from time to time deem necessary for :—

   (a) The promotion of the scientific study of and researches in Ayurveda and the publication of important works connected therewith;

   (b) the investigation of the properties of medicinal herbs and minerals and the manufacture of Ayurvedic medicines;

   (c) the correlation of Āyurveda with other systems of medicine, and,

   (d) the education and examination of students in Ayurveda.

2. No candidate shall be admitted to the degree of Ayurvedacharya (आयुर्वेदाचार्य) unless he shall have attended the prescribed course of studies which shall cover a period of six years after passing the examination qualifying him for admission to the Faculty of Ayurveda.

3. No candidate shall be admitted to a course of study in the Faculty of Ayurveda unless he has passed.

(i) the Admission Examination of the University with Sanskrit, or

(ii) the Praveshika (प्रवेशिका) Examination of the University with English as an optional subject provided that a student who has passed the Praveshika Examination of the University without taking up English as an optional subject may be admitted on the condition that he will have to pass a preliminary examination in English within *nine* months of his admission.

(iii) the Matriculation or an equivalent examination with Samskrit of any Indian University established by an act of the Legislature or a duly constituted Board.

(iv) the Madhyama Examination of the Government Samskrit College, Benares, the preliminary examination for the Oriental Title of Shiromani of the Madras University, the Visharad Examination of the Punjab University or the Madhyama Examination conducted under the authority of the Government of Bihar and Orissa, or an equivalent examination of some other institution recognised by the Syndicate of the University, provided he passes a preliminary examination in English within *nine* months of his admission.

4. A student who has passed the Intermediate Examination of this University or of any other University, established by an act of Legislature in British India or of any other University or Board recognised by this University, with Physics, Chemistry, Zoology and Botany, may be admitted to the second years course, provided that, if he did not take up Samskrit as an optional subject either at the Matriculation or the Instermediate Examination, he has passed the Praveshika, Admission or an equivalent examination in Samskrit. Such a student shall be exempted from the First Professional Examination. But he shall have to attend a course of lectures on स्वस्थवृत्त (Hygiene) and appear at an examination in it, before he is allowed to sit for the Second Professional Exmination.

5. The First Professional Examination shall be held in स्वस्थवृत्त (Hygiene) रसायनशास्त्र (Chemistry), भौतिक विज्ञान (Physics), जन्तुशास्त्र (Zoology), and वनस्पतिशास्त्र (Botany).

The presenting themselves for the examination candidate shall produce evidence of—

(i) having completed the first year of the prescribed course.

(ii) having completed the course of practical classes.

6. The Second Professional Examination shall be held in शरीर-शास्त्र (Anatomy), शरीरकार्य-विज्ञान (Physiology), द्रव्यगुणशास्त्र (Materia Medica) and भैषज्य-कल्पना (Pharmacy).

Before presenting themselves for the examination, candidates must produce evidence of—

(i) having passed the First Professional Examination except when exempted under Regulation 4.

(ii) having completed the third year of their studies in the Faculty :

(iii) having completed a prescribed course in dissection ;

(iv) having acquired proficiency in—

(a) the identification of common indigenous drugs.

(b) the preparation of common pharmaceutical preparations used in Ayurveda.

7. The Third and final Professional Examination shall be held in—

रोग विज्ञान और चिकित्सा	Diagnosis and treatment of diseases.
शल्यतन्त्र	Surgery.
विकृति-विज्ञान	Pathology.
प्रसूति-शास्त्र और स्त्री-रोग	Obstetrics and Gynaecology.
जीवाणु शास्त्र	Bacteriology.
व्यवहारायुर्वेद	Medical Jurisprudence.
अगद तन्त्र	Toxicology.
कौमारभृत्य	Diseases of children.
मानसरोग	Mental Diseases.

The examination will be held in two Parts, A and B :—Part A will include :—

(i) प्रसूति-शास्त्र, स्त्री-रोग और कौमारभृत्य Obstetrics, Gynaecology and Diseases of Children.

(ii) व्यवहारायुर्वेद, अगद-तन्त्र Medical Jurisprudence and Toxicology.

(iii) मानसरोग Mental diseases.

and shall be held at the end of the fifth year.

Before appearing for this examination, candidates shall have to produce evidence of—

(i) having passed the Second Professional Examination.

(ii) having attended the complete course of lectures and practical classes according to the curriculum and

(iii) having devoted a part of their time to clinical studies after passing the Second Professional Examination.

Part B will include :—

(i) रोगविज्ञान और चिकित्सा–Diagnosis and treatment of diseases.
(ii) शल्यतन्त्र Surgery.
(iii) विकृतिविज्ञान Pathology.

and shall be held at the end of the VI year.

Candidate who appear at the examination shall produce evidence of—

(i) having passed the Third Professional Examination, Part A.
(ii) having completed the course of studies prescribed by the University.
(iii) having received the prescribed course of instruction in the following subjects :—
(1) Tuberculosis राजयक्ष्मा
(2) Infectious diseases, संक्रामक रोग
(3) Eye diseases नेत्ररोग
(4) Clinical Medicine.
(5) Clinical Surgery.
(6) Operative Surgery.
(7) Anasthesia.
(iv) of having—
(1) attended as clinical clerk in the medical work for six months.
(2) attend as a surgical dresser in surgical wards for six months.
(3) attended as a clinical clerk in opthalmic wards for three months,
(4) attended post-mortem clinical for two years,
(5) attended our-door patients department for six months,
(6) attended the tuberculosis ward for three months.

8. A student who fails in one of the subjects in the 2nd or 3rd (Part A or B) Professional Examination, may be premitted to re-appear only in that subject in which he has failed, provided he obtained no less than 25 per cent of the marks in the subject in which he failed.

A student who does not fulfil this condition may be permitted to appear in all the subjects of the examination.

9, Before being re-admitted in the examination in one or more subjects, a candidate must produce evidence of having pursued such further courses of study as may have been prescribed by the Dean of the Faculty.

10. A candidate who fails in two of the subjects in the 3rd Professional (Part A or B), may be permitted to re-appear in those two subjects only in one of the succeeding examinations provided he obtained not less than 33 per cent of the marks in the aggregate of the two subjects.

The First Professional Examination.

1. It has been decided that the subjects fixed for the First Professional Examination in Medicine and Surgery (Ayurveda) will group in the following manner :—

GROUP I	Maximum marks.	Minimum marks in any individual paper.	Minimum pass marks for the Group.
Chemistry, Theory paper	100	30%	40%
Physics Do.	100	30%	
GROUP II			
Chemistry Practical test	100	40%	
Physics Do.	100	40%	

1. Botany and Zoology are treated as forming one group.

2. 40% marks on aggregate are considered as pass marks in both Botany and Zoology theory papers, keeping 30 per cent marks as the minimum pass marks in each paper separately.

3. 40 per cent marks are taken as pass marks in the practical of both Botany and Zoology separately.

Arrangement of Papers and Practicals For The First Professional Examination.

		Time	Maximum marks.	Maximum pass marks.	
Chemistry.	One paper	3 hours.	100	30	Group I
	Practical test		"	40	
Physics.	One paper	"	"	30	
	Practical test		"	40	
Zoology.	One paper	"	"	30	Group II
	Practical test		"	40	
Botany.	One paper	"	"	30	
	Practical test		"	40	
Hygiene.	Paper I.	"	"	40	
	" II.	"	"	40	
	Oral & Practical test	"	"	50	

Not less than ten lectures in addition to the courses prescribed above will be delivered in general Biology.

SYLLABUS.

CHEMISTRY.

रसायन में तीन घण्टे का एक प्रश्न पत्र होगा और क्रियात्मक रसायन में भी एक परीक्षा होगी।

जड़पदार्थ (matter) जड़पदार्थ की तीन अवस्थाएँ (1) उनके गुण, तथा (2) पदार्थों पर ताप का प्रभाव।

विलेयता (solubility), निःस्यन्दन (filtration), क्रिस्टलीकरण (crystallisation), स्रवण (distillation) और उद्धनन (sublimation). उपर्युक्त गुणों का अध्ययन निम्न पदार्थों के साथ होगाः—

Hydrochloric acid, magnesium, Bismuth and Antimony.

नमक, शोरा, खड़िया, तूतिया, कसीस, गन्धक, बालू, नौसादर, फिटकरी, कपूर, लाख, शर्करा, तैल।

वायु का अध्ययन, पदार्थों पर वायु की क्रिया, पदार्थों का जलना और उनमें मोरचा लगना।

जल का सङ्गठन, पदार्थों पर जल की क्रिया।

मौलिक और यौगिक, मिश्रण, रासायनिक संयोग के नियम।

निम्न तत्वों और यौगिकों का अध्ययन।

औक्सिजन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, कार्बन, क्लोरीन, गन्धक, कार्बन डाइआक्साइड, अमोनिया, नाइट्रिक अम्ल, गन्धक के आक्साइड, गन्धकाम्ल, लोह, स्वर्ण, चाँदी, ताम्र, वङ्ग, पारद, सीसा, आर्सनिक, सोडियम और पोटासियम और इनके आक्साइड, सल्फाइड, क्लोराइड, सल्फेट, नाइट्रेट और कार्बनेट।

निम्न पदार्थों के सम्बन्ध में अङ्गारिक रसायन के सामान्य सिद्धान्त से परिचयः—

पाराफीन, अलकोहल, ऐसिटिक अम्ल, शिरका, यूरिया, तैल, चर्बी, शर्करा और स्टार्च।

फरमेन्टेशन और उससे अलकोहल और ऐसिटिक अम्ल का प्राप्त करना और चर्बी में पदार्थों की विलेयता, (Solubilities of substances in oils and fats).

क्रियात्मक रसायन।

विलेयता द्वारा मिश्रणों के अवयवों का पृथक्करण

क्रिस्टलीकरण के द्वारा लवणों का शोधन

निम्न लवणों में धातुओं और मूलकों की पहचान।

स्वर्ण, चाँदी, सीसा, पारद, ताम्र, विस्मथ, आर्सनिक, अन्टीमनी, वङ्ग, लोह, आलुमिनियम, यशद, कालसियम, सोडियम, पोटासियम, मैगनीसियम, और अमोनियम के सल्फाइड, क्लोराइड, सल्फेट, नाइट्रेट और कार्बनेट, Manganese and oxide etc.

भौतिक विज्ञान

इस विषय में तीन घण्टे का एक प्रश्नपत्र होगा और एक प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी।

साधारण—लम्बाई, क्षेत्रफल, आयतन तौल और समय के एकांक, जड़पदार्थ सम्बन्धी सरल बातें, पदार्थ की तीन अवस्थायें, अणु तथा परमाणु, वेग, वेगवृद्धि, तथा बल का प्रारम्भिकज्ञान, साम्य, जाड्य और भार, गुरुत्वाकर्षण, तुला, गुरुत्वकेन्द्र शक्ति और उसके भिन्न-भिन्न रूप, द्रवों का दाव, अर्कमेदिस का सिद्धान्त, तैरना, घनत्व, आपेक्षिक तथा विशिष्ट घनत्व, घनत्व नापने की रीति, वायु का दाब, बैरोमीटर, बायल का नियम, सरल प्रकार के जल तथा वायु पम्प, साइफन, अभिसारकादाब।

ताप—ताप तथा तापक्रम, ताप का प्रभाव, प्रसार, अवस्था, परिवर्तन-तापमापक, शरीर-तापमापक, ताप की मात्रा, आपेक्षिक और गुप्त ताप, द्रवणांक तथा क्थनांक, वाष्पीभवन, द्रवीभवन तथा स्रावण, बर्फ जमाना, वाष्पदाब और आर्द्रता-मापक, मेघ, वर्षा, ओस, कुहरा इत्यादि, ताप का चालन, वाहन और विकिरण, ताप से यांत्रिक शक्ति की उत्पत्ति।

प्रकाश—प्रकाश का सरल रेखागमन, छाया, समतल तथा गोलीय दर्पणों से प्रकाश का परिवर्तन, वास्तविक तथा काल्पनिक प्रतिबिम्ब, त्रिपार्श्व और लैंसों से प्रकाश का वर्तन, वर्तनांक प्रकाश-सम्बन्धी साधारण यंत्र तथा दूरबीन, सूक्ष्मदर्शक, फोटो का केमरा, चित्रदर्शन लालटेन, नेत्र दृष्टि के दोष और उनको दूर करने का उपाय, वर्णपट तथा नीललोहितोत्तर प्रकाश।

शब्द—शब्द की उत्पत्ति, कम्पन, तीव्रता, सुर तथा रूप, वायु में शब्द का गमन और वेग, तरङ्ग दैर्घ्य, मनुष्य का कान, अनुवाद, साधारण वाद्यों का अत्यन्त सामान्य ज्ञान।

चुम्बकत्व—प्राकृतिक तथा कृत्रिम चुम्बक, चुम्बकीय ध्रुव, चुम्बकीय बल, बलरेखायें, दिक्सूचक पृथ्वी का चुम्बकत्व, उपपादन।

विद्युत्—घर्षण से विद्युत् की उत्पत्ति, विद्युत् आवेश के प्रकार, वैद्युतबल, चालक तथा पृथग्न्यासक, वैद्युतउपपादन, विद्युद्दर्शक, घर्षण विद्युत यन्त्र, तड़ित और तड़िच्चालक।

विद्युद्-धारा, वोल्टीय सेल, डेनियल, लैकलांश तथा संचायक सेल, विद्युद्वाहि का बल, विद्युद्धारा का चुम्बकीय प्रभाव, धारामापक विद्युत चुम्बक, तारप्रेषण तथा टेलीफोन, बिजली की घण्टी, प्रतिरोध, चुम्बकीय क्षेत्र में धारायुक्त चालक का गमन, अम्पीयर मापक तथा वोल्ट मापक विद्युच्चुम्बकीय उपपादन, उपपादनवेष्टन, डायनमो तथा मोटर के मूल सिद्धान्त, विद्युद्धारा से ताप तथा प्रकाश की उत्पत्ति, विद्युद्विश्लेषण तथा मुलम्मा करना, एक्सीकरण और उसका उपयोग, रेडियम।

नोट—जहाँ तक हो सके इस विषय में गणित का प्रयोग कम किया जाय।

प्रयोगात्मक कार्य—प्रत्येक विद्यार्थी को निम्नलिखित प्रयोग करना चाहियेः—

१. लम्बाई का नाप

२. आयतन का नाप

३ तुला का प्रयोग

४. घनपदार्थों के घनत्व का नाप (अर्कमीदिस सिद्धान्त द्वारा)

५. द्रव पदार्थों के घनत्व का नाप—घन व बोतल तथा द्रवघनत्वमापक के द्वारा

६. सायफन का उपयोग ताप से

७. घनों का प्रसार

८. ताप से द्रवों का प्रसार
९. द्रवणांक का नाप
१०. क्थनांक का नाप
११. प्रकाश परिवर्तन के नियम की परीक्षा
१२. प्रकाश वर्तन के नियम की परीक्षा
१३. नतोदर दर्पण के नाभ्यन्तर का नाप
१४. उन्नतोदर लैंस
१५. चुम्बक बनाना
१६. विद्युद्दर्शन के द्वारा कुछ सरल प्रयोग
१७. विद्युद्धारा का चुम्बकीय प्रभाव
१८. विद्युद्धारा से ताप की उत्पत्ति

BOTANY.

I. Distinction between living and non-living matter; the distinctive properties of protoplasm; distinctions between animal and plants.

II. A general outline of the study of living plant machinery with a view to understand the way in which it is constructed and the various life-phenomena it exhibits, including :—

(*a*) An elementary knowledge of the external structure of its various parts, such as, Root, Stem, Leaf, Inflorescence, Flower, Ovule, Fruit and Seed. The differentiation of development of these parts from the seed during germination.

(*b*) The structure of a typical young plant cell; process of histological differentiation. Different kinds of tissues and tissue-systems. Internal structure of stem, root, and leaf of Angiosperms.

(*c*) An elementary knowledge of the functions carried on by the living plant including root-absorption, transpiration, carbon-assimilation, respiration and growth. A general survey of the structure of plant body as adapted to its functions.

(*d*) An elementary knowledge of the physiology of reproduction, the Sexual and Asexual modes of reproduction; pollination of fertilisation and the agencies by which these are secured.

Methods of propagation in space by dispersal of fruits and seeds.

III. Outline of the principles of classification of Angiosperms into principal groups with a knowledge of the distinguish-

ing characters of medicinal plants (with special reference to those used in Ayurveda) of the following families :—

Ranubculauceæ, Papaveraceæ, Cruciferæ, Rutaceæ, Leguminosæ, Rubiaceæ, Sciophulariaceæ, Labiatæ, Compositæ, Couphortraceæ, Liliaceæ, and Graminal.

IV. An elementary knowledge of the theory of evolution and general principles of heridity and Mendelism.

PRACTICAL WORK

Candidates should be able to describe the various parts of the plant body fully and correctly and identify prepared sections of important parts and tissues under the microscope. They should also acquire sufficient practice to identify the plants of the above families and place them in their proper position.

They should be able to explain simple experiments on plant physiology which are set up. They should also know the methods of preservation of specimens.

ZOOLOGY

Definition and scope of Zoology. Nature of Protoplasm. Structure of the cell. Cell division and gametogenesis ; Conjugation and Fertilisation. Structure and functions of animal tissues. Living and non-living. Characteristics of the living creatures. From unicellular to multicellular. Is organism more than mechanism ? Performation versus Epigenesis. Spontaneous creation. The web of life. The balance of life. Struggle for existence. Survival of the fittest. Nature and nurture. Organism as a historic being. The continuity of the germ-plasm. Healthy living in relation to healthy inheritance. Modern interpretation of instincts.

Frog.

The anatomy and osteology of the frog. The elementary physiology of the various organs.

Main features of the life-history of frog.

Protozoa :

The structure and life history of Amœba. Entamœba coli Entamœba histolytica and Malatial Parasite—Omitting the details of the life-history.

General classification of the animal kingdom with the characteristics of the principal Phyla. Characteristics of Mammalia.

Practical :—

The candidates will be required to dissect and describe the animals named in the Syllabus.

N. B.—Candidates will be required to keep a record of all practi-

cal work done in the Library in Separate note books for Physics, Chemistry, Botany and Zoology, which will be examined by University Examiners.

Hygiene

1. Water—uses—sources—properties—impurities—diseases due to impurities—purification.

2. Air—composition—impurities—impurities due to combustion—disease due to impurities—effects of air vitiated by respiration.

3. Ventilation—internal and external—amount of air required for healthy, sick, animals and for combustion--system of ventilation—natural purification of air—determination of the amount of cubic space—determination of the efficiency of ventilation in an inhabited room.

4. Industrial hygiene and occupational diseases—offensive trade—effects of offensive trades on health.

5. Soil—features influencing climate and health—varieties of soil—diseases arising from soil.

6. Houses—construction—site for houses, cowsheds and stables.

7. Hospitals and sanitoriums—general idia about hygienic conditions and requirements.

8. School hygiene—general idia about school hygiene.

9. Climatology and Meteorology—classification—climate in relation to health—effects or temperature—atmospheric pressure—rain fall—humidity.

10. Food—classification—quantity required—relative value of food—cooking—diseases caused by faulty dieting vitamines—standard diet—food—according to age and physical and mental work.

11. Animal foods—meat—eggs—fish—milk—preparations of milk.

12. Vegetable foods—cereals—pulses—roots and tubers—green vegetables—fruits and nut—sugars.

13. Beverages and condiments—intoxicating drugs like tobacco bhang, opium.

14. Disposal of sewage—scavenging—conservancy system—collection and disposal of night soils—trenching grounds—incineration of night soil—water carriage system—house drainage—sewers.

15. Disposal of sewage—cesspool system—disposal into sea or river—chemical treatment—general principals of biological treatment.

16. Disposal of dead—burning and burial.

17. Personal Hygiene.

18. Infection—bacteria—modes of infection—insects—(mosquitos, sand-flies, bed-bugs etc.) as media.